पुनर्जीवन

लेव टॉलस्टॉय

पुनर्जीवन

पुनर्जीवन

मूल लेखक

महात्मा टाल्स्टाय

अनुवादक

शीतला सहाय

बनारस

ज्ञानमण्डल लिमिटेड

पुनर्जीवन

भाग १

पहला अध्याय

यद्यपि लाखों आदमियोंने पृथ्वीके उस छोटे भागको जिसपर वे सघनतासे बसे हुए थे, कुरूप बना देनेमें कोई कसर नहीं छोड़ी थी, जमीनपर जहाँ तहाँ पत्थरोंका ढेर लगा दिया था, पेड़ों को काटकर वनस्पतिका नामोनिशान मिटा दिया था, पशु-पक्षियोंको भगा दिया था, कोयले और तेलके धूएँसे हवाको कलुषित कर डाला था—फिर भी वसन्त ऋतु वसन्त ऋतु ही थी, आस पासके क्षेत्रमें ही नहीं, शहरमें भी।

सूरज चमक रहा था और दुनियाको गर्मी पहुँचा रहा था। वायुमें सुगंधि थी, घास जहाँ-जहाँसे छील नहीं डाली गयी थी, वहाँ-वहाँ फिरसे जग उठी थी और सभी जगह निकल आयी थी—पथरीले फर्शके बीचमें भी और चौड़ी छायादार सड़कके पतले रास्तेपर भी। बर्च[1], चम्पा और जंगली चेरी[2]के पेड़ोंकी खुशबूदार और चमकीली पत्तियाँ लहरा रही थीं; नीबूकी कलियाँ फूटनेके लिए फूली हुई थीं; कौवे, गौरैया और कबूतर वसन्तके आनन्दसे परिपूर्ण अपनी झोंझें तैयार कर रहे थे; सूरजकी किरणोंसे गर्मी पाकर मक्खियाँ दीवारोंपर भिनभिना रही थीं। सभी आनन्दमें थे; पेड़-पल्लव, चिड़ियाँ, कीड़े-मकोड़े और बच्चे। लेकिन

१—इस पेड़की डालियाँ बेतकी तरह होती हैं।

२—विलायती पेड़ जिसमें लाल फल होता है।

आदमी, प्रौढ़ स्त्री और पुरुष एक दूसरेको और अपने आपको धोखा देने और क्लेश पहुँचानेके काममें लगे हुए थे। वसन्त ऋतुके ऐसे प्रातः कालको मनुष्यने पवित्र और मननयोग्य नहीं समझा। उसने ऐसे अवसरपर ईश्वरीय संसारके सौन्दर्यपर विचार नहीं किया। उसने यह बात नहीं समझी कि यह संसार समस्त प्राणी मात्रके आनन्दके लिए बनाया गया है और न उसने यह देखा कि इस सौन्दर्यसे हृदयमें शान्ति, मैत्रीभाव और प्रेम पैदा होता है। वह तो इस बातकी तरकीब सोचनेमें लगा था कि एक दूसरेको दासताकी बेड़ीमें कैसे जकड़ा जाय।

अतः सरकारी जिलेके जेलखानेके दफ्तरमें मनुष्यों और अन्य प्राणियोंको वसन्त ऋतुके आनन्द और शान्तिका सन्देश नहीं पहुँचा था और न वे इसे पवित्र और महत्वपूर्ण ही समझते थे। वहाँ तो एक दिन पहले एक नोटिस पहुँच चुकी थी जिसपर बाकायदा नम्बर और हुक्म था। हुक्म यह था कि आज अर्थात् २८ अप्रैलको ९ बजे तीन कैदी, जो इस जेलखानेकी हवालातमें थे, अदालतके सामने हाजिर किये जायँ। इनमेंसे एक पुरुष था और दो स्त्रियाँ। स्त्रियोंमेंसे एक खास मुजरिम समझी गयी थी जिसके लिए यह हुक्म था कि वह अलग अदालतके सामने लायी जाय। इसलिए आज २८ तारीखको ८ बजे सुबह बड़ा जेलर जेलखानेके औरतोंकी बैरकके अन्धकार-मय और बदबूदार बरामदेमें दाखिल हुआ। इसके बाद ही एक स्त्री, जिसके बाल सफेद और घूँघरवाले थे और जिसके चेहरेपर कष्टके चिन्ह दिखाई देते थे, इस बरामदेमें आयी। यह गोटा लगी बाहोंका सलूका पहने हुई थी, अपनी कमरमें एक पेटी बाँधे हुई थी, जिसके किनारे नीले रंगकी धारी थी।

जेलरने लोहेके तालेको खड़काते हुए कोठरीका दरवाजा खोला और उसके अन्दरसे गन्दी हवाका झोका निकला जो बरामदेकी हवासे भी ज्यादा बदबूदार था। उसने चिल्लाकर कहा "मस्लोवा"! "अदालतके लिए तैयार हो" और फिर उसने दरवाजा बन्द कर दिया।

जेलखानेके आँगनमें भी खेतोंकी ताजी और नयी जान पैदा करने वाली वायु पहुँच चुकी थी। लेकिन बरामदेकी हवा टाइफाइडके कीटाणुओंसे, नालोंकी बदबूसे, सड़नसे, और टारकी गंधसे परिपूर्ण थी। जो कोई नया आदमी यहाँ आता, मलिन और आशाहीन हो जाता था। स्त्री वार्डरपर भी जो इस दूषित वायुकी आदी हो चुकी थी, यही प्रभाव पड़ता था। वह अभी बाहरसे आयी थी और बरामदेमें आते ही उसे आलस्य और नींद आने लगी थी।

जेलखानेकी कोटरीके अन्दरसे स्त्रियोंकी आवाज, फर्श पर नंगे पैरोंके पड़नेकी भदभदाहट, और हलचल सुनायी दे रही थी।

"जल्दी करो" जेलरने पुकार कर कहा, और एक या दो मिनटके अन्दर ही एक छोटे कदकी पीन वक्षस्थलवाली नौजवान स्त्री तेजीके साथ दरवाजेसे बाहर निकली और जेलरके पास जाकर खड़ी हो गयी। यह सफेद सलूका और पेटीकोट पहने हुई थी और इन कपड़ोंके ऊपर इसने भूरे रंगका एक चोंगा पहन रक्खा था, पैरमें सूती मोजे और जेलखानेके जूते थे। सिरमें उसने एक सफेद रूमाल बाँध रखा था जिसके अन्दरसे काले बालोंकी कुछ लटें निकली हुई थीं और इसे उसने अपने माथेपर सँवार रखा था, जिसका उद्देश्य स्पष्ट था। इस स्त्रीके चेहरेपर उस किस्मकी सफेदी थी जो खास तौरसे उन लोगोंमें पायी जाती है जो बहुत दिनोंतक बन्द रहते हैं और जिनको देखकर वे अँखुए याद आ जाते हैं जो गोदाममें भरे हुए आलुओंमें कुछ दिनके बाद पैदा हो जाते हैं। इसके छोटे छोटे हाथ और भरी हुई गर्दन जो इसके चोंगेके चौड़े कालरके नीचेसे दिख रही थी, उसी रंगके थे। इसकी काली चमकदार आँखें जिनमें एक कुछ तिरछे देखती थी, इसके चेहरेके निर्जीव रंगके मुकाबिलेमें खटक जाती थीं।

अपने पीन वक्षस्थलको उभारे हुए यह स्त्री बिल्कुल सीधी चलती थी।

अपने सिरको जरासा पीछे किये हुए, वह आकर बरामदेमें खड़ी हो

गयी और जेलरके चेहरेकी ओर सीधे देखने लगी। जो कुछ हुक्म मिले उसे करनेके लिए वह बिल्कुल तैयार थी।

जेलर दरवाजा बन्द करनेको था ही कि एक बुड्ढी औरतने जिसके चेहरेपर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं, अपना सफेद बालोंवाला चेहरा बाहर निकाला और मस्लोवासे बातें करने लगी। लेकिन जेलरने दरवाजा बन्द कर दिया और उस बुड्ढो औरतका चेहरा इसी दरवाजेके जोरसे दरवाजेके पीछे पहुँच गया।

कोठरीके अन्दरसे एक औरतके हँसनेकी आवाज सुनायी दी और मस्लोवा कोठरीके छोटेसे दरवाजेकी छोटीसी सूराखकी तरफ फिरकर मुस्कराने लगी। बुड्ढी औरतने कोठरीके भीतरसे इस सूराखमें अपना चेहरा लाकर बैठी हुई आवाजसे कहा—

"कुछ पर्वाह नहीं, जब तुमसे सवाल करें तब वही चीज कहना और उसीपर कायम रहना। जिस चीजकी जरूरत नहीं उसे बिल्कुल न कहना।"

"ठीक है, अब आजकलसे बदतर हालत हमारी क्या करेंगे।"

"खैर, मैं तो यही चाहती हूँ कि इधर या उधर कोई फैसला हो जाय।"

"फैसला तो कुछ न कुछ हो ही जायगा" बड़े जेलरने कहा। और इसके कहनेके ढंगमें वही बात पायी जाती थी जो उन बड़े लोगोंकी बातमें झलकती है जिनको अपनी हाजिरजवाबीपर विश्वास होता है। "अच्छा चलो"।

बुड्ढी औरतकी आँखें दरवाजेकी सूराखसे गायब हो गयीं और मस्लोवा बरामदेके बीचोबीच बढ़ आयी। बड़ा जेलर सबसे आगे था और मस्लोवा उसके पीछे-पीछे थी। यह पत्थरके जीनेसे नीचे उतरे और मर्दों की बैरकसे होकर गुजरे, जिसमें खूब शोरगुल मच रहा था। यहाँकी हवा और भी ज्यादा गन्दी थी। जब यह लोग मर्दोंकी बैरकसे होकर गुजरे, कोठरियोंके दरवाजोंकी हर एक सूराखमें आँखें दिखाई देती

थीं। यह लोग दफ्तर पहुँचे जहाँपर दो सिपाही मस्लोवाको अदालत ले जानेके लिए इन्तजार कर रहे थे। दफ्तरके बाबूने जो वहाँ बैठा काम कर रहा था, इन सिपाहियोंको एक कागज दिया जिसके चारो ओर तम्बाकूका धुवाँ लिपटा हुआ था। कैदीकी तरफ इशारा करते हुए उसने कहा "इसको ले जाओ"।

इस सिपाहीने, जो निजनी, जिला नभगोराड[1]का किसान था और जिसके लाल चेहरेपर चेचकके दाग थे, इस कागजको अपने कोटकी आस्तीनमें रख लिया। कैदीकी तरफ कनखियोंसे देखते हुए अपने जोड़ीदारको, जो चौड़े कन्धेका एक चुआरा[2] था, आँखें मारीं। इसके बाद सिपाही और कैदी दोनों जेलखानेके फाटकपर पहुँचे और वहाँसे निकलकर शहरकी कँकरीली सड़कपर चलते हुए दिखाई देने लगे।

गाड़ी हाँकनेवाले, दूकानदार, खानसामे, मजदूर और सरकारी क्लर्क लोग, रुक-रुककर कैदीकी तरफ कौतूहलकी दृष्टिसे देखते थे। कोई अपनी गर्दन हिलाते हुए अपने मनमें सोचता था "देखो बुरे कामका—जो मैं नहीं करता—यही नतीजा होता है"। छोटे बच्चे इसे डाकू समझकर डरते हुए देखते थे लेकिन यह सोचकर कि सिपाही इस औरतको और ज्यादा जुर्म करनेसे रोके हुए हैं, इन बच्चोंके हृदयमें कुछ शान्ति आ जाती थी। एक किसान जिसने शहरमें आकर कोयला बेचा था और चाय पी चुका था, इस कैदीके पास आया और अपने सीनेपर अपने हाथसे सलीबका निशान[3] करते हुए उसने इसे एक "कोपेक[4]" दिया। ईसाइयोंके यहाँ कैदियोंकी सहायता करना धार्मिक कर्त्तव्य समझा जाता है।

---

१ लेनिनग्राडसे दक्खिन-पूर्व ११० मीलपर एक कस्बा है।

२ चुआरा रूसकी एक पराजित जाति थी।

३ हजरत ईसाने अपने उपदेशमें यह कहा है "मैं बीमार था और तुमने हमारी सेवा नहीं की और मैं कैदी था तुमने हमारी मदद नहीं की।"

४ जारके समय कोपेक रूसका सिक्का था। सौ कोपेकका एक रूबल होता था और एक रूबल ४) रुपयेके बराबर था।

मस्लोवा झेंप-सी गयी यह देखकर कि लोग उसको देख रहे हैं। उसने अपनी गर्दन इधर-उधर किये बिना हर एकको जो कि उसकी तरफ देख रहा था कनखियोंसे देखना शुरू किया। उसे इस बातसे प्रसन्नता हुई कि लोग उससे आकर्षित हो रहे हैं। ताजी हवाने भी, जो जेलकी हवासे कहीं ज्यादा स्वच्छ थी, उसके हृदयमें आह्लाद पैदा कर दिया था, लेकिन उसके पैर चलनेके आदी नहीं थे और रद्दी बने जेलके जूतोंको पहनकर नोकीले पत्थरोंके फर्शपर चलना कष्टकर था। अनाज बेचनेवालेकी दूकानके सामनेसे गुजरते हुए उसने देखा कि दूकानके सामने कुछ कबूतर फुदक रहे थे और उन्हें कोई छेड़ नहीं रहा था। मस्लोवाने एक नीले कबूतरको अपने पैरसे छू दिया। वह फटफटाकर उड़ा और उसके कानोंके नजदीकसे होकर गुजरा, जिससे उसके पंखोंकी हवा मस्लोवाके चेहरे पर लगी। वह मुस्कराने लगी। फिर अपनी स्थितिको समझकर उसने गहरी साँस ली।

दूसरा अध्याय

इस कैदी मस्लोवाकी जीवन-कथा बहुत साधारण-सी है। मस्लोवा-की माँ एक देहाती स्त्रीकी अविवाहिता लड़की थी, जो दो अविवाहित जमींदार महिलाओंकी (डेयरी) गोशालामें काम किया करती थी। इस अविवाहिता लड़कीके हर साल एक बच्चा पैदा होता था और जैसा कि अक्सर रूसी गाँवोंमें होता है, इन बच्चोंका ईसाई धर्मानुसार बपतिस्मा नामका संस्कार करानेके बाद इनकी माँ बहुत लापरवाहीसे इनका पालन-पोषण करती थी, क्योंकि काम करनेमें इन बच्चोंकी वजहसे बाधा पड़ती थी। यह बच्चे इसलिए ज्यादातर भूखे छोड़ दिये जाते थे। पाँच बच्चे, इस तरीकेसे मर चुके थे। इन सबके नियमानुसार बपतिस्मेके संस्कार तो किये गये थे परन्तु उनको काफी खानेको नहीं दिया जाता था। इन्हें यों ही छोड़ देते थे और ये धीरे-धीरे मर जाते थे। छठे बच्चे-का, जिसका पिता जिप्सी जातिका बनजारा था, यही हाल होनेवाला था। लेकिन ऐसा हुआ कि गृहस्वामिनी एक दिन गोशालामें काम करने-वाली औरतोंको इस बातपर डाटनेके लिए आयी कि इन्होंने ऐसी मलाई क्यों भेजी जिसमें गायकी बदबू आती थी। नौजवान औरत उस समय एक नवजात तन्दुरुस्त बच्चेको लिये झोपड़ेके नीचे लेटी हुई थी। इस वृद्धा स्वामिनीने वहाँकी औरतोंको फिर बुरा भला कहा कि उन्होंने इस औरतको, जिसको अभी बच्चा पैदा हुआ था, झोपड़ेके नीचे लेटनेकी क्यों इजाजत दी थी और डाट डपटकर वह जाने ही वाली थी कि उसकी नजर बच्चेपर पड़ी। उसका दिल भर आया और वह इस छोटी बच्चीकी सरपरस्तीके लिए तैयार हो गयी। इस वृद्ध महिलाने अपनी सरपरस्तीमें ली हुई इस छोटी बच्चीके प्रति दयाभावसे प्रेरित होकर कुछ दूधका इन्तजाम कर दिया और उसकी माताके लिए भी कुछ पैसे बाँध दिये

जिससे वह बच्चेको भी कुछ खिला पिला सके। इस तरहसे वह लड़की जिन्दा बच गयी। ये वृद्ध महिलाएँ इस लड़कीको 'रक्षिता' कहा करती थीं। जब यह तीन बरसकी थी, उसकी माँ बीमार पड़ी और मर गयी। वृद्ध महिलाओंने इस बच्चीको उसकी दादीसे माँग लिया, जिसने बहुत खुशीसे उसे दे दिया, क्योंकि यह बच्ची उसके ऊपर भार-स्वरूप थी।

काली आँखवाली यह छोटीसी लड़की बढ़कर बहुत सुन्दर हो गयी। और इसमें इतनी चपलता और चञ्चलता थी कि इन महिलाओंका दिल इसकी वजहसे बहला रहता था।

इन महिलाओंमें छोटी बहनका नाम सोफिया—आइनोव्ना था। इसीने इस लड़कीकी सरपरस्ती की थी। अर्थात् ईसाई धर्मके अनुसार बपतिस्मेंके संस्कारपर इसकी धर्म-माता होना स्वीकार किया था। इसके हृदयमें अपनी बड़ी बहनसे ज्यादा दयाभाव पाया जाता था। बड़ी बहन जिसका नाम मेरी आइनोव्ना था कुछ कठोर चित्तकी थी। सोफिया इस छोटी लड़कीको अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाती और पढ़ना लिखना सिखाती थी और वह चाहती थी कि इसकी शिक्षा उसी प्रकार हो जैसी किसी बड़े घरकी लड़कीकी होती है। और मेरी कहती थी कि लड़कीको घरका काम-काज करना सिखाना चाहिये, ताकि बड़ी होकर यह अच्छी नौकरानी बन सके। मेरी काम लेनेमें बड़ी कट्टर थी और सजा भी देती थी। क्रोधमें आकर वह इस छोटी लड़कीको मारती भी थी। इस प्रकार इन दो भिन्न भिन्न प्रभावोंमें पलकर यह लड़की आधी नौकरानी और आधी महिला बन गयी। इसको कटूशा कह कर पुकारते थे। यह सिलाईका काम करती थी, कमरेकी सफाई करती थी और धार्मिक मूर्तियोंके धातुके फ्रेमपर खरिया मिट्टीसे पालिश किया करती थी। इसके अलावा यह और भी दूसरे छोटे-छोटे काम किया करती थी। कभी कभी बैठकर इन महिलाओंको कुछ पढ़कर सुनाती भी थी।

यद्यपि कई जगहोंसे उसके विवाहकी बात आयी, लेकिन कटूशा

शादी करनेके लिए तैयार न हुई। उसने यह सोचा कि वह लोग जो उसके साथ शादी करना चाहते हैं मजदूर हैं। उनके साथ जीवन-यात्रा बड़ी कठिन होगी। आरामकी जिन्दगीने उसके ऊपर यह बुरा प्रभाव डाल दिया था।

सोलह वर्षकी उम्रतक वह उसी तरह रही। इन वृद्ध महिलाओं-का भतीजा, जो अमीर नवयुवक राजकुमार था और यूनिवर्सिटीमें पढ़ता था, एक दफा अपनी फूफुओंके साथ रहनेके लिए आया और कटूशा उसपर मोहित हो गयी, यद्यपि वह यह बात अपनी आत्माके सामने स्वीकार करनेकी भी हिम्मत नहीं करती थी।

दो वर्षके बाद यही भतीजा अपनी रेजिमेंटमें जानेके पहले अपनी फूफूके यहाँ चार दिनके लिए आया और ठहरनेकी अन्तिम रातमें उसने कटूशाको बर्गला लिया। कटूशाको एक सौ रूबल देकर वह चला गया। पाँच महीनेके बाद कटूशाको निश्चय हो गया कि वह गर्भवती है। अब तो इसे हर एक चीजसे अनमनता हो गयी। उसे अब इसी बातकी चिन्ता रहती थी कि किस तरहसे आनेवाली लज्जास्पद घटनासे इज्जत बचायी जाय। अब इन महिलाओंकी सेवामें भी इसका मन नहीं लगता था, और हर काममें लापरवाही किया करती थी। एक दफा तो ऐसा हुआ कि इसने इन महिलाओंके साथ रुखाईका भी बर्ताव किया, यद्यपि बाद-को उसे इसका पश्चाताप भी हुआ। अन्तमें इसने वहाँसे छुट्टी ले ली और महिलाओंने इसको चले जानेकी इजाजत दे दी, क्योंकि वे उससे बहुत असन्तुष्ट हो गयी थीं। यहाँसे निकलकर इसने एक पुलिस अफ-सरके घरमें नौकरानीका काम कर लिया। लेकिन वहाँ सिर्फ तीन ही महीने रह सकी क्योंकि पुलिस अफसरने, जिसकी उम्र पचास वर्षकी थी, इसको पहले ही दिनसे छेड़ना शुरू किया। एक दफा इस पुलिस अफसरने विशेष रूपसे आवेशमें आकर कटूशाको बुरी तरह छेड़ा जिस-पर कटूशा बिगड़ गयी और शैतान और बेवकूफ कहकर उसे इतने जोरका धक्का दे दिया कि वह गिर पड़ा। इस गुस्ताखीके लिए यह

वहाँसे निकाल दी गयी। दूसरी नौकरी तलाश करना बेकार था क्योंकि उसके प्रसवका समय नजदीक आ रहा था। इसलिए वह एक देहाती दाईके घर रहनेके लिए चली गयी जो चोरीसे कच्ची शराब बेचा करती थी। प्रसव आसानीसे हो गया लेकिन दाईके घरमें कटूशाको बुखार आ गया क्योंकि जिस दाईके यहाँ यह रहती थी वह एक छूतकी बीमारीसे पीड़ित रोगीकी सेवा-शुश्रुषा कर रही थी। दाईके सम्पर्कसे कटूशाको भी छूत लग गयी, कटूशाको इसलिए अपने बच्चेको अस्पताल भेजना पड़ा। उस बुड्ढी औरतके कथनानुसार, जो उस बच्चेको अस्पताल ले गयी थी, यह बच्चा वहाँ पहुचते ही मर गया। जब कटूशा दाईके यहाँ गयी थी उसके पास कुल एक सौ सत्ताइस रुबल थे। सत्ताइस रुबल इसने कमाये थे, और सौ रुबल इसके बर्गलानेवालेने इसे दिये थे। जब दाईके यहाँसे कटूशा निकली इसके पास कुल छः रुबल बचे थे। कटूशा रुपया रखना नहीं जानती थी। वह या तो अपने ऊपर खर्च कर देती थी या जो कोई उससे माँगता था, उसे दे देती थी। दो महीनेके ठहरने, खाने पीने, और सेवा शुश्रुषाके लिए दाईने चालीस रुबल ले लिये थे और अस्पतालमें बच्चेको दाखिल करनेमें पचीस रुबल खर्च हुए थे। चालीस रुबल दाईने गाय खरीदनेके लिए उधार माँग लिये थे और पचीस रुबल कपड़े, मिठाई और इधर उधरकी चीजें खरीदनेमें खर्च हो गये। अब जबकि अपने पास कुछ भी न रह गया, कटूशाके सामने सिवाय नौकरी करनेके दूसरा कोई उपाय नहीं रहा। इस दफा इसे जंगल विभागके एक मुलाजिमके यहाँ नौकरी मिल गयी। आदमी विवाहित था लेकिन इसने भी कटूशाको पहले ही दिनसे छेड़ना शुरू कर दिया। कटूशा इस आदमीको नापसन्द करती थी इसलिए इससे दूर-दूर रहनेकी कोशिश करने लगी; लेकिन यह आदमी तो इसका मालिक था ही, जहाँ चाहता इसे भेज सकता था, साथ ही साथ यह कहीं ज्यादा तजुर्बेकार और चालाक आदमी था। इसलिए उसने इसके साथ जबर्दस्ती करनेकी तदबीर निकाल ही ली। इसकी स्त्रीने इसका पता लगा लिया और इसे

और अपने पतिको एक ही कमरेमें अकेला पाकर उसने कटूशाको पीटना शुरू किया। कटूशाने अपना बचाव किया और इन दोनोंमें मारपीट हो गयी। कटूशा निकाल दी गयी, और उसे उसकी तनख्वाह भी नहीं मिली।

इसके बाद कटूशा अपनी मौसीके साथ शहरमें रहने चली गयी। इसका मौसा जिल्दबन्दीका काम करता था और खुशहाल था। लेकिन अब इसके सब गाहक इसके हाथसे निकल गये थे और इसने शराब पीना शुरू कर दिया था। इधर-उधरसे जो कुछ इसे मिलता कलारीमें जाकर खर्च कर आता। कटूशाकी मौसी कपड़ा धोनेका काम करती थी और इस तरह अपना, अपने बच्चोंका, और अपने कमबख्त पतिका गुजर-बसर चलाती थी। कटूशाको बेरोजगार देखकर उसकी मौसीने कटूशासे कहा कि यदि तुम कपड़ा धोनेमें मेरी मदद किया करो तो तुम्हें कुछ आमदनी हो सकती है। लेकिन कटूशाने यह देखकर कि कपड़ा धोनेके काममें कितनी तकलीफ और परेशानी है, इस कामको करना पसन्द नहीं किया। उसने रजिस्ट्रीके दफ्तरमें जहाँ बेरोजगारोंको नौकरियाँ दिलायी जाती हैं, दरख्वास्त भेज दी। उसे एक महिलाके यहाँ नौकरी मिल गयी। यह महिला अपने दो लड़कोंके साथ, जो स्कूलमें पढ़ते थे, इसी शहरमें रहती थी। कटूशाको नौकर हुए अभी सात दिन भी नहीं हुए थे कि बड़े लड़केने जिसे मूछें निकल आयी थीं, पढ़ना लिखना छोड़ दिया और कटूशाके पीछे पड़ गया। यह जहाँ जाती वहीं वह भी जाता। लड़केकी माँने सब दोष कटूशाके ऊपर डाल, उसे नौकरीसे अलग कर दिया।

नौकरीके अनेक व्यर्थ प्रयत्नोंके बाद कटूशा एक दफा फिर रजिस्ट्रीके दफ्तरमें गयी। वहाँ उसे अपने नंगे मोटे हाथोंमें बाजूबन्द पहने एक स्त्री मिली जिसकी अधिकांश अंगुलियोंमें अँगूठियाँ थीं। यह जानकर कि कटूशाको नौकरीकी बहुत जरूरत है उसने इसे अपना पता बताया और अपने घर बुलाया। कटूशा इसके यहाँ गयी। इस औरतने कटूशाका

बहुत आदर सत्कार किया। उसके सामने केक और मीठी शराब रखी। उसी समय उसने एक चिट्ठी लिखी और एक नौकरको वह चिट्ठी देकर किसीके पास भेज दिया। शामको एक लंम्बे कदका आदमी, जिसके बाल सफेद हो चुके थे और दाढ़ी भी सफेद थी, आया और फौरन कटूशाके पास बैठकर मुस्कराने और अपनी चमकदार आँखोंसे इसकी ओर टकटकी लगाकर देखने लगा। इसने हँसी-मजाक भी शुरू किया। कटूशाको निमंत्रण देनेवाली स्त्रीने इस आदमीको दूसरे कमरेमें बुलाया और कटूशाने यह सुना कि वह कह रही है "गाँवसे अभी ताजी आयी है"। इसके बाद इसने कटूशाको बुलाकर बताया कि यह आदमी लेखक है और इसके पास बहुत रुपया है। अगर वह उसे पसन्द आयगी तो वह रुपया पैसा देनेमें कोई भी संकोच न करेगा। कटूशा उसे पसन्द आ गयी और उसने उसे पचीस रुबल दिये और कहा कि मैं तुमसे अक्सर मिलता रहूँगा।

यह पचीस रुबल बहुत जल्द खर्च हो गये। कुछ तो इसने अपनी मौसीको खाने और रहनेके निमित्त दे दिया और बाकी गोटा-पट्ठा और इसी किस्मकी चीजें खरीदनेमें चले गये। कुछ दिनके बाद लेखक महोदयने कटूशाको बुलाया और कटूशा गयी। उसने फिर पचीस रुबल दिये और उसके रहनेके लिए अलग इन्तजाम कर दिया।

जिस जगह कटूशाके लिए मकान किरायेपर लिया गया था वहीं एक हँसमुख नौजवान दूकानदार भी रहता था। इसपर कटूशा आशिक हो गयी। कटूशाने लेखक महाशयसे यह बात बता दी और एक छोटा-सा मकान खुद किरायेपर लेकर रहने लगी। दूकानदार जिसने इससे शादी करनेका बचन दिया था, कटूशाको बिना बताये हुए व्यापारी कामका बहाना करके निजनी चला गया, और कटूशाको यह स्पष्ट हो गया कि उसने इसे छोड़ दिया। कटूशा अकेली रह गयी। कटूशाका विचार था कि वह अपने इसी मकानमें रहती रहे। लेकिन पुलिसवालोंने इससे कहा कि अगर वह ऐसा करना चाहती है तो उसे पीला टिकट

(वेश्याओंका) लेना पड़ेगा और डाक्टरी करानी होगी। कटूशा अब अपनी मौसीके पास फिर वापस आयी। लेकिन उसकी मौसीने, यह देखकर कि वह अच्छे-अच्छे कपड़े पहने है, अब उसे कपड़े धोनेका काम देना उचित न समझा। उसके मतानुसार उसकी भांजी अब इतना ऊँचे उठ चुकी थी कि कपड़ा धोनेका काम उसकी शानके खिलाफ था। कटूशाके सामने यह सवाल भी नहीं आया कि वह कपड़ा धोनेका काम करे या न करे।

मेहनतसे पस्त और दुबली-पतली धोबिनियोंपर यह तरस खाती थी। अपने दुबले-पतले हाथोंसे काम करते-करते तपते हुए कमरेमें, जिसमें साबुनकी भाप और नमी बराबर रहती थी, खड़े-खड़े कपड़े धोते-धोते, और लोहा करते-करते, जिनमेंसे अनेक क्षयी रोगसे बीमार हो रही थीं, जब कटूशा यह सोचती थी कि उसे इन्हीं धोबिनोंकी तरह काम करना पड़ेगा तो उसके रोंगटे खड़े हो जाते थे। ऐसे संकटके समयमें, जब कि कटूशाको कोई संरक्षक नहीं मिल रहा था, एक कुटनी कटूशाको मिल गयी।

कटूशाने इसके कुछ दिन पहलेसे तम्बाकू पीना शुरू कर दिया था और जबसे नौजवान दूकानदारने इसे छोड़ा इसकी शराब पीनेकी आदत भी दिन ब दिन बढ़ती गयी थी! यह बात नहीं थी कि वह शराबके स्वादसे आकर्षित होती थी, बात यह थी कि शराब पीनेके बाद वह अपनी मुसीबतोंको भूल जाती थी, संकोच जाता रहता था और अपनी योग्यतापर उसे अधिक विश्वास पैदा हो जाता था, जो कि शराब न पीनेपर नहीं रहता था। जिस समय वह शराब न पीये होती, उदास और लज्जित रहती थी। कुटनी कटूशाके लिए किस्म-किस्मकी बढ़िया चीजें खानेके लिए लाती थी, जिन्हे कटूशा अपनी मौसीके यहाँ भी भेज देती थी। यह शराब भी लाती थी। कटूशा जब शराब पिये होती थी, यह कुटनी उससे कहा करती थी, मैं तुम्हें इस शहरके सबसे बड़े चकलेमें जगह दिला सकती हूँ। वह उसे वहाँकी सारी सुविधाएँ

बताती और ऐश-आरामकी सम्भावनाएँ समझाती। कटूशाके सामने दो रास्ते थे। एक तो यह कि वह कहीं नौकरी कर ले, जहाँ वह समझती थी उसे जलील होना पड़ेगा, लोग आकर्षित होकर उसे तंग करेंगे और छिप-छिपकर कभी-कभी सम्भोगकी सम्भावना रहेगी। दूसरा रास्ता यह था कि एक ऐसी स्थितिमें आ जाय जो कानून द्वारा स्वीकृत है और आसान है, जिससे खुल्लमखुल्ला और बाकायदा सम्भोगका जीवन व्यतीत करनेका अवसर मिलता है और काफी आमदनी भी है। कटूशाने दूसरा रास्ता पसन्द किया। इस रास्तेपर चलनेमें उसने यह भी देखा कि उसे अपने प्रथम बिगाड़नेवालेसे, दूकानदारसे और उन तमाम आदमियोंसे जिन्होंने इसे धोखा दिया था बदला लेनेका मौका मिलता है। एक बात जिसके प्रलोभनने कटूशाको इस निश्चयकी ओर प्रेरित किया, यह थी कि कुटनीने उसे यह बताया था कि चकलेमें पहुँचकर जिस किस्मका कपड़ा वह पहनना चाहेगी मँगा सकेगी, मखमल, रेशम, साटन, अर्थात् जो चीज भी उसे पसन्द हो। कटूशाके कल्पनापटलपर अपना शृङ्गारित चित्र आ गया—पीले रंगका चमकदार रेशमी स्कर्ट, काले मखमलकी गोट लगी हुई खुली गरदनका छोटी अस्तीनका सलूका—इस सुसज्जित चित्रको देखकर कटूशा मुग्ध हो गयी और उसने पीला टिकट ले लिया। इसी शामको इस कुटनीने एक बग्घी करके उसे उस बदनाम चकले घरमें पहुँचा दिया जो कैरोलाइन अल्न-टॉम्ना कीटैवा चलाती थी।

इसी दिनसे कटूशा मस्लोवाके नैतिक और ईश्वरीय नियमके उल्लंघनके निरन्तर पापपूर्ण जीवनका आरम्भ होता है। इस प्रकारका जीवन लाखों स्त्रियाँ बिताती हैं। और गवर्मेण्ट जो अपनी प्रजाके कल्याणके लिए उत्सुकता दिखाती रहती है, यह नहीं कि इसकी तरफसे आँख बन्द कर लेती है, इसको खुल्लमखुल्ला इजाजत देती है। इस जीवनको बिताते बिताते दसमें नौ स्त्रियाँ कष्टमय रोगसे पीड़ित होकर समयके पहले लुञ्ज-पुञ्ज हो, मर जाती हैं।

इस जीवनको व्यतीत करनेवाली स्त्रियाँ तीसरे पहर देर तक सोती हैं, शाम होनेके कुछ ही देर पहले उठती हैं। रात भर ऐय्याशीमें गुजरता है। तीन और चार बजेके बीचमें आलस्यके साथ गन्दे बिस्तरसे उठना होता है। सोडावाटर, या कहवा पीना, रातके कपड़े पहने हुए कमरेमें इधरसे उधर बेचैनीसे टहलना, खिड़कीकी खुली हुई चिकोंके बाहर अलसाते हुए झाँकना, आपसमें दंगा-फसाद करना, फिर इसके बाद नहाना, शरीर और बालोंमें तेल-फुलेल लगाना, किस्म-किस्मके कपड़े पहनकर देखना कि कौन सबसे सुन्दर मालूम होता है, चकलेखानेकी प्रबन्धिका से तू-तू मैं-मैं, आइनेमें अपने शरीरका देखना, चेहरे और भौंहोंपर रंग लगाना, गरिष्ठ मीठा भोजन, फिर इसके बाद भड़कीले रेशमी कपड़े पहनना, जिसमें शरीरका ज्यादा हिस्सा खुला रहे, सजे और जगमगाते हुए बैठकेमें आकर बैठना इस जीवनका दैनिक कार्यक्रम है। इसके बाद लोग आने लगते हैं। गाना-बजाना होता है। नाच-रंग होता है। और फिर सम्भोग—बुड्ढोंसे, नौजवानोंसे, और प्रौढ़ोंसे, छोटे लड़कोंसे, पंगुल बुड्ढोंसे, अविवाहितोंसे, विवाहितोंसे, दूकानदारोंसे, क्लर्कोंसे, आर्मीनियोंसे, यहूदियोंसे, तातारियोंसे, गरीबोंसे, अमीरोंसे, बीमारोंसे, तन्दुरुस्तोंसे, शराब पीये हुए लोगोंसे और न शराब पीये हुए लोगोंसे, रजीलोंसे शरीफोंसे, फौजके आदमियोंसे और सरकारी नौकरोंसे, विद्यार्थियोंसे और लड़कोंसे, अर्थात् हर वर्ग अवस्था और चरित्रके आदमियोंसे। बक-चख रहती है, मजाक होता है, दंगा फसाद होता है, गाना-बजाना होता है, तम्बाकू पी जाती है, शराब पी जाती है और फिर शराब पी जाती है और तम्बाकू पी जाती है। यह कार्यक्रम शामसे पौ फटनेतक जारी रहता है। सुबहतक छुट्टी नहीं मिलती। इसके बाद गहरी नींद आती है। यही हर दिन होता है और तीसों दिन होता रहता है। सप्ताहके अन्तमें थानेपर जाना होता है, जैसा कि गवर्नमेण्टने कायदा बना रखा है। यहाँपर डाक्टर लोग जो गवर्नमेण्टके नौकर होते हैं, कभी गम्भीरतापूर्वक और अपना कर्तव्य समझकर, और कभी यों ही, मजाकमें इन

स्त्रियोंका मुआइना करते हैं, और इस मुआइनामें उस लज्जाका भी निरादर करते हैं, जिसकी रक्षा प्रकृति, मनुष्योंमें ही नहीं, बल्कि पशुओं-में भी करती है। इसके बाद यह डाक्टर लोग इन स्त्रियोंको इस बातकी लिखी हुई इजाजत दे देते हैं कि यह और इनके साथी-संगी, उसी पाप-पूर्ण जीवनको अगले हफ्ते भी जारी रक्खें, जैसे उन्होंने पिछले हफ्ते जारी रखा था। यही कार्यक्रम प्रति सप्ताह होता रहता है। वैसी ही रातें हमेशा बीतती हैं, चाहे गर्मी हो, या जाड़ा, चाहे छुट्टीका दिन हो या कामका। 'कट्टूशा मस्लोवा' ने सात बरसतक इसी प्रकारका जीवन व्यतीत किया। इस दर्मियानमें उसे अपना मकान एक या दो दफा बदलना पड़ा और एक दफा उसे अस्पताल भी जाना पड़ा। चकलेघरके अपने इस जीवनके सातवें वर्ष, जब कि कट्टूशाकी उमर अट्ठाइस वर्षकी थी, वह घटना हुई जिसके लिए उसे जेल भेजा गया और जिसकी अदालती कारवाईके लिए, आज वह जेलखानेकी बदबूदार हवामें चोर और हत्यारोंके साथ तीन महीनेसे ज्यादा गुजारकर अदालतके सामने जा रही थी।

तीसरा अध्याय

जब मस्लोवा इन दो सिपाहियोंके साथ इतनी दूर चलनेके बाद थकी हुई अदालत पहुँची, राजकुमार डिमिट्री आइवेनिच नेख्लीडू जिसने उसे पथभ्रष्ट किया था, अपने ऊँचे पलंगपर पड़ा हुआ था। पलंगका गद्दा स्प्रिङ्गका लोचदार था और उसके ऊपर परकी चादर बिछी हुई थी। एक साफ बुर्राक, अच्छी तरहसे लोहा की हुई रातको पहननेवाली सूती कमीज उसके बदनपर थी। वह एक सिगरेट पी रहा था और यह सोच रहा था कि आज क्या करना है और कल क्या हुआ।

कल शामकी बात याद करते हुए, इसे याद आयी कि कलकी शाम इसने कोर्चगिन्सके यहाँ बितायी थी। कोर्चगिन्स एक सम्पन्न और ऊँचे खानदानके लोग थे। इस कुटुम्बकी लड़कियोंके साथ हर एक आदमी शादी करनेकी आशा करता था। इस बातको सोचकर राजकुमार डिमिट्रीने लम्बी साँस ली, और सिगरेटका टुकड़ा, जो उसके हाथमें बे-जला बचा था, फेंक दिया। अपने चाँदीके सिगरेट केससे दूसरा सिगरेट निकालकर सुलगाना चाहता था, लेकिन फिर अपना इरादा बदल दिया। इसने अपने चिकने सफेद पैरोंको पलंगसे नीचे उतारा, स्लीपर पहनी, और एक रेशमी चोंगा अपने कन्धेपर डाला। वह तेजीके साथ लेकिन अलसाता हुआ, कपड़े पहननेके कमरेमें, जिसमें आडिक्लोन और दूसरे इत्रोंकी सुगन्धियाँ भीनी हुई थीं, चला गया। वहाँ इसने सावधानीके साथ अपने दाँतोंको मंजनसे साफ किया और खुशबूदार पानीसे कुल्ली की। इसके बाद इसने सुगन्धित साबुन लगाकर अपने हाथ धोये और अपने लम्बे नाखूनोंको विशेष सावधानीसे साफ किया। संगमरमरकी चिलमचीपर, जो दीवारमें जड़ी हुई थी, जाकर इसने अपना चेहरा और मजबूत गर्दन धोयी। इसके बाद वह

एक तीसरे कमरेमें चला गया, जहाँपर फौवारेदार नल स्नानके लिए तैयार था। अपने सफेद, गठीले और तगड़े शरीरको इस प्रकार ताजा करनेके बाद और उसे मोटे तौलियेसे सुखाकर उसने अपने नफीस, नीचे पहननेवाले कपड़े पहने। जूते पहने और एक शीशेके सामने बैठकर इसने अपनी काली दाढ़ीमें और घूँघरवाले बालोंमें जो चाँदपर कुछ कम हो रहे थे, कंघी की।

सारी चीजें जो इसने इस्तेमाल कीं—हर एक चीज जो इसके हाथ मुँह धोने और नहानेके काममें आयी—इसके कपड़े, जूते, नेकटाई, पिन, कालरके बटन, सब बढ़िया किस्मकी तथा टिकाऊ और कीमती थीं। दस किस्मकी टाइयों और पिनोंमेंसे, इसने वही उठा लिया जो पहले इसके हाथमें आ गया। एक समय था जब ये चीजें इसको नयी और दिलचस्प मालूम होती थीं, लेकिन अब यह बिलकुल उदासीन हो गया था।

राजकुमार नेख्लीडूने इसके बाद कपड़े पहने, जिन्हें ब्रशसे साफ करके, और बिल्कुल तैयार करके, पहलेसे एक कुर्सीपर रख दिया गया था। साफ सुथरे हो, और इत्र लगा, (यद्यपि यह बिल्कुल तरोताजा नहीं हुआ था) वह खानेके कमरेमें गया। इस लम्बाकार कमरेमें एक चौगोड़ी मेज लगी हुई थी, जिसके हरएक पाये शेरके पंजेके रूपमें खरादे हुए थे, और जो इसीलिए देखनेमें भव्य मालूम होती थी। इसीके मुकाबलेमें एक तरफ एक बड़ी खुली आलमारी रक्खी हुई थी। तीन आदमियोंने खानेके इस कमरेके फर्शको, इसके एक दिन पहले, मल-मलकर चमकाया था। मेजके ऊपर कलफ किया हुआ एक सफेद कपड़ा बिछा हुआ था, जिसके ऊपर बीचमें एक एकाक्षरी चिह्न था और इसके ऊपर खुशबूदार कहवासे भरी हुई चाँदीकी कहवादानी रखी हुई थी। एक शक्करदानी थी। गर्म बालाईसे भरा हुआ एक जग, कटोरा रखा हुआ था और एक टोकरी थी जिसमें ताजी डबल रोटी, बिस्कुट और रस्क रखे हुए थे। इन तश्तरियोंके पास Revuedes Deux

Mondes नामके समाचारपत्रका आखिरी अंक, और कुछ चिट्ठियाँ रखी हुई थीं।

नेख्लीडू चिट्ठियाँ खोलने ही जा रहा था कि इतनेमें एक गठीले शरीरकी प्रौढ़ा स्त्री मातमी कपड़ा पहने, और अपनी माँगको जो चौड़ी होती जा रही थी, एक गोटेदार टोपीसे छिपाये हुए, कमरेमें हलके हलके दाखिल हुई। इसका नाम था ऐग्राफीना पेट्रोवना। यह नेख्लीडूकी माताकी नौकरानी थी। इसकी स्वामिनी इसी मकानमें अभी हालमें ही मरी थीं। लेकिन यह उसके लड़केके घरबारकी देखरेखके लिए रह गयी थी। ऐग्राफीना पेट्रोवना नेख्लीडूकी माँके साथ कुल मिलाकर करीब दस बरस विदेशोंमें रह आयी थी, और इसकी शकल-सूरत और चाल-ढाल अच्छे घरकी स्त्रियोंकी-सी थी। नेख्लीडूके कुटुम्बमें यह बचपनसे ही थी, और डिमिट्री आइवनिचको उस समयसे जानती थी जब इसको लोग "मितिनका" कहते थे। यह इसका दुलारका नाम था।

"नमस्कार, डिमिट्री आइवनिच।"

"नमस्कार एग्राफीना पेट्रोवना! क्या बात है?" नेख्लीडूने पूछा।

"राजकुमारीका एक खत आया है, या तो माँका है या लड़कीका। थोड़ी देर हुई नौकरानी इसे लायी थी, और वह मेरे कमरेमें बैठी हुई है।" ऐग्राफीना पेट्रोवनाने जवाब दिया और अर्थसूचक मुस्कराहटके साथ खत राजकुमार नेख्लीडूके हाथमें दे दिया।

"अच्छी बात है, एक सेकेंड रुक जाओ" नेख्लीडूने कहा और चिट्ठी ले ली। ऐग्राफीना पेट्रोवनाकी मुस्कराहट देखकर राजकुमारकी त्योरियोंमें हल्कासा बल आ गया।

इस मुस्कराहटका मतलब यह था कि यह चिट्ठी छोटी राजकुमारी कोरचागिनाने भेजी है। ऐग्राफीना पेट्रोवना चाहती थी, राजकुमार डिमिट्री उससे विवाह कर ले। उसकी इस धारणाको समझकर नेख्लीडू चिढ़ रहा था।

"तो मैं उससे कहे देती हूँ कि वह ठहरे।" यह कहती हुई ऐग्रा-

फीना पेट्रोवना रोटी काटनेके एक चाकूको, जो ठीक जगहपर नहीं लगा था, ठीक जगहपर रखती हुई, कमरेसे बाहर चली गयी।

नेख्लीड्ड इस महकती हुई चिट्ठीको खोलकर पढ़ने लगा।

यह चिट्ठी मोटे सफेद कागजपर, जिसके किनारे खुरखुरे थे, लिखी हुई थी। देखनेसे लिखावट अंग्रेजी मालूम होती थी। इसमें लिखा था—

"चूँकि मैंने आपकी स्मरणशक्तिका काम अपने ऊपर ले लिया है इसलिए मैं आपको इस बातकी याद दिलानेकी धृष्टता करती हूँ कि आज २८ अप्रैलको आपको अदालतमें जूरी बनकर जाना है और इसलिए आप किसी तरहसे भी हमारे और कोल्लसोवके साथ चित्रालय न जा सकेंगे जिसका वादा आपने कल अपनी आदतके मुताबिक जल्दबाजीमें किया था। हाँ, अगर आप अदालतको तीन-सौ रुबल जुर्मानेका दें तो आप चल सकेंगे। लेकिन तीन सौ रुबल तो वह रकम है जिसके लिए आपने एक घोड़ा नहीं खरीदा। मुझे यह बात आपके चले जानेके बाद याद आयी। इसलिए भूलियेगा मत।"

राजकुमारी एम० कोरचागिना

पत्रके दूसरी तरफ यह लिखा था :—

"मामा कहती हैं कि मैं आपको यह लिख दूँ कि आपके लिए रात तक जगह रिजर्व रहेगी, आप जरूर जरूर आइये, चाहे कितनी ही देर क्यों न हो जाय।"

नेख्लीड्डके माथेपर बल पड़ गया। वह खत चालाकीसे भरे हुए उन अदृश्य तागोंके फन्दोंका एक सिलसिला था, जो राजकुमारी कोरचागिना, दो महीनेसे इनको पकड़में लानेके लिए और अधिकाधिक जालमें फँसानेके लिए, इनके ऊपर डाल रही थी। लेकिन बात यह थी कि जो नौजवान शादीकी अवस्था पार कर जाते हैं उनमें, यदि वह बहुत ज्यादा मोहवश नहीं हो गये हैं, एक प्राकृतिक संकोच पैदा हो जाता है। दूसरी बात यह थी कि अगर नेख्लीड्ड विवाहका इरादा भी कर लेते, तो शादीकी बातचीत शुरू न करनेके लिए इनके पास काफी कारण थे।

वह कारण यह नहीं था कि आजसे दस बरस पहले इसने, मस्लोवाको भ्रष्ट करनेके बाद, उसे छोड़ दिया था। यह बात तो यह बिल्कुल भूल ही गया था। अगर याद भी होती तो यह शादी न करनेकी कोई वजह नहीं हो सकती थी। असल वजह यह थी कि एक विवाहिता स्त्रीके साथ उसका सम्बन्ध हो गया था और यद्यपि यह समझता था कि वह सम्बन्ध टूट गया, वह स्त्री ऐसा नहीं समझती थी।

नेख्लीड्व औरतोंके सामने कुछ झेंपता था और इसी झेंपकी वजहसे इस विवाहिता स्त्रीके दिलमें, जो एक बड़े आदमीकी पत्नी थी और पासके जिलेमें रहती थी जहाँ नेख्लीड्व एक चुनावके मौकेपर गया था, नेख्लीड्वको अपने वशमें लानेकी इच्छा पैदा हुई। इस स्त्रीने इसको अपनी ओर आकर्षित करके इससे काफी घनिष्ठता बढ़ा ली और यह इसमें दिन-दिन ज्यादा फँसता गया, यद्यपि यह स्त्री दिन प्रति दिन नेख्लीड्वके लिए अरुचिकर होती जाती थी। प्रलोभनमें फँस जानेके बाद नेख्लीड्व अपने दिलमें अपनेको अपराधी अनुभव करने लगा और बिना उसकी मर्जीके इस बन्धनको तोड़नेकी इसमें हिम्मत न रही। यही वजह थी कि नवयुवती राजकुमारी कोरचागिनाके साथ विवाह करनेकी बातचीत करनेमें इसको संकोच होता था, इच्छा इसकी चाहे कितनी भी क्यों न रही हो।

मेजपर रखे हुए पत्रोंमें एक पत्र इस स्त्रीके पतिका था। डाकखानेकी मुहर और उसकी लिखावटको देखकर नेख्लीड्वका चेहरा लाल हो गया और उसकी भावनाएँ जाग्रत होने लगीं। खतरा सामने आनेपर नेख्लीड्वमें यह बात हमेशा पैदा हो जाती थी।

लेकिन यह आवेश फौरन ही खतम हो गया, क्योंकि पति महाशयने पत्रमें लिखा था कि मईके अन्तमें एक मीटिंग होनेवाली है जिसमें नेख्लीड्वको जरूर आना चाहिये क्योंकि इस मीटिंगमें स्कूल और सड़कोंके बारेमें एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पेश होगा जिसके विरोधकी आशंका तटस्थ दलके लोगोंसे की जाती थी।

यह सज्जन अर्थात् पति महोदय उदार दलके आदमी थे और उन लोगोंकी सहायतासे, जो इससे सहमत थे, यह प्रतिक्रियावादकी उस धाराका मुकाबिला करना चाहते थे जो रूसके सम्राट् अलिक्जेंडर तृतीयके राज्यमें जोरोंसे बहती थी। इस संघर्षमें यह सज्जन इतने लीन हो गये थे कि इन्हें अपने कुटुम्बकी दुर्दशाका कोई पता न था।

इस आदमीके सम्बन्धमें जितनी जितनी विकट घड़ियाँ नेख्लीडूने बितायी थीं, उसे सब याद आ गयीं। उसे याद आ गया कि कैसे एक दिन उसकी यह धारणा हो गयी थी कि पतिने सब हाल जान लिया और कैसे वह पतिको द्वन्द्व लड़ाईके लिए निमंत्रण देनेवाला था, और कैसे उस समय नेख्लीडूने निश्चय किया था हम अपनी पिस्तौलकी गोली* आसमानमें मारेंगे। उसे वह भयंकर दृश्य भी याद आ गया जब यह औरत निराश होकर घरसे बाहर निकलकर और पानीमें डूबकर मर जाना चाहती थी, और नेख्लीडू इसकी तलाशमें निकला था।

नेख्लीडूने अपने मनमें सोचा, मैं तो अब वहाँ जा नहीं सकता और न उस समयतक कुछ कर ही सकता हूँ जबतक उस स्त्रीका पत्र नहीं आ जाता। एक सप्ताह पहले उसने इस स्त्रीको एक निर्णयकारी पत्र लिखा था, जिसमें अपना अपराध स्वीकार करते हुए इस बातकी तैयारी दिखायी थी कि मैं प्रायश्चित्तके लिए तैयार हूँ। लेकिन साथ ही साथ यह भी लिख दिया था कि उसीके कल्याणकी दृष्टिसे सम्बन्ध अब खतम होना चाहिये। इस पत्रका अभीतक कोई उत्तर नहीं आया था। जवाबका न आना एक अच्छा चिन्ह हो सकता था क्योंकि अगर वह इस सम्बन्धको तोड़नेके लिए राजी न होती तो उसने फौरन खतका जवाब दिया होता या खुद चली आती जैसा कि इसके पहले वह कर चुकी थी। नेख्लीडूने यह भी सुना था कि कोई एक दूसरा अफसर इस

---

* पश्चिमी देशोंमें ऐसे मामलोंमें जब आत्मसम्मानका प्रश्न आता था, अपमानित द्वन्द्व युद्धका निमन्त्रण देता था और मैदानमें पिस्तौलसे एक दूसरेपर आक्रमण करके मामला तै किया जाता था।

स्त्रीके प्रति आकर्षित हो रहा है, और यद्यपि यह समाचार सुनकर उसके दिलमें द्वेष-जनित संताप पैदा हुआ था, लेकिन उसे इस बातकी भी आशा बँध गयी थी कि दगाबाजीकी वह स्थिति जिसने उसके हृदयको संक्षोभित कर रखा है, खतम हो जायगी।

दूसरा पत्र उसके मुख्तारका था। मुख्तारने पत्रमें यह लिखा था कि राजकुमारका, रियासत देखनेके लिए आना जरूरी है ताकि रियासत-पर उसका बाकायदा कब्जा हो जाय। मुख्तारने यह भी पूछा था कि भविष्यमें रियासतका किस तरह इन्तजाम किया जाय। राजकुमारकी माताके समयमें जिस तरहका प्रबन्ध होता था वही कायम रक्खा जाय या उस तरहसे प्रबन्ध किया जाय जैसा उसने राजकुमारकी स्वर्गवासी माताको बताया था और आज भी जिसकी तजबीज पेश कर रहा है। मुख्तारकी राय यह थी कि अब गाय बैल बढ़ानेकी जरूरत नहीं और न इस बातकी आवश्यकता है कि किसानोंसे जमीन लेकर अपना फार्म बनाया जाय। मुख्तारने यह लिखा था कि उसके बताये हुए ढंगसे रियासतका इन्तजाम करनेमें काफी मुनाफा रहेगा। उसने इस बातकी भी माफी माँगी थी कि तीन हजार रुबल जिसे पहिली तारीखको उसे भेज देना चाहिये था वह न भेज सका और वादा किया था कि यह आमदनी अगली डाकसे भेज दी जायगी। आमदनी भेजनेमें देरीकी यह वजह बतायी थी कि किसानोंसे लगान वसूल नहीं हुआ था। किसान लोग दिन प्रति दिन बेईमान होते जा रहे हैं और लगान वसूल करनेके लिए बार-बार अदालतमें दावा करना पड़ता था।

यह पत्र कुछ रुचिकर था कुछ अरुचिकर। रुचिकर इसलिए कि उसके हृदयमें यह भावना पैदा हुई कि मैं इतनी बड़ी जायदादका मालिक हूँ। अरुचिकर इसलिए कि नेखलीडू हर्बर्ट स्पेंसरका उत्साही भक्त था। अब, जब वह एक बड़ी रियासतका वारिस हो गया स्पेंसरकी "सोशल स्टैटिक्स" नामकी किताबमें बताये हुए सिद्धान्त इसपर लागू होते थे अर्थात् यह कि जमींदारीकी प्रथा यानी जमीनपर एक

आदमीका निजी कब्जा, न्यायके विरुद्ध है। नेख्लीडूने यूनिवर्सिटीमें इस विषयपर लेख भी लिखे थे, और अपने सिद्धान्तके अनुसार, अर्थात् यह कि जमीनपर एक आदमीका निजी कब्जा नहीं होना चाहिये, उसने पितासे पायी हुई जायदाद जो ५०० एकड़ थी, किसानोंको दे दिया था। अब उसे अपनी माताकी रियासत मिली थी। उसके सामने दो रास्ते थे या तो वह इस जायदादको भी किसानोंको दे दे, जैसा कि उसने दस बरस पहले अपने पिताकी जायदाद दे दी थी, या अपने दिलमें चुपचाप इस बातको स्वीकार कर ले कि उसके पुराने विचार गलत थे।

वह पहले रास्तेपर नहीं चल सकता था, क्योंकि सिवाय रियासतके उसके पास आमदनीका कोई दूसरा साधन नहीं था। गवर्नमेंटकी नौकरी वह करना नहीं चाहता था। इसके अलावा उसने शानदार आदतें डाल ली थीं जिन्हें वह छोड़ नहीं सकता था। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि अब उसके हृदयमें पहलेकी भावनाएँ भी नहीं मौजूद थीं। उसका पुराना दृढ़ विश्वास, जवानीकी दृढ़ता और कुछ अद्‌भुत काम कर दिखानेका हौसला, खतम हो चुका था।

अब रही दूसरे रास्ते चलनेकी बात। वह भी उसे असम्भव-सी मालूम हुई क्योंकि अगर वह इस रास्तेपर चलता तो इसका यह मतलब होता कि वह इस बातको स्वीकार करता है कि स्पेन्सरने "सोशल स्टैटिक्स" में जमींदारी प्रथाके अन्याय-पूर्ण होनेके बारेमें जो कुछ लिखा है वह गलत है, और साथ ही "हेनरी जार्ज" ने इस बातके समर्थनमें जो कुछ उसके बाद लिखा वह भी गलत है। इसलिए इस अंशमें मुख्तारका पत्र अरुचिकर था।

चौथा अध्याय

कहवा पीनेके बाद नेख्लीडू अपने पढ़नेके कमरेमें चला गया। अदालतका समन देखकर उसे इस बातका पता चलता था कि अदालतमें कितने बजे हाजिर होना है और राजकुमारीके पत्रका जवाब भी देना था। वह अपने चित्रशालावाले कमरेसे होकर गुजरा। यहाँ एक अधबनी तस्वीर खड़ी थी। कुछ तस्वीरें दीवारपर लटकी हुई थीं। इनको देखकर इसके दिलमें यह भावना पैदा हुई कि कलामें उन्नति करनेकी उसमें योग्यता नहीं है। अकुशल होनेकी भावना उसके हृदयपर छा गयी। पिछले कुछ दिनोंसे इस प्रकारकी भावनाएँ उसके दिलमें पैदा होती रहती थीं। लेकिन यह कहकर वह अपने दिलको समझा लिया करता था कि सौन्दर्यका मेरा आदर्श बहुत ऊँचा है, इसलिए हमारे काम अपूर्ण रहते हैं। फिर भी कुछ न कुछ कटुता दिलमें रह ही जाती थी। आजसे सात वर्ष पहले इस बातका दृढ़ विश्वास रखते हुए कि उसमें कलाकी प्रतिभा है, इसने फौजकी नौकरी छोड़ दी थी, और कलाके अपने उच्च आदर्श स्तम्भपर बैठकर वह अन्य हर प्रकारकी प्रवृत्तियोंको तिरस्कारकी दृष्टिसे देखता था। लेकिन अब यह नतीजा निकला कि वह समझने लगा कि ऐसा करनेका उसे अधिकार नहीं था। इसलिए कोई भी चीज जो उसे अपनी अपूर्णताकी याद दिलाती थी उसे अच्छी नहीं लगती थी। उसने अपनी चित्रशालाकी शानदार चीजोंको देखा और उसका दिल उदास हो गया। अतः जब वह अपने पढ़नेके कमरेमें दाखिल हुआ, उसका मन प्रसन्न नहीं था। यह कमरा बड़ा था ऊँचा था, जिसमें आराम और आवश्यकताकी सब चीजें सुविधाके अनुसार सजी हुई रखी थीं। कमरेमें पहुँचकर उसने देखा कि आलमारीके खानेमें समन रखा है और उसपर "तुरन्त"की

एक चिट लगी हुई है। उसे ग्यारह बजे अदालतमें हाजिर होना है।

नेख्लीडू बैठ गया और राजकुमारीके खतका जवाब लिखने लगा। जवाबमें इसने राजकुमारीको धन्यवाद दिया और इस बातका वादा किया कि वह शामके खानेपर आनेकी कोशिश करेगा। पत्र लिखकर उसने उसे एक बार और पढ़ा; इसने देखा कि इस पत्रके शब्दोंमें घनिष्ठता आ गयी है, इसलिए उसे फाड़कर फेंक दिया। दूसरा लिखा। इसमें निरसता दिखलायी पड़ी। इसे पढ़कर राजकुमारी कहीं नाराज न हो जाय इसलिए उसने उसे भी नोच डाला और बिजलीकी घण्टीका बटन दबाया। फौरन ही एक बुड्ढा उदास-मुँह नौकर दाढ़ी मूँछ मुड़ाये गलमुँच्छे रक्खे, सफेद सूती वर्दी पहने कमरेमें दाखिल हुआ।

"बग्घी मँगाओ।" नेख्लीडूने कहा।

"बहुत अच्छा हुजूर।" नौकर बोला।

"और जो आदमी चागिनाके यहाँसे आया है और इन्तजार कर रहा है, उससे कह दो कि मैं निमंत्रणके लिए कृतज्ञ हूँ, और आनेकी कोशिश करूँगा।"

"बहुत अच्छा हुजूर।"

नेख्लीडू दिलमें सोचने लगा कि जबानी सन्देश भेजना शिष्टाचारकी बात न होगी, लेकिन मैं खत भी तो नहीं लिख सकता। बहरहाल मैं आज राजकुमारीसे मिल लूँगा। यह सोचते हुए वह अपना ओवर-कोट लेनेके लिए चला गया।

नेख्लीडू जब घरसे बाहर निकला, एक बग्घी, जिसके पहियोंमें रबरके टायर लगे थे और जो इसके यहाँ अक्सर आती रहती थी, दर्वाजेपर खड़ी दिखाई दी। कोचवानने देखते ही कहा, "हुजूर कल राजकुमार कोरचागिनाके यहाँसे आप निकले ही होंगे कि मैं पहुँचा, दरबानने बताया कि हजूर अभी गये"। कोचवानको मालूम था कि नेख्लीडू कोरचागिनाके यहाँ आते जाते हैं। इसलिए यह वहाँ पहुँचा था कि इसकी बग्घी किरायेपर कर ली जायगी।

नेख्लीड्रने दिलमें कहा, देखो कोचवानको भी कोरचागिना कुटुम्बसे मेरा सम्बन्ध मालूम है। और फिर इसके दिलमें यह सवाल पैदा हुआ कि राजकुमारी कोरचागिनासे उसे विवाह करना चाहिए या नहीं। लेकिन इस समय उसकी मनोदशा ऐसी थी कि वह किसी भी प्रश्नका निर्णय नहीं कर सकता था और इसलिए इस प्रश्नका निर्णय भी नहीं कर सका।

विवाहके पक्षमें यह बात थी, नेख्लीड्रने सोचा, कि अगर मैं शादी कर लूँगा तो गृहस्थीका आनन्द तो मुझे मिलेगा ही, नैतिक जीवन व्यतीत करनेकी भी सम्भावना पैदा हो जायगी और अगर कुटुम्ब हुआ, बाल बच्चे हुए तो मेरे शून्य जीवनमें एक लक्ष्य भी पैदा हो सकता है। विवाहके खिलाफ यह बात थी कि उसके दिलमें यह डर था जो जवानी पार कर जानेपर अविवाहित लोगोंके दिलमें होता है कि स्वतंत्रता छिन जायगी। उस रहस्यपूर्ण प्राणीके प्रति जिसे स्त्री कहते हैं, उसके दिलमें छिपी हुई भयकी भावना तो थी ही।

"मिसी"के साथ विवाह करनेके पक्षमें (इसका असली नाम "मेरी" था लेकिन कुछ कुटुम्बोंमें घरका एक नाम दूसरा होता है, इसको घरमें मिसी कहते थे) यह बात थी कि वह एक अच्छे कुटुम्बकी लड़की थी और उसकी हर एक बात अपने ढंगकी अनोखी थी। उसके बातचीत करनेका, चलनेका, हँसनेका तरीका साधारण लोगोंसे बिल्कुल भिन्न था। यद्यपि इसमें कोई विशेषता नहीं थी फिर भी ऊँचे कुटुम्बोंमें पलनेसे जो एक विशेष शिष्टाचार और तमीजदारी आ जाती है, इसमें पायी जाती थी और इसकी नेख्लीड्र बड़ी कद्र करता था। इसके अलावा यह बात भी थी कि यह लड़की इससे और सबकी अपेक्षा ज्यादा दिलचस्पी रखती थी और इसलिए इसके दिलकी बात समझती थी। दिलकी बात समझने-का अर्थ यह हुआ कि वह इसमें योग्यता देखती थी और नेख्लीड्रके मतानुसार यह उसकी बुद्धिमत्ताका प्रमाण था। मिसीसे शादी करनेके खिलाफ यह बात थी कि नेख्लीड्र सोचता था कि सम्भव है, इससे अधिक सुशील लड़की मिल जाय। मिसी सत्ताइस वर्षकी भी हो चुकी है और

शायद मैं ही पहला आदमी नहीं जिससे मिसीने प्रेम जाहिर किया हो। यह आखिरी ख्याल दुःखदायी था। नेख्लीडूके आत्म-अभिमानको इस विचारसे ठेस लगती थी, कि मिसीने इसके पहले किसीसे प्रेम किया है। यद्यपि वह यह बात मानता था कि मिसीने अगर इसके पहले किसीसे प्रेम किया तो इसमें इसका दोष नहीं, क्योंकि मिसीको आखिर पहलेसे ही कैसे मालूम हो सकता था कि मुझसे उसकी मुलाकात होगी। फिर भी यह ख्याल, कि वह किसी दूसरेसे प्रेम कर सकती है, नेख्लीडूके दिलको चोट पहुँचाता था। कहनेका अभिप्राय यह कि शादीके पक्ष और विपक्षमें बराबर बातें थीं। इसलिए नेख्लीडू असमंजसमें था और अपने ऊपर हँसता था।

अन्तमें नेख्लीडूने सोचा कि जो हो, जबतक मेरे पास मेरी वेसीलीवनाका अर्थात् उस दूसरे जिलेकी बड़े आदमीकी स्त्रीका पत्र नहीं आ जाता और उससे मेरा नाता बिलकुल नहीं टूट जाता, मैं कुछ नहीं कर सकता। यह ख्याल कि अभी किसी निर्णयपर न पहुँचा जाय,उसके लिए शान्तिजनक था। मैं इन प्रश्नोंपर बादमें विचार कर लूँगा। नेख्लीडूने अपने मनमें कहा, और बग्घी धीरे-धीरे अलकतरेकी सड़कपर अदालतकी तरफ रवाना हो गयी।

"मुझे अपना सार्वजनिक कर्तव्य ईमानदारीके साथ पूरा करना चाहिये, जैसी कि मेरी आदत है। इसके अलावा यह कर्तव्य दिलचस्प भी होता है।" यह थे नेख्लीडूके मनके विचार, जब वह दरबानके सामनेसे होकर अदालतके कमरेमें दाखिल हुआ।

पाँचवाँ अध्याय

अदालतके बरामदेमें काफी चहल-पहल पैदा हो चुकी थी। चपरासी लोग, हाँफते हुए जमीनपर अपने पैर भदभदाते, किस्म-किस्मके कागज और सन्देशे इधरसे उधर ले आ और ले जा रहे थे। वकील मुख्तार और मुहर्रिर भी इधरसे उधर आ जा रहे थे। मुद्दई और मुद्दालेह जो गिरफ्तार नहीं थे, उदास घूम रहे थे या बैठे-बैठे इन्तजार कर रहे थे।

"अदालत कहाँ है ?" नेख्लीडूने एक चपरासीसे पूछा।

"कौन-सी अदालत ?" दो अदालतें हैं, एक दीवानी और दूसरी फौजदारी।

"मैं जूरीमें हूँ।"

"तो आपका मतलब फौजदारी अदालतसे है। यहाँसे दाहिनी ओर फिर बायें जाइये, दूसरे दरवाजेमें फौजदारीकी अदालत है।"

नेख्लीडू इस सूचनाके अनुसार बढ़ा। उस दरवाजेपर दो आदमी इन्तजार कर रहे थे। इनमेंसे एक लम्बा था और एक मोटा था। यह व्यापारी था, दयालु हृदय, कुछ खा-पी चुका था और बहुत खुशीमें था। दूसरा यहूदी जातिका कोई दूकानदार मालूम होता था। ये लोग बाजार भावके बारेमें कुछ बातचीत कर रहे थे। नेख्लीडूने इनसे पूछा "क्या यही जूरी लोगोंका कमरा है ?"

"जी हाँ जनाब, यही है। हमलोगोंमेंसे एक जूरीमें हैं। क्या आप भी हैं ?" व्यापारीने हँसते हुए पूछा।

"जी हाँ, मैं भी हूँ।"

"बड़ी अच्छी बात है" व्यापारीने कहा। "हमलोग साथ-साथ काम करेंगे, मेरा नाम बक्लाशफ् है, मैं द्वितीय गिल्डका व्यापारी हूँ" यह कहते हुए उसने अपना मुलायम लोचीला और चौड़ा हाथ मिलानेके

लिए बढ़ाया। "मुझे किससे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।"

नेख्लीडूने अपना नाम बता दिया और जूरीके कमरेमें दाखिल हो गया।

इस कमरेमें भिन्न-भिन्न प्रकारके दस आदमी थे। ये लोग अभी-अभी आये थे। कुछ तो बैठे हुए थे, कुछ इधर-उधर टहल रहे थे, कुछ एक दूसरेसे परिचय कर रहे थे। इनमें एक पेन्शन पाये हुए कर्नल साहब वर्दी पहने हुए थे। कोई फ्राक कोट पहने था, कोई मार्निंग कोट, और एक ऐसे थे, जो किसानी पोशाक पहने हुए थे। इन सबके चेहरोंपर एक सार्वजनिक कर्तव्य करनेकी आशासे पैदा होनेवाला सन्तोष झलकता था। इनमेंसे बहुत-से ऐसे भी थे जो अपना काम-काज छोड़कर आये थे, और बहुत-से इसकी शिकायत कर रहे थे।

जूरीके लोग आपसमें मौसमके बारेमें या वसन्त ऋतुके जल्दी आ जानेके बारेमें, या व्यापारकी सम्भावनाओंपर बातचीत कर रहे थे। कुछ तो ऐसे थे जिनका एक दूसरेसे परिचय हो चुका था और कुछ ऐसे थे जो अन्दाज लगा रहे थे कि कौन-कौन हैं? जिन लोगोंसे नेख्लीडूका अभीतक परिचय नहीं हुआ था वे इससे परिचय करनेकी उतावली दिखा रहे थे, क्योंकि इसे वे इज्जतकी बात समझते थे और नेख्लीडू शानसे बैठा हुआ इस बातका इन्तजार कर रहा था कि लोग आकर उससे मिलें जैसा कि वह अपरिचित लोगोंके साथ बराबर करता था। अगर नेख्लीडूसे कोई पूछता कि तुम और लोगोंसे अपनेको ऊँचा क्यों समझते हो, तो शायद वह उसकी कोई वजह न बता सकता। पिछले दिनों जिस प्रकारका जीवन वह व्यतीत करता था, उसमें कोई विशेष श्रेष्ठता नहीं पायी जाती थी। वह इस बातको अच्छी तरह जानता था कि अगर मैं अंग्रेजी, फ्रांसीसी, और जर्मन भाषा अच्छे लहजेमें बोल लेता हूँ या बड़ीसे बड़ी दूकानका खरीदा हुआ कीमती कपड़ा, टाई या बटन पहनता हूँ, तो यह श्रेष्ठ होनेका कोई कारण नहीं समझा जा सकता। फिर भी, दूसरोंसे श्रेष्ठ होनेका उसका दावा था। दूसरे

इनकी इज्जत करें, नेख्लीड्ल यह अपना अधिकार समझता था, और अगर कोई इसे सम्मान न देता तो बुरा मानता था। जूरीके कमरेमें पहुँचकर इसकी भावनाको अपमानपूर्ण व्यवहारसे ठेस पहुँचती थी। जूरीमें एक आदमी ऐसा भी था जिसे नेख्लीड्ल पहलेसे भी पहचानता था। इसका नाम पीटर गेरासीमोविच था, और यह इसकी बहिनके लड़कोंको पहले पढ़ाता था। नेख्लीड्लको इस आदमीका अल्ल नहीं मालूम था और इस बातको उसने जाहिर भी कर दिया।"[१]

यह आदमी आजकल स्कूलमें टीचर था। नेख्लीड्लको यह बात नागवार मालूम हुई कि वह इससे घुल-मिलकर बातचीत करना चाहता है, हँसता है, और इस तरह बदतमीजी करता है।

पीटर गेरासीमोविचने नेख्लीड्लको देखते ही सलाम किया और बोला—"आ-हा! आप भी फँसे और निकलकर भाग न सके" यह कहते हुए पीटर ठठाकर हँस पड़ा।

"मैंने कभी भी निकलकर भागनेकी कोशिश नहीं की" नेख्लीड्लने गम्भीरता और बेरुखीसे जवाब दिया।

"इसीका नाम तो देश-सेवा है! लेकिन थोड़ी देर इन्तजार कीजिये, जब भूख लगने लगेगी और नींद आयेगी तब तुम कुछ दूसरी ही बात करने लगोगे।"

नेख्लीड्लने सोचा कि यह पादरीका बच्चा अब मुझसे "तू" करके ही बात करनेवाला है, इसलिए वह उस जगहसे अपना चेहरा गम्भीर करके टल गया और अपने मुँहपर ऐसी उदासी कर ली कि अगर अपने तमाम रिश्तेदारोंके मरनेकी खबर सुनता तो भी वह इतना उदास न दिखाई देता। वहाँसे वह एक दूसरी गोष्ठीके पास पहुँचा, जो एक दाढ़ी मूँछ मुड़े, लम्बे और शानदार आदमीके चारों ओर इकट्ठा थी। यह लम्बा

---

१ "नेख्लीड्ल" इस बातको प्रकट करना चाहता था कि इस टीचरसे उसका परिचय इतना कम था कि उसे इसकी अल्ल भी नहीं मालूम। यह याद रखना चाहिये कि रूसमें बातचीत करनेमें शायद ही कोई अल्ल इस्तेमाल करता हो।

और शानदार आदमी कोई बात बड़े जोशके साथ बता रहा था। दीवानीकी अदालतमें कोई मुकदमा चल रहा था, उसके बारेमें, ऐसा जाहिर हो रहा था, कि यह बहुत कुछ जानता है। यह आदमी बड़े-बड़े वकीलों और जजोंके नाम ले रहा था और बता रहा था कि देखो कितने आश्चर्यकी बात है कि एक मशहूर वकीलने मुकदमेमें एक ऐसी नयी बात पैदा कर दी, जिससे एक बुड्ढी औरतको, जो हकपर थी, अपने विरोधी-को काफी रकम हरजानेमें देनी पड़ी।

"यह वकील बड़ा प्रतिभाशाली है।" इसने कहा।

सुननेवाले इसकी बात आदरपूर्वक और ध्यानसे सुन रहे थे। कुछ बीच-बीचमें बोल उठते थे, लेकिन यह आदमी उन्हें रोक देता था। मानों उस सम्बन्धमें जो कुछ था, सिर्फ यही जानता था।

यद्यपि नेखलीडूको अदालत आनेमें देर हो गयी थी, फिर भी उसे बहुत देरतक इन्तजार करना पड़ा। अदालतके एक मजिस्ट्रेट अभीतक नहीं आये थे। इसलिए सबलोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

छठाँ अध्याय

अदालतका प्रमुख मजिस्ट्रेट जल्दी ही आ गया था। यह लम्बा, मोटा-ताजा और लम्बे सफेद गलमुच्छोंवाला आदमी था। यह था विवाहित पर इसका जीवन चरित्रहीन था। यही दशा इसकी स्त्रीकी भी थी। इसलिये दोनोंमेंसे कोई एक दूसरेके रास्तेमें अड़ंगा नहीं लगाता था। आज सुबह एक स्विस लड़कीका खत इसके पास आया था। यह लड़की पहले इसके यहाँ बच्चोंकी देखभालके लिए नौकर थी। अब वह दक्खिन रूससे पीटर्सबर्ग आ रही थी और उसने प्रमुख मजिस्ट्रेटको लिखा था कि पाँच और छः बजेके बीचमें होटल इटैलियामें वह इसका इन्तजार करेगी। इसलिये मजिस्ट्रेट यह चाहता था कि अदालतकी कार्रवाई जल्दी शुरू की जाय और जितनी जल्दी खतम हो सके खतम कर दी जाय, ताकि इसको समय मिल जाय कि छ-बजेके पहले वह लाल बालोंवाली नन्हीं क्लैरा मैसीलीविनासे मिल सके, जिसके साथ इसका प्रेम-व्यवहार पिछली गर्मियोंमें जब यह गाँवमें था, शुरू हुआ था। प्रमुख मजिस्ट्रेट अपने निजी कमरेमें चला गया। दरवाजेकी सिटकिनी चढ़ा ली और आलमारीसे डंबेल ले बीस-बीस दफा अपने हाथोंको ऊपर-नीचे, दाहिने-बायें, आगे-पीछे ले गया, और तीन दफा इसने झुककर अपने घुटनोंको बिना मोड़े हुए जमीन छूनेकी कोशिश की।

व्यायाम और ठण्डे पानीसे नहानेसे स्वास्थ्य जितना अच्छा रहता है उतना और किसी बातसे नहीं—इसने अपने दिलमें कहा, और अपने बायें हाथसे दाहिने हाथके पुट्ठेको छुआ। बायें हाथकी अनामिका उँगलीमें यह सोनेकी अँगूठी पहिने था। इतना करनेके बाद यह एक दफा और व्यायाम करना चाहता था कि इसके कमरेके दरवाजेपर खट-खटाहट हुई। इसने तुरन्त और जल्दीसे डंबेल रखकर सिटकिनी खोल

दी। ऊँचे कंधोंका एक आदमी, जिसके चेहरेपर असन्तोषके चिह्न थे और इसकी बेंचका दूसरा मजिस्ट्रेट था, सोनेकी ऐनक लगाये कमरेमें दाखिल हुआ। प्रमुख मजिस्ट्रेट बोला "क्षमा कीजियेगा। आपको इन्तजार करना पड़ा।"

"मैथ्यूनिकिच, आज फिर अभीतक नहीं आये।" उसने असंतोष-के लहजेमें कहा।

"अभीतक नहीं आये? वह हमेशा देर करते हैं।" यह कहते हुए प्रमुख मजिस्ट्रेट अपनी वर्दी पहनने लगा।

"मैं यह नहीं समझ पाता कि आखिर मैथ्यूनिकिचको अपने ऊपर शर्म क्यों नहीं आती" अभी आये हुए मजिस्ट्रेटने कहा और एक सिग-रेट निकालकर पीने लगा।

इस मजिस्ट्रेटका, जो नियमनिष्ठ आदमी था, आज सुबह अपनी स्त्रीसे झगड़ा हो गया था। स्त्रीने अपने जेबखर्चकी रकम महीना समाप्त होनेके पहले ही खतम कर डाली और कुछ और रुपये पेशगी चाहती थी, जो वह उसे नहीं देना चाहता था। झगड़ा इसीलिए हुआ था। स्त्रीने उससे कहा कि अगर वह उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करेगा तो शाम-को खानेकी आशा न रखे, शामको घरपर खाना बनेगा ही नहीं। बात जब इस हदतक पहुँची तब वह अपने घरसे चला आया था और डर रहा था कि कहीं उसकी स्त्री अपनी धमकीको कार्यरूपमें परिणत न कर दे, क्योंकि वह सब कुछ कर सकती थी। शुद्ध नैतिक जीवन व्यतीत करनेका यही नतीजा होता है, उसने अपने दिलमें सोचा और प्रमुखके हँसमुख, स्वस्थ और दमकते हुए चेहरेकी तरफ देखा जो अपने सुन्दर सफेद हाथोंसे, कुहनियोंको एक दूसरीसे दूर किये हुए, अपनी वर्दीके कढ़े हुए कालरके ऊपर, अपने गझिन गलमुच्छोंको दुरुस्त कर रहा था। वह अपने मनमें कहने लगा—देखो, वह हमेशा सन्तुष्ट और खुश रहता है, और मैं हमेशा मुसीबतमें फँसा रहता हूँ।

इतनेमें पेशकार कुछ कागजात लेकर दाखिल हुआ।

"धन्यवाद" प्रमुख मजिस्ट्रेटने कहा और एक सिगरेट जलायी। "पहले कौन मुकदमा लिया जायगा?" उसने पेशकारसे पूछा।

"मेरा खयाल है कि पहले विष देनेवाला मुकदमा होना चाहिये।" पेशकारने उदासीनतासे जवाब दिया।

"बहुत अच्छा, पहले विषवाला ही मुकदमा लिया जाय" प्रमुख मजिस्ट्रेटने कहा और अपने दिलमें सोचा कि इस मुकदमेको चार बजेतक खतम कर दूँगा, फिर छुट्टी मिल जायगी। "और मैथ्यूनिकिच आये?" उसने पूछा।

"अभीतक नहीं।"

"और ब्रेवी?"

"वह तो आ गये हैं" पेशकारने जवाब दिया।

"तो अगर आपसे उनसे मुलाकात हो तो कृपा करके उसने कह दीजियेगा कि पहले जहर देनेवाला मुकदमा होगा।"

ब्रेवो सरकारी वकील था जो इस मुकदमेमें काम कर रहा था।

बरामदेमें ही पेशकारसे ब्रेवीकी मुलाकात हो गयी। वह एक बगलमें फाइल दबाये हुए, दूसरे हाथको हिलाता और जूतोंकी एड़ियाँ खटपट करता तेजीके साथ आ रहा था।

"माइकेल पेट्रोविच पूछ रहे हैं कि क्या आप तैयार हैं?" पेशकारने कहा।

"जी हाँ, मैं हमेशा तैयार हूँ।" सरकारी वकील बोला "कौन मुकदमा पहले होगा?"

"विषवाला।"

"ठीक है" सरकारी वकीलने कहा। लेकिन दिलमें इस मुकदमेका पहले लिया जाना वह ठीक नहीं समझता था। कारण यह था कि इस आदमीकी पिछली रात एक होटलमें गुजरी थी, जहाँ वह सारी रात अपने एक दोस्तके साथ जिसने बिदाईका भोजन किया था, ताश खेलता रहा था। चूँकि पाँच बजे सुबह तक वह ताश खेलता और शराब पीता

रहा था और जहरवाले मुकदमेकी फाइल देखनेका मौका ही नहीं मिला था इसलिये अब चाहता यह था कि थोड़ी देरमें इस फाइलको एक नजर देख जाय। पेशकार इस बातको जानता था और इसीलिये उसने प्रमुख मजिस्ट्रेटको इस बातकी सलाह दी थी कि जहरवाला मुकदमा पहले ले लिया जाय। पेशकार अपने विचारोंमें उदार दलका आदमी था। उसे अग्रगामी दलका भी कह सकते हैं। ब्रेवी अर्थात् सरकारी वकील तटस्थ दलका आदमी था और कट्टरपनके पक्षमें था। पेशकार उसे नापसन्द करता था और उसके ओहदेके लिए इसके दिलमें उसके प्रति डाह थी।

"और 'स्काप्रु'सी' के बारेमें क्या हुआ ?" पेशकारने पूछा। "मैंने तो कह दिया है कि इस मुकदमेको मैं बगैर गवाहोंके नहीं कर सकता और यही मैं अदालतसे भी कह दूँगा।"

"मगर हर्ज ही क्या है ?"

"नहीं, मैं कर ही नहीं सकता।" ब्रेवीने अपना हाथ जोरोंसे हिलाते हुए कहा, और अपने निजी कमरेमें घुस गया।

ब्रेवी स्काप्रुसीका मुकदमा इस बहाने टाल रहा था कि एक प्रमुख गवाह गैरहाजिर था। लेकिन असल वजह यह थी कि उसे यह डर था कि अगर पढ़े-लिखे ज्यूरीके लोगोंने मुकदमेको सुना तो सम्भव है वह अभियुक्तको छोड़ दें। इसलिये प्रमुख मजिस्ट्रेटसे पूछकर उसने यह तै कर लिया था कि यह मुकदमा कहीं मुफस्सिलके जिलेमें अगले इजलासमें पेश किया जाय जहाँपर ज्यूरीमें किसान लोग ज्यादा होंगे और इसलिये मुकदमेमें सजा होनेकी ज्यादा सम्भावना होगी।

अदालतके बरामदेमें चहल-पहल बढ़ गयी थी। लोग दीवानी अदालतके दरवाजोंपर जहाँ वह मुकदमा हो रहा था, जिसके बारेमें वह शानदार आदमी बातचीत करता था, भीड़ लगाये बैठे थे।

अदालतकी कारवाई थोड़ी देरके लिए मुलतवी हुई और अदालतके

१. स्काप्रुसी रूसका धार्मिक सम्प्रदाय था।

कमरेसे एक बुड्ढी औरत निकलती हुई दिखाई पड़ी। यह वही औरत थी जिसकी जायदाद उस प्रतिभाशाली वकीलने उससे छीनकर अपने मुवक्किलको, जो कानून अच्छी तरहसे जानता था, लेकिन जायदादमें उसका कोई हक नहीं था, दिला दी थी। जज लोगोंको मुकदमेके बारेमें सब कुछ मालूम था। वकील और मुवक्किलको उनसे ज्यादा मालूम था लेकिन वह कानूनी बात जो इस वकीलने पैदा का दी थी, ऐसी थी कि जिसका परिणाम निश्चित रूपसे यह होता था कि उस स्त्रीसे जायदाद निकलकर, उस आदमीके हाथमें आ जाय जो कानून अच्छी तरह समझता था।

यह बुड्ढी स्त्री मोटी-ताजी थी, अच्छे-अच्छे कपड़े पहने थी और अपनी टोपीमें खूब फूल लगाये हुए थी। कमरेसे बाहर निकलकर वह ठहर गयी और अपने छोटेमोटे हाथोंको फैलाकर और अपने वकीलकी तरफ मुँह करके कहने लगी, "यह क्या हो गया—यह खयाल...।"

वकील इसकी टोपीके फूलोंको देख रहा था और जो कुछ यह कह रही थी उसे नहीं सुन रहा था। उसका ध्यान किसी दूसरी बातपर था।

जब बुड्ढी स्त्री दीवानी अदालतसे बाहर आयी, उसके पीछे-पीछे अपनी कमीजके अगले कलप किये हुए हिस्सेको अपने वेस्ट कोटके नीचे चमकाते हुए वह प्रसिद्ध वकील भी निकला जिसने इस मुकदमेमें वह बात पैदा कर दी थी जिससे फूलवाली बुड्ढी स्त्री अपनी सारी सम्पत्ति खो बैठी थी, और वह सम्पत्ति उसके मुवक्किलको मिल गयी थी, जो कानून जानता था और जिसने इस वकीलको दस हजार रुबल दिये थे और एक लाख रुबलकी जायदाद पायी थी। वकील तेजीसे चल रहा था और उसके चेहरेसे सन्तोष और आत्मतृप्तिका भाव व्यक्त हो रहा था। सबकी आँखें उसकी तरफ थीं और उसकी चालढाल मानों यह कहती थी कि आदर प्रकट करनेकी क्या आवश्यकता।

सातवाँ अध्याय

अन्तमें मैथ्यूनिकिच भी आ गये और उनके साथ एक दुबला पतला एलांची जिसकी गर्दन लम्बी थी और नीचेका होंठ जरा आगे बढ़ा हुआ था, तिरछा चलता हुआ ज्यूरीके कमरेमें दाखिल हुआ। यह एलांची एक ईमानदार आदमी था और उसने यूनिवर्सिटीसे शिक्षा पायी थी; लेकिन किसी भी जगहपर वह ज्यादा दिनतक नहीं टिक सका था, क्योंकि उसे शराब पीनेका दौरा होता था। आजसे तीन महीने पहले एक काउण्टेसने जो उसकी स्त्रीकी बराबर सहायता करती रहती थी उसे यह जगह दिलवा दी थी। एलांची बहुत खुश था कि वह इतने दिनोंतक इस जगहपर टिका रहा।

"अच्छा जनाब, मैं समझता हूँ कि अब तो सभी लोग आ गये" उसने अपनी नाकपर ऐनक लगाते हुए और चारों ओर देखते हुए कहा।

"मेरा खयाल है कि सभी आ गये" हँसमुख व्यापारीने कहा।

"बहुत अच्छा अभी देखता हूँ" कहकर उसने अपनी जेबसे एक सूची निकाली और नाम पुकारना शुरू किया। वह कभी ऐनकसे और कभी ऐनकके ऊपरसे लोगोंको देखता जाता था।

"स्टेटके कौंसिलर् श्री निकी फोरफ!"

"मैं मौजूद हूँ" भव्य आदमीने जवाब दिया जो कि अदालतोंके रंग-ढंगसे अच्छी तरह परिचित था।

"आइवन सिमिनिच आइवेनफ पेन्शन पाये हुए कर्नल!"

"मौजूद हूँ" एक दुबले पतले आदमीने जवाब दिया जो पेन्शन-पाये हुए अफसरकी वर्दी पहने हुए था।

"दूसरे गिल्डके व्यापारी पीटर बक्लाशव!"

"हाजिर हूँ" हँसमुख व्यापारीने मुस्कराते हुए कहा।

"गारद्के लेफ्टिनेंट राजकुमार डिमिट्रीनेख्लूदोव!"

"मैं मौजूद हूँ" नेख्लूदोवने जवाब दिया।

एलांचीने ऐनकके ऊपरसे इनको देखा और झुककर सलाम किया मानों वह औरोंकी अपेक्षा इनका विशेष सत्कार करना चाहता हो।

इसके बाद उसने कैप्टेन यूरी डिमिट्रिचडैंचिंगकू, ग्रेगरी इफियिच कुलीशफ तथा अन्य लोगोंको पुकारा। दोके अलावा बाकी सब मौजूद थे।

"जनाब अब आप लोग अदालतके कमरेमें पधारें" एलांचीने कहा और शिष्टतापूर्वक अपने हाथोंसे दर्वाजेकी तरफ इशारा किया।

अदालतका कमरा बड़ा और लंबा था जिसके एक तरफ एक चबूतरा बना हुआ था जिसपर चढ़नेके लिए तीन सीढ़ियाँ थीं। चबूतरेपर एक मेज रखी हुई थी जिसपर एक हरे रंगका कपड़ा बिछा हुआ था और इस कपड़ेमें खूब गहरे रंगकी गोट लगी थी। मेजपर तीन बहुत ऊँची हत्थेदार कुर्सियाँ रखी थीं। कुर्सियोंकी पीठ खरादे हुए ओक लकड़ीकी थी। इनके पीछे दीवारपर पूरे लंबानकी, चमकदार शाही कपड़ा पहने और परतला डाले एक कदम आगे बढ़ाये और हाथमें तलवार लिये हुए बादशाहकी एक तस्वीर थी। दाहिने कोनेमें काँटोंका ताज पहने हुए ईसाकी एक मूर्त्ति थी और इसके नीचे एक उस किस्मकी मेज थी, जिसे पादरी लोग गिरिजोंमें उपदेश देते समय काममें लाते हैं। इसी तरफ सरकारी वकीलका डेस्क था जिसके मुकाबलेमें बायीं तरफ पेशकारकी मेज थी और उसके बाद जनताके लिए ओक लकड़ीका बना एक कटहरा था जिसके पीछे अभियुक्तोंकी बेंच थी जो अभीतक खाली थी। इन सब चीजोंके अलावा चबूतरेकी दाहिनी तरफ ज्यूरीके लोगोंके लिए ऊँचे पुश्तेकी कुर्सियाँ थीं और नीचे फर्शपर वकीलोंकी मेजें। यह सब चीजें अदालती कमरेके अगले हिस्सेमें थीं और पिछले हिस्सेमें भी एक कठघरा लगा हुआ था।

सबके पीछे बेंचें लगी हुई थीं, जो एक-दूसरीके पीछे अधिकाधिक

ऊँचाईपर थीं। अगली बेंचपर चार औरतें बैठी थीं जो नौकरानियाँ या कारखानोंमें काम करनेवाली लड़कियाँ थीं और दो मजदूर बैठे थे। कमरेकी शानसे इन सबके ऊपर रोब छा गया था और यह लोग काना-फूसीसे ज्यादा तेज आवाजमें बात करनेकी हिम्मत नहीं कर सकते थे।

ज्यूरीके लोगोंके आनेके बाद एलांची एक तरफसे दबी हुई चालसे दाखिल हुआ और आगे बढ़कर उसने जोरसे पुकारकर कहा, मानो वह सब लोगोंको भयभीत करना चाहता हो।

"अदालत आ रही है।"

हर एक आदमी खड़ा हो गया और अदालतके मजिस्ट्रेटोंने चबूतरे-पर कदम रखा; पहले प्रमुख आया जिसका बदन गठीला और मूँछें सुन्दर थीं। उसके बाद उदास मजिस्ट्रेटने प्रवेश किया; जो अब और भी ज्यादा उदास दिखाई देता था क्योंकि अभी उसका साला उससे मिल गया था जिसने उसे यह बतलाया कि वह अभी अभी अपनी बहनसे मिलने गया था, और वह यह कह रही थी कि आज शामको खाना नहीं बनेगा।

"मालूम होता है कि हम लोगोंको किसी बावर्चीके यहाँ खाना खाना पड़ेगा" सालेने हँसते हँसते कहा।

"यह हँसनेकी बात नहीं है," उदास मजिस्ट्रेटने जवाब दिया जो अब और अधिक उदास हो गया था।

सबसे आखिरमें तीसरा मजिस्ट्रेट आया, यही मैथ्यूनिकिच था जो हमेशा देरसे आता था। इसकी दाढ़ी बड़ी थी और आँखें गोल, बड़ी और सहानुभूतिपूर्ण मालूम होती थीं। इसको पेटकी शिकायत थी। इसने अपने डाक्टरकी रायसे आज ही सुबहको एक नया इलाज शुरू किया था जिसकी वजहसे इसे और दिनोंसे ज्यादा देरतक मकानपर ठहर जाना पड़ा। जिस समय यह चबूतरे पर आया, इसको देखनेसे यही मालूम होता था, मानो कुछ सोच रहा है। इसके चेहरेकी इस मननशील आकृतिका कारण यह था कि इसके दिलमें अनेक प्रकारके प्रश्न उठते थे।

और यह अपने तरीकेसे ही उनका जवाब निकालता था। इस समय इसने अपने दिलमें यह सवाल पैदा किया था कि यह नया इलाज फायदा करेगा या नहीं? इसका जवाब इसने अपने तरीकेपर यह सोचा था कि अगर दर्वाजेसे कुर्सीतक पहुँचनेमें इतने कदम हों कि तीनसे उनका भाग हो जाय, तब तो इलाज जरूर फायदा करेगा, अन्यथा नहीं। दर्वाजेसे कुर्सीतक पहुँचते इससे छब्बीस कदम उठाये और सत्ताइसवेंमें कुर्सीतक पहुँच गया।

प्रमुख मजिस्ट्रेट और दूसरे मजिस्ट्रेटोंकी शकल-सूरत अपनी-अपनी वर्दीमें जिसके कालरमें सोनेका काम था, बहुत भव्य मालूम होती थी। इनमें लोगोंको खुद भी ऐसा ही विश्वास था। मानो अपनी ही शानके रोबमें आकर यह लोग जल्दीसे अपनी ऊँची पीठकी कुर्सियोंपर जो हरी चादरवाली मेजके पास लगी हुई थीं, जाकर तेजीसे बैठ गये। इस मेजपर एक तिकोनी चीज रखी थी जिसपर गरुड़ बना था और दो शीशेकी तश्तरियाँ रखी हुई थीं, जिनकी शकल उन तश्तरियोंसे मिलती-जुलती थी जो उपाहारगृहोंमें मिठाई रखनेके काममें लायी जाती हैं। एक दावात थी, कुछ कलमें, सफेद कागज और कई-एक अनेक प्रकारकी नयी-नयी बनी हुई पेन्सिलें।

. सरकारी वकील भी इन मजिस्ट्रेटोंके साथ-साथ कमरेमें आया। एक बगलमें चमड़ेका थैला लिये हुए और दूसरे हाथको हिलाता हुआ वह तेजीके साथ अपनी जगहपर पहुँचा। खिड़कीके नजदीक बैठ, फौरन ही वह कागजोंको देखने और पढ़नेमें मग्न हो गया। वह एक क्षण भी अपना समय नष्ट करना नहीं चाहता था ताकि वह मुकदमा शुरू होनेके पहले ही मुकदमेकी पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त कर ले। सरकारी वकील अपने इस पदपर अभी हालमें ही नियुक्त हुआ था और अभी सिर्फ चार ही मुकदमोंमें पैरवी की थी। वह बड़ा हौसलेदार आदमी था और उसने यह दृढ़ निश्चय कर रखा था कि अपने काममें वह खूब तरक्की करेगा। इसलिये वह जरूरी समझता था कि उसे हर एक मुकदमेकी ऐसी पैरवी

करनी चाहिये जिससे मुलजिमको जरूर सजा मिले। जहरवाले इस मुकदमेकी मोटी-मोटी बातें वह जानता था और अपनी बहसकी योजना उसने तैयार कर ली थी। लेकिन वह घटनाओंकी पूरी तफसील याद रखना चाहता था इसलिए उन्हें तेजीके साथ एक पर्चेपर टाँकने लगा।

पेशकार उसके सामने चबूतरेपर बैठा था और जिन कागजोंकी उसे जरूरत पड़ सकती थी, उन्हें तैयार कर चुका था। इस समय वह अखबारका एक लेख पढ़ रहा था जिसे सेंसरने रोक दिया था लेकिन उसे इस अखबारका एक अंक एक दिन पहले ही मिल गया था जिसे वह पढ़ भी चुका था। वह यह चाहता था कि मौका मिलते ही इस लेखके बारेमें दाढ़ीवाले मजिस्ट्रेटसे बातचीत करे, जो इसीके खयालका आदमी था; लेकिन इसके पहले वह उस लेखको एक दफा और पढ़ लेना चाहता था।

आठवाँ अध्याय

प्रमुख मजिस्ट्रेटने कुछ कागजात पढ़े और अर्दली तथा पेशकारसे दो एक बातें पूछीं। "हाँ" में जवाब पानेके बाद उसने हुक्म दिया कि अभियुक्त अदालतके कमरेमें लाये जायँ।

कठघरेके पीछेका दरवाजा फौरन खुल गया, और दो सिपाही टोपी लगाये हुए, हाथमें नंगी तलवार लिये, दाखिल हुए। इनके पीछे-पीछे अभियुक्त थे जिसमेंसे एक मर्द था जिसके बाल लाल और चेहरेपर दाग थे, बाकी दो औरतें थीं। मर्द जेलके लिबासमें था जो उसे बहुत ढीला होता था और अपने हाथको जरा ऊपर उठाये हुए था ताकि आस्तीन जो बहुत लंबी थी, उसके हाथके आगे न निकल आवे। मजिस्ट्रेटोंको न देखकर उसने बेंचकी तरफ गौरसे देखा और बेंचकी दूसरी तरफ जाकर बिल्कुल कोनेमें बैठ गया जिससे बेंचपर काफी जगह बची रह गयी। इसके बाद उसने प्रमुख मजिस्ट्रेटकी ओर देखकर अपना मुँह हिलाना शुरू किया, मानो वह कानाफूसी कर रहा हो। जो स्त्री इसके पीछे-पीछे आयी वह भी जेलके कपड़ोंमें ही थी और अपने सिरपर जेलका रूमाल बाँध लिया था। यह प्रौढ़ थी, इसकी आँखें लाल, चेहरा पीला और भौंहें और बरौनी गायब थीं। यह बिल्कुल शान्त दीखती थी। आते समय इसका कपड़ा किसी चीजमें फँस गया था जिसे इसने बड़ी सावधानीसे छुड़ाया और अपनी जगहपर आकर बैठ गयी।

दूसरी स्त्री मस्लोवा थी।

यह जैसे ही अदालतके कमरेमें दाखिल हुई अदालतके सभी आदमियोंकी आँखें इसकी तरफ फिर गयीं। इसके सफेद चेहरे, चमकदार काली आँखें, और उभरे हुए वक्षःस्थलको, जो जेलके कपड़ोंके नीचे छिपा हुआ था, एकटक सभी देखने लगे, यहाँतक कि अभियुक्तों को बोलानेवाले सिपाहियोंमेंसे एककी आँखें, उस समयतक इसपर गड़ी रहीं

जबतक कि यह उसके पाससे होती हुई अपनी जगहपर आकर बैठ नहीं गयी। इस सिपाहीने फौरन ही वहाँसे अपनी आँखें हटा लीं मानो उसने अपने अपराधका अनुभव कर लिया हो और वह अपने सामनेकी खिड़कीको देखने लगा।

जबतक कैदी अपनी अपनी जगहपर आकर बैठ नहीं गये प्रमुख मजिस्ट्रेट चुपचाप बैठा रहा, आखिरमें जब मस्लोवा भी अपनी जगहपर आकर बैठ गयी, तब वह पेशकारकी तरफ झुका।

साधारण जाब्तेकी काररवाई शुरू हुई। ज्यूरीके आदमियोंकी गिनत हुई। जो लोग नहीं आये थे उनके बारेमें टीकाटिप्पणी करते हुए उनके ऊपर जुर्मानेकी रकम मुकर्रर की गयी। जिन लोगोंने छुट्टीकी दरखास्तें दी थीं, उनकी दरखास्तोंपर विचार हुआ और फाजिल ज्यूरीके आदमियोंमेंसे उनके स्थानपर दूसरे मुकर्रर किये गये।

प्रमुख मजिस्ट्रेटने कागजके छोटे-छोटे टुकड़ोंको मरोड़ मरोड़कर शीशेकी एक तश्तरीमें रखना शुरू किया और अपनी वर्दीके सुनहरे काम किये हुए कफोंको जरा ऊपर खींचा, जिससे उसकी बालदार कलाइयाँ बाहर निकल आयीं। मदारीकी तरह उसने अब कागजोंकी उन गोलियों-को उठाकर "चिट्ठी खोलना" शुरू किया। इसके बाद उसने अपने कफको फिर नीचे सरका दिया और पादरीसे कहा कि ज्यूरीके आदमियोंको शपथ दो।

बुड्ढा पादरी जिसका चेहरा पीला और फूला हुआ था, भूरे रंगका चोगा पहने, सोनेकी सलीब गलेमें डाले, छोटा-सा तमगा लगाये, अपने चोगेके नीचे छिपे हुए अपने कड़े पैरोंको परिश्रमके साथ उठाते हुए हजरत ईसाकी मूर्तिके नीचे रखी हुई मेजके पास आया। ज्यूरीके आदमी उठकर खड़े हो गये और सब इस मेजकी तरफ बढ़ आये।

"आ जाइये" पादरीने कहा और अपने सीनेपर लटकती हुई सलेब-को अपने थुलथुले हाथोंसे हलका-सा झटका देकर वह इस बातका इन्तजार करने लगा कि ज्यूरीके सब आदमी नजदीक आ जायँ।

यह पादरी छियालिस वर्षसे यही काम कर रहा था और तीन ही वर्षके बाद अपने कामकी अर्द्धशताब्दी मनानेकी तैयारीमें था, जैसा कि कुछ दिन पहले उसके अफसर पादरीने किया था। जबसे यह फौजदारी अदालत खुली थी, तभीसे वह इस कामको करता आया था और उसे इस बातका अभिमान था कि उसने लाखों आदमियोंको शपथ दी है। उसको इस बातका भी कम अभिमान नहीं था कि बुड्ढा हो जाने पर भी वह अपने चर्च, अपनी मातृभूमि और अपने कुटुम्बके कल्याणके लिए परिश्रम करता रहता है। उसको इस बातकी भी आशा थी कि अपने कुटुम्बके लिए वह एक मकान और तीस हजार रूबलके सूद देने-वाले सार्टिफिकेट छोड़ जायेगा। उसने अपने दिलमें कभी भी इस बात-का खयाल नहीं किया था कि बाइबिलकी शपथ खाना, जो इस पुस्तकमें स्पष्ट तौरसे मना किया गया है, एक खराब पेशा है। इस बातसे उसे जरा भी परेशानी नहीं थी बल्कि इसके विपरीत, उसे यह पेशा इसलिये पसन्द था कि इसमें उसकी अच्छे-अच्छे आदमियोंसे जान-पहचान हो जाती थी। जब उस प्रतिभाशाली वकीलसे आज उसका परिचय हुआ तो उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। उसकी प्रसन्नताका मुख्य कारण यह था कि उस वकीलको एक मुकदमेमें, जिसका उस वृद्ध स्त्रीके खिलाफ जिसकी टोपीमें बहुतसे फूल लगे हुए थे, निर्णय हुआ था, दस हजार रूबल मिल गये थे।

जब ज्यूरीके सब आदमी आ गये, इस पादरीने अपना चँदुला सर उस तेल लगे हुए कपड़ेके सूराखमें डाला जिसको पहनकर धार्मिक संस्कार कराये जाते थे। अपने बचे खुचे बालोंको फिरसे दुरुस्त करते हुए उसने ज्यूरीके आदमियोंसे कहा, "अपना दाहिना हाथ इस तरहसे उठाओ और अपनी उँगलियाँ इस तरहसे रखो।" लहराती हुई आवाज-में यह कहते हुए उसने अपना अँगूठा और अपनी दो उँगलियाँ इस तरह कर दीं, मानों वह अपनी चुटकीसे कोई चीज उठाने जा रहा है। इसके बाद उसने ज्यूरीके लोगोंसे यह कहकर कि "जो कुछ मैं कहता हूँ

उसे दुहराते जाओ" कहना शुरू किया—"मैं प्रतिज्ञा करता हूँ और सर्वशक्तिमान ईश्वर, उसकी पवित्र पुस्तक और अपने खुदावन्द-की जीवनदायिनी सलीबकी कसम खाता हूँ कि इस काममें जो"—हर एक वाक्यांशके बाद वह रुक जाता था, और "जो" कहनेके बाद वह बिल्कुल ठहर गया और एक नौजवान ज्यूरी जिसने अपना हाथ नीचे कर दिया था कहा "देखो, अपना हाथ इस तरह रखो।" "कि इस काममें जो"—

गलमुच्छोंवाला शानदार व्यक्ति, कर्नल, व्यापारी और दूसरे ज्यूरी अपने हाथ और अपनी उँगलियाँ उसी तरहसे रखे हुए थे जैसा कि पादरी चाहता था। उस समय ऐसा मालूम हो रहा था, मानो इसमें उन्हें आनन्द आ रहा था। वहाँ कुछ लोग ऐसे भी थे जो इस कामको बे-मन और असावधानीसे कर रहे थे, कुछ इन शब्दोंको बहुत जोर-जोरसे दुहरा रहे थे और कुछ धीरे-धीरे और मन्द गतिसे। जब कभी कोई पीछे रह जाता तो जल्दीसे पढ़कर पादरीके शब्दतक पहुँचनेकी कोशिश करता। कुछकी चुटकियाँ ऐसे जोरसे दबी हुई थीं कि जान पड़ता था कि उन्हें इस बातका डर है कि जिस अदृश्य चीजको उन्होंने अपनी चुटकीमें पकड़ रखा है वह कहीं भाग न जाय। इनमें कुछ ऐसे भी थे जो अपनी चुटकियोंको बराबर खोलते और बन्द करते रहते थे। बुड्ढे पादरीको छोड़ कर बाकी सभीको यह भद्दा मालूम हो रहा था लेकिन पादरीको पूर्ण विश्वास था कि वह एक लाभदायक और महत्व-पूर्ण कार्य कर रहा है।

शपथ समाप्त हो जानेके बाद प्रमुख मजिस्ट्रेटने ज्यूरियोंसे यह प्रार्थना की कि, वे अपना सरपंच चुन लें। सब ज्यूरी तितर-बितर हो समूह बनाकर दरवाजेके रास्तेसे डिबेटिंग रूम (वाद-विवादवाला कमरा) में चले गये और वहाँ पहुँचकर करीब-करीब सबने सिगरेट पीना शुरू किया। एकने सरपंचके पदके लिए शानदार आदमीका नाम पेश किया जो सर्व-सम्मतिसे मंजूर हो गया। इसके बाद ज्यूरीके सब आदमी

अपनी-अपनी सिगरेट बुझाकर और बचे टुकड़ोंको फेंकते हुए अदालतके कमरेमें वापस आ गये। शानदार आदमीने प्रमुख मजिस्ट्रेटको यह सूचना दी कि लोगोंने उसे सरपंच चुना है और इसके बाद सब अपनी-अपनी ऊँची पीठवाली कुर्सीपर बैठ गये।

हरएक चीज निर्विघ्न रूपसे तेजी तथा गंभीरताके साथ हुई। इस नियम, क्रम और गंभीरतासे उन लोगोंके दिलको जो इसमें भाग ले रहे थे, बड़ी खुशी हुई। इससे लोगोंके मनमें यह भाव दृढ़ हो गया कि वे एक महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक कर्त्तव्यका पालन कर रहे थे। नेख्लीडूपर भी यही असर हुआ।

ज्यूरियोंके बैठते ही प्रमुख मजिस्ट्रेटने एक भाषण किया जिसमें उसने बताया कि ज्यूरीके लोगोंका क्या अधिकार है, क्या कर्त्तव्य है, और क्या जिम्मेदारी है। बोलते समय वह हिलता-डुलता रहता था; कभी दाहिनी तरफ झुक जाता, कभी बायें हाथपर जोर देता, और कभी कुर्सीके पुश्तेपर और कभी कुर्सीके हत्थेपर जोर देता था। बोलते-बोलते कभी वह मेजपरका कागज उठाकर दुरुस्त करके रख देता, कभी हाथमें पेन्सिल ले लेता, और कभी चाकू।

प्रमुख मजिस्ट्रेटने इन लोगोंको यह बतलाया कि इन लोगोंको अधिकार है कि प्रमुख मजिस्ट्रेट द्वारा अभियुक्तोंसे सवाल पूछ सकें और कागज-पेन्सिल चाहें तो इस्तेमाल कर सकें। शहादतके लिए जो चीजें पेश हैं उन्हें वे देख सकते हैं। उनका कर्त्तव्य यह है कि वे पक्ष-पातसे नहीं, बल्कि न्यायसे निर्णय करें। उनकी जिम्मेदारी यह है कि अदालतमें जो कुछ वाद-विवाद हो उसकी खबर बाहरके लोगोंको न पहुँचावें नहीं तो वे दंडनीय समझे जायेंगे। हरएक आदमी आदरपूर्ण और ध्यानसे उसकी बात सुन रहा था और व्यापारी जिसके वायुमण्डलमें ब्राण्डी-शराबकी बू थी, जोरसे अपनी खाँसी रोके हुए हरएक वाक्यपर अपनी गर्दन हिलाता जा रहा था।

नवाँ अध्याय

प्रमुख मजिस्ट्रेटने भाषण समाप्त होनेपर अभियुक्तोंकी तरफ अपना मुँह किया और बोला "साइमन कारटिंकिन उठ खड़े हों।" साइमन उठकर खड़ा हो गया और उसके होंठ पहलेसे ज्यादा तेजीसे हिलने लगे।

"तुम्हारा नाम?"

"मेरा नाम साइमन पेट्रोफ कारटिंकिन है" उसने तेजीसे और कटी हुई आवाजमें उत्तर दिया। जाहिर है कि उसने इस उत्तरको पहलेसे ही तैयार कर रखा था।

"तुम किस वर्गके आदमी हो?"

"मैं किसान हूँ।"

"तुम्हारा प्रान्त, जिला और धार्मिक हलका जिसमें तुम रहते हो?"

"तूला प्रान्त, क्रैपी स्वेसिकी जिला, क्यूपी अन्सकी धार्मिक हलका और बोरकी गाँवका रहनेवाला हूँ।"

"तुम्हारी उम्र?"

"तैंतीस वर्ष—मेरा जन्म अट्ठारह सौ—"

"तुम्हारा धर्म?"

"रूसका सनातन धर्म।"

"शादी हो गयी है?"

"नहीं हुजूर।"

"तुम्हारा पेशा क्या है?"

"मैं मारीटीनियाँ होटलमें नौकर था।"

"तुम्हारे ऊपर इसके पेश्तर कोई मुकदमा चला है?"

"मेरे ऊपर इसके पेश्तर कोई मुकदमा नहीं चला क्योंकि पहले—।"

"तुम्हारे ऊपर पहले कोई मुकदमा नहीं चला ?"

"कभी नहीं, ईश्वरकी कृपा रही।"

"तुमको फर्द-जुर्म मिला है ?"

"मिल गया है।"

"बैठ जाओ।"

प्रमुख मजिस्ट्रेटने इसके बाद दूसरे अभियुक्तकी तरफ देखा और कहा "यूफीमियाँ आइवनोवा बोचकोआ।"

लेकिन साइमन बोचकोआके सामने खड़ा रहा।

"कारटिंकिन बैठ जाओ।"

लेकिन कारटिंकिन खड़ा ही रहा।

"कारटिंकिन बैठ जाओ।"

लेकिन कारटिंकिन उस समयतक नहीं बैठा जबतक कि सिपाहीने आकर उसके कन्धेपर हाथ रखकर और उसके कानमें यह कहकर कि "बैठ जाओ, बैठ जाओ," नहीं बिठा दिया। कारटिंकिन उतनी ही तेजीसे बैठा, जितनी तेजीसे उठा था। उसने अपना चोंगा लपेट लिया और फिर अपने होंठ धीरे-धीरे हिलाने लगा।

"तुम्हारा क्या नाम है ?" प्रमुख मजिस्ट्रेटने थकावटकी लम्बी साँस लेते हुए अभियुक्तकी तरफ देखे बिना ही पूछा। उसकी आँखें एक कागजपर लगी हुई थीं जो उसके सामने रखा था। प्रमुख मजि-स्ट्रेटकी यह आदत थी कि कामको शीघ्र समाप्त करनेके लिए वह दो काम एक ही साथ करता था।

बोचकोआकी उमर तैंतालीस वर्षकी थी, वह क्लोम्ना कस्बेकी रहनेवाली थी। वह भी मारीटीनियाँ होटलमें काम करती थी। "मेरे ऊपर इसके पहले कोई मुकदमा नहीं चला और मुझे भी फर्द-जुर्मकी एक नकल मिल गयी है।" उसने निडर होकर जवाब दिया। उसके जवाब देनेके ढंगसे यह मालूम होता था मानो वह कह रही है कि "हाँ, यूफीमियाँ बोचाकोवाको भी फर्द-जुर्म मिल गया है। कोई दूसरा जानता

है या नहीं, मुझको कोई पर्वाह नहीं ।"

उसने कहनेका इन्तजार नहीं किया और जैसे ही उसका अन्तिम उत्तर समाप्त हुआ, वह बैठ गयी ।

स्त्री-प्रेमी प्रमुख मजिस्ट्रेटने इसके बाद तीसरे अभियुक्तसे विशेष आदरके साथ पूछा—"तुम्हारा नाम ? तुमको खड़ा होना पड़ेगा ।" उसने बड़ी कोमलतासे कहा क्योंकि मस्लोवा खड़ी नहीं हुई थी ।

मस्लोवा जल्दीसे खड़ी हो गयी और अपना सीना उभारकर प्रमुख मजिस्ट्रेटकी ओर अपनी मुस्कराती हुई काली आँखोंसे विशेष तत्परतासे देखने लगी ।

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"लूबुक" उसने जल्दीसे कहा ।

जब अभियुक्तोंसे सवाल किये जा रहे थे नेख्लीडूने अपनी आँखोंपर ऐनक लगा ली थी । लूबुक ! वह सोचने लगा, नहीं, यह बात नहीं हो सकती । और अपनी आँख इस अभियुक्तपर ही जमाये रहा । लूबुक ! यह कैसे हो सकता है ? उसने जब सवाल सुना तो सोचने लगा ।

प्रमुख मजिस्ट्रेट अपना सवाल जारी रखना चाहता था । लेकिन ऐनक लगाये हुए मजिस्ट्रटने गुस्सेके साथ उसके कानमें कुछ कहा । प्रमुखने गर्दन हिलायी और फिर अभियुक्ताकी तरफ मुखातिब होगया ।

"यह क्या बात है ?" उसने पूछा "तुम्हारा नाम यहाँपर लूबुक नहीं लिखा है ।"

वह शान्त रही ।

"मैं तुम्हारा असली नाम जानना चाहता हूँ ।"

"बपतिस्में में तुम्हें क्या नाम दिया गया था ।" क्रुद्ध हो मजिस्ट्रेटने पूछा ।

"पहले मुझे 'कैटीरिना' कहते थे ।"

"यह हो नहीं सकता" नेख्लीडूने अपने दिलमें कहा, फिर भी अब उसे बिल्कुल निश्चय होगया था कि यह वही लड़की है जो आधी सर-

परस्तीमें और आधी नौकरानीकी तरह रहती थी, जिसके साथ एक दफा उसका सच्चा प्रेम होगया था और जिसे उसने कामोन्मादमें बिगाड़ा और छोड़ दिया था। इसके बाद फिर कभी उसने इसका खयाल भी नहीं किया था क्योंकि अतीतकी स्मृति इसके लिए दुःखदाई होती और उसपर स्पष्ट रूपसे दोषारोपण करती तथा इस बातका सबूत देती कि उसने अर्थात् नेख्लीडूने जो अपनी ईमानदारी और भलमनसीपर अभिमान करता था इसके साथ कितनी नीचताका व्यवहार किया था।

निःसन्देह यह वही थी। अब नेख्लीडूने अच्छी तरह देख लिया कि इसके चेहरेमें वही विचित्र अवर्णनीय और अनोखा व्यक्तित्व है जो और किसी दूसरी जगह देखनेमें नहीं आता। इसके मुखमण्डलपर अस्वास्थ्य-सूचक पीलेपन और भभरीके होते हुए भी इसकी आवाजमें, सरल मुस्कराहटमें एक अद्भुत मिठास थी। आँखोंकी लोच और आकृतिकी बनावटमें भी यही बात थी।

"तुमको बताना चाहिये था" प्रमुख मजिस्ट्रेटने फिर कोमलतासे कहा। "तुम्हारे पिताका नाम?"

"मैं एक अविवाहिता स्त्रीकी लड़की हूँ।"

"खैर, किसी बापकी सरपरस्तीमें तुम जरूर पाली गयी होगी, उसका क्या नाम था?"

"हाँ, उसका नाम मिकैलोम्ना था।"

नेख्लीडूकी साँस रुक रुककर चलने लगी। वह अपने मनमें सोचने लगा कि आखिर इसने क्या जुर्म किया है?

"मैं तुम्हारे कुटुम्बका नाम, अर्थात् तुम्हारा अल्ल जानना चाहता हूँ।" प्रमुख मजिस्ट्रेटने पूछा।

"लोग मुझे मेरी माँकी अल्लसे ही पुकारते हैं; मुझे लोग मस्लोवा कहते हैं।"

"तुम किस वर्गकी हो?"

"मेस्चंका (शहरी मजदूर) वर्गकी।"

"तुम्हारा धर्म ? सनातनी ?"

"जी हाँ ! सनातनी रूसी ।"

"तुम क्या काम करती हो ?"

मस्लोवा चुप रही ।

"तुम्हारा क्या रोजगार था ?"

"मैं एक संस्थामें थी ।"

"किस किस्मकी संस्था ?" ऐनकवाले मजिस्ट्रेटने सख्तीसे पूछा ।

"आप सब लोग जानते ही हैं ।" उसने कहा और मुस्करायी। इसके बाद वह फुर्तीसे कमरेके चारों ओर और फिर प्रमुख मजिस्ट्रेटकी ओर देखने लगी ।

उसके चेहरेके भावोंमें कुछ ऐसी असाधारण बात थी, उसके शब्दोंमें भयंकर दीनता, मुस्कराहटमें आकर्षण, और उसके कटाक्षमें ऐसी विचित्रता थी कि प्रमुख मजिस्ट्रेट झेंप-सा गया । अदालतमें एक क्षणके लिए सन्नाटा-सा हो गया । जनतामेंसे कोई हँस पड़ा, किसीने कहा "शू" । इससे सन्नाटा टूट गया । प्रमुख मजिस्ट्रेटने अपनी आँखें ऊपर उठायीं और पूछा ।

"तुम्हारे ऊपर इसके पहले कभी मुकदमा चला है ?"

"कभी नहीं" मस्लोवाने धीमेसे कहा और लंबी साँस ली ।

"तुम्हें फर्द-जुर्म मिला है ?"

"जी हाँ ! मिल गया है ।"

"बैठ जाओ ।"

मस्लोवा झुकी और अपना स्कर्ट (लहँगा) सँभालते हुए बैठ गयी । उसने अपने छोटे सफेद हाथोंको अपने चोंगेकी आस्तीनमें छिपा लिया । उसकी आँखें प्रमुख मजिस्ट्रेटकी तरफ लगी हुई थीं ।

गवाहोंको बुलाया गया जिनमेंसे कुछ वापस कर दिये गये । जिस डाक्टरसे विशेषज्ञका काम लेना था वह चुन लिया गया और उसे अदालतमें बुलाया गया ।

इसके बाद पेशकार खड़ा हुआ और उसने फर्द-जुर्म जोरसे पढ़कर सुनाया, लेकिन इतनी तेजीसे कि एक शब्द दूसरेसे मिल जाता था और पूरा भाषण एक नीरस और निर्जीव वाक्योंका ताँता मात्र रह गया।

मजिस्ट्रेट लोग कभी अपनी कुर्सीके दाहिने हत्थेपर हाथ रखते थे, कभी बायेंपर, कभी मेजपर, कभी अपनी आँखें खोलते-मूँदते थे और कभी एक दूसरेके कानमें कानाफूसी करते थे। सिपाहियोंमेंसे एक कई बार जमुहाई लेते लेते रुक गया था।

कारटिंकिन बराबर अपने होंठ हिलाता रहा और बोचकोवा चुपचाप कभी कभी रूमालके नीचेसे सिरको खुजला लेती थी।

मस्लोवा चुपचाप बैठी पढ़नेवालेको देख रही थी। कभी कभी वह हलकेसे उचक उठती मानो वह जवाब देना चाहती हो। लेकिन लज्जित होकर लम्बी साँस लेती, अपना हाथ कभी एक तरफ, कभी दूसरी तरफ रखती हुई चारों तरफ देखती, और फिर उसकी आँखें पढ़नेवालेके ऊपर ही विश्राम लेती थीं।

नेख्लीडूव अपनी ऊँची पीठवाली कुर्सीपर अगली पंक्तिमें बैठा अपनी ऐनक उतारते हुए मस्लोवाको देख रहा था और उसकी आत्मामें भयंकर और तूफानी संघर्ष जारी था।

दसवाँ अध्याय

फर्द-जुर्म निम्नलिखित था—

१७ जुलाई सन् १८८—' को इस कस्बेके मारीटीनिया होटलके मालिकने पुलिसको यह इत्तिला दी कि साइबेरियासे आया हुआ दूसरी गिल्डका व्यापारी थेरापांड स्मेलकफ उसके होटलमें मर गया।

स्थानीय पुलिस डाक्टरने यह सार्टीफिकेट दिया कि मौत हृदयके फट जानेसे हुई जिसकी वजह ज्यादा शराब पी लेना था। उक्त सौदागरकी लाश दफन कर दी गयी। स्मेलकफके मरनेके चार दिन बाद उसके शहरका रहनेवाला और उसका मित्र टिमोखिन नामका साइबेरियाका एक सौदागर पीटर्सबर्गसे वापस आया और उसने अपने मित्र उक्त स्मेलकफकी मौतका समाचार सुना। जिस परिस्थितिमें वह मरा था उसे जान उसने पुलिसको यह सूचना दी कि उसे सन्देह है कि स्मेलकफकी मृत्यु स्वाभाविक कारणोंसे नहीं हुई बल्कि कुछ व्यक्तियोंने जिन्होंने उसकी जायदाद, उसका रुपया-पैसा, उसकी एक हीरेकी अँगूठी चुरा ली, उसे जहर देकर मार डाला। ये चीजें स्मेलकफके पास थीं लेकिन उसके मरनेके बाद जब उसकी जायदादकी सूची बनायी गयी तो ये चीजें नहीं मिलीं। इसपर तहकीकात की गयी और निम्नलिखित बातें प्रकट हुईं—

(१) उक्त स्मेलकफके पास तीन हजार आठसौ रूबल जरूर रहा होगा क्योंकि यह रकम उसने बैंकसे ली थी। यह बात मारीटीनियाँ होटलके मालिकको भी मालूम थी और इस व्यापारीका मुन्शी स्टारिकफ इस बातको जानता था जिससे स्मेलकफने इस कस्बेमें आनेके बाद कुछ व्यापार भी किया था लेकिन उसके मरनेके बाद उसके थैलेमें जिसपर मुहर लगा दी गयी थी सिर्फ तीनसौ बारह रूबल और सोलह कोपेक ही निकले।

(२) स्मेलकफने अपने मरनेके पहलेका सारा दिन और सारी रात लूबुक नामकी वेश्याके पास गुजारी जो इसके होटलके कमरेमें दो दफा आयी।

(३) स्मेलकफकी हीरेकी अँगूठी इस वेश्याने अपने चकलेकी मालकिनके हाथ बेंच डाली।

(४) यूफीमियाँ बोचकोवा नामकी नौकरानीने स्मेलकफके मरनेके दूसरे ही दिन १८ सौ रुबल बैंकमें जमा किये।

(५) वेश्या लूबुकके बयानके अनुसार होटलके नौकर साइमन-कारटिंकिनने उसे एक बुकनी दी थी और उससे कहा था कि स्मेलकफकी शराबमें डालकर पिला देना। इस वेश्या लूबुकने ऐसा ही किया जिसको इसने खुद मंजूर किया है।

जब वेश्या मुलजिमसे जिसका छोटा नाम लूबुक है जिरह की गयी तो उसने बयान किया कि जिस समय स्मेलकफ चकलेमें था जहाँ, अपने शब्दोंमें, वह काम करती है, उसने उसे मारीटीनिया होटल भेजा कि वहाँसे जाकर कुछ रुपया ले आवे। उसने इस व्यापारीकी दी हुई कुञ्जीसे उसका थैला खोलकर चालीस रुबल निकाले, जैसा उससे कहा गया था, और इससे एक पैसा भी ज्यादा नहीं निकाला। बोचकोवा और कारटिं-किन जिनके सामने उसने थैलेका ताला खोला और बन्द किया, इस बातकी तसदीक कर सकते हैं।

उसने इस बातकी भी शहादत दी कि जब वह दूसरी दफा होटल आयी तो उसने साइमन कारटिंकिनके कहनेसे एक बुकनी यह समझकर कि उसे नींद आ जायगी और वह उसके पाससे चली जा सकेगी, एक गिलास शराबमें डालकर उसे पिला दी। जब वह उसके यहाँसे लौटी तो उसके पास कुछ पैसे न थे और स्मेलकफने उसे मारा-पीटा भी था जिसपर वह रोते रोते कहने लगी कि वह चली जायगी, तब व्यापारीने खुद उसे हीरेकी अँगूठी दी थी।

मुलजिम यूफीमियाँ बोचकोवासे जिरह करने पर उसने बताया कि

खोयी हुई रकमके बारेमें उसे कुछ भी नहीं मालूम है। वह स्मेलकफके कमरेमें गयी भी नहीं। वहाँ लूबुक ही अकेली गयी। अगर कोई चीज चोरी गयी हो तो लूबुकने उस समय चुरायी होगी जब वह व्यापारीकी कुंजी लेकर रुपया लेने आयी थी।"

यह बात सुनकर मस्लोवा उछल पड़ी; मुँह खोलकर वह बोचकोवाको देखने लगी।

"जब एक हजार आठ सौ रुबलकी बैंककी रसीद" बोचकोवाको दिखायी गयी तो उसने कहा कि यह रकम उसकी और साइमनकी अट्ठारह बरसकी कमाई है जिसके साथ वह शादी भी करनेवाली है।

साइमन कारटिंकिनसे जब पहले पहल प्रश्न किये गये तो उसने इस बातको स्वीकार किया कि उसने और बोचकोवाने मस्लोवाके कहनेसे, जो चकलेसे कुंजी लेकर आयी थी, रकम चुरायी और आपसमें बराबर बराबर उसे बाँट लिया, उसमें मस्लोवाको भी बराबर हिस्सा दिया। उसने इस बातको भी स्वीकार किया कि उसने स्मेलकफको सुलानेके लिए बुकनी दी थी। जब दूसरी मर्तबा उससे प्रश्न किया गया तब उसने सब बातोंसे इन्कार कर दिया। उसने कहा कि मैंने न तो रुपया चुराया है और न मस्लोवाको बुकनी दी। उसने यह सब काम खुद ही किया है। बोचकोवा द्वारा बैंकमें जमा किये गये रुपयेके बारेमें उसने वही बात कही जो बोचकोवाने कही थी अर्थात् यह कि यह रकम उन दोनोंने अपनी अट्ठारह बरसकी नौकरीमें होटलमें आनेवाले लोगोंसे इनाममें प्राप्त करके जमा की है।

परिस्थितिको स्पष्ट करनेके लिए आवश्यक हुआ कि व्यापारी स्मेलकफकी लाश देखी जाय। लाशको कबरसे निकालनेका हुक्म दिया गया और अँतड़ीके अंदरकी चीजोंकी डाक्टरी करायी गयी और यह मालूम करनेकी कोशिश की गयी कि मृत शरीरमें क्या क्या परिवर्तन हुए हैं। अँतड़ियोंको देखनेसे मालूम हुआ कि "स्मेलकफकी मृत्यु जहरसे हुई।"

इसके बाद इस बातका वर्णन किया गया कि जब इन अभियुक्तोंका एक दूसरेसे मुकाबला कराया गया, तो इन्होंने जिरहमें क्या क्या कहा। इसके बाद गवाहोंका बयान पढ़कर सुनाया गया। फर्द-जुर्म निम्न लिखित वाक्योंसे खतम हुआ—

"दूसरी गिल्डका व्यापारी स्मेलकफ शराबी और व्यभिचारी था। लूबुक नामकी वेश्यासे इसने ताल्लुक पैदा किया जो कि कटीवाके चकलेमें रहती थी, और इसे इतना चाहने लगा कि उसने उक्त लूबुकको कटीवाके चकलेसे जहाँ वह गया हुआ था, १७ जनवरी सन् १८८...को अपने थैलेकी कुञ्जी देकर अपने होटलके कमरेमें मुबलिग चालीस रूबल लानेको भेजा, ताकि वह खाने-पीनेके सामानकी कीमत दे सके जिसे उसने चकलेमें खरीदा था। होटलमें आकर जिस समय मस्लोवा रुपया निकाल रही थी उसने बोचकोवा और कारटिकिनसे षड्यन्त्र करके स्मेलकफकी सब रकम और कीमती माल चुरा कर आपसमें बराबर बराबर बाँट लिया। यही इनके जुर्मकी सूची है। इन्होंने ऐसा किया।" इस बातको सुनकर मस्लोवा फिर चमक उठी और खड़ी भी हो गयी। उसका चेहरा सुर्ख हो गया।

"मस्लोवाको हिस्सेमें हीरेकी अँगूठी मिली और शायद थोड़ी रकम भी जिसको उसने या तो खो दिया या या छिपा दिया, क्योंकि उस रात यह नशेमें चूर थी। अपने इस अपराधको छिपानेके लिए षड्यन्त्रकारियोंने निश्चय किया कि व्यापारी स्मेलकफको होटल वापस लाकर संखिया खिला दिया जाय जो कारटिंकिनके पास थी। इस उद्देश्यसे मस्लोवा कटीवाके चकलेमें वापस गयी और उसको भी समझा बुझाकर मारीटीनिया होटलमें ले आयी। जब स्मेलकफ होटल वापस आया, मस्लोवाने कारटिंकिनसे बुकनी लेकर शराबमें घोल दी और उसे स्मेलकफको पिला दिया जिससे वह मर गया।

"ऊपर बतायी हुई घटनाओंके आधारपर साइमन कारटिंकिन, साकिन बोरकी, कौम किसान, उम्र तैंतालिस बरस; मुसम्मात यूफीमियाँ बोच-

कोवा, कौम मेस्चंका, उम्र तैंतालिस बरस; और मुसम्मात कैटरीना मस्लोवा, कौम मेस्चंका, उम्र अट्ठाइस बरस, पर यह इलजाम लगाया जाया जाता है कि इन्होंने १७ जनवरी सन् १८८–को आपसमें षड्यंत्र करके उक्त व्यापारी स्मेलकफकी रकम जिसकी मालियत दो हजार दो सौ रुबल होती है, चुरायी और अपने जुर्मको छिपानेके लिए इन्होंने उक्त व्यापारी स्मेलकफको जानसे मारनेके लिए जहर मिली शराब दे दी, जिससे उसकी मौत हो गयी।

"यह जुर्म ताजीरातकी दफा १४५५ में आता है। इसलिये जाब्ता फौजदारीकी अमुक अमुक दफाके अनुसार साइमन कारटिंकिन कौम किसान, यूकीमियाँ बोचकोवा कौम मेस्चंका और मुसम्मात कैटरीना मस्लोवा, कौम मस्चंकापर मुकद्दमा आयद किया गया, और यह जिला अदालतके सामने ज्यूरी द्वारा विचारके लिए पेश किये जा रहे हैं।"

पेशकारने अपराधोंकी लंबी सूची खतम की और कागजको मोड़कर वह अपनी जगहपर बैठ गया और हाथोंसे अपने चिकने बालोंको दुरुस्त करने लगा। सब लोगोंने अब इतमीनानकी साँस ली कि तहकीकात शुरू होगी, हर एक बात साफ साफ प्रकट हो जायगी और न्याय किया जायेगा। लेकिन नेख्लीडूका ध्यान यहाँ नहीं था। वह तो इस भयंकर विचारमें डूबा हुआ था कि इस मस्लोवाने, जिसे दस बरस पहले वह जानता था कि एक निरपराध और सुन्दर लड़की है, क्या कर डाला!

ग्यारहवाँ अध्याय

जब फर्द-जुर्मका पढ़ना समाप्त हो गया तो प्रमुख मजिस्ट्रेट, और मजिस्ट्रेटोंसे सलाह करनेके बाद कारटिंकिनकी तरफ झुका। उसके चेहरेसे यह भाव टपक रहा था कि वह छोटीसे छोटी बातका भी पता लगा लेगा।

बाईं तरफ झुककर उसने कहा "किसान साइमन कारटिंकिन !"

साइमन कारटिकिन अपने दोनों हाथ लटकाकर खड़ा हो गया और अपने शरीरको झुकाकर होठोंको बगैर बोले हुए ही हिलाता रहा।

"तुमपर यह जुर्म लगाया गया है कि तुमने १७ जनवरी सन् १८८—को यूफीमियाँ बोचकोवा और मस्लोवासे साजिश करके व्यापारी स्मेलकफके थैलेसे रुपया चुराया और फिर कैटरीना मस्लोवा द्वारा, उसे समझा बुझाकर, तुमने शराबमें संखिया मिलाकर व्यापारी स्मेलकफको पिलवा दिया जिससे वह मर गया। तुम अपना जुर्म तो स्वीकार करते हो ?" प्रमुख मजिस्ट्रेटने दाहिनी तरफ झुकते हुए कहा।

"नहीं, मेरा काम तो मेहमानोंकी सेवा—और···"

"यह सब बातें बादको कहना, पहले यह बताओ, तुम अपने अपराधको स्वीकार करते हो ?"

"नहीं हुजूर मैं तो—"

"बस ! बातें बादको करना, यह बताओ कि तुम अपने अपराधको स्वीकार करते हो ?" प्रमुख मजिस्ट्रेटने शान्ति, लेकिन दृढ़ताके साथ पूछा।

"मैं ऐसा काम कर ही नहीं सकता क्योंकि···।"

सिपाही फिर तेजीसे साइमन कारटिंकिनकी तरफ बढ़ा और आहिस्तासे कानमें डाँटकर उसे रोक दिया।

प्रमुख मजिस्ट्रेटने अपना हाथ, जिसमें वह कागज लिये हुए था, हटाकर दूसरी जगह रख लिया, और एक विशेष ढंगसे कहा, "यह तो हो गया।" उसके बाद वह यूफीमियाँ बोचकोवाकी तरफ झुका।

"यूफीमियाँ बोचकोवा, तुम्हारा अपराध यह है कि तुमने १७ जनवरी सन् १८८—' को मारीटीनिया होटलमें साइमन कारटिंकिन और कैटरीना मस्लोवासे मिलकर व्यापारी स्मेलकफके थैलेसे कुछ रुपये और एक अँगूठी चुरायी और रुपयेको आपसमें बाँट लिया। तुम्हारे ऊपर यह भी अपराध है कि तुमने व्यापारी स्मेलकफको जहर देकर मार डाला। क्या तुम अपना अपराध स्वीकार करती हो?"

"मैं किसी भी जुर्मकी अपराधी नहीं हूँ।" उसने बहादुरी और दृढ़तासे जवाब दिया। "मैं कमरेके नजदीक गयी भी नहीं और जब असबाब कमरेके अन्दर गया तो जो कुछ किया सब मस्लोवाने ही किया।"

"यह सब बादको कहना" प्रमुख मजिस्ट्रेटने शान्ति लेकिन दृढ़ताके साथ फिर कहा। "तो तुम अपराध स्वीकार नहीं करती?"

"न तो मैंने रुपया लिया, न शराब पीनेको दी, और न कमरेमें गयी। अगर मैं कमरेमें जाती तो इसको ठोकर मारकर निकाल देती।"

"इसका मतलब यह है कि तुम अपराध स्वीकार नहीं करती।"

"कभी नहीं।"

"बहुत अच्छा।"

"कैटीरीना मस्लोवा!" प्रमुख मजिस्ट्रेटने तीसरे अभियुक्तकी तरफ झुककर कहा, "तुम्हारे खिलाफ जुर्म यह है कि चकलेसे व्यापारी स्मेलकफके थैलेकी कुंजी लेकर आनेके बाद तुमने उसके थैलेसे कुछ रुपया और अँगूठी चुरायी।" यह सारी बातें मजिस्ट्रेट ऐसे कह रहा था, गोया उसने रट ली हों। वह अपने बायें बैठे हुए मजिस्ट्रेटकी तरफ झुका हुआ था, जो उसके कानमें धीरे-धीरे यह कह रहा था कि सूचीमें लिखी हुई चीजोंमेंसे एक हँड़िया गायब है।" उसके थैलेसे तुमने कुछ

रूबल और अँगूठी चुरायी" उसने दुहराया "और उसे आपसमें बाँट लिया।" "इसके बाद स्मेलकफके साथ मारीटीनियाँ होटलमें वापस आकर तुमने उसे शराबके साथ जहर पिला दिया, जिससे उसकी जान गयी।"

"मैंने कोई भी अपराध नहीं किया है।" उसने तेजीसे कहना शुरू किया "जैसा मैंने कहा, मैं फिर कहती हूँ, मैंने नहीं लिया, मैंने नहीं लिया, मैंने कुछ भी नहीं लिया, अँगूठी उसने खुद मुझे दी थी।"

"तो तुम इस जुर्मको स्वीकार नहीं करती हो कि तुमने दो हजार छै सौ रूबल चुराये ?" प्रमुख मजिस्ट्रेटने पूछा।

"मैं बता चुकी हूँ कि मैंने सिवाय चालीस रूबलके और कुछ नहीं लिया।"

"अच्छा तो तुम इस अपराधको स्वीकार करती हो कि तुमने व्यापारी स्मेलकफको बुकनी मिलाकर शराब पिलायी ?"

"हाँ, मैंने जरूर पिलायी, लेकिन जैसा इन लोगोंने मुझसे बताया था, मुझे यह पूर्ण विश्वास था कि यह बुकनी नींद लानेके लिए है, और इससे कोई नुकसान न होगा। मेरा कभी खयाल नहीं था, न मैं चाहती थी......ईश्वर मेरा साक्षी है। मैं कभी यह नहीं चाहती थी।" उसने कहा।

"तो तुम इस अपराधको तो स्वीकार नहीं करती कि तुमने व्यापारी स्मेलकफके रुपये और अँगूठी चुरायी, लेकिन तुम यह स्वीकार करती हो कि तुमने बुकनी पिलायी।" प्रमुखने कहा।

"जी हाँ, इसको मैं स्वीकार करती हूँ। लेकिन यह मेरा विश्वास था कि वह बुकनी सुलानेके लिए है। मैंने इसे इसलिये दिया था कि वह सो जाये। मेरी यह मन्शा नहीं थी और न मैं यह समझती थी कि इतना बुरा हो जायेगा।"

"अच्छा!" प्रमुखने कहा;—और ऐसा मालूम होता था कि वह अपने प्रश्नोंके परिणामसे बहुत संतुष्ट है। "अब तुम हमें यह बताओ

कि ये सब बातें हुईं कैसे ?" यह कहकर वह अपनी पीठको कुर्सीके पिछले हिस्सेसे टेककर और अपने हाथको मेजपर रखकर बैठ गया। और बोला "जो कुछ बातें हुईं, सब बता दो। अगर साफ साफ और सब बातें बता दोगी तो इससे तुम्हारा फायदा होगा।"

मस्लोवा प्रमुखको चुपचाप एकटक देखती रही।

"हाँ, बताओ क्या हुआ ?"

"क्या हुआ ?" मस्लोवाने जल्दीसे कहना शुरू किया "मैं होटल आयी और मुझे कमरेमें दाखिल कर दिया गया। वह वहाँ था और बहुत पी चुका था।" जब मस्लोवाने "वह" शब्दका उच्चारण किया तो उसकी आँखोंमें भयंकरता दिखाई देती थी। "मैं जाना चाहती थी लेकिन उसने मुझे जाने नहीं दिया।" यह कहकर वह रुक गयी मानो उसकी विचारधारा रुक गयी हो और उसको कुछ याद आ गया हो।

"फिर क्या हुआ ?"

"फिर क्या हुआ ?–मैं थोड़ी देर रही और फिर घर चली आयी।"

इस मौकेपर सरकारी वकील अपनी जगहसे कुछ खिसका और अपनी कुहनियोंपर बेढंगे तरीकेसे झुक गया।

"आप कोई सवाल करना चाहते हैं ?" प्रमुख मजिस्ट्रेटने पूछा। और जब उसको 'हाँ' में उत्तर मिला तो उसने सरकारी वकीलको बोलनेका इशारा किया। "मैं पूछना चाहता हूँ कि मस्लोवा पहलेसे साइमन कारटिंकिनको जानती थी ?" सरकारी वकीलने मस्लोवाको बिना देखे हुए कहा, और यह सवाल करके उसने अपने होंठ दबा लिये और त्यौरियाँ चढ़ा लीं।

प्रमुखने सवालको दुहराया। मस्लोवाने सरकारी वकीलको भय-पूर्वक आँखोंसे देखा।

"साइमनको ?—हाँ" उसने उत्तर दिया।

"मैं यह जानना चाहता हूँ कि अभियुक्ताका परिचय कारटिंकिनके साथ किस प्रकारका था। क्या यह लोग अक्सर मिलते रहते थे ?"

"किस प्रकारका" "............मुसाफिरोंके लिए वह मुझे बुलाता था। इसको तो परिचय बिलकुल नहीं कह सकते।" मस्लोवाने उत्तर दिया, और परेशानीसे कभी यह प्रमुख मजिस्ट्रेटको देखती और कभी सरकारी वकीलको।

"मैं यह जानना चाहता हूँ कि कारटिंकिन सिर्फ मस्लोवाको ही मुसाफिरोंके लिए क्यों बुलाता था, किसी और औरतको क्यों नहीं बुलाता था।" सरकारी वकीलने, आधी खुली और आधी बन्द आँखें करके और चालाकी भरी हुई मुस्कराहटसे पूछा।

"मैं नहीं जानती, मैं कैसे जान सकती हूँ।" मस्लोवाने कहते हुए चारों तरफ डरी हुई नजरसे देखा और फिर अपनी आँखें नेखलीडू-पर रोक लीं। "वह जिसको चाहता था बुलाता था।"

नेखलीडूने सोचा कि इसने मुझे पहचान तो नहीं लिया? और उसका चेहरा लाल पड़ गया। लेकिन मस्लोवाने इसपर कोई विशेष ध्यान दिये बिना अपनी आँखें वहाँसे हटा लीं और अपनी दृष्टि फिर सरकारी वकीलपर जमा ली।

"इसका मतलब यह है कि वह इस बातसे इन्कार करती है कि कारटिंकिनसे उसका कोई घनिष्ठ सम्बन्ध था। बहुत अच्छा, अब मुझे कोई प्रश्न नहीं करना है।" इसके बाद सरकारी वकीलने अपनी कुहनी डेस्कपरसे उठा ली और कुछ लिखने लगा। वास्तवमें वह कुछ लिख नहीं रहा था लेकिन अपने नोटके अक्षरोंपर कलम फेर रहा था। वे अक्षर यह थे—"कुटनियों और वकीलोंको देखा।"

प्रमुख मजिस्ट्रेटने अभियुक्तासे फौरन ही फिर प्रश्न नहीं किया, क्योंकि वह ऐनकवाले मजिस्ट्रेटसे यह सलाह कर रहा था कि जो जो प्रश्न पहलेसे लिखकर तैयार किये गये हैं वह सब पूछे जायँ या नहीं।

"फिर इसके बाद क्या हुआ?" मजिस्ट्रेटने पूछा।

"मैं घर चली आयी" मस्लोवाने कहा—कुछ और बहादुरीसे देखते हुए, लेकिन सिर्फ प्रमुख मजिस्ट्रेटको ही—"रुपया चकलेवालीको

दे दिया और मैं सो गयी। मेरी आँख झपकी ही थी कि हमारी संस्थाकी लड़की वर्थाने आकर मुझे जगा दिया और कहा कि 'जाओ, तुम्हारा व्यापारी फिर आया है!' मैं जाना नहीं चाहती थी, लेकिन मालकिनने हुक्म दिया कि जाओ। हमारे यहाँकी औरतोंको 'वह' खिलाता-पिलाता रहा।" इस मर्तबा भी जब मस्लोवाने 'वह' शब्दका उच्चारण किया तो उसकी आँखोंमें भय दिखाई देता था। "वह हमारे यहाँकी औरतोंको खिलाता-पिलाता रहा और शराब और मँगाना चाहता था, लेकिन उसका सब रुपया खर्च हो चुका था। मालकिनका उसको एतबार न था इसलिये उसने मुझे अपने कमरेमें भेजा और बताया कि कहाँसे कितना रुपया ले आना है। इसपर मैं चली गयी।

प्रमुख मजिस्ट्रेट अपनी बाईं ओर बैठे हुए मजिस्ट्रेटसे कुछ कह रहा था, लेकिन यह जाहिर करनेके लिए कि वह सब बातें सुनता रहा है, उसने मस्लोवाके आखिरी वाक्यको दुहरा दिया।

"तो तुम चली गयी? फिर इसके बाद क्या हुआ?"

"मैं चली गयी, और जैसा उसने बताया था वैसा ही किया। उसके कमरेमें गयी लेकिन अकेली नहीं। मैंने साइमन कारटिंकिनको और इस औरतको बुला लिया।" मस्लोवाने बोचकोवाकी ओर इंगित करते हुए कहा।

"यह झूठी है, मैं कभी कमरेके अन्दर नहीं गयी।" बोचकोवाने कहना शुरू किया, लेकिन रोक दी गयी।

"इन लोगोंकी उपस्थितिमें मैंने चार नोट निकाले।" मस्लोवा बयान करने लगी। उसकी त्योरियाँ चढ़ी हुई थीं लेकिन उसने बोचकोवाकी तरफ नहीं देखा।

"हाँ, लेकिन क्या अभियुक्ताने यह देखा" सरकारी वकीलने पूछा-कि, "जब वह चालीस रुबल निकाल रही थी तो उस थैलेमें और कितने रुबल थे?"

सरकारी वकीलके इस सवालको सुनकर मस्लोवा काँप उठी। वह

यह नहीं समझ सकी कि क्यों, लेकिन उसका मन यह कहता था कि यह आदमी उसकी बुराई चाहता है।

"मैंने गिना नहीं, लेकिन देखा कि कुछ सौ-सौ रूबलके नोट थे।"

"हाँ! अभियुक्ताने सौ-सौ रूबलके नोट देखे! बस, यही तो मैं कहलाना चाहता था।"

"तो तुम इसके बाद रुपया लेकर चली आयी?" प्रमुख मजिस्ट्रेटने कहा, और घड़ीकी तरफ देखा।

"जी हाँ, मैं लेकर चली आयी।"

"फिर क्या हुआ?"

"फिर वह मुझे अपने साथ वापस लाया।"

"यह तो बताओ कि तुमने बुकनी उसे कैसे दी?"

"कैसे दी! मैंने शराबमें उसे डालकर पिला दिया।"

"तुमने क्यों ऐसा काम किया?"

मस्लोवाने फौरन उत्तर नहीं दिया, लेकिन गहरी लंबी साँस ली। "वह मुझे जाने नहीं देता था" उसने थोड़ी देर चुप रहनेके बाद कहा "और मैं बिल्कुल थक गयी थी इसलिए मैं बरामदेमें बाहर निकल आयी और साइमनसे कहा, 'अगर मुझे इससे छुट्टी मिल जाती तो बहुत अच्छा था, मैं बिल्कुल थक गयी हूँ।' साइमनने कहा कि 'हम लोग भी परेशान हो गये हैं। हम लोग सोच रहे थे कि इसको नींद लानेवाली कोई दवा दे दें। जब वह सो जायेगा तब तुम चली जा सकोगी।' मैंने कहा 'बहुत अच्छा' मैंने समझा कि इससे कोई नुकसान न होगा। साइमनने मुझे एक पुड़िया दे दी। मैं कमरेके अन्दर गयी। वह परदेके पीछे पड़ा हुआ था। उसने फौरन शराब माँगी। मैंने उसकी मेजसे एक बोतल उठायी, दो गिलासोंमें शराब डाली, एकमें अपने लिए, दूसरेमें उसके लिए। उसके गिलासमें मैंने बुकनी डाल दी और उसे दे दिया। अगर मुझे यह मालूम होता कि पीनेसे वह मर जायगा तो मैं उसको क्यों देती?"

"अच्छा, यह बताओ कि अँगूठी तुम्हारे पास कैसे पहुँची ?" मजिस्ट्रेटने पूछा।

"उसने खुद मुझे दी।"

"कब दी ?"

"उस समय दी जब वह मेरे साथ होटल वापिस आया। मैं वापिस जाना चाहती थी, इसपर उसने नाराज होकर मेरे सरमें एक घूँसा मारा जिससे मेरे सरकी कंघी टूट गयी। मैं बहुत नाराज हुई और मैंने कहा कि मैं चली जाऊँगी। इसपर उसने अपनी उँगलीसे अँगूठी निकालकर दी, ताकि मैं चली न जाऊँ।"

सरकारी वकील फिर धीरेसे उठा और सादगीका भाव प्रकट करते हुए उसने कुछ प्रश्न पूछनेकी इजाजत माँगी। जब उसको इजाजत मिल गयी तो उसने अपने कढ़े हुए कालरपर अपने सरको दबाते हुए पूछा—

"मैं यह जानना चाहता हूँ कि व्यापारी स्मेलकफके कमरेमें मस्लोवा कितनी देर तक रही ?"

मस्लोवा फिर डरी। उसने परेशानीके साथ एक दफा सरकारी वकीलको देखा, फिर प्रमुख मजिस्ट्रेटकी ओर फिर कर जल्दीसे बोली—

"मुझे यह नहीं याद है कि मैं कितनी देर रही।"

"अच्छा, लेकिन क्या अभियुक्ताको यह याद है कि स्मेलकफके कमरेसे निकल आनेके बाद वह होटलके किसी दूसरे कमरेमें गयी ?"

मस्लोवाने थोड़ी देर सोचा और बोली "हाँ, मैं उसीके पासवाले कमरेमें गयी जो बिलकुल खाली था।"

"तुम इस कमरेमें क्यों गयीं ?" सरकारी वकीलने पूछा और यह बात बिलकुल भूल गया कि उसे सीधे अभियुक्तासे प्रश्न न करना चाहिये।

"मैं उस कमरेमें थोड़ी देर आराम करने गयी और इस बातका इन्तजार कर रही थी कि बग्घी आ जाय।"

"अभियुक्ताके साथ कारटिंकिन भी कमरेतक गया था या नहीं ?"

"वह बादको आया ।"

"वह बादको क्यों आया ?"

"व्यापारीकी शराब कुछ बच गयी थी और हम दोनोंने मिलकर उसे खतम कर दिया ।"

"ओ ! मिलकर खतम कर दिया । बहुत अच्छा ; और कैदीने कारटिंकिनसे कुछ बात की ? और की तो क्या ?"

मस्लोवाकी त्योरियाँ फौरन चढ़ गयीं । वह बिलकुल लाल हो गयी और उसने जल्दीसे कहा—

"क्या बात की ? मैंने कोई बात नहीं की । बस इतना ही मैं जानती हूँ । तुम्हारी तबीयतमें जो आवे, करो, मैं अपराधिनी नहीं हूँ बस !"

"अब मुझे कुछ नहीं पूछना है ।" सरकारी वकीलने कहा और अपने कंधेको अस्वाभाविक ढंगसे हिलाते हुए बहसके लिए तैयार किये गये अपने नोटमें यह टाँक लिया कि, "अभियुक्ताने अपने बयानमें भी यह कहा है कि वह कारटिंकिनके साथ खाली कमरेमें गयी ।"

थोड़ी देरके लिए सन्नाटा रहा ।

"अब तुम्हें तो कुछ और नहीं कहना है ?"

मैंने सब कुछ बता दिया ।" मस्लोवाने लंबी साँस भरते हुए कहा और बैठ गयी ।

इसके बाद प्रमुख मजिस्ट्रेटने कुछ लिखा और बायीं तरफ बैठे हुए मजिस्ट्रेटने उसके कानमें कुछ कहा । इसपर उसने यह एलान किया कि अदालत १० मिनटके लिए बरखास्त होती है । वह खुद जल्दीसे उठ खड़ा हुआ और अदालतके कमरेसे बाहर निकल गया । उसके कानमें जो बात कही गयी थी वह यह थी कि उस मजिस्ट्रेटके पेटमें कुछ दर्द पैदा हो गया था इसलिए वह मालिश कराना और

कुछ दवा पीना चाहता था। अदालतकी कारवाई सिर्फ इसीलिए स्थगित की गयी थी।

जब मजिस्ट्रेट लोग चले गये तो वकील, ज्यूरी और गवाह लोग भी उठ खड़े हुए। उनके हृदयोंमें यह सुखद भावना थी कि कामका कुछ हिस्सा खतम हो गया। यह लोग इधर-उधर टहलने लगे।

नेखलीडू ज्यूरीवालोंके कमरेमें चला गया और एक खिड़कीके पास बैठ गया।

बारहवाँ अध्याय

यही कटूशा थी।

नेख्लीडू और कटूशाका सम्बन्ध इस प्रकारका था—

जब नेख्लीडूने पहली दफा कटूशाको देखा वह यूनिवर्सिटीमें थर्ड-इयरमें पढ़ता था और कब्जा आराजीपर एक निबन्ध गरमियोंकी छुट्टीमें जिसे उसने अपनी फूफूके यहाँ बिताया था, लिख रहा था। उसके पहले वह, अपनी गरमियोंकी छुट्टी अपनी माँकी बड़ी रियासतमें, जो मास्कोके नजदीक थी, जाकर बिताया करता था, लेकिन इस साल उसकी बहिनकी शादी हो गयी थी और उसकी माँ देशके बाहर एक चश्मेपर रहनेके लिए चली गयी थी और चूँकि उसे निबन्ध लिखना था इसलिए उसने यह निश्चय किया कि गरमियोंकी छुट्टीमें अपनी फूफूके यहाँ जाकर रहेगा। इसकी जमींदारी एकान्तमें थी जहाँ बहुत शांति रहती थी, और वहाँपर उसके मनकी एकाग्रताको भंग करनेके लिए कोई बात नहीं पायी जाती थी। उसकी फूफू अपने इस भतीजेको जो इस रियासतका उत्तराधिकारी होता था, बहुत चाहती थी और वह भी इसको और इसके सीधे-सादे और पुराने ढंगके जीवनको पसन्द करता था।

इस गरमीमें, जब नेख्लीडू अपनी फूफूके घरपर था, उसके मनकी भी वही आनन्दपूर्ण दशा थी जो हर एक नौजवानकी होती है जो अपने जीवनमें सबसे पहली दफा बिना किसी आदमीके मार्ग दिखाये ही जीवनके अर्थ और सौन्दर्यको समझने लगता है और मनुष्यके उस कर्तव्यका महत्त्व जानने लगता है जो जीवनमें उसे मिला है, और जब सम्पूर्णताकी ओर अपनी आत्माकी और सारे संसारकी अमित उन्नतिकी सम्भावनाको समझकर वह अपने कर्तव्यका पालन करनेके लिए पूरी-पूरी आशाके साथ ही नहीं बल्कि अपनी कल्पनाकी सम्पूर्णताको पानेका पूर्ण

विश्वास करके अपनेको उस कर्तव्यके लिए समर्पण कर देता है। इसी साल उसने, जब कि वह यूनिवर्सिटीमें था, स्पेन्सरकी लिखी हुई सोशल इस्टैटिक नामकी पुस्तक पढ़ी थी। स्पेन्सरके विचारोंका, विशेषकर जमींदारी प्रथाके सम्बन्धमें उसके विचारोंका, उसके ऊपर बहुत प्रभाव पड़ा था क्योंकि वह खुद भी एक बड़ी जमींदारीका उत्तराधिकारी था। उसका पिता अमीर नहीं था लेकिन उसकी माताको अपने विवाहमें दस हजार एकड़ जमीन दहेजमें मिली थी। उस समय वह यह बात अच्छी तरह समझता था कि जमीनपर निजी अधिकार रखनेकी प्रथामें अन्याय और जुल्म है। चूँकि वह उस किस्मका आदमी था जिनको अन्तःकरणकी आज्ञापर त्याग करनेमें सबसे ज्यादा आध्यात्मिक आनन्द मिलता है, उसने यह निश्चय किया था कि वह जमींदारीमें मिलकियतका हक त्याग देगा और किसानोंको वह जमीन दे देगा जो उसे अपने बापसे प्राप्त हुई थी। जमींदारीके इस मसलेपर वह निबन्ध लिख रहा था।

जिस समय वह अपनी फूफूकी जमींदारीपर था उसकी दिनचर्या निम्नलिखित थी—वह बहुत सुबह तीन बजे उठता था और सूरज निकलनेके पहले, जब कुहरा छाया रहता था, पहाड़ीके नीचे नदीमें स्नान करने जाया करता था; वह जब वापिस आता था फूलों और घासकी पत्तियोंपर ओस पड़ी रहती थी। कभी-कभी कहवा पीनेके बाद वह अपनी किताबें और कागज लेकर बैठ जाता, और अपना निबन्ध तैयार करता था। लेकिन ज्यादातर वह घरसे निकल पड़ता और खेतों और जंगलोंमें घूमता रहता था। खानेके पहले वह बागमें किसी जगह पड़कर सो जाता था। भोजन करनेके अवसरपर वह अपनी जिन्दादिलीसे अपनी फूफियोंका मनोरञ्जन करता था। फिर या तो घोड़ेपर सवार होकर टहलने चला जाता, या नदीको, जहाँ वह नाव खेता था। शामको या तो बैठकर पढ़ता या अपनी फूफियोंके साथ ताश खेलता था।

बहुत सी रातोंमें ऐसा होता था, विशेष कर चाँदनी रातोंमें, कि

उसे नींद नहीं आती थी। सिर्फ इसलिए कि वह जीवनके आनन्दमय उद्वेगसे परिपूर्ण था और सोनेके बजाय वह अपनी कल्पना और विचारोंमें मग्न कभी-कभी सुबह तक घूमता रहता था।

इस प्रकार शान्ति और आनन्दके साथ उसने अपने आतिथ्यके पहले महीनेको अपनी फूफूके यहाँ गुजारा। अभीतक उसने काली आँखों वाली तेजकदम कटूशाकी तरफ जो वहाँ आधी नौकरानी और आधी घरकी लड़कीकी हैसियतसे रह रही थी, कोई ध्यान नहीं दिया था। उस समयतक अर्थात् उन्नीस बरसकी उमरमें नेखलीडू जो अपनी माँकी सरपरस्तीमें पला था, पवित्रहृदय था। अगर किसी स्त्रीका उसे खयाल आता था तो केवल उसका, जिसके साथ वह विवाह करे; दूसरी स्त्रियाँ, जिनके साथ अपने मतानुसार उसका विवाह नहीं हो सकता उसके लिए स्त्रियाँ नहीं थीं, बल्कि मनुष्य थीं।

लेकिन हजरत ईसाके 'स्वर्गारोहण' के दिन इसी गरमियोंकी छुट्टीमें उसकी फूफूका एक पड़ोसी उसके यहाँ दिन भरके लिए मेहमानकी तरह आया। दो जवान लड़कियाँ, एक स्कूलका विद्यार्थी और एक कलाकार जो किसान खानदानका था, उसके साथ रहता था। चाय पीनेके बाद यह सबके सब मकानके सामनेके घासके मैदानमें, जहाँकी घास काट ली गयी थी, खेलने-कूदनेके लिए गये ये लोग छुआ-छुऔवल खेलने लगे और कटूशा भी इसमें शामिल हो गयी। यह लोग इधर-उधर दौड़ते थे और कभी कोई किसीकी तरफ हो जाता था कभी किसीकी तरफ। एक बार ऐसा हुआ कि कटूशा नेखलीडूकी तरफ पड़ी। अभीतक नेखलीडू कटूशाकी शकल-सूरत पसन्द करता था लेकिन उसके दिमागमें यह बात बिल्कुल नहीं आयी थी कि उसके साथ इससे भी अधिक घनिष्ट सम्बन्ध हो सकता है। "इन दोनोंको पकड़ना बहुत मुश्किल है।" नौजवान, हँसमुख कलाकारने कहा "जबतक यह लोग ठुकरा कर गिरें न।" अब पकड़नेकी बारी इसी कलाकारकी थी, जो अपने छोटे फैले हुए और मजबूत किसानी पैरोंसे बहुत तेज दौड़ सकता था।

"आप हमें नहीं पकड़ सकते।"

"एक, दो तीन।" और कलाकार ने ताली बजायी।

कटूशा अपनी हँसी न रोक सकी। वह पैंतरा बदलकर नेख्लीडूके पीछे पहुँच गयी। वह उससे हाथ मिलाकर बायीं तरफ भागी, नेख्लीडू दाहिनी तरफ भागा ताकि कलाकार उसको पकड़ न ले। लेकिन थोड़ी देर बाद जब उसने देखा तो कलाकार कटूशाके पीछे दौड़ रहा था, जो उससे बहुत आगे थी और बड़ी फुर्तीसे दौड़ रही थी। इन लोगोंके सामने एक झाड़ी थी। कटूशाने नेख्लीडूको इशारा किया कि वह दौड़कर उसके पास आ जाय जिससे यह दोनों हाथ मिला सकें क्योंकि एक दफा हाथ मिलानेके बाद अगर ये छू भी जाते तो चोर नहीं हो सकते थे। इस खेलका यही कायदा था। नेख्लीडू कटूशाके इशारेको समझ गया और झाड़ीकी ओर दौड़ा। लेकिन उसे यह नहीं मालूम था कि वहाँ एक छोटीसी खाई थी जिसपर घास-फूस उग आये थे। इस खाईमें जो ओससे भींगी हुई थी, नेख्लीडू जाकर गिर पड़ा। उसके हाथोंमें काँटे गड़ गये, लेकिन वह फौरन उठकर खड़ा हो गया और अपनी बेवकूफीपर हँसने लगा।

कटूशा जिसकी आँखें काली हो रही थीं और जिसका चेहरा खुशीसे दमक रहा था, उसकी तरफ भागी हुई चली आ रही थी। उसने दौड़कर नेख्लीडूसे हाथ मिला लिया।

"काँटे जरूर गड़ गये होंगे!" उसने अपने दूसरे हाथसे अपने बालोंको दुरुस्त करते हुए कहा। कटूशा हाँफ रही थी और मधुर मुस्कराहटके साथ नेख्लीडूके चेहरेकी तरफ देख रही थी।

"मैं नहीं जानता था कि यहाँ एक खंदक है।" नेख्लीडूने मुस्कराते हुए कहा और उसके हाथको अपने हाथमें दबाये ही रखा। वह जरा और नजदीक खिसक आयी और वह भी आप ही आप उसकी तरफ झुक गया। वह भी नहीं हटी। उसने उसका हाथ जोरोंसे दबाकर होठोंपर उसे चूम लिया।

"यह क्या करते हो !" उसने कहा और अपना हाथ छुड़ाकर उसके पाससे तेजीसे भाग गयी।

फूलकी दो टहनियाँ तोड़कर जिनमें फूल खिले हुए थे, वह अपने गरम चेहरेपर हवा करने लगी। इसके बाद नेख्लीडूको फिरकर देखती और अपने हाथ तेजीसे हिलाती हुई वह आगे बढ़कर दूसरे खिलाड़ियों के साथ जा मिली।

इसके बाद नेख्लीडू और कटूशाके दर्मियान वह विशेष सम्बन्ध पैदा हो गया जो अक्सर ऐसे पवित्र नौजवान लड़के-लड़कियोंमें पैदा हो जाता है जो एक दूसरेसे आकर्षित रहते हैं।

जब कभी कटूशा उसके कमरेमें आती या जब कभी वह उसके सफेद (एपरन) कपड़ेको देख लेता तो नेख्लीडूकी आँखोंमें हर एक चीज सरस और सजीव हो जाती थी जैसे सूरजके निकलने पर हर एक चीजमें अधिक आनन्द, महत्त्व, और रस आ जाता है। उसका सादा जीवन खुशीसे परिपूर्ण हो जाता था और यही हाल कटूशाका भी था। कटूशाकी मौजूदगीका ही यह प्रभाव नहीं था, केवल यह विचार कि. कटूशा है और कटूशाके दिलमें केवल यह विचार कि नेख्लीडू है, उनके मनपर इस प्रकारका प्रभाव डालता था।

अगर उसके पास उसकी माँकी कोई कटु चिट्ठी आ जाती, या अपने निबंधमें उसको कोई कठिनाई होती या उसके ऊपर अकारण वह उदासी छा जाती, जो नौजवानोंमें अक्सर हो जाती है, तो वह कटूशाका स्मरण कर लेता या उसे देख लेता, सारी कटु भावनाएँ गायब हो जातीं।

कटूशाको घरमें बहुत काम करना पड़ता था। लेकिन उसे पढ़नेकी भी कुछ छुट्टी मिलती थी। नेख्लीडूने डास्टवस्की और टूर्गनीफकी किताबें जिन्हें उसने हालमें ही खुद पढ़ा था कटूशाको पढ़नेके लिए दीं। कटूशाको टूर्गनीफकी लिखी हुई, "शान्तमय कोना" नामकी पुस्तक बहुत पसन्द थी। इन लोगोंको कभी-कभी चोरी-छिपे, रास्तेमें, बरामदेमें, आँगनमें, ज्यादातर फूफूकी बुड्ढी नौकरानी मेट्रीना पैभलोम्नाके

कमरेमें जहाँ नेख्लीडू कभी-कभी चाय पीता था और जहाँ कटूशा काम करती थी, बातचीत करनेका मौका मिल जाता था। मैट्रीनापैभलोम्नाके कमरेमें इन लोगोंकी बातचीत बहुत सरस होती थी। जब यह लोग अकेले मिलते थे तब इनकी बात-चीत उखड़ी होती थी। इनके मुँहसे जो शब्द निकलते थे वह कुछ और होते थे लेकिन इनकी आँखोंसे निकलनेवाले शब्द कुछ और ही, और कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हुआ करते थे। इनके होंठ सिकुड़ जाते थे और इनको किसी बातसे भय पैदा हो जाता था जिससे ये फौरन ही अलग हो जाते थे।

नेख्लीडू और कटूशाके दर्मियान यह सम्बन्ध जबतक पहिली दफा नेख्लीडू अपनी फूफूके यहाँ रहा, कायम रहा। इस सम्बन्धको लोग देखते थे और डरते थे। कुछ लोगोंने रानी हेलिना आइवनोवाके पास अर्थात् नेख्लीडूकी माताके पास भी लिखकर भेजा। उसकी फूफू मेरी आइवनोवाको यह आशंका हुई कि कहीं कटूशाके साथ नेख्लीडूका बेजा सम्बन्ध न हो जाय, लेकिन उसकी आशंका बेबुनियाद थी, क्योंकि नेख्लीडू यद्यपि स्वयं नहीं जानता था कि वह कटूशासे प्रेम करता, फिर भी वह प्रेम करता था। इसी पवित्रतामें इन दोनोंकी बचत थी। हृदयमें, कटूशापर शारीरिक अधिकार करनेकी इच्छा नहीं थी बल्कि वह तो इस खयालसे ही भयभीत हो जाता था। कवि-हृदय सोफिया आइवनोवाकी आशंकामें इससे ज्यादा सच्चाई थी और वह यह कि कहीं ऐसा न हो कि डिमिट्री जो इतने ज्यादा अच्छे चरित्रका नौजवान है, कटूशापर मोहित हो जाय और अपनी हैसियत और खानदानका खयाल छोड़कर कटूशाके साथ शादी कर ले।

अगर नेख्लीडूको उस समय कटूशाके प्रति अपने प्रेमका ज्ञान होता और विशेषकर अगर उसे यह बताया जाता कि कटूशा ऐसी कम हैसियतकी लड़कीके साथ उसका सम्बन्ध नहीं हो सकता तो अपने चरित्रकी सच्चाईसे प्रेरित होकर नेख्लीडू अवश्य इस निष्कर्षपर पहुँच जाता कि उसे उस लड़कीके साथ विवाह न करनेकी कोई वजह नहीं हो सकती,

जिससे वह प्रेम करता है, फिर लड़की चाहे जिस हैसियतकी क्यों न हो, और शादी आसानीसे हो जाती। लेकिन उसकी फूफूने अपनी आशंका-की बात उसे नहीं बतायी। नेख्लीडू जब चला गया, उसे कटूशाके प्रति *अपने प्रेमका ज्ञान नहीं था। उसे सिर्फ इतनी बातका निश्चय था कि* कटूशाके प्रति उसके हृदयमें एक भावना है, और यह भावना उसके जीवनकी आनन्दमय धाराका जिसमें वह मग्न था एक उद्गार मात्र है। वह यह भी समझता था कि यह हँसमुख लड़की इस आनन्दोपभोगमें उसके साथ है इसलिए जब वह लौट रहा था और कटूशा उसकी फूफूके पीछे, दहलीजमें खड़ी हुई अपनी काली जरासी तिरछी, आँसुओंसे डब-डबायी हुई, आँखोंसे उसको देख रही थी, तब वह भी अपने दिलमें अनुभव कर रहा था कि वह एक सुन्दर बहुमूल्य वस्तुसे बिदा हो रहा है जो उसे फिर न मिलेगी। इसलिए वह उदास हो गया।

"नमस्कार, कटूशा!" नेख्लीडूने बिदा होते हुए कहा "और हर एक बातके लिए मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ।" यह कहते हुए और सोफिया आइवनोवाकी टोपीके ऊपरसे कटूशाको देखते हुए नेख्लीडू गाड़ीमें बैठ गया।

"नमस्कार! डिमिट्री आइवनिच!" कटूशाने अपनी मधुर मुलायम आवाजसे कहा। उसके आँसू उसकी आँखोंमें ही दबे रह गये। वह बड़े कमरेमें दौड़कर चली गयी जहाँ शान्तिसे बैठकर रो सके।

तेरहवाँ अध्याय

इसके बाद नेख्लीडूको दो वर्षसे ज्यादातक कटूशासे मिलनेका मौका नहीं मिला। दो वर्षके बाद जब कटूशासे इसकी मुलाकात हुई, फौजमें इसकी तरक्की हो चुकी थी। यह अफसर बना दिया गया था और अपनी रेजिमेण्टमें काम करनेके लिए जा रहा था। रास्तेमें यह कुछ दिनोंके लिए अपनी फूफूके साथ रहनेके लिए आ गया था। अब इसकी मनोदशा वह नहीं रह गयी थी, जो तीन वर्ष पहले गरमीके दिनोंमें थी। पहले यह एक सच्चा, स्वाधीन नवयुवक था, अच्छे कामके लिए त्याग करनेके वास्ते बराबर तत्पर रहता था, अब यह एक शाइस्ता, पतित और स्वार्थी आदमी हो गया था और केवल अपने सुखकी ही इसे पर्वाह थी। उस समय ईश्वरकी दुनिया इसे एक रहस्य मालूम होती थी जिसके सुलझानेके लिए उत्साहसे यह कोशिश करता था। अब जीवनकी हर एक बात इसके लिए स्पष्ट हो चुकी थी और जिस प्रकारकी जिन्दगी यह बिता रहा था उसके अनुसार इसके मनमें हर एक प्रश्नका उत्तर निर्धारित हो चुका था। पहले प्रकृतिसे, और उन लोगोंके जो पहले गुजरे हैं, जीवन, विचार और भावनाओंसे यह सम्पर्क रखनेका महत्त्व समझता था—अर्थात् कवियों और दार्शनिकोंके विचारसे सम्पर्क रखनेका महत्त्व समझता था। अब तो यह मानुषी व्यवहार और संस्थाओंमें और अपने संगी-साथियोंसे सम्पर्क रखनेमें महत्त्व देखता था। उस समय स्त्रियाँ इसे रहस्यपूर्ण और प्रलोभिनी मालूम होती थीं, प्रलोभिनी इसलिए कि उनके चारो ओर रहस्यका एक परदा पड़ा रहता था, अब तो स्त्रीका उद्देश्य इसकी दृष्टिमें स्पष्ट हो चुका था। अपने कुटुम्बकी और अपने मित्रोंकी स्त्रियोंको छोड़कर बाकी सभी स्त्रियोंका उद्देश्य स्पष्ट था। औरतें इसकी नजरमें एक साधन थीं, उस सुखका

जिसका यह अनुभव कर चुका था। उस समय रुपयेकी इसे आवश्यकता नहीं थी क्योंकि जितना खर्च इसकी माँ इसको देती थी, उसका तृतीयांश भी यह खर्च नहीं कर पाता था और यह बिना किसी दिक्कतके अपने बापसे पायी हुई जायदाद किसानोंको दे सकता था। लेकिन अब पन्द्रह सौ रुबल महीनेका गुजारा जो इसे मिलता था इसके लिए काफी नहीं था और इसके बारेमें इसकी अपनी माँसे एक दो दफा झड़प भी हो चुकी थी।

पहले यह अपनी आत्माको "अहं" समझता था, अब एक स्वस्थ, "हठ पशु-प्रकृति"को यह "अहं" समझता था।

नेख्लीडूमें यह सब भयंकर परिवर्तन इसलिए हो गये क्योंकि उसने अपने ऊपर विश्वास करना छोड़ दिया और दूसरोंपर विश्वास करने लगा। इसकी वजह यह थी कि अपनी बातपर विश्वास करके रहनेमें बड़ी कठिनाइयाँ पड़ती थीं। अपनी आत्माकी बातपर विश्वास करनेमें हर एक प्रश्नका स्वयं ही निर्णय करना पड़ता था और यह निर्णय "पशु—अहं"के पक्षमें नहीं होता था, जो बराबर अपनी तुष्टिके लिए अग्रसर होता रहता है। करीब-करीब सभी प्रश्न इस पशु-अहके विपरीत ही निर्णय होते थे। अगर दूसरेपर विश्वास किया जाय तो निर्णय करनेकी कोई बात ही नहीं रह जाती, हर एक बातका निर्णय पशु-अहंके पक्षमें और आत्माके खिलाफ हो चुका है। केवल इतनी ही बात नहीं थी, जब वह अपने अंतःकरणकी बातपर विश्वास करता था, चारों ओरकी दुनिया उसको बुरा-भला कहती थी। दूसरोंकी बातके ऊपर विश्वास करनेपर सभी उसकी सराहना करते थे। इसलिए पहले जब कभी नेख्लीडू जीवन-की गंभीर बातोंपर विचार या बात-चीत करता था—जैसे ईश्वरके बारेमें, सत्यके बारेमें, दरिद्रता या अमीरीके बारेमें, तो उसके चारो ओरके आदमी उसे सनकी कहते थे और कुछ हँसी भी उड़ाते थे, और उसकी माँ और फूफू तो उसे छोटा महात्मा कहके हल्का ताना दिया करती थीं। लेकिन अगर वह उपन्यास पढ़ता था, गंदे किस्से बयान

करता था, फ्रांसीसी थियेटरोंमें श्रृङ्गारपूर्ण खेल देखने जाता था और वहाँकी बातें यहाँ आकर दुहराता था तो सभी उसकी तारीफ करते थे और उसको प्रोत्साहन देते थे। जब यह इस बातकी कोशिश करता कि अपनी आवश्यकताओंको कम करे अर्थात् जब वह पुराने पैबन्ददार कोट पहनता था और शराब नहीं पीता था, तो लोग उसे सनकी समझते थे, और कहते थे कि बन रहा है। लेकिन जब वह शिकारपर खूब खर्च करता, अपने पढ़ने-लिखनेके कमरेको शानदार तरीकेसे सजाता, तो सभी उसकी प्रशंसा करते और उसके इस शौकको प्रोत्साहन देनेके लिए कीमती भेंट देते। जब वह पवित्र जीवन व्यतीत करना चाहता और विवाहके पहले ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहता था, तो उसके दोस्त कहने लगते कि तन्दुरुस्ती खराब हो जायेगी। एक दफा जब उसकी माँने यह सुना कि नेखलीडूने एक फ्रांसीसी औरतको अपने एक दोस्तसे छीनकर अपनी ओर आकर्षित कर लिया तो दुखी होनेके बजाय वह बहुत खुश हुई कि मेरा लड़का अब मर्द हो गया। कटूशाके बारेमें उसकी माँ जब यह सोचती कि कहीं वह कटूशासे शादी न करले तो काँप उठती थी। इसी तरीकेसे जब नेखलीडू बालिग हुआ था और यह समझकर कि जमीनमें निजी मिलकियतका कायम रखना अनुचित है, उसने अपने बापसे पायी हुई छोटी-मोटी जमींदारीको किसानोंको दे दिया था, तो उसके खानदान वाले घबरा गये थे और उसके रिश्तेदार उसको बेवकूफ बनाते थे। यह लोग उससे बराबर कहते रहते थे कि तुम्हारे जमीन दे देनेकी वजहसे किसान लोग कोई अमीर नहीं हो गये बल्कि ज्यादा गरीब हो गये, क्योंकि उन्होंने अपने यहाँ तीन-तीन शराबकी दूकानें खुलवायी हैं और काम-काज नहीं करते। लेकिन जब नेख्लीडू फौजमें दाखिल हुआ और वहाँ अपने ऊँचे खानदानके साथियोंके साथ जूएमें या और बातोंमें इतना खर्च करने लगा कि उसकी माँको अपनी पूँजीसे रुपया निकालना पड़ा तो उसे कोई तकलीफ नहीं हुई, क्योंकि वह कहती थी कि यह तो स्वाभाविक बात है, और अच्छा है कि अच्छे लोगोंकी संगतमें

नेखलीडू अपनी जिन्दगीके पहले भागमें, जितना ऐश-आराम कर सके कर ले। कुछ दिन तो नेखलीडूने स्थितिसे संग्राम जारी रखा, जब उसे आत्मविश्वास था, जिस चीजको वह अच्छा समझता था, वही बुरी समझी जाती थी, और जिस चीजको बुरा समझता था वह अच्छी समझी जाती थी, लेकिन कुछ दिनोंके बाद यह संग्राम बहुत कठोर हो गया। अन्तमें उसने हाथ पैर मारना बन्द कर दिया अर्थात् अपना विश्वास छोड़कर दूसरोंपर विश्वास करने लगा। पहले तो आत्मविश्वास छोड़नेसे उसे तकलीफ हुई लेकिन यह तकलीफ ज्यादा दिनोंतक कायम नहीं रही। उसी जमानेमें उसने तम्बाकू और शराब पीनेकी आदत डाल ली और बहुत जल्द यह कटु भावना उसके दिलसे जाती रही और उसे कुछ शांति मिल गयी।

नेखलीडूके स्वभावमें तेजी तो थी ही। वह अपने जीवनके इस नये मार्गपर, जिसे उसके चारों तरफके लोग बहुत पसन्द करते थे, बहुत उत्साहके साथ अग्रसर हो गया और अपनी अन्तरात्माको जो एक दूसरे मार्गकी माँग कर रही थी, बिल्कुल दबा दिया। यह बात उस समय शुरू हुई जब वह उठकर पीटर्सवर्ग रहनेके लिए चला गया, और उस समय पराकाष्ठाको पहुँची जब वह फौजमें दाखिल हुआ।

सैनिक जीवन आम तौरपर आदमीको नीचे गिरा देता है; इसमें पहुँचकर आदमी बिल्कुल आलसी हो जाता है—अर्थात् वहाँपर लाभदायक और बुद्धियुक्त कामका बिल्कुल अभाव रहता है। सेनामें पहुँचकर आदमी मानुषी कर्त्तव्यसे स्वच्छन्द हो जाता है और उसकी जगहपर उसके सामने चन्द रस्मी कर्त्तव्य आ जाते हैं, जैसे रेजिमेंटकी वर्दीको या झण्डेकी इज्जत करना। इसमें पहुँचकर आदमीको दूसरे आदमियोंपर पूरा पूरा अधिकार ही नहीं मिल जाता बल्कि वह अपनेसे ज्यादा बड़े ओहदेदारकी मातहतीमें गुलामकी तरह काम करता है।

लेकिन जब सैनिक नौकरीसे पैदा होनेवाले पतनके साथ धन और

शाही खानदानके सम्पर्कसे पैदा होनेवाला पतन मिल जाता है तो यह पतन महापतनका रूप धारण कर लेता है और आदमी स्वार्थ-परायणतासे सम्पूर्णतया उन्मत्त हो जाता है ! (फौजी नौकरीमें वर्दी, झंडा इत्यादिकी इज्जत करनेके साथ साथ उद्दंडता और कत्लकी तो इजाजत होती ही है और रूसमें कुछ रेजिमेंट ऐसी हैं जिनके अफसर अमीर और बड़े खानदानके होते थे) स्वार्थ-परायणताका यह उन्माद नेख्लीडूमें उस क्षणसे शुरू हुआ जिस क्षण वह फौजमें दाखिल हुआ और उसी प्रकार अपना जीवन निर्वाह करने लगा जैसा उसके संगी-साथी करते थे। उसे कोई काम-काज तो रहता नहीं था सिवाय इसके कि अपनी चमकीली-भड़कीली वर्दी पहने, दूसरों द्वारा साफ सुथरे किये हुए हथियार लगावे, नफीस घोड़ेपर जिसे दूसरोंने खिला-पिलाकर निकालकर दुरुस्त कर रक्खा है, चढ़कर कवायद-परेड करे। यहाँपर उसे और फौजी आदमियोंकी तरह सिर्फ यह काम रहता था कि अपनी तलवार चमकावे, बन्दूक दागे और दूसरोंको भी यही सिखलावे। इसके अतिरिक्त उसे कोई दूसरा काम नहीं था। ऊँची हैसियतके आदमी, छोटे बड़े लोग, जार और उसके दरबारी इस कामकी सिर्फ इजाजत ही नहीं देते थे, बल्कि इसके लिए उसकी प्रशंसा करते थे और उसको धन्यवाद देते थे।

इसके अलावा दूसरी बात जो जरूरी और महत्त्वपूर्ण समझी जाती थी, खाना-पीना था। अफसरोंके क्लबमें और अच्छे-अच्छे होटलोंमें जाकर खाना और शराब पीना इसमें बड़ी-बड़ी रकमें जो अदृश्य स्रोतसे आप ही आप पहुँच जाती थीं खर्च करना, थियेटर जाना, नाचमें शामिल होना और औरतोंसे मिलना-जुलना भी इस जीवनका जरूरी अंग था। इसके बाद फिर वही घोड़ेकी सवारी, तलवारका चमकाना, कूदना-फाँदना और शराब, ताश और स्त्रियोंपर पैसेका लुटाना।

इस प्रकारका जीवन फौजके आदमियोंको औरोंकी अपेक्षा ज्यादा नीचे गिरा देता है, क्योंकि अगर फौजी आदमीके अलावा कोई दूसरा

इस प्रकार अपना जीवन बितावे तो उसे अपने दिलकी गहराईमें शर्म आये बिना न रहे। फौजका आदमी, इसके विपरीत, इस किस्मकी जिंदगीपर अभिमान करता है, विशेषकर लड़ाईके जमानेमें। नेख्लीडू तो तुर्कोंके साथ लड़ाईका एलान होनेके बाद ही फौजमें दाखिल हुआ था। फौजी आदमी तो यह कहता है कि लड़ाईमें हम अपनी जान देनेके लिए तैयार हैं और इस कारण ऐश आरामकी जिंदगी सिर्फ क्षम्य ही नहीं बल्कि आवश्यक भी है, इसलिए हम इस प्रकारकी जिंदगी बिताते हैं।

अपने जीवनके इस जमानेमें नेख्लीडूके विचार इस तरह उलझे हुए थे, और उसे इस बातपर प्रसन्नता होती थी कि जिस नैतिक मर्यादाको उसने अपने सामने रख छोड़ा था, उससे आजाद है। इस समय उसके मनकी दशा यह थी कि वह स्वार्थपरायणताके जटिल उन्मादसे पीड़ित था।

इस मनोदशामें तीन वर्षकी गैरहाजिरीके बाद नेख्लीडू अपनी फूफूसे मिलने आया।

चौदहवाँ अध्याय

नेख्लीडू अपनी फूफूकी जमींदारीपर इसलिए गया था कि जिस सड़कसे होकर उसे अपनी रेजिमेण्टको जाना पड़ता था, उसी सड़कपर इसकी जमींदारी थी। दूसरा कारण यह था कि इन फूफियोंने उसको बहुत आवभगतके साथ बुलाया था। तीसरी बात यह थी कि वह कटूशाको देखना चाहता था। शायद अपने दिलके भीतर उसने वह तमाम बुरी बातें कटूशाके खिलाफ पहलेसे ही सोच रखी थीं जिनके *लिए उसकी असंयमित पाशविक प्रकृति उसको बराबर प्रलोभन देती* रहती थी। लेकिन उसने इन सब बातोंको शायद प्रत्यक्ष नहीं किया था। वह तो उन जगहोंमें फिर जाना चाहता था, जहाँ कुछ दिन पहले वह मजेमें जिन्दगी गुजार चुका था। वह अपनी दयालुहृदय, प्रिय, बुड्ढी फूफियोंसे मिलना चाहता था जो उससे बहुत प्रेम करती थीं। वह मधुर कटूशासे मिलना चाहता था जिसकी मधुर स्मृति उसके हृदयमें अभीतक अंकित थी।

मार्चके अन्तमें, गुडफ्राइडेके दिन जब कि बर्फका गलना शुरू हो गया था, नेख्लीडू अपनी फूफूके यहाँ पहुँचा। पानी खूब बरस रहा था जिसकी वजहसे उसके शरीरके कपड़ेका एक धागा भी सूखा नहीं बचा था। उसे बहुत ठण्ढक लग रही थी, फिर भी वह फुर्तीला और चुस्त था जैसा कि इस जमानेमें होता है। जब वह बग्घीपर चिर-परिचित पुराने ढंगके बने हातेमें, जिसके चारों ओर छोटी ईंटोंकी चहारदीवारी थी और जिसकी छतके ऊपर बरफ जमी हुई थी, दाखिल हुआ तो उसके दिलमें यह खयाल आया कि कटूशा अभीतक यहाँ नौकर है या नहीं।

उसको यह आशा थी कि बग्घीकी घण्टी सुनते ही वह बाहर

आयेगी; लेकिन वह नहीं आयी। दो औरतें नंगे पैर हाथमें बाल्टी लिये और अपनी साड़ी उसकाये, जो मालूम होता था कि फर्श साफ कर रही हों, किनारेके दर्वाजेसे बाहर निकलीं। कटूशा सदर दर्वाजेपर भी नहीं थी। सिर्फ तिख्वन नौकर दर्वाजेपर था और वह भी मालूम होता था कि सफाई कर रहा है। उसकी फूफू सोफिया आइवनोवा ही उससे मिलनेके लिए बाहर आयी। वह रेशमी कपड़ा पहने हुए थी और टोपी लगाये थी।

सोफियाने नेख्लीड्डको देखते ही उसको चूम लिया और कहा—"बच्चा बहुत अच्छा किया जो आये, मेरीकी तबीयत अच्छी नहीं है।" उसने बताया "गिरजाघर गयी थी, वह थक गयी है।"

नेख्लीड्डने अपनी फूफूका हाथ चूम लिया और बोल उठा "माफ कीजियेगा, मैंने आपको भिगो दिया।"

"अपने कमरेमें जाओ, तुम तो बिल्कुल थक गये होगे।" उसकी फूफू बोली और पुकारकर कहा, "कटूशा, कटूशा! जल्दीसे काफी बनाकर लाओ।" और नेख्लीड्डकी तरफ देखकर कहने लगी "अच्छा, तुम्हें तो मूँछें निकल आयी हैं।" फौरन ही एक चिरपरिचित मधुर आवाज बरामदेसे आयी। नेख्लीड्डका हृदय फड़क उठा। वह मौजूद है—उसने अपने दिलमें कहा। उसके लिए ऐसा हुआ मानो बादलोंके पीछेसे सूरज निकल आया हो।

नेख्लीड्ड खुशी-खुशी अपने पुराने कमरेमें कपड़े बदलनेके लिए पहुँचा। तिक्खन उसके साथ था। उसके दिलमें यह बात आयी कि तिक्खनसे कटूशाके बारेमें बातचीत करे, कि कहाँ है? कैसी है? क्या करती है? उसकी शादी हुई कि नहीं? इत्यादि इत्यादि। लेकिन तिक्खन उसके आदर-सत्कारमें इतना मग्न था और उसके लिए पानी निकालनेमें इतनी गम्भीरतासे दत्तचित्त था कि नेख्लीड्ड यह निश्चय न कर सका कि कटूशाके बारेमें उससे पूछे या न पूछे। उसने तिक्खनकी नातीके बारेमें पूछा। एक बुड्ढे घोड़ेका हाल जानना चाहा और

पोलकन नामके कुत्तेका हाल पूछा। सब जिंदा थे सिवाय पोलकनके जो पिछली गरमियोंमें पागल होकर मर गया था। अपने भीगे कपड़े उतारकर जब वह नये कपड़े पहन ही रहा था कि नेख्लीडूको परिचित फुर्तीले पैरोंकी आवाज सुनाई दी और दर्वाजेपर खटखटाहट हुई। नेख्लीडू समझ गया कि ये कदम किसके हैं और दर्वाजा किसने खटखटाया है। वही इस तरह चलती थी और वही इस तरह खटखटाती थी।

भीगा ओवरकोट पहनकर, नेख्लीडूने दर्वाजा खोल दिया।

"आ जाओ" उसने कहा। कटूशा आयी। वही कटूशा; जो अब पहलेसे अधिक मधुर हो गयी थी। उसकी हल्की-सी झुकी हुई विचित्र काली आँखें उसी पुराने ढंगसे देखती थीं। आज भी वह पहलेकी ही तरह सफेद कपड़ा (एपरन) अपने आगे बाँधे हुए थी। वह नेख्लीडूके वास्ते उसकी फूफूके पाससे, एक खुशबूदार साबुन जिसके ऊपरका बेठन अभी-अभी खोला गया था, दो तौलियाँ, एक तो कामदार रूसी और दूसरी नहानेवाली इसके लिए लायी थी। नया साबुन, तौलियाँ और कटूशा, तीनों बराबर स्वच्छ, ताजे, अकलुषित और सरस दिखाई देते थे। उसको देखकर आनन्दजनित मुस्कराहटसे कटूशाके मधुर ओठ पहलेकी तरह खिल पड़े। "आप कैसे हैं, डिमिट्री आइवनिच ?" कटूशा कठिनाईसे कह पायी और उसका चेहरा तमतमा उठा।

"नमस्कार ! तुम कैसी हो ?" नेख्लीडूने पूछा और उसका भी चेहरा गुलाबी हो गया। "अच्छी तरहसे हो न ?"

'जिंदा हूँ ! ईश्वरकी कृपा है।" कटूशाने जवाब दिया और कहा "मैं आपके लिए, यह गुलाबी साबुन लायी हूँ जो आपको बहुत पसंद है और यह तौलियाँ हैं जिन्हें आपकी फूफूने भेजा है।" साबुन लेकर उसने मेजपर रख दिया और तौलियाँ कुर्सीके पुश्तेपर लटका दीं।

"यहाँपर तो सब चीजें मौजूद ही हैं।" तिक्खनने इस बातको बताते हुए कि मेहमानके पास उसकी जरूरियातकी सारी चीजें हैं कहा

और इसके प्रमाणस्वरूप, उसने नेख्लीडूके खुले हुए बकसकी तरफ इशारा किया, जिसमें ब्रुश, किस्म-किस्मकी शीशियाँ, खुशबूदार तेल और चाँदीके ढक्कनकी बोतलें रखी हुई थीं।

"फूफूको मेरा धन्यवाद देना, मुझे यहाँ आकर बड़ी खुशी हुई।" नेख्लीडूने कहा और उसके दिलमें पहलेकी तरह कोमलता और ज्योतिका संचार हो गया।

कटूशा इन सब शब्दोंके जवाबमें मुस्करा दी और बाहर चली गयी। नेख्लीडूकी फूफियोंने जो नेख्लीडूसे हमेशा मुहब्बत करती थीं, इस दफा उसका और भी आदर-सत्कार किया। डिमिट्री युद्धपर जा रहा था, जहाँ संभव है वह घायल हो जाय या मार डाला जाय, इस कारण वृद्ध महिलाएँ और भी प्रभावित थीं।

नेख्लीडू पहले एक दिन और एक रात यहाँ ठहरनेके इरादेसे आया था, लेकिन उसने जब कटूशाको देखा तब वह ईस्टर तक ठहरनेके लिए राजी हो गया। उसने अपने मित्र शूनबाकको, जो उससे ओडेसामें मिलनेवाला था, तार दे दिया कि वह यहीं उसकी फूफूके यहाँ आकर उससे मिले।

कटूशाको देखते ही नेख्लीडूके हृदयकी, कटूशाके प्रति पुरानी प्रवृत्तियाँ फिर जाग्रत हो उठीं। आज भी वह पहलेकी तरह कटूशाके सफेद कपड़ेको बिना उद्वेगके नहीं देख सकता था। उसके कदमोंकी आहट, उसकी आवाज, उसकी हँसीको सुनकर उसके हृदयमें आनंदोद्गार हो उठता था। इसकी काली आँखोंको जब वह देखता था, खासकर जब यह मुस्कराती थी, तो उसके हृदयमें बड़ी कोमल भावना पैदा हो जाती थी, और सबसे बड़ी बात जिसको देखकर वह असमंजसमें पड़ जाता था यह थी कि जब यह दोनों मिलते थे तो यह झेंप जाती थी। नेख्लीडूने अनुभव किया कि उसके हृदयमें कटूशाके प्रति प्रेम है, लेकिन पहलेकी तरह नहीं। उस समय प्रेम उसके लिए एक रहस्यमय चीज था। उस समय वह इस बातको अपने दिलमें भी माननेके लिए तैयार नहीं था कि

वह कट्टूशासे प्रेम करता है। उस समय उसका यह विश्वास था कि प्रेम केवल एक बार ही हो सकता है। अब तो वह यह स्पष्ट देख रहा था कि उसके हृदयमें कट्टूशाके लिए प्रेम है और उसे इस बातकी खुशी थी, और वह जानता था (यद्यपि वह इसे अपनेसे छिपाना चाहता था) कि यह प्रेम किस किस्मका है, और यह उसे किस हद तक पहुँचा सकता है। नेख्लीडूमें, जैसा कि हर एक आदमीमें होता है, दो व्यक्तित्व थे। एक तो आत्मिक जो ऐसे सुखकी इच्छा करता है जिससे सबको सुख पहुँचे, और दूसरा पाशविक, जो सिर्फ अपना सुख चाहता है और इस सुखकी प्राप्तिमें उसे सारी दुनियाकी भलाईको नष्ट भी कर देना पड़े तो वह उसके लिए भी तैयार रहता है। नेख्लीडूके मनपर, स्वार्थ-परायणताके इस उन्मादके युगमें, जो उन्माद कि फौजमें दाखिल होने और पीटर्सबर्गमें जीवन व्यतीत करनेसे उसके जीवनमें पैदा हुआ था, पाशविक प्रकृति राज्य करती थी, और उसने दैवी प्रकृतिका बिल्कुल सत्यानाश कर दिया था।

लेकिन जब उसने कट्टूशाको देखा, और उसके हृदयमें वही प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हुईं जो तीन बरस पहले हुई थीं, तो दैवी-प्रकृतिने फिर सिर उठाया और अपना प्राबल्य स्थापित करना चाहा। ईस्टर तक—दो दिन और दो रात-नेख्लीडूके हृदयमें निरन्तर संघर्ष जारी रहा।

अपनी आत्माके अन्तस्तलमें वह यह अच्छी तरह समझता था कि अब उसे चला जाना चाहिये, अपनी फूफूके यहाँ ठहरनेकी कोई खास वजह नहीं है। वह यह भी जानता था कि इन बातोंमें कोई भलाई नहीं है, लेकिन फिर भी ठहरे रहना इतना सुखद और सरस मालूम होता था कि वह ठहर गया।

ईस्टरकी शामको छोटे और बड़े पादरी प्रार्थना करानेके लिए उसकी फूफूके वहाँ आये। यह लोग यहाँ आकर बताने लगे कि बर्फपर चलनेमें तथा रास्तेमें कितनी कठिनाइयाँ हैं।

नेख्लीडू अपनी फूफियोंके साथ प्रार्थनामें शामिल हुआ, जिसमें

नौकर भी आकर बैठे थे। लेकिन नेख्लीडू बराबर कटूशाको, जो दर्वाजे के पास बैठी थी और पादरियोंके लिए सामग्री ला रही थी, देखता रहा। इसके बाद पादरीको और अपनी फूफियोंको ईस्टरके उपलक्ष्यमें चूम, (यद्यपि अभी आधीरात नहीं हुई थी, इसलिये ईस्टर अभी नहीं आया था) नेख्लीडू सोनेकी तैयारी करने लगा। इतनेमें उसने सुना कि घरकी पुरानी नौकरानी मैट्रीना पैमलोम्ना रातकी प्रार्थनाके अवसरपर कुछ मिठाइयोंपर फूँक डलवानेके लिए गिरजाघर जानेकी तैयारी कर रही है। नेख्लीडूने अपने मनमें सोचा कि मैं भी क्यों न चला जाऊँ।

गिरजे तक पहुँचनेका रास्ता बहुत खराब था। इसपर न तो गाड़ीसे जा सकते थे न स्लेजसे, इसलिए नेख्लीडूने अपनी फूफूके घरमें ठीक वही किया जो अपने घरमें करता; अर्थात् उसने हुक्म दिया कि पुराने घोड़ेकी पीठपर जीन कसा जाय और पलंगपर जानेके बजाय उसने अपनी चमकदार वर्दी और सवारीकी बिरजिस पहनी, ओवरकोट पहना और बुड्ढे, मोटे घोड़ेपर सवार हो, जो रास्तेभर हिनहिनाता रहा, वह अँधेरेमें खंदक, नाले और बर्फ पार करता हुआ गिरजाघरकी तरफ चल दिया।

पंद्रहवाँ अध्याय

सुबहकी इस प्रार्थनाकी नेख्लीडूके जीवनमें हमेशा एक सजीव और स्पष्ट स्मृति बनी रही। नेख्लीडूको अँधेरेमें बर्फके सफेद टुकड़े कभी यहाँ कभी वहाँ मिले, लेकिन जब वह अँधेरेसे निकलकर गिरजाघरके जगमगाते हुए हातेमें पहुँचा, प्रार्थना शुरू हो चुकी थी।

किसानोंने रानी मेरी आइवनोवाके भतीजेको पहचान कर उसके घोड़ेकी लगाम थाम ली। घोड़ा रोशनी 'देखकर अपने कान खड़े कर रहा था। वे इसे एक सूखी जगहपर ले गये जहाँ नेख्लीडू घोड़ेपरसे उतरा। एक आदमी घोड़ेको एक जगह लिये खड़ा रहा और बाकी लोग नेख्लीडूको गिरजाघर ले गये जिसमें बहुतसे आदमी इकट्ठे थे। दाहिनी तरफ किसान बैठे हुए थे। इनमें जो बुड्ढे थे वह हाथका कता और हाथका बुना कोट पहने थे; सफेद, साफ पट्टियाँ पैरोंमें बाँधे हुए थे। जो नौजवान थे वह नया कोट पहने थे और अपनी कमरमें चमकदार पेटी बाँधे हुए थे तथा घुटने घुटने तक जूता पहने हुए थे।

बायीं तरफ नौजवान औरतें थीं जो अपने सरमें रेशमका रूमाल बाँधे हुए थीं और काले मखमलका बिना बाँहोंका सलूका या लाल रंगकी आस्तीनका सलूका पहने थीं। इनके लहँगेका रंग भी बहुत चमकीला-भड़कीला था; किसीका हरा, किसीका नीला, किसीका लाल। पैरमें मोटे चमड़ेके जूते थे। बुड्ढी औरतें साधारण पोशाक पहने इनके पीछे खड़ी थीं। इनके सरमें सफेद रूमाल बँधा था और ये हाथके कते-बुने कपड़ेका कोट पहने थीं, गहरे रंगके खद्दरकी पुरानी किस्सका बना हुआ लहँगा, और मामूली जूता। रंग-बिरंगे कपड़े पहने हुए लड़के, जिनके बालोंमें खूब तेल लगा हुआ था, कभी इधर, कभी उधर इन लोगोंके दर्मियान फिरते थे।

पुरुषोंने अपने सीनेपर नियमानुसार हाथ बाँधे, झुके और फिर अपना सर ऊपर उठाया और अपने बालोंको झटका दिया। औरतें, खासकर बुड्ढी औरतें, हजरत ईसाकी मूर्तिको, जिसके चारों ओर मोमबत्ती जल रही थी एकटक देख रहीं थीं। वे इस मूर्तिके सामने कभी हाथ बाँधकर खड़ी होतीं, कभी अपना सर छूतीं, कभी अपना कन्धा, कभी पेट, कभी कुछ पढ़तीं और कभी झुककर प्रणाम करतीं। बच्चे बड़ोंकी नकल करते हुए दिलसे प्रार्थना कर रहे थे, हालांकि वे वह भी देखते जाते थे कि लोग इनको देख रहे हैं। मूर्तिके चारों ओरका सुनहरा ढाँचा रोशनी पड़नेसे दमक रहा था, क्योंकि इसके चारोंओर लंबी-लंबी मोमबत्तियाँ रखी हुई थीं। भजनमण्डली आनन्दमय राग-रागिनियाँ निकाल रही थी। सब लोग मिलजुलकर गाते थे और इस सामूहिक गानेमें छोटे बच्चोंकी महीन आवाज और बड़ोंकी मोटी आवाज अलग-अलग हो जाती थी।

नेख्लीडू आगे बढ़ता चला गया। गिरजाघरके मध्यभागमें बड़े लोगोंके बैठनेकी जगह थी—यहींपर बड़े-बड़े जमींदार, उनकी स्त्रियाँ और उनके लड़के किस्म-किस्मका कपड़ा पहने हुए बैठे थे। यहींपर पुलिस अफसर, तारबाबू, व्यापारी, ऊँचे-ऊँचे जूते पहने हुए तथा गाँवके मुखिया तमगा लगाये हुए बैठे थे। मंचसे दाहिनी तरफ जमींदारकी स्त्रीके पीछे, मैट्रीना पैभलोना सफेद शाल ओढ़े और साफ कपड़ा पहने खड़ी थी। सफेद कपड़ा पहने, नीला पर्तला डाले, अपने काले बालोंमें लाल रंगका वो लगाये कटूशा भी यहीं खड़ी थी।

हर एक वस्तु गंभीर, उज्ज्वल, सुन्दर और आनन्दजनक मालूम होती थी। पादरीका कपड़ा रुपहला था, जिसमें सुनहरी सलेब बनी हुई थी। गिरजाघरके बाबू लोग और गानेवाले भी अपने ढंगका सुनहला और रुपहला कपड़ा पहने हुए थे। गाँवसे आयी हुई भजनमण्डलीके लोग भी बढ़ियासे बढ़िया कपड़ा पहने और अपने बालोंमें खूब तेल डाले हुए मौजूद थे। भजन चारों ओर सुनाई दे रहे थे, मालूम होता था कि कोई नाच रहा है। पादरी लोग बड़ी बड़ी मोमबत्तियाँ,

जो फूलोंसे सजी हुई थीं, हाथमें लिये हुए लोगोंको बराबर आशीर्वाद दे रहे थे और कहते जाते थे कि "क्राइस्ट उठ गये।" सभी चीजें सुन्दर थीं, लेकिन सबसे ज्यादा सुन्दर कटूशा थी जो अपनी सफेद पोशाकमें नीला पर्तला डाले, अपने काले बालोंमें लाल बो बाँधे खुशीसे फूली नहीं समाती थी।

नेख्लीडू यद्यपि कटूशाको नहीं देख रहा था, फिर भी कटूशाकी मौजूदगीका असर उसके ऊपर था। जब वह उसके पाससे गुजरा तो उसे जान पड़ा मानो उसके बदनमें एक बिजलीसी दौड़ गयी। यद्यपि उसे कुछ कहना नहीं था, लेकिन कुछ कहनेके लिए एक बात बना ली और जब उसके पाससे गुजरा तो बोला, "फूफूने कहा है कि वह उपवास प्रार्थनाके बाद तोड़ेगी।

कटूशाका नौजवान खून उसके चेहरेपर छा गया जैसा कि हमेशा उसको देखनेपर होता था। उसकी काली आँखें खुशीसे हँसती हुई नेख्लीडूके चेहरेपर एकटक लग गयीं।

"मुझे मालूम है।" उसने मुस्कराते हुए कहा।

इसी समय गिरजाघरका बाबू ताँबेके बर्तनमें पवित्र जल लिये उधरसे गुजर रहा था। उसका दामन कटूशासे रगड़ गया। बात यह थी कि वह नेख्लीडूसे जरा बचकर चलना चाहता था और इस कोशिशमें उसका कपड़ा कटूशाके कपड़ेसे रगड़ गया। नेख्लीडूको बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह बाबू इस बातको नहीं समझता कि यहाँपर जो कुछ है सारी दुनियामें जितनी चीजें हैं—सब सिर्फ कटूशाके लिए हैं, किसी और चीजकी पर्वाह चाहे की जाय या न की जाय लेकिन कटूशाके प्रति, जो सब चीजोंका केन्द्र है, सावधानी रखना बहुत जरूरी है। उसीके लिए क्राइस्टकी मूर्तिके चारों ओर सोना दमक रहा है, उसीके लिए तमाम बत्तियाँ—चिराग और मोमबत्तियाँ—जल रही हैं, उसीके लिए आनन्दपूर्ण भजन गाये जा रहे हैं, खुदावन्दकी ईद देखो और लोगो, खुशी मनाओ—यह सब, और दुनियामें जितनी चीजें हैं,

समस्त कटूशाके लिए ही हैं। उसे ऐसा मालूम होता था कि कटूशा भी यह ब त जानती है। जब उसने उसकी सुन्दर आकृतिको, उसके सिले हुए सफेद कपड़ोंको, उसके चेहरेसे प्रगट होनेवाली आनन्दमयी भावनाओंको देखा तो वह समझ गया कि उसके हृदयमें जो संगीत हो रहा है वही कटूशाके हृदयमें भी जाग्रत है।

पहली और दूसरी प्रार्थनाके बीचमें नेख्लीडू गिरजेसे चला आया। लोग किनारे किनारे खड़े हो गये और उसके निकलनेके लिए रास्ता बन गया। सभी उसको झुक झुककर सलाम कर रहे थे। कोई उसको पहचानता था और कोई पूछता था कि "वह कौन है?"

जीनेपर पहुँचकर वह रुक गया। भिखमंगे उसके चारों तरफ इकट्ठा हो गये और चिल्लाने लगे। उसकी जेबमें जो कुछ पैसे थे उसने सब बाँट दिये और फिर जीनेसे नीचे उतर गया। अरुणोदय हो चुका था, लेकिन सूरज अभीतक नहीं निकला था। लोग गिरजाघरकी कब्रोंके चारों तरफ टोलियोंमें इकट्ठा हो रहे थे। कटूशा अन्दर रह गयी थी और नेख्लीडू बाहर खड़ा उसका इन्तजार कर रहा था।

लोग बाहर निकल रहे थे और अपने नालदार जूतोंसे पत्थरके फर्श-पर खटपट करते हुए गिरजाघरके हातेमें तितर-बितर हो रहे थे।

एक बहुत बुड्ढे आदमीने जिसका सर हिल रहा था, जो उसकी फूफूका रसोइया था, नेख्लीडूको रोका ताकि ईस्टरके त्योहारके उपलक्ष्यमें उसे चूमे। इसकी स्त्रीने, जो बहुत बुड्ढी थी और जिसके चेहरेपर झुर्रियाँ पड़ गयी थीं अपने रूमालसे एक पीले रंगका अण्डा निकाला और नेख्लीडूको दे दिया। एक मुस्कराता हुआ नौजवान किसान नया कोट पहने और हरी पेटी बाँधे सामने आकर खड़ा हो गया।

"क्राइस्ट उठ गये।" उसने कहा। उसकी आँखोंसे हँसी टपकती थी। उसने नेख्लीडूके नजदीक आकर उसको अपनी सुन्दर किसानी गंधसे आच्छादित कर दिया। उसकी घुँघराली दाढ़ी नेख्लीडूके चेहरेसे

छू गयी और उसने अपने ताजे और मजबूत होठोंसे नेख्लीड्को मुँह तीन दफा चूम लिया।

जिस समय वह किसान नेख्लीड्को चूम रहा था और उसे गहरे भूरे रंगका अंडा नजर कर रहा था, मैट्रीना पैभलोनाका नफीस कपड़ा और वह प्यारा काला सर, जिसमें लाल बो बँधा हुआ था, दिखाई दिया।

कटूशाने नेख्लीड्को उन लोगोंके सरके ऊपरसे जो उसके सामने थे, देखा; और नेख्लीड्ने देखा कि कटूशाके चेहरेमें किस तरह एकदम दमक आ गयी।

वह मैट्रीना पैभलोनाके साथ बाहर निकली थी और भिखारियोंको खैरात बाँटनेके लिए ठहर गयी थी। एक फकीर जिसकी नाककी जगह-पर केवल एक लाल पपड़ी थी, उसके नजदीक आया। उसने उसे कुछ दिया और उसके नजदीक जाकर घृणाका कोई भी चिन्ह प्रगट किये विना, प्रसन्नतासे पूर्ववत् आँखें दमकाती हुई, उसे तीन दफा चूम लिया। जब वह ऐसा कर रही थी, उसकी आँखें नेख्लीड्पर पड़ीं जिनसे मालूम होता था कि वह पूछ रही है "क्या मैं ठीक कर रही हूँ ?"—"हाँ! ठीक कर रही हो प्रिये! सब कुछ ठीक है। सब कुछ सुन्दर है। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।"

मैट्रीना और कटूशा गिरजाघरकी ड्योढ़ीके नीचे उतर आयीं, और नेख्लीड् उनकी तरफ बढ़ा। इसका मतलब यह नहीं था कि वह ईस्टरका चुम्बन इन लोगोंको देना चाहता था, वह सिर्फ इस वास्ते बढ़ा था कि वह इनके निकट रहना चाहता था।

मैट्रिना पैभलोनाने झुककर प्रणाम किया और मुस्कराते हुए कहा "क्राइस्ट उठ गये।" उसके बात करनेके ढंगसे यह मालूम होता था जैसे वह कह रही है कि आज हम सब बराबर हैं। उसने अपना मुँह अपने रूमालसे पोंछा, इसे मरोड़कर एक गेंद-सा बना लिया और अपना होंट उसकी तरफ बढाया।

"निस्संदेह वह उठ गये हैं" नेख्लीडूने कहा और उसे चूम लिया। तब उसने कटूशाको देखा। वह झेंप गयी और आगे बढ़ी। "क्राइस्ट उठ गये हैं, डिमिट्री आइवनिच!" उसने कहा "क्राइस्ट उठ गये हैं?" इन लोगोंने दो दफा एक दूसरेको चूमा और फिर थोड़ी देर रुक गये मानो इस बातका विचार कर रहे थे कि तीसरी बार चूमना जरूरी है या नहीं और फिर यह निश्चित करनेके बाद कि हाँ, यह जरूरी है उन्होंने एक मर्तबा और एक दूसरेको चूम लिया और मुस्कराये।

"क्या तुम लोग पादरीके पास नहीं जा रही हो?" डिमिट्रीने पूछा।

"नहीं डिमिट्री आइवनिच! हम लोग थोड़ी देर यहाँ बैठेंगी।" कटूशाने थकावट जाहिर करते हुए कहा, मानों उसने कोई आनंदपूर्ण परिश्रमका काम अभी किया हो। उसका वक्षःस्थल लंबी लंबी साँससे उठ बैठ रहा था और वह नेख्लीडूके चेहरेकी ओर श्रद्धापूर्ण और पवित्र प्रेमकी दृष्टिसे अपनी हलकी तिरछी देखनेवाली आँखोंसे देख रही थी।

पुरुष और स्त्रीके प्रेममें हमेशा एक ऐसा समय आता है जब प्रेम अपनी पराकाष्ठाको पहुँच जाता है। इस क्षण यह अज्ञात, बुद्धिशून्य और विकारहीन होता है। आजकी ईस्टरकी रात्रिमें नेख्लीडूके लिए वही क्षण आ गया था। अब जिस समय वह कटूशाका चित्र अपनी आँखोंके आगे खींचता था, उस समय और सारी बातें उसकी आँखसे ओझल हो जाती थीं। उसके सामने, उस समय केवल उसका चिकना, चमकता, काले बालोंसे सुसज्जित चेहरा, उसकी सफेद पोशाक जो कि उसके कुमार शरीरमें चुस्तीसे सुशोभित थी, उसका अर्द्धोन्नत वक्षःस्थल, उसका झेंपता हुआ चेहरा, उसकी कोमल चमकदार काली आँखें, और उसकी सारी आकृति, जिसमें पवित्रता और निर्विकार प्रेमके दो विशेष लक्षण पाये जाते थे, आ जाती थी। और प्रेम, वह जानता था, केवल उसके लिए नहीं, बल्कि सब प्राणियों और सब चीजोंके लिए है, केवल अच्छोंके लिए ही नहीं, बल्कि संसारमें जो कुछ भी है, सबके लिए है। उस फकीरके लिए भी है, जिसे उसने चूमा था।

वह यह जानता था कि कट्रशाके हृदयमें भी उसी प्रकारका प्रेम है, क्योंकि उस रात और उस सुबहको वह स्वयं उस प्रकारके प्रेमका अनुभव कर रहा था। उसको इस बातका ज्ञान था कि इस प्रेममें वह दोनों एक हो जाते थे। क्या ही अच्छा होता, अगर इसी रातको, उसी स्थलपर और उस क्षण सब बातें खतम हो जातीं। वह तमाम वीभत्स बातें ईस्टरकी इस रात्रिको नहीं हुई थीं। नेखलीडूने सोचा, जब कि वह ज्यूरीके लोगोंके कमरेमें खिड़कीके पास बैठा था।

———

सोलहवाँ अध्याय

जब नेख्लीडू गिरजेसे वापिस आया तब उसने अपनी फूफिओंके साथ अपना उपवास तोड़ा। उसके बाद उसने कुछ शराब पी। शराब पीनेकी आदत उसे फौजमें दाखिल होनेके बादसे हो गयी थी। अपने कमरेमें वापिस आनेपर वह फौरन कपड़ा पहने पहने सो गया। दर्वाजे-पर जब खटाखटाहट हुई तब वह जागा। वह समझ गया कि किसने खटखटाया है। वह उठ पड़ा और अपनी आँखें मलते मलते अँगड़ाई ली।

"कटूशा क्या तुम हो? चली आओ।" उसने कहा।

कटूशाने दर्वाजा खोला।

"खाना तैयार है" उसने कहा। वह वही कपड़े पहने हुए थी लेकिन अपने बालोंसे बो निकाल डाला था। उसने मुस्कराते हुए नेख्लीडूको देखा, मानो उसने कोई बहुत अच्छी खबर उसे सुनायी हो।

"मैं आ रहा हूँ।" नेख्लीडूने जवाब दिया। वह उठकर खड़ा हो गया और कंघी लेकर अपने बाल दुरुस्त करने लगा।

कटूशा चुपचाप एक क्षणतक खड़ी रही। नेख्लीडूने इस बातको देखकर कंघी रख दी और उसकी तरफ बढ़ा। उसी क्षण कटूशा फौरन फिर गयी और तेजीके साथ कालीनकी उस पट्टीपर होते हुए जो कमरेके बीचोबीच बिछी हुई थी, बाहर निकल गयी।

"मैं भी कैसा बेवकूफ आदमी हूँ!" नेख्लीडूने कहा। मैंने उसे क्यों नहीं रोक लिया—यह सोचकर उसने दौड़कर उसे पकड़ लिया। वह यह नहीं जानता था कि आखिर वह उसे क्यों रोकना चाहता है। लेकिन उसे ऐसा लगा कि जब वह कमरेमें आयी थी, कुछ होना चाहिये

था—कुछ जो कि आम तौरपर ऐसे मौकोंपर किया जाता है, जिसे वह नहीं कर सका था।

"कटूशा रुको" उसने कहा।

"आप क्या चाहते हैं?" उसने जवाब दिया और रुक गयी।

"कुछ नहीं सिर्फ—" और यह याद करके कि मर्द ऐसे अवसरोंपर आम तौरपर क्या करते हैं, उसने प्रयत्नके साथ अपना हाथ उसकी कमरके चारो ओर डाल दिया।

वह चुपचाप खड़ी रह गयी और उसकी आँखोंमें देखने लगी।

"नहीं नहीं डिमिट्री आइवनिच, नहीं।" उसने कहा। वह झेंप गयी और उसकी आँखोंमें आँसू छलछला आये। अपने मजबूत सख्त हाथोंसे उसने नेख्लीडूको पीछे हटा दिया। नेख्लीडूने उसे छोड़ दिया और थोड़ी देरके लिए वह हक्काबक्का-सा हो गया, झेंप गया, और उसे अपनेसे नफरत पैदा होने लगी। इस समय उसे अपनी आत्माकी आवाजपर विश्वास करना चाहिये था; उसे यह जानना चाहिये था कि यह घबराहट और लज्जा, उसकी आत्माकी उन उत्तम प्रवृत्तियोंसे पैदा हुई थी, जो इस समय जागना चाहती थी। लेकिन उसने समझा कि यह भावनाएँ उसकी बेवकूफीका परिणाम हैं और उसे करना वही चाहिये था जो सब लोग करते हैं। उसने उसे फिर पकड़ लिया और उसकी गर्दनको चूम लिया।

यह चुम्बन दूसरी ही किस्मका था। यह चुम्बन उस प्रकारका नहीं था जैसा उसने झाड़ीके पीछे किया था। यह चुम्बन उस प्रकारका नहीं था जैसा उसने उस प्रातःकालको गिरजाघरमें किया था। यह भयंकर प्रकारका चुम्बन था, जिसे कटूशा समझ गयी।

"ओह! तुम क्या कर रहे हो!" उसने चिल्लाकर कहा। उसके कहनेका ढंग ऐसा था मानो उसकी कोई अमूल्य वस्तु सदाके लिए टूट गयी हो और वह तेजीसे भाग गयी।

नेख्लीडू खानेके कमरेमें आया। यहाँ सुन्दर कपड़ा पहने हुए

उसकी दोनों फूफियाँ, कुटुम्बका डाक्टर और एक पड़ोसी पहलेसे ही मौजूद थे। देखनेमें हर एक चीज साधारण दिखाई देती थी, लेकिन नेख्लीडूके हृदयमें तूफान मच रहा था। लोगोंकी बातें उसकी समझमें बिल्कुल नहीं आती थीं, और वह अनाप-शनाप जवाब भी देता था। वह सिर्फ कटूशाका ही मनन कर रहा था। उसे बार-बार उस चुम्बनसे पैदा होनेवाले रसका स्मरण होता रहता था जो उसने कटूशाको पकड़कर उसकी गर्दनपर लिया था। उसके दिमागमें इसके अलावा कोई दूसरी बात आती ही नहीं थी। जब कटूशा कमरेमें आयी तो नेख्लीडूके हृदय-पर उसके अस्तित्वका प्रभाव पड़ने लगा और वह कटूशाको न देखे, इसके लिए उसे अपने हृदयपर विशेष रूपसे अंकुश लगाना पड़ा।

खानेके बाद फौरन वह अपने कमरेको चला गया। वह बहुत देर तक परेशानीकी हालतमें कमरेके अन्दर ही टहलता रहा। घरके अन्दर कोई भी खटका होता तो उसे सुनाई देता। उसके कान कटूशाकी आहट सुननेके लिए लालायित हो रहे थे। आसुरी प्रकृति उसके हृदयमें केवल अंकुरित ही नहीं हो चुकी थी, बल्कि उसने उस दैविक प्रकृतिको कुचल भी डाला था, जो उसके हृदयमें उसकी पहली यात्रामें, या आज ही सुबह जाग्रत थी। नेख्लीडूकी आत्मापर अब आसुरी प्रकृतिका राज्य था।

यद्यपि नेख्लीडू सारे दिन कटूशाकी टोहमें रहा, फिर भी उसे अकेले मिलनेका मौका न मिला। शायद कटूशा उससे दूर-दूर रहना चाहती थी; लेकिन शामको नेख्लीडूके पासवाले कमरेमें कटूशाको जाना पड़ा। डाक्टर रातभरके लिए रोक लिया गया था और कटूशाको यह आज्ञा मिली थी कि डाक्टरका पलंग बिछा दे। नेख्लीडूने जब कटूशाके उस कमरेमें घुसनेकी आहट पायी वह उसके पीछे-पीछे, आहिस्ता-आहिस्ता, साँस रोके हुए चला गया। मालूम होता था मानो वह कोई जुर्म करने जा रहा है।

कटूशा तकियेपर गिलाफ चढ़ा रही थी—तकियेके किनारेको अपने बाजुओंमें दबाये हुए। उसका हाथ गिलाफके अंदर था। उसने घूमकर

देखा और मुस्करायी। वह मुस्कराहट नहीं थी, इसमें भय और दीनता थी। यह मुस्कराहट नेख्लीडूसे कह रही थी कि जो कुछ तुम कर रहे हो, गलत कर रहे हो। नेख्लीडू थोड़ी देर ठिठका। संघर्षकी संभावना अभीतक पायी जाती थी। उसके सच्चे प्रेमकी आवाज जो अब कमजोर हो चुकी थी कटूशाकी, उसकी भावनाकी उसके जीवनकी तरफसे बकालत कर रही थी। दूसरी आवाज भी थी और वह कह रही थी, "सावधान रहना! कहीं तुम्हारे आनन्द और सुखका यह मौका हाथसे न जाता रहे और इस दूसरी आवाजने पहली आवाजको बिल्कुल दबा दिया था। नेख्लीडू दृढ़तासे आगे बढ़ा। एक भयंकर, निरंकुश, पाशविक प्रवृत्तिने उसपर अपना कब्जा जमा लिया था। कटूशाके गलेमें हाथ डालकर उसने पलंगपर बिठा दिया और यह अनुभव करके कि अभी कुछ करना बाकी है, वह भी उसके पास बैठ गया।

"डिमिट्री आइवनिच! मुझे जाने दो!" उसने दयनीय ढंगसे कहा। "मैट्रीना पैभलोना आ रही है।" उसने जोरसे कहा और छुड़ाकर अलग हो गयी। वास्तवमें कोई दरवाजेकी तरफ आ रहा था।

"अच्छा तो मैं रातमें आऊँगा" नेख्लीडूने दबी आवाजमें कहा। "तुम अकेली रहोगी न?"

"तुम कह क्या रहे हो? कभी भी नहीं! नहीं नहीं" कटूशाने कहा, लेकिन सिर्फ अपने होंठोंसे। उसकी कँपकँपी और उसके सारे शरीरकी हलचल दूसरी ही बात कह रही थी।

मैट्रीना पैभलोना ही वास्तवमें कमरेकी तरफ आ रही थी। उसके हाथपर एक कंबल था। उसने तिरस्कारपूर्ण दृष्टिसे नेख्लीडूको देखा और गुस्सेसे कटूशाको इस बातपर डाँटने लगी कि वह गलत कम्बल उठा लायी।

नेख्लीडू चुपचाप कमरेसे बाहर चला आया। उसे जरा भी शर्म न मालूम हुई। मैट्रीनाके चेहरेसे ही वह यह बात समझ गया था कि मैट्रीना उसीको दोषी ठहरा रही थी। वह जानता था कि मैट्रीना सही है, और

सही दोष उसके ऊपर लगा रही है। वह यह भी जानता था कि वह गलती कर रहा है, लेकिन इस नवीन, नीच, आसुरी उद्वेगने कटूशाके प्रति उसकी पुरानी भावनासे उसको वंचित करके उसके हृदयपर पूर्ण-रूपसे अधिकार कर लिया था। अब उसके दिलमें किसी दूसरी बातकी गुंजाइश बाकी नहीं थी। नेख्लीडूने अपने मनोविकारको संतुष्ट करनेके लिए अपना लक्ष्य निश्चित कर लिया था। अब सिर्फ वह इस लक्ष्यकी प्राप्तिके लिए मौका पानेकी फिक्रमें था।

सारे दिन नेख्लीडू पागलोंकी तरह इधर-उधर फिरता रहा। कभी अपनी फूफूके कमरेमें जाता, कभी अपने और कभी दहलीजमें फिरता। वह बराबर यही सोचता रहता था कि कटूशासे अकेले कैसे मिले। कटूशा उससे दूर दूर रहना चाहती थी और मैट्रीना भी बराबर कटूशाके पीछे लगी रहती थी।

सत्रहवाँ अध्याय

इस तरहसे शाम कटी और रात आयी। डाक्टर सोने चला गया। नेख्लीडूकी फूफियाँ भी अपने अपने कमरेमें जाकर सो रहीं। नेख्लीडूने यह पता लगा लिया कि मैट्रीना पैभलोना फूफियोंके सोनेके कमरेमें है, इसलिये कटूशा जरूर नौकरानियोंके कमरेमें अकेली होगी। वह एक दफा निकलकर दहलीजमें गया। बाहर बिल्कुल अँधेरा, नमी और गर्मी थी और वसंत ऋतुका सफेद कुहरा, जो अंतिम बर्फको भगा देता है, या यों कहना चाहिये कि अंतिम बर्फकी वजहसे पैदा होता है, सारे वायुमंडलमें छाया हुआ था। पहाड़ीके नीचे बहनेवाली नदीसे जो फाटकसे करीब सौ कदमके रही होगी, विचित्र आवाज आ रही थी। बर्फ टूट रही थी। नेख्लीडू जीनेसे उतरकर चमकदार बर्फके उन टुकड़ोंको जो जमीनपर इधर-उधर पड़े थे, अपने कदमोंसे गन्दा करता हुआ नौकरानियोंकी खिड़कीतक पहुँचा। उसका दिल इतने जोरोंसे धड़क रहा था कि उसे उसकी धड़कन सुनाई देती थी। वह हाँफ रहा था। नौकरानियोंके कमरेमें एक चिराग जल रहा था और कटूशा अकेली मेजके पास विचारमग्न बैठी, अपने आगे देख रही थी। नेख्लीडू बड़ी देरतक बगैर हिले-डुले खड़ा रहा और इस बातका इन्तजार करता रहा कि देखें कटूशा क्या करती है। एक दो मिनटतक वह चुपचाप बैठी रही। इसके बाद उसने अपनी निगाह हटायी और मुस्करायी और अपना सर हिलाया मानो अपनेको बुरा-भला कह रही है। फिर इसके बाद उसने अपने बैठनेका ढंग बदल कर अपनी दोनों कुहनियाँ मेजपर रख दीं और निगाह नीची करके अपने आगे देखने लगी। नेख्लीडू वहीं खड़ा उसको देखता रहा। उसके दिलकी धड़कन और नदीकी विचित्र आवाज उसके कानोंमें बराबर आती रही। उस नदीमें, सफेद

कुहरेके नीचे बर्फके टूटनेका काम बराबर जारी था; और किसी चीजके सिसकनेकी, चिटकनेकी, गिरनेकी और चकनाचूर होनेकी आवाज बर्फके छोटे-छोटे टुकड़ोंकी तड़तड़ाहटके साथ मिलकर उसके कानोंतक पहुँच रही थी।

वह वहीं खड़ा रहा और कटूशाके गम्भीर, दुखी चेहरेको, जिसपर उसकी आत्माके अन्दर होनेवाले संघर्षके चिह्न दिखाई देते थे, देखता रहा। उसके ऊपर उसे दया आयी, लेकिन आश्चर्यकी बात तो यह थी कि इस दयाने उसकी कामवासनाको और प्रज्वलित कर दिया। इस वासनाने उसपर अपना अखण्ड राज्य कायम कर लिया था।

उसने खिड़कीको खटखटाया। कटूशा चौंक उठी, मानो उसको बिजलीका-सा धक्का लगा हो। उसका सारा शरीर काँप उठा और उसके चेहरेपर भयभीत होनेके चिह्न प्रगट हो गये। वह झटकेसे उठकर खड़ी हो गयी, खिड़कीके पास पहुँची और अपना चेहरा खिड़कीके शीशेके नजदीक ले आयी। रोशनीकी चमकसे अपनी आँखोंको बचानेके लिए हाथोंको अपनी आँखोंपर रखकर उसने शीशेके अन्दरसे बाहरकी तरफ देखनेकी कोशिश की। देखा नेख्लीडू खड़ा है। कटूशाका चेहरा असाधारण रूपसे गंभीर हो गया। नेख्लीडूने उसे इतना गंभीर पहले कभी नहीं देखा था। नेख्लीडू मुस्कराया, इसपर कटूशा भी मुस्करायी, लेकिन डरसे। यह मुस्कराहट उसकी आत्मासे नहीं निकली थी, इसमें तो डर भरा हुआ था। नेख्लीडूने उसे कमरेसे बाहर निकल आनेका इशारा किया, लेकिन उसने अपनी गर्दन हिलायी और खिड़कीके पास ही खड़ी रही। नेख्लीडू अपना चेहरा खिड़कीके शीशेके नजदीकतक ले आया और उसको पुकारना चाहताथा, लेकिन उसी वक्त कटूशा दर्वाजेकी तरफ हट गयी। शायद किसीने अन्दरसे उसे पुकारा था। नेख्लीडू भी खिड़कीसे हट गया। कुहरा इतना गहरा था कि दर्वाजेसे पाँच कदमकी खिड़कियाँ भी नहीं दिखाई देती थीं। लालटेनकी रोशनी इस अन्धकारमय वातावरणमें बड़ी और लाल दिखाई देती थी और नदीसे वही

आश्चर्यजनक आवाज आ रही थी— सिसकनेकी, खड़बड़ाहटकी और चीजोंके टूटने और चकनाचूर होनेकी। कुहरेमें बहुत दूर कहीं एक मुर्गेने 'कुकड़ूँ कूँ' किया, जिसे सुनकर दूसरा मुर्गा किसी दूसरे गाँवमें बोला, यहाँतक कि कई मुर्गे एक साथ बोलने लगे लेकिन नदीको छोड़कर चारों तरफ सन्नाटा था। इस रातको, यह दूसरी दफा मुर्गोंने आवाज दी थी।

नेख्लीडू मकानके पीछे कोनेपर घूमता रहा। एक या दो दफा उसका पैर नालीमें भी पड़ गया। थोड़ी देर बाद फिर नेख्लीडू खिड़कीके पास आया। लैम्प अभीतक जल रहा था और कटूशा मेजके पास फिर अकेली बैठी हुई दिखाई दी। ऐसा मालूम होता था, मानो वह किसी असमंजसमें पड़ी हुई है। नेख्लीडू जैसे खिड़कीके पास पहुँचा कटूशाने आँख उठाकर देखा। उसने खटखटाया। बगैर इस बातको देखे हुए कि किसने खटखटाया है, कटूशा फौरन दर्वाजेके बाहर निकल आयी। नेख्लीडूने दर्वाजा खोलनेकी आवाज सुनी और दहलीजके किनारेके नजदीक खड़ा होकर उसका इन्तजार करने लगा। ज्यों ही वह नजदीक आयी, उसने उसके गलेमें बिना कुछ बोले हाथ डाल दिया। कटूशा उससे चिपट गयी और अपना मुँह उसके चेहरेके नजदीक ले जाकर उसको चूम लिया। नेख्लीडूने भी उसको चूम लिया। यह लोग किनारेकी दहलीजके पास एक ऐसी जगहपर खड़े थे जहाँ बर्फ गल चुकी थी। नेख्लीडूका दिल उत्तापपूर्ण, अतृप्त और वासनासे परिपूर्ण था। इतनेमें दर्वाजा खुलनेकी फिर आवाज सुनाई दी और मैट्रीना पैमलोनाने गुस्सेमें पुकारा 'कटूशा'।

कटूशा, अपनेको नेख्लीडूसे छुड़ाकर, नौकरानियोंके कमरेमें पहुँच गयी। नेख्लीडूने सिटकिनीके बन्द होनेकी आवाज सुनी। चारों तरफ फिर सन्नाटा हो गया। लाल रोशनी गायब हो गयी, सिर्फ कुहरा बचा; और नदीसे आनेवाली खड़बड़ाहट तो जारी ही रही। नेख्लीडू फिर खिड़कीके पास गया लेकिन वहाँ उसे कुछ दिखाई न दिया। उसने

खिड़कीके शीशे खटखटाये लेकिन कोई जवाब नहीं आया। वह अपने कमरेमें फाटकके दर्वाजे होता हुआ वापिस गया लेकिन वहाँ पहुँचकर उसे नींद न आयी। वह फिर उठा और नंगे पैर बरामदेसे होता हुआ कटूशाके दर्वाजेतक जो मैट्रीनाके कमरेसे मिला हुआ था, गया। वहाँपर उसने सुना कि मैट्रीना खर्राटे ले रही है। वह आगे बढ़ने ही वाला था कि मैट्रीनाने खाँसकर अपनी चरमरानेवाली चारपाईपर करवट बदली। नेख्लीडूकी साँस रुक-सी गयी और वह करीब पाँच मिनट बिना हिले-डुले वहीं खड़ा रहा। जब फिर सन्नाटा हो गया और मैट्रीना फिर खर्राटे लेने लगी तब वह आगे बढ़ा और ऐसे तख्तोंपर पैर रखता हुआ चला जो आवाज न करें। वह कटूशाके दर्वाजेपर फिर पहुँच गया। कहींसे कोई आवाज नहीं सुनाई देती थी। कटूशा शायद जग रही थी, नहीं तो उसके साँस लेनेकी आवाज तो जरूर सुनाई देती। उसने धीरेसे कहा—'कटूशा!' कटूशा उचककर खड़ी हो गयी और उसे समझाने लगी। मालूम होता था कि वह क्रोधसे कह रही है "तुम चले जाओ।"

"क्या कर रहे हो? यह क्या कर रहे हो? तुम्हारी फूफू सुन लेगी।" यह शब्द कटूशाके थे। लेकिन उसका सारा शरीर तो यह कह रहा था कि "मैं तुम्हारी हूँ।" और यही बात नेख्लीडूकी समझमें भी आ रही थी।

"दर्वाजा खोल दो, मुझे एक मिनटके लिए अन्दर आने दो, मैं हाथ जोड़ता हूँ।" नेख्लीडूने कहा—बगैर समझे हुए कि वह क्या कह रहा है।

वह चुप थी। इसके बाद नेख्लीडूने देखा कि कटूशा सिटकिनी खोलनेके लिए हाथ सरका रही है। सिटकिनीकी आवाज हुई और वह कमरेमें दाखिल हो गया। उसने कटूशाको पकड़ लिया—उन्हीं कपड़ोंमें जो वह पहने हुई थी, और उसे उठाकर बाहर ले आया।

"अरे! अरे! अरे! तुम क्या कर रहे हो?" उसने धीरेसे कहा,

लेकिन नेखलीडूने उसकी बातोंकी कुछ पर्वाह न की और उसे अपने कमरेमें उठा ले गया।

"नहीं नहीं!" यह ठीक नहीं है, मुझे जाने दो।" उसने अधिकाधिक चिपटते हुए कहा......

जब कटूशा नेखलीडूके कमरेसे बाहर आयी तो वह काँप रही थी और चुप थी। वह नेखलीडूकी किसी बातका उत्तर नहीं देती थी। नेखलीडू फिर कमरेके बाहर दहलीजतक आया और अपने मनमें इन सब घटनाओंका मतलब समझनेकी कोशिश करने लगा।

अब कुछ उजाला हो रहा था, नदीसे सिसकने, बर्फके टूटनेकी खड़बड़ाहट और चटाखेकी आवाज ज्यादा तेज सुनाई दे रही थी, कुहरा कम हो रहा था और आकाशसे चन्द्रमाकी मन्द किरणें पृथ्वीके अंधकारमय और वीभत्स स्थानोंपर हल्की रोशनी फेंक रही थीं।

यह सब क्या हो गया! इसे मैं सौभाग्य समझूँ या दुर्भाग्य?—नेखलीडूने दिलसे पूछा।

यह सभी करते हैं। ऐसी बात तो होती ही रहती है—उसने अपने दिलमें कहा और पलँगपर जाकर सो रहा।

अठारहवाँ अध्याय

दूसरे दिन हँसमुख, सुन्दर और तेज शूनवाक् आ गया और अपने शिष्टाचारसे, अपनी मीठी-मीठी बातोंसे, अपनी उदारतासे, और डिमिट्री-के प्रति अपने प्रेमसे उसने उसकी फूफियोंका हृदय गद्गद् कर दिया।

यद्यपि इन वृद्ध महिलाओंको शूनवाक्की उदारता पसन्द आयी, फिर भी उन्हें इसकी उदारतामें कुछ कृत्रिमता दिखाई दी। शूनवाक्ने एक बुड्ढे भिखारीको, जो फाटकपर आया था, एक रुबल दे दिया। नौकरोंको पन्द्रह रुबल इनाममें दिये। सोफिया आइवनोवाके दुलारे कुत्तेके पैरमें चोट लग गयी और खून निकलने लगा; शूनवाक्ने अपना कीमती रेशमी रूमाल जिसके दाम पन्द्रह रूबल फी दर्जन रहे होंगे, फाड़-कर कुत्तेके पैरमें बाँध दिया। इन बुड्ढी महिलाओंने ऐसा आदमी पहले कभी नहीं देखा था और यह नहीं जानती थीं कि शूनवाक्के ऊपर २ लाख रुबलका कर्ज है, जिसे अदा करनेका उसका इरादा नहीं है। इसलिये पच्चीस रुबल इधर या उधर उसके लिए कुछ माने नहीं रखते थे।

शूनवाक् सिर्फ एक दिन रहा, और वह और नेख्लीडू उसी रातको वहाँसे चल दिये। अब यह लोग एक दिन भी ठहर नहीं सकते थे, क्योंकि इनकी छुट्टी बिल्कुल खतम हो चुकी थी।

आजका दिन नेख्लीडूके लिए अपनी फूफूके घरमें रहनेका आखिरी दिन था। पिछली रातकी स्मृति उसके दिलमें ताजी थी। उसके हृदयमें दो भावनाएँ परस्पर संग्राम कर रही थीं—एक तो दहकनेवाली कामवासनाकी स्मृति थी, जिसके साथ एक संतोषकी भावना भी थी कि उसने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया (यद्यपि उसे जितने सुखकी आशा थी उतना उसे प्राप्त नहीं हुआ); और दूसरी भावना यह थी कि उसे इस बातका ज्ञान हो रहा था कि उसने कुछ अनुचित काम

किया है, जिसके प्रायश्चित्तके लिए अपने तथा कटूशाके हितमें उसे कुछ करना पड़ेगा।

नेख्लीडूकी स्वार्थपरायणता अब इस हदतक पहुँच चुकी थी कि वह अपने हितके अलावा किसी दूसरेका हित सोच ही नहीं सकता था। वह अपने दिलमें सोचता था कि अगर मेरी करतूतका पता लोगोंको चल गया तो संभव है कुछ लोग मेरे ऊपर बहुत आक्षेप करें और कुछ लोग बिल्कुल न करें। लेकिन वह यह नहीं सोच रहा था कि इस समय कटूशापर क्या बीत रही होगी और भविष्यमें उसका क्या होगा?

उसने देख लिया कि शूनबाक् कटूशाके साथ उसके संबन्धको ताड़ गया जिससे उसके अहंकारको बहुत सन्तोष मिला।

"हाँ! अब मैं समझ गया कि तुम्हें अपनी फूफूका घर इतना ज्यादा क्यों पसन्द आ गया कि तुम पिछले सात दिनसे यहीं टिके हो।" शून-बाक्ने कटूशाको देखकर नेख्लीडूसे कहा। "ठीक भी है, मैं अगर तुम्हारी जगह होता तो मैं भी यही करता। निस्सन्देह यह अद्भुत सुन्दरी है।"

नेख्लीडू भी सोच रहा था कि यद्यपि यह बड़े अफसोसकी बात है कि कटूशाके प्रति अपनी वासनाको पूर्ण रूपसे तृप्त किये बिना ही यहाँसे जाना पड़ रहा है, फिर भी इस अनिवार्य वियोगमें फायदा भी है क्योंकि इस तरह एक ऐसा सम्बन्ध समाप्त हो रहा है जिसका कायम रखना मुश्किल होता। इसके बाद उसने सोचा कि कटूशाको कुछ रुपया दे दे, इसलिये नहीं कि उसे जरूरत है बल्कि इसलिये कि ऐसा करना चाहिये क्योंकि यह बड़ी घृणाकी बात होगी कि उससे फायदा उठा लेनेके बाद उसे कुछ रुपया न दिया जाय।

इसलिये नेख्लीडूने उसे एक ऐसी रकम दी जो उसकी और अपनी हैसियतको देखते हुए काफी कही जा सकती थी। जिस दिन उसे जाना था, खाना खानेके बाद वह दरवाजेपर जाकर कटूशाका इन्तजार करने

लगा। जब कटूशाने उसे देखा तो वह झेंप गयी और उससे बचकर निकल जाना चाहती थी लेकिन नेखलीडूने उसे रोक लिया।

"मैं तुमसे बिदा होने आया हूँ" उसने कहा और एक लिफाफा जिसमें सौ रुबलका नोट था उसके हाथमें रखना चाहा। "इसमें मैं"—

कटूशा उसका मतलब समझ गयी। उसके माथेपर शिकन आ गयी और उसने अपना सर हिलाते हुए उसके हाथको पीछे हटा दिया।

"इसे ले लो; तुम्हें लेना पड़ेगा" उसने हकलाते हुए कहा और लिफाफेको उसकी जेबमें डाल दिया, और अपने कमरेमें भागकर चला गया कराहते हुए, और भिन्नाया हुआ। वह इस कमरेमें बेताब टहलता रहा मानो उसको कोई शारीरिक पीड़ा हो रही हो। जब उसे वह अन्तिम दृश्य याद आ जाता तो वह अपने पैर जमीनपर पटकता और जोर जोरसे कहता था "मैं और कर ही क्या सकता था? यह तो सभीके जीवनमें होता रहता है। शूनबाकने भी उस गवरनेसके साथ यही किया, जिसका वह मुझसे जिक्र कर रहा था। मेरे चचाने यही किया। मेरे पिताने भी, जब वह गाँवमें रहते थे एक किसान औरतसे सम्बन्ध कर रखा था जिससे एक लड़का भी हुआ था, मिटिनका जो अभीतक जिन्दा है। जब सभी ऐसा करते हैं.........ऐसी हालतमें मेरे खयालमें कोई क्या कर सकता है?" इस प्रकार वह अपने मनको शान्ति देना चाहता था लेकिन असफल रहा। जो कुछ हो चुका था उसकी याद उसके दिलको जला रही थी।

अपनी अत्मामें, आत्माके अन्तःप्रदेशमें वह यह समझता था कि मैंने नीचता, निर्दयता और कायरताका काम किया और इस बातको जानते हुए वह दूसरों द्वारा इस प्रकारका काम किये जानेपर, उनपर आक्षेप नहीं कर सकता था बल्कि वह दूसरेके सामने निगाह उठाकर देख भी नहीं सकता था, अपनेको श्रेष्ठ, उच्च और मनस्वी समझनेकी बात तो दूर रही। इस समस्याका एकमात्र हल यह था कि इसपर बिचार हो न करे। इसमें वह सफल भी हुआ। उसके नये जीवनने जिसमें अब वह

प्रवेश कर रहा था, उसके नवीन वातावरणने, नये मित्रोंने और युद्धने इस घटनाको भूल जानेमें उसकी सहायता की। ज्यों ज्यों दिन बीतते गये इसका खयाल कम होता गया यहाँतक कि वह इसे बिलकुल भूल गया।

लड़ाईके बाद नेख्लीडू सिर्फ एक दफा फिर अपनी फूफूके यहाँ कटूशासे मिलनेकी आशासे गया। वहाँ उसने सुना कि उसके चले जानेके बाद वह भी चली गयी। उसने अपनी फूफूसे यह भी सुना कि उसको कहीं बच्चा भी पैदा हुआ जिसके बाद वह और भी बिगड़ गयी। इन सब बातोंको सुनकर उसे बड़ा दुःख हुआ और बच्चा पैदा होनेके समयसे हिसाब लगाने पर नेख्लीडूको यह खयाल हुआ कि मुमकिन है कि वह बच्चा उसीका हो। उसकी फूफूने कटूशापर ही सब दोष लगाया और कहा कि कटूशामें अपनी माताकी तमाम दूषित प्रवृत्तियाँ पायी जाती थीं। इस रायको सुनकर उसे बहुत खुशी हुई क्योंकि इससे वह निर्दोष सिद्ध हो जाता था। पहले तो उसने इस बातकी कोशिश की कि कटूशा और उसके बच्चेका पता लगाये लेकिन चूँकि वह अपने हृदयके अन्तस्तलमें लज्जित होता था और कटूशाकी यादसे उसे तक-लीफ होती थी, इसलिये उसने उसका पता लगानेकी मुनासिब कोशिश नहीं की बल्कि उसके बारेमें बिल्कुल सोचना बन्द करके अपना पाप बिल्कुल भूल जाना चाहा।

इस आश्चर्यजनक संयोगसे वह सब बातें फिर उसके सामने आ गयीं और उसके अन्तःकरणने उसको यह बताना शुरू किया कि तुमने एक हृदयहीन, निर्दयतापूर्ण और कायरताका काम किया, और पिछले दस वर्षतक इस अपराधको अपने दिलमें छिपाये रखा। लेकिन वह अपने अन्तःकरणकी बातको अब भी माननेके लिए तैयार न था। उसे सिर्फ यह डर था कि कहीं हर बातका पता न चल जाये और कही यह न हो कि कटूशा या कटूशाका वकील सब बातोंको बयान कर दे और सबके सामने उसे शर्मिन्दा होना पड़े।

उन्नीसवाँ अध्याय

इसी मनोदशामें नेख्लीड्‌ अदालतसे निकला था और ज्यूरीके कमरेमें जाकर खिड़कीके पास बैठ गया था। वह तमाम बातें सुन रहा था जो लोग उसके चारों ओर कह रहे थे और वह बराबर सिगरेट पीता जाता था।

हँसमुख व्यापारी स्मेलकफसे हार्दिक सहानुभूति प्रगट कर रहा था। वह कह रहा था कि जीवन बितानेका उसका ढंग बहुत अच्छा था।

"यह आदमी बिल्कुल साइबेरियाके लोगों जैसा था। यह जानता था कि जिंदगी कैसे बितानी चाहिये। मैं ऐसी ही जिन्दगी पसन्द करता हूँ।"

सरपंच अपना यह विश्वास प्रकट कर रहा था कि विशेषज्ञोंने जो राय कायम की है असलमें वही महत्त्वकी चीज है। पीटर गिरासीमोविच, यहूदी क्लर्कसे कुछ मजाक कर रहा था और यह लोग ठहाका मारकर हँस रहे थे। नेख्लीडूसे अगर कोई सवाल करता था तो वह उसका दो शब्दोंमें ही जवाब दे देता था। इस समय वह केवल यह चाहता था कि लोग उसको तंग न करें और उसको शान्त छोड़ दें।

जब चोबदारने अपनी एकलंगी चालसे ज्यूरियोंको अदालतके अन्दर जाकर बैठनेके लिए कहा तो नेख्लीड्‌ भयभीत हो गया। उसे ऐसा मालूम होता था कि मानो वह मुकदमेका फैसला करने नहीं जा रहा है बल्कि उसके ऊपर ही मुकदमा चल रहा है। अपने हृदयके अन्तस्तलमें वह यह अनुभव कर रहा था कि मैं बदमाश हूँ, जिसे दूसरोंकी तरफ निगाह उठाकर देखनेमें भी शर्म आनी चाहिये। लेकिन केवल अपनी आदतके जोरसे उसने अदालतके चबूतरेपर कदम रखा और अपनी पुरानी शानके साथ अपने एक पैरको दूसरे पैरपर रखकर हाथमें अपनी

ऐनक लिये हुए, बैठ गया। अभियुक्त पहले अदालतसे बाहर कर दिये गये थे लेकिन अब अन्दर आ रहे थे। अदालतमें कुछ नये चेहरे भी दिखाई दे रहे थे, और यह गवाहोंके थे। नेख्लीडूने देखा कि मस्लोवा एक मोटी औरतको एकटक देख रही है जो कटघरेके आगेकी कतारमें बैठी है। यह मखमल और रेशमका भड़कीला कपड़ा पहने हुए एक ऊँची टोपी सरपर रखे और एक छोटा-सा नफीस बेग हाथमें लिए थी। इसका हाथ कुहनियोंतक बिल्कुल खुला हुआ था। नेख्लीडूको बादको पता चला कि यह उस चकलेकी मालकिन है जिसमें मस्लोवा रहती थी, और गवाही देने आयी है।

गवाहोंका बयान शुरू हुआ। इन लोगोंसे इनका नाम, धर्म इत्यादि पूछा गया। इसके बाद यह सवाल पैदा हुआ कि गवाहोंका बयान शपथ देनेके बाद लिया जाय या यों ही। यह निश्चय हो जाने पर कि शपथ देनी चाहिये, बुड्ढा पादरी अपना पैर घसीटता हुआ अपने सीनेपर लटकी हुई सुनहरी सलेबको उँगलीसे दबाये आगे बढ़ा और उसी भावनासे कि वह एक बहुत लाभदायक और महत्त्वपूर्ण काम कर रहा है उसने गवाहों और विशेषज्ञोंको शपथ दी।

जब गवाहोंको शपथ दे दी गयी, किटेवा अर्थात् चकला चलानेवालीको छोड़कर बाकी सभी गवाह अदालतके बाहर कर दिये गये। किटेवासे कहा गया कि वह इस मामलेमें जो कुछ भी जानती हो बतावे। वह हरएक जुमलेपर अपना सर और अपनी बड़ी टोपी हिलाती और मुस्कराती जाती थी। उसने सारी घटनाका विस्तृत और समझमें आ सकनेवाला किस्सा बयान कर दिया। उसके बोलनेका लहजा जर्मन था। उसने बयान किया "पहले साइमन नामका नौकर जिसको वह जानती थी, एक धनाढ्य साइबेरियाके व्यापारीके वास्ते एक लड़की लेनेके लिए उसके चकलेपर आया। उसने ल्यूबाको भेज दिया। थोड़ी देरके बाद ल्यूबा इस व्यापारीको साथ लेकर आ गयी। व्यापारी उस समय कुछ 'मजे' में था। जब उसने यह शब्द इस्तेमाल किया तो

वह मुस्करायी। यहाँ पहुँचकर यह व्यापारी और भी पीने लगा और लड़कियोंको खिलाने-पिलाने लगा। इसका रुपया कम पड़ गया और इसने ल्यूबाको रुपया लेनेके लिए अपने होटल भेज दिया। यह व्यापारी इसपर लट्टू था। यह कहते हुए उसने कटूशाको देखा।

नेख्लीडूको ऐसा मालूम हुआ कि इस बातपर मस्लोवा मुस्करायी, जिससे उसके दिलमें घृणा पैदा हो गयी—उसके हृदयमें पीड़ाके साथ-साथ एक आश्चर्यजनक अनिश्चित घृणाकी भावना उत्पन्न हो गयी।

"मस्लोवाके बारेमें तुम्हारी क्या राय है?" मस्लोवाके वकीलने झेंपते हुए और घबराहटके साथ पूछा, जिसने अदालतमें नौकरी करनेकी एक दरख्वास्त दे रखी थी।

"बहुत अच्छी राय है" किटेवाने जवाब दिया "यह नौजवान स्त्री पढ़ी-लिखी और अच्छी है। यह एक अच्छे कुटुम्बमें पाली-पोसी गयी थी और यह फ्रांसीसी जबान पढ़ सकती है। यह कभी कभी जरूर ज्यादा शराब पी लेती है लेकिन होश-हवास बराबर कायम रहते हैं। बहुत अच्छी लड़की है।"

कटूशाने इस औरतकी तरफ देखा और फिर उसकी आँखें ज्यूरियों-की तरफ चली गयीं और नेख्लीडूपर जाकर जम गयीं। कटूशाका चेहरा गंभीर और कठोर हो गया। उसकी एक गम्भीर आँख दब गयी और उसकी आश्चर्यजनक आँखें थोड़ी देरतक नेख्लीडूको एकटक देखती रहीं। नेख्लीडूका हृदय यद्यपि काँप रहा था फिर भी वह अपनी आँखें कटूशाकी दबी हुई और गंभीर आँखोंसे, जिनकी सफेदीमें अभीतक चमक और स्वच्छता थी, नहीं हटा सका।

उसे वह भयंकर रात याद आयी जब कि खूब कुहरा गिर रहा था और नीचे नदीसे बर्फके टूटनेकी आवाज आ रही थी; खास कर उसे प्रातःकालके मन्दकिरण चन्द्रमाका स्मरण आ गया जो अपनी रोशनी अन्धकारमय और वीभत्स पृथ्वीपर डाल रहा था। इन दोनों

आँखोंने, जो अब उसको देख रही थीं, उसे उस अंधकारमय और वीभत्स वस्तुकी याद दिला दी।

इसने शायद मुझे पहचान लिया—नेख्लीडूने अपने दिलमें सोचा और वह अपनी जगहपर ऐसा दबक-सा गया मानो किसीने उसपर कोई आघात किया हो। लेकिन कटूशाने उसे पहचाना नहीं। कटूशाने चुप-चाप लंबी साँस ली और फिर प्रमुख मजिस्ट्रेटकी तरफ देखा। नेख्लीडूने भी लंबी साँस ली। वह सोचने लगा कि मामला जल्दी खतम हो जाता तो बहुत अच्छा था।

नेख्लीडूको उसी प्रकारकी घृणा, दया और परेशानी पैदा हुई जैसी एक दफा शिकारपर हुई थी, जब उसे एक जख्मी चिड़ियाको हलाल करनेके लिए मजबूर होना पड़ा था। जख्मी चिड़िया थैलेमें फटफटाती है तो शिकारी परेशान होता है और अगर उसे दया भी आती है तो भी वह फौरन ही उसे हलाल करनेकी कोशिश करता है और इसके बारे-में सब कुछ भूल जानेकी कोशिश करता है।

जिस समय नेख्लीडू गवाहोंका बयान सुन रहा था, उसके दिलमें इसी प्रकारकी भावनाएँ हिलोरें मार रही थीं।

बीसवाँ अध्याय

लेकिन यह मुकदमा मानो कुढ़ानेके लिए बहुत लंबा होता गया। हर एक गवाहका बयान अलग अलग लिखा गया। विशेषज्ञोंका बयान सबसे अखीरमें लिखा गया। सरकारी वकील और दोनों तरफके वकीलोंने अपना अपना महत्त्व जाहिर करते हुए बहुतसे बेकार प्रश्न किये। इसके बाद प्रमुख मजिस्ट्रेटने कहा जो 'एक्ज़िबिट' पेश थे उन्हें देखनेको।

इन चीजोंको गवाह लोग देखनेवाले ही थे कि सरकारी वकीलने खड़े होकर कहा कि इन चीजोंको देखनेके पहले डाक्टरकी रिपोर्ट, जो लाशकी परीक्षाके बाद लिखी गयी थी, पढ़कर सुना दी जाय। प्रमुख मजिस्ट्रेट कामको जल्दसे जल्द खतम करके अपनी स्विस प्रेमिकाके पास पहुँचना चाहता था। वह जानता था कि इस कागजके पढ़नेसे सिवाय इसके कि लोगोंको थकावट आवे और भोजनका समय टालना पड़े और कोई नतीजा नहीं निकल सकता। लेकिन चूँकि इस रिपोर्टको पढ़कर सुनवा सकनेका हक सरकारी वकीलको था, इसलिए प्रमुख मजिस्ट्रेटके सामने कोई चारा नहीं था सिवाय इसके कि वह रिपोर्ट पढ़ानेके लिए राजी हो जाय।

सेक्रेटरीने डाक्टरकी रिपोर्ट निकाली और तुतलाते हुए इसे पढ़ना शुरू किया।

सत्ताईस पैराग्राफों और चार सफोंमें इस सौदागरके, जो इस शहरमें मजे करने आया था, मोटे फूले हुए और सड़े जिस्मकी बाहरी परीक्षाकी पूरी तफसील बयान की गयी थी।

जब बाहरी परीक्षाकी रिपोर्ट पढ़ी जा चुकी, प्रमुख मजिस्ट्रेटने गहरी साँस ली और इस आशासे सर उठाया कि मामला खतम हुआ;

लेकिन पेशकार (सेक्रेटरी)ने फौरन ही अन्दरूनी परीक्षाका बयान पढ़ना शुरू किया। प्रमुख मजिस्ट्रेटने फिर हाथपर अपना सर रखकर आँखें बन्द कर लीं। नेख्लीडूके पास बैठा हुआ व्यापारी अपनी नींद नहीं रोक सकता था इसलिए उसका शरीर कभी इधरको लुढ़क जाता था और कभी उधर। अभियुक्त और सिपाही शान्तिके साथ बैठे हुए थे।

इस रिपोर्टके पढ़नेमें पूरा एक घण्टा लग गया।

इस बखेड़ेसे छुट्टी मिलनेपर प्रमुख मजिस्ट्रेटने एलान किया कि तहकीकात खतम हुई, और सरकारी वकीलसे अपनी कार्रवाई शुरू करनेको कहा। उसे सरकारी वकीलसे यह आशा थी कि आखिरकार वह भी तो आदमी ही है, वह जरूर चाहता होगा कि छुट्टी मिले तो सिगरेट पीयें या कुछ खायें पीयें और दूसरोंको भी छुटकारा मिलने दें। लेकिन सरकारी वकीलको न तो अपने ऊपर दया थी और न किसी दूसरेपर।

सरकारी वकीलसे जब मुकदमा पेश करनेकी बात कही गयी तो वह धीरे-धीरे अपने जिस्मपरकी नफीस कामदार वर्दीको दिखाते हुए उठा। उसने मेजपर अपना हाथ रख लिया और कमरेके चारों तरफ देखा। अपने सरको हल्के झुकाकर और अभियुक्तोंकी आँखें बचाते हुए, उसने अपना भाषण आरम्भ किया, जिसे उसने उस समय तैयार किया था जब रिपोर्ट पढ़ी जा रही थी।

सरकारी वकील देरतक बोलता रहा। उसने अपने दिलमें जिन-जिन बातोंको कहनेका इरादा किया था उनमेंसे वह एकको भी नहीं भूला, और दूसरी तरफ उसने बोलनेमें भी जरा भी संकोच नहीं किया। उसके भाषणकी धारा सवा घंटेतक बराबर जारी रही।

सरकारी वकीलके भाषणमेंसे अगर हम नमक-मिर्च निकाल दें तो उसमें इतनी ही बात कही गयी थी कि मस्लोवाने पहले व्यापारीके हृदयमें अपना विश्वास पैदा किया, फिर उसपर मेस्मेरिज्म चलाया और तब उससे ताली लेकर उसके कमरेमें इस इरादेसे गयी कि उसका सारा

रुपया खुद चुरा ले। लेकिन साइमन और यूफीमियाँने इसे चोरी करते हुए पकड़ लिया इसलिए इसे उन लोगोंको भी हिस्सेदार बनाना पड़ा। फिर जुर्मके सब निशान मिटा देनेके खयालसे यह व्यापारीके साथ होटल वापिस आयी और उसे जहर दे दिया।

सरकारी वकीलके बोल चुकनेके बाद एक अधेड़ उमरके वकीलने कारटिंकिन और बोचकोवाकी सफाईमें वकीलोंकी बेंचमेंसे खड़े होकर भाषण करना शुरू किया। यह वह वकील था जिसे उन लोगोंने तीन सौ रुपयेके मेहनतानेपर रखा था। उसने बताया कि बोचकोवा और कारटिंकिन दोनों निरपराध हैं, सारा दोष मस्लोवाका है। उसने मस्लोवाके इस बयानको झूठा बताया कि जिस समय वह रुपया निकाल रही थी, ये दोनों मौजूद थे। उसने इस बातपर जोर दिया कि मस्लोवाकी शहादत नहीं मानी जा सकती, क्योंकि उसके ऊपर जहर देनेका जुर्म लगाया गया है। वकीलने यह भी बताया कि दो ईमानदार और मेहनती आदमी, जिनको चार-पाँच रुबल हर रोज होटलमें आनेवालोंसे इनाममें मिलते हों, एक हजार आठ सौ रुबल आसानीसे जमा कर सकते हैं। व्यापारीका धन मस्लोवाने चुराया और या तो किसीको दे दिया या फेंक दिया, क्योंकि वह नशेमें थी। जहर मस्लोवाने अकेले ही दिया।

इसलिए इस वकीलने ज्यूरियोंसे यह प्रार्थना की कि आप कारटिंकिन और बोचकोवाको रुपया चुरानेके जुर्मसे बरी कर दें। अगर आप इनको चोरीके जुर्मसे बरी नहीं कर सकते तो कमसे कम इतना तो जरूर मान लें कि जहर देनेमें इन लोगोंका बिल्कुल हाथ नहीं था।

इसके बाद मस्लोवाका वकील उठा। उसने डरते डरते और संकोचके साथ, उसकी सफाईमें भाषण करना शुरू किया। उसने यह स्वीकार कर लिया कि मस्लोवा चोरीमें शामिल थी लेकिन उसने इस बातपर जोर दिया कि स्मेलकफको जहर देनेका कोई इरादा नहीं था। उसने बुकनी इसलिए दी थी कि स्मेलकफको नींद आ जाय। वकीलने इस बातके

वर्णनमें भी कुछ अपनी वाक्‌पटुता दिखायी कि मस्लोवाको एक आदमीने, जिसे कोई सजा नहीं मिली, व्यभिचारके मार्गपर लगा दिया, जिसका सारा परिणाम उसे भोगना पड़ा। लेकिन मनोविज्ञानके क्षेत्रमें उस वकीलका यह प्रवेश इतना असफल रहा कि हर एक आदमी को बुरा लगा। जब उसने यह बात उन लोगोंके सामने रखी कि ऐसे मामलेमें औरतें असहाय होती हैं और मर्द निर्दय होते हैं तो प्रमुख मजिस्ट्रेटने उससे कहा कि आप मुकदमेके सम्बन्धमें बात कीजिये।

जब वकीलकी बात खतम हो गयी तब सरकारी वकील उत्तर देनेके लिए खड़ा हुआ। "लोगोंके सामने जो शहादत है उससे तो यही साबित होता है कि मस्लोवाने ही बहुतोंको, जो उसके चंगुलमें फँसे, फाँसा।" यह कहते हुए वह बैठ गया।

इसके बाद अभियुक्तोंको मौका दिया गया कि अगर वे अपनी सफाईमें कुछ कहना चाहें तो कहें।

यूफीमियाँ बोचकोवाने फिर वही बात दुहरायी और कहा—"मुझे इस मामलेमें कुछ भी मालूम नहीं। इस वारदातमें मेरा कोई हाथ नहीं, सारा दोष मस्लोवाका है।" साइमन कारटिंकिनने कई बार कहा—"फैसला करना आपका काम है। मैं तो निरपराध हूँ। मेरे साथ ज्यादती की जा रही है।" मस्लोवाने अपनी सफाईमें कुछ भी नहीं कहा। जब प्रमुख मजिस्ट्रेटने उसको बताया कि अगर तुम चाहो तो कुछ कह सकती हो, उसने आँख उठाकर मजिस्ट्रेटको देखा और कमरेमें चारों तरफ दृष्टि डाली जैसे कि शिकारमें फँसा हुआ जानवर करता है। फिर वह सर नीचा करके रोने और जोरसे सिसकने लगी।

नेख्लीडूके मुँहसे एक अजीब आवाज निकली। व्यापारी, जो उसके पास बैठा हुआ था, चौंक उठा और उसने पूछा "क्या बात है?" नेख्लीडूने जबरदस्ती अपनी सिसक दबायी थी लेकिन उसने अभीतक इस सिसकका असली अर्थ नहीं समझा था। उसका यह खयाल था कि यह सिसक, जिसे मुश्किल से दबा पा रहा हूँ और वे आँसू, जो

आँखोंमें उमड़ आये हैं, मेरे दिलकी कमजोरीके कारण हैं। उसने अपने आँसुओंको छिपानेके लिए ऐनक लगा ली और जेबसे रूमाल निकालकर नाक छिनकना शुरू किया।

इस डरसे कि कहीं अदालतके हर एक आदमीने मेरी करतूत जान ली तो मेरा बहुत बड़ा अपमान होगा, नेख्लीडूने अपने हृदयमें पैदा होनेवाली प्रवृत्तिको दबा दिया। इस प्रारम्भिक अवस्थामें, यह भय और सब बातोंसे ज्यादा प्रबल था।

इक्कीसवाँ अध्याय

जब अभियुक्तोंके अन्तिम शब्द सुने जा चुके, यह बात निश्चित की गयी कि ज्यूरीके सामने प्रश्नावली किस रूपमें रखी जाय। प्रश्नावलीके जैसे-तैसे तै हो जाने पर प्रमुख मजिस्ट्रेटने मुकदमेका खुलासा बयान करना शुरू किया।

ज्यूरीके सामने मुकदमेको रखनेके पहले मजिस्ट्रेटने बहुत सीधे सादे और साफ तरीकेसे इस बातको समझानेकी कोशिश की—"चोरी चोरी है, और राहजनी राहजनी। ताला तोड़कर चोरी करना तालेमें बन्द चीजको चुरानेके बराबर है।" जब वह इस बातको समझा रहा था उसने नेख्लीडूकी तरफ कई दफा देखा, जिसकी मंशा यह थी कि वह इस बातको समझ ले और ज्यूरीके दूसरे आदमियोंको समझा दे। उसको जब इस बातका विश्वास हो गया कि इन सचाइयोंको ज्यूरीके लोग अच्छी तरहसे समझ गये तो उसने एक दूसरे सत्यका वर्णन शुरू किया जो यह था "कत्ल उस कामको कहते हैं जिसका नतीजा यह हो कि आदमी मर जाय, इसलिए जहर देनेको भी कत्ल कहा जा सकता है।" जब उसकी रायमें यह सचाई भी ज्यूरीके लोगोंकी समझमें आ गयी तब उसने इन लोगोंको बताना शुरू किया "अगर कत्ल और चोरी दोनों साथ साथ शुरू किये जायँ तो उस जुर्मको कत्ल वा-चोरी कहते हैं।"

यद्यपि मुकदमेको खतम करनेके लिए मजिस्ट्रेट उतावला हो रहा था, क्योंकि वह जानता था कि स्विस लड़की मेरा इन्तजार करती होगी, फिर भी यह काम करते करते इसको उतनी महारत हो गयी थी कि जब एक दफा वह बोलनेके लिए खड़ा हो जाता तो उसके लिए चुप होना जरा मुश्किल हो जाता था। इसलिए उसने ज्यूरीके लोगोंके सामने सब बातें तफसीलवार बतायीं, और उनको समझाया "अगर आप लोगों

की रायमें अभियुक्त मुजरिम है तो आपको पूरा हक है कि मुजरिम होनेका फैसला दें और अगर आपकी रायमें वह मुजरिम नहीं है तो यह फैसला दें कि वह मुजरिम नहीं है। अगर आपकी रायमें अभियुक्त एक जुर्मका मुजरिम है, दूसरेका नहीं तो यह फैसला दें कि वह एक ही जुर्मका मुजरिम है—दूसरेका नहीं।" फिर उसने ज्यूरियोंको यह समझाया "यद्यपि इस प्रकारका फैसला देनेका आपको अधिकार दिया गया है फिर भी इसका उपयोग सावधानीसे करना चाहिये। अगर आप लोगोंने किसीके सवालके जवाबमें 'हाँ' कह दिया तो उस सवालमें जितनी बातें हैं सबके बारेमें वह समझा जायेगा। इसलिए अगर आप सारे प्रश्नके उत्तरमें हाँ नहीं कहना चाहते तो जिसके बारेमें हाँ नहीं कहना है उसे अलग कर दीजिये।" इसके बाद प्रमुख मजिस्ट्रेटने घड़ीकी तरफ निगाह डाली तो तीन बजनेमें पाँच मिनट बाकी थे। उसने अपना भाषण समाप्त करते हुए कहा "मुझे आप लोगोंकी बुद्धिपर विश्वास है इसलिए ज्यादा समझानेकी आवश्यकता नहीं।"

"इस मुकदमेके वाकयात निम्नलिखित हैं" प्रेसिडेंटने कहा और उन्हीं बातोंको दुहरा गया जो वकीलोंने, गवाहोंने, और सरकारी वकील-ने कई दफा दुहरायी थीं।

जब प्रमुख मजिस्ट्रेट बोल रहा था, दूसरे मजिस्ट्रेट—जो उसके दाहिने-बायें बैठे हुए थे—उसके भाषणको बहुत ध्यानसे सुन रहे थे लेकिन बार-बार घड़ी देखते जा रहे थे, क्योंकि उनका खयाल था कि उसका भाषण है तो बहुत अच्छा लेकिन लंबा हो गया। सरकारी वकील दूसरे वकीलों, और अदालतके कई और आदमियोंका भी यही खयाल था। प्रमुख मजिस्ट्रेटने मुकदमेके खुलासा बयानपर अपना भाषण खतम किया।

यद्यपि ऐसा मालूम होता था कि जो कुछ कहना-सुनना था खतम हो गया, लेकिन बात ऐसी नहीं थी। प्रमुख मजिस्ट्रेट इस मौकेपर बोलनेके अपने हकको छोड़नेवाला नहीं था। उसको अपनी आवाज सुनने-में इतना मजा आता था कि उसने इसे जरूरी समझा कि कुछ शब्द

ज्यूरीको दिये हुए अधिकारोंके सम्बन्धमें कह दे और उन्हें यह बता दे कि इन अधिकारोंको सावधानीसे काममें लाना चाहिये, इसमें असावधानी न करनी चाहिये, और यह कि ज्यूरीके हरएक आदमीने शपथ खायी है, वास्तवमें ये समाजके अन्तःकरण हैं और बहसके कमरेमें जो बातचीत हुई है वह गुप्त रखी जाय।

जिस समयसे प्रमुख मजिस्ट्रेटने अपना भाषण शुरू किया, मस्लोवाने उसके चेहरेपरसे अपनी आँखें नहीं हटायीं, मानो उसे इसका डर था कि उसका कोई शब्द सुननेसे रह न जाय। इसलिए नेख्लीडू कटूशाकी तरफ देखनेमें नहीं डरता था। वह उसे बराबर देखता रहा। उसका मन उन तमाम अवस्थाओंको पार कर गया, जो उस हालतमें पैदा होती हैं जब हम किसी चेहरेको, जिसे कई बरसोंसे न देखा हो, पहले पहल देखते हैं। अनुपस्थितिके समयकी सारी तबदीलियाँ हमारे सामने आ जाती हैं और थोड़ी देरमें यह चेहरा उसी पुराने चेहरेकी तरहका हो जाता है और परिवर्तन आँखोंके सामनेसे हट जाता है। हमारी आध्यात्मिक दृष्टिके सामने, उस व्यक्तित्वकी आध्यात्मिक विशेषताएँ और विचित्रताएँ प्रकट हो जाती हैं।

कटूशा जेलके कपड़े पहने हुए थी। उसका शरीर हृष्टपुष्ट था, उसका वक्षःस्थल उभरा हुआ और उसके चेहरेके नीचेका हिस्सा भर आया था। उसके माथे और कनपटीपर कुछ झुर्रियाँ पड़ गयी थीं। आँखें सूजी हुई थीं, फिर भी यह वही कटूशा थी जिसने ईस्टरकी रातको स्वच्छ हृदयसे अपनी आँखोंको जौबन और आनन्दसे परिपूर्ण करते हुए लालायित दृष्टिसे नेख्लीडूको, जो कि उसको प्यार करता था, देखा था। उसने सोचा—

"क्या ही आश्चर्यजनक संयोग है कि इतने वर्ष बीत गये और मैंने इसे कहीं भी नहीं देखा। आज मैं इसे इस मुकदमेमें देखता हूँ जब कि मैं खुद ज्यूरी हूँ। कैदीकी हालतपर इसका क्या असर होगा! अगर यह मुकदमा जल्द खतम हो जाता तो अच्छा था।" नेख्लीडूने अपने दिलमें सोचा।

फिर भी नेख्लीडू उस पश्चात्तापकी भावनाके सामने सर झुकानेको नहीं तैयार था जो उसके हृदयमें पैदा हो रही थी। उसने इस बातको समझनेकी कोशिश की कि ये सब बातें अकस्मात् हो गयीं और इन बातोंका कोई प्रभाव मेरे जीवनपर न पड़ना चाहिये। उसे अपनी हालत उस कुत्तेके बच्चेकी तरह मालूम हुई जिसका मालिक उसका पट्टा पकड़कर उसकी नाकको उस गंदगीमें रगड़ता है जो उसने की है। पिल्ला गुर्राता है, पीछे हटता है और अपनी करतूतके दुष्प्रभावसे बचनेके लिए जितनी दूर भाग सकता है भागनेकी कोशिश करता है, लेकिन निर्दय मालिक उसको हटने नहीं देता।

इसलिए नेख्लीडू अपनी करतूतकी बीभत्सताको अनुभव करते हुए इस बातको भी देख रहा था कि इन सब घटनाओंमें मालिक का भी सबल हाथ पाया जाता है। लेकिन अभीतक वह अच्छी तरहसे अपनी करतूतकी अर्थ-सूचकता नहीं समझता था, और यह नहीं मानता था कि इसमें मालिकका हाथ है। वह यह मानना नहीं चाहता था कि इस समय जो दृश्य मेरे सामने है वह मेरी ही करतूतका नतीजा है। लेकिन मालिकके निर्दय हाथने उसे पकड़ रखा था और इससे उसके दिलमें यह बात उठती थी कि "मैं इससे नहीं बच सकता।" वह अपना दिल मजबूत किये हुए अपनी कुर्सीपर सबसे आगेकी कतारमें शानदार ढंगसे एक टाँगको दूसरी टाँगपर रखे अपनी ऐनकसे खेलता था। फिर भी उसकी आत्माके अन्तस्तलमें इस खास करतूतके अन्दर छिपी हुई निर्दयता, कायरता और नीचताका अनुभव हो रहा था। बल्कि अपनी सारी आलस्यपूर्ण, कठोर, विशृंखलित और स्वार्थ-परायण जिन्दगीका पूरा पूरा चित्र उसकी आँखके सामने आ गया था। वह भयंकर परदा, जिसने पिछले दस वर्षकी जिन्दगीमें किये हुए अनेक पापोंको, उसकी आँखोंसे छिपा रखा था, हटने लग गया था, और उसे इस बातकी झलक दिखाई दे रही थी कि परदेके पीछे क्या छिपा हुआ है।

बाईसवाँ अध्याय

अन्तमें प्रमुख मजिस्ट्रेटका भी भाषण खतम हुआ। उसने प्रश्नावलीको बहुत नफीस ढंगसे उठाकर पंचकी तरफ बढ़ाया जिसे पंचने आगे बढ़कर ले लिया। ज्यूरियोंको खुशी हुई कि अब वे बहसके कमरेमें जा सकेंगे। एक एक करके ये लोग उठने लगे और अदालतसे बाहर निकल गये। जब ये लोग निकल गये, दर्वाजा बन्द हो गया। एक सिपाही वहाँपर आया, म्यानसे तलवार निकाली और उसे हाथमें लेकर दर्वाजेपर खड़ा हो गया। जज लोग उठकर चले गये; अभियुक्त बाहर निकाल दिये गये। ज्यूरी बहसवाले कमरेमें पहुँचे तो पहला काम उन्होंने यह किया कि अपनी अपनी सिगरेट जलायी। वे इतमीनानके साथ अपनी अपनी जगहोंपर बैठ गये और आपसमें बातचीत करने लगे।

"इसमें लड़कीका दोष नहीं है। वह सिर्फ उसमें फँस गयी।" दयालु व्यापारीने कहा। "हमें चाहिये कि इस बातकी सिफारिश करें कि उसे माफ कर दिया जाय।"

"इसी बातपर तो हमें विचार करना है, लेकिन हमें अपने व्यक्तिगत विचारसे काम न लेना चाहिये।"

"प्रेसिडेण्टने खूब खुलासा बयान किया" कर्नलने कहा।

"बहुत अच्छा बयान किया। मैं तो सो गया।"

"विचार करनेकी खास बात यह है कि अगर मस्लोवाने इन नौकरोंसे साजिश न की होती तो इन नोकरोंको रुपयेका पता नहीं चल सकता था।" यहूदी वंशके क्लार्कने कहा।

"आपका क्या यह खयाल है कि मस्लोवाने रुपया चुराया?" ज्यूरीके एक आदमीने पूछा।

"मैं यह नहीं मानता।" दयालु व्यापारीने जोरसे कहा—"यह सब करतूत उस लाल आँखवाली बुढ़ियाकी है।"

"ये सबके सब अजीब आदमी हैं।" कर्नलने कहा।

"लेकिन वह कहती है कि वह कमरेमें गयी ही नहीं।"

"उसकी बात माननी पड़ेगी।"

"मैं उस खूसटकी बात नहीं मान सकता चाहे सारी दुनिया मान ले।"

"आपके मानने न माननेसे समस्या थोड़े ही हल हुई जाती है।" क्लार्कने कहा।

"कुंजी तो उस औरतके पास थी।" कर्नलने कहा।

"इससे क्या होता है?" व्यापारीने जवाब दिया।

"और अँगूठी?"

"उसके बारेमें उसने बताया न?" व्यापारीने फिर जोरसे कहा—

"उसको गुस्सा आ गया। कुछ ज्यादा पी गया था। उसने लड़कीको मार दिया, बस यही बात थी। उसके बाद उसे अफसोस हुआ और उसने कहा कि खैर कोई बात नहीं, तुम इस अँगूठीको ले लो। अच्छा मैंने सुना वह ६ फुट ५ इञ्च ऊँचा था तो उसका वजन २० स्टोन रहा होगा।"

"सवाल यह नहीं है।" पीटर जेरासीमोविचने कहा—"सवाल यह है कि इस मामलेको किसने बनाया और किसने शुरू किया—उस लड़कीने या नौकरोंने?"

"अकेले नौकर यह काम नहीं कर सकते थे। कुंजी तो उसके पास थी।"

इस तरहकी बे-सिर पैरकी बातें बहुत देरतक होती रहीं। अन्तमें सरपंचने कहा—"महानुभाव! अब बातें बहुत हो चुकीं। अगर हम लोग अपनी अपनी जगहपर बैठ जायँ और इस मामलेपर विचार कर लें तो बहुत अच्छा हो। आइए।" अब उसने कुर्सी खींची और बैठ गया।

"ये चुड़ैलें सब कुछ कर सकती हैं।" क्लार्कने कहा और अपनी

इस रायके समर्थनमें कि मुख्य अपराधी मस्लोवा ही थी, उसने अपने साथीका एक किस्सा सुनाया जिसकी घड़ी एक बदचलन औरतने पार्कमें चुरा ली थी।

इसी सिलसिलेमें कर्नलने एक उससे भी अजीब किस्सा सुना दिया। वह किस्सा था एक चाँदीके समावरकी चोरीका।

"महानुभाव! मेहरबानी करके एक बात सुन लीजिये।" सरपंचने पेन्सिलसे मेजको खटखटाते हुए कहा।

सब चुप हो गये।

प्रश्न नीचेके शब्दोंमें प्रकट किये गये थे—

(१) क्या साइमन पेट्रोफ कारटिंकिन साकिन गाँव बोरकी जिला कारपीवेंस्की, कौम किसान, उम्र तेंतीस वर्ष इस जुर्मका अपराधी है कि उसने दूसरे लोगोंसे मिल-जुलकर व्यापारी स्मेलकफको १७ जनवरी सन् १८८–'को शहर—में इस गरजसे कि उसको लूट ले, उसको मार डालनेके इरादेसे जहर मिलाकर शराब पिला दी जिससे स्मेलकफ मर गया और उसके दो हजार छः सौ रूबल नकद और एक हीरेकी अँगूठी चुरा ली।

(२) क्या यूफीमियाँ आइवनोभ्ना बोचकोवा, जिसकी उम्र तेंतालीस वर्षकी है, उपयुक्त जुर्मकी अपराधिनी है?

(३) क्या कैट्रीना निखिलोभ्ना मस्लोवा, जिसकी उम्र अट्ठाईस वर्षकी है, उपर्युक्त सवालके पहले हिस्सेमें बयान किये हुए जुर्मकी अपराधिनी है?

(४) अगर अभियुक्त यूफीमिया बोचकोवा पहले सवालमें बयान किये हुए जुर्मकी अपराधिनी नहीं तो क्या वह इस बातकी अपराधिनी है कि १७ जनवरी १८८–'को शहर—में मारिटीनिया होटलमें मुलाजिमत करते हुए उसने एक तालाबन्द थैलेसे, जो कि सौदागर स्मेलकफका था (और यह सौदागर स्मेलकफ होटलमें रहता था, यह थैला उस कमरेमें था, जिसमें सौदागर स्मेलकफ रहता था) २६०० रूबल चुराये? जिस

गरजसे एक कुंजी लाकर, जो कि उस तालेमें लगती थी, तालेको खोल डाला।

सरपंचने प्रश्न नं० १ पढ़ा।

महानुभाव, इसके बारेमें आप लोगोंकी क्या राय है?

इस सवालका जल्दीसे जवाब मिल गया। सब लोगोंने कह दिया कि मुजरिम है। गोया सबको विश्वास था कि कार्टिकिनने जहर देने और लूटनेमें हिस्सा लिया। एक पुराना मजदूरवादी, जिसके उत्तर जुर्मसे बरी करनेके पक्षमें होते थे, सिर्फ इससे मतभेद रखता था।

सरपंचको यह खयाल हुआ कि शायद इसने समझा नहीं। इसलिए उसने यह बताना शुरू किया कि हरएक चीज कारटिंकिनके जुर्मको साबित करती है। बुड्ढे आदमीने उत्तरमें कहा—"मैं सब समझता हूँ, फिर भी मैं सोचता हूँ कि इसके ऊपर दया करनी चाहिये। हम लोग भी तो महात्मा नहीं हैं।" उसने कहा और अपनी रायपर डटा रहा।

बोचकोवाके सम्बन्धमें दूसरे सवालका उत्तर बहुत झगड़ा-फसाद और चिल्लाहटके बाद यह तै पाया कि वह मुजरिम नहीं है। क्योंकि कोई साफ सबूत इसका नहीं कि उसने जहर देनेमें हिस्सा लिया। और यही बात उसके वकीलने जोरसे साबित करनेकी कोशिश की थी। व्यापारी चूँकि मस्लोवाको बरी करना चाहता था, इसलिए उसने इस बातपर जोर दिया कि सब बातोंकी कर्ता-धर्ता बोचकोवा थी। ज्यूरीके बहुतसे आदमी इसी रायके थे। लेकिन सरपंचने, चूँकि वह कानूनको लफ्जबलफ्ज मानना चाहता था, यह कहा कि कोई वजह नहीं कि हम बोचकोवाको जहर देनेके मामलेमें शामिल समझें। कुछ देर बातचीत होनेके बाद सरपंचकी राय कायम रही।

चौथे सवालके बारेमें, जो बोचकोवाके सम्बन्धमें था, ज्यूरीकी राय हुई कि वह मुजरिम है। लेकिन मजदूरवादी इसी बातपर आग्रह करता रहा कि उसको माफ किया जाय।

मस्लोवाके सम्बन्धमें जो तीसरा सवाल था उसपर आपसमें बहुत

झगड़ा हुआ। सरपंच यह कहता था कि मस्लोवा जहर देने और चोरी करने, दोनों जुर्मोंकी अपराधिनी है और इस बातसे व्यापारीका मतभेद था। कर्नल, क्लार्क और मजदूरवादी व्यापारीके पक्षमें थे। और बाकी डाँवाँडोल थे। और यह दिखाई देने लगा कि सरपंचकी राय मजबूत पड़ रही है, क्योंकि ज्यूरीके सभी आदमी थकते जाते थे और ऐसी राय माननेके लिए तैयार होते जाते थे जिससे उनको जल्दी छुट्टी मिल सके और ये लोग अपने अपने घर जायँ।

मुकदमेकी कार्यवाहीके सिलसिलेमें जो कुछ नेख्लीडूने सुना था और अपने पुराने अनुभव तथा परिचयके आधारपर वह इस बातका दृढ़ विश्वास रखता था कि मस्लोवा चोरी और जहर देनेके दोनों जुर्मोंसे निरपराध है और उसे पूरा यकीन था कि और लोग भी इसी नतीजेपर पहुँचेंगे। लेकिन जब उसने देखा कि व्यापारी भोंडे तरीकेसे मस्लोवाका पक्ष ले रहा है क्योंकि वह खुल्लमखुल्ला इस बातको जाहिर करता था कि मस्लोवाकी शारीरिक सुन्दरताके कारण ही उसकी सहानुभूति पैदा हुई है। नेख्लीडूने इस बातको देखा कि सरपंच अपनी बातका आग्रह करता जा रहा है और ज्यूरीके आदमी थकते जा रहे हैं। उसने समझ लिया कि अब झुकाव इस तरफ है कि मस्लोवा अपराधिनी निश्चित कर दी जाय। इसलिए अपनी राय जाहिर करनेको उसकी बहुत तबीयत चाहती थी। लेकिन उसे डर था कि मस्लोवा और मेरा सम्बन्ध कहीं इन लोगोंको न मालूम हो जाय। फिर भी उससे यह नहीं देखा जाता था कि मामला जिस ढंगसे चल रहा है, चलने दिया जाय और झेंपते और पीले पड़ते हुए वह बोलनेको ही था कि इतनेमें पीटर जेरासीमोविचने सरपंचके अफसराना ढंगसे नाराज होकर एतराज शुरू किये, और वही कहा जो नेख्लीडू कहना चाहता था।

"मुझे एक बात कहनेकी इजाजत दीजिए।" पीटर जेरासीमोविचने कहा—"आपका खयाल है कि मस्लोवाके पास कुंजी थी इसलिए यह साबित हो गया कि उसीने चोरी की। लेकिन इससे ज्यादा आसान

बात और क्या हो सकती है कि मस्लोवाके चले जानेके बाद नौकरोंने दूसरी कुञ्जी लगाकर थैलेको खोल डाला हो।"

"आप ठीक कहते हैं, आप ठीक कहते हैं।" व्यापारीने कहा।

"वह रुपया हर्गिज नहीं ले सकती थी; क्योंकि उसकी स्थितिमें जो औरत हो वह रुपया लेकर कर ही क्या सकती है?"

"यही तो मैं भी कहता हूँ।" व्यापारीने कहा।

"ज्यादा सम्भावना इस बातकी है कि उसके आनेपर नौकरोंके दिलमें यह खयाल आया और उन्होंने मौकेसे फायदा उठाया और सारी जिम्मेदारी उसके ऊपर डाल दी।"

पीटर जेरासीमोविचने यह बात इतनी कटुतासे की कि सरपंच भी नाराज हो गया और कट्टरताके साथ अपनी रायका समर्थन करने लगा। लेकिन पीटर जेरासीमोविचने अपनी बात इस तरहसे कही थी कि लोगोंको यह यकीन हो गया और बहुमत उनकी तरफ हो गया। यह निश्चय हुआ कि मस्लोवापर चोरी करनेका जुर्म नहीं लग सकता और यह कि अँगूठी उसको दे दी गयी थी।

जब यह सवाल पैदा हुआ कि जहर देनेमें मस्लोवाका कितना हिस्सा था, उसके उत्साही संरक्षक व्यापारीने यह कहा—"उसे बरी कर देना चाहिये; क्योंकि जहर देनेका कोई भी उद्देश्य मस्लोवाका नहीं हो सकता था।" सरपंचने कहा—"मस्लोवाको बिल्कुल बरी करना नामुमकिन है; क्योंकि उसने खुद अपने बयानमें शराबमें बुकनी मिलाकर देना स्वीकार किया है।"

"हाँ, ठीक है, लेकिन अफीम समझकर।" व्यापारीने कहा।

"अफीमसे भी आदमीकी जान जा सकती है।" कर्नलने कहा और अपने स्वभावके मुताबिक विषयसे टलकर उन्होंने अपने सालेकी बीबीका एक किस्सा बयान किया जिसमें उन्होंने यह कहा कि गलतीसे उसने खूराकसे ज्यादा अफीम खा ली और अगर डाक्टर मौजूद न होता और उसने फौरन दवा न दी होती तो वह मर जाती। कर्नलने यह

किस्सा इतने जोश और शानके साथ बयान किया कि बीचमें बोलनेकी किसीकी हिम्मत न हुई। सिर्फ क्लार्क महोदयने इस उदाहरणसे प्रभावित होकर अपना एक किस्सा शुरू कर दिया। वे कहने लगे—"बहुत आदमियोंकी इतनी आदत पड़ जाती है कि अफीमके चालीस-चालीस बूँद पी जाते हैं। मेरे एक रिश्तेदार हैं"—लेकिन कर्नलने उन्हें अपनी बातको काटनेका मौका नहीं दिया और अपने सालेकी स्त्रीपर अफीमके प्रभावका किस्सा बयान करते गये।

एक ज्यूरी इतनेमें बोल उठा—"महानुभाव, आपको यह मालूम है कि पाँच बजनेवाला ही है।"

"अच्छी बात है महानुभाव! आप लोग यह बताइये।" सरपंचने पूछा—"हम लोग यह फैसला दें कि मस्लोवा मुजरिम है लेकिन उसका न लूटनेका इरादा था न कुछ चोरी करनेका। यह ठीक रहेगा।"

पीटर जेरासीमोविच अपनी विजयपर प्रसन्न होकर सहमत हो गये।

"लेकिन इस बातकी सिफारिश जरूर होनी चाहिये कि उसे माफ कर दिया जाय।" व्यापारीने कहा।

इसपर सब लोग सहमत हो गये। सिर्फ बुड्ढा मजदूरवादी यह कहता रहा कि "मुजरिम नहीं है, यह फैसला होना चाहिये।"

"मतलब वही हो जाता है।" सरपंचने समझाया—"जब आप कहते हैं कि उसका इरादा लूटनेका या चोरी करनेका नहीं था तो वह मुजरिम नहीं हुई, यह तो जाहिर है।"

"बहुत ठीक, यही ठीक रहेगा, और हम लोग इस बातकी सिफारिश करें कि उसे माफ कर दिया जाय।" व्यापारीने हँसते हुए कहा।

ये लोग इतने थक गये थे और बहस करते करते परेशान हो गये थे कि किसीको यह खयाल नहीं आया कि फैसलेमें यह लिख देता कि मस्लोवा बुकनी देनेकी अपराधिनी है लेकिन उसकी मंशा जान लेनेकी नहीं थी। नेखलीडू भी इतना घबराया हुआ था कि उसे भी यह बात न सूझी कि ये वाक्य छूटे जा रहे हैं। इसलिए उत्तर एक कागजपर, जिस

रूपमें तय हुआ था, लिख लिया गया और अदालतके सामने पेश कर दिया गया।

ज्यूरीके लोगोंने घंटी बजायी। सिपाहीने, जो नंगी तलवार खींचे दर्वाजेके बाहर खड़ा था, अपनी तलवार म्यानमें रख ली और दर्वाजेके सामनेसे हटकर खड़ा हो गया। मजिस्ट्रेट लोग अपनी अपनी जगहपर बैठ गये, और ज्यूरीके आदमी एक एक कर आने लगे।

सरपंचने बहुत गंभीरताके साथ प्रमुख मजिस्ट्रेटके सामने कागज पेश किया। उसने इसे देखा और आश्चर्यसे अपनी हथेलियाँ फैला दीं। वह अपने साथियोंसे सलाह-मशविरा करने लगा। प्रमुख मजिस्ट्रेटको आश्चर्य इस बातका हुआ था कि ज्यूरीके लोगोंने ये शब्द तो लिखे थे कि "बिना लूटनेके इरादेके" लेकिन उन्होंने यह नहीं लिखा था कि "बिना कत्ल करनेके इरादेसे।" इसका मतलब यह हो जाता था कि मस्लोवाका इरादा लूटने या चोरी करनेका तो नहीं था, फिर भी उसने किसी उद्देश्यके बिना ही सौदागरको जहर दे दिया।

"देखिये तो ज्यूरीने यह क्या बेवकूफीका फैसला दिया है।" प्रमुख मजिस्ट्रेटने अपनी बाँयीं तरफ बैठे हुए मजिस्ट्रेटसे कानमें कहा—"इसका मतलब यह हुआ कि यद्यपि वह निरपराध है, फिर भी काले-पानी भेज दी जाय।"

"निःसन्देह आपका यह मतलब नहीं है कि वह निरपराध है।"

"जी हाँ; वह जरूर निरपराध है और मैं समझता हूँ, इसमें दफा ८१७ लगती है। दफा ८१७ यह है कि अगर अदालतको यह मालूम हो कि ज्यूरीने गलत फैसला दिया है तो वह उस फैसलेको रद कर सकती है।"

"आपकी क्या राय है?" प्रमुख मजिस्ट्रेटने दूसरे मजिस्ट्रेटसे पूछा। इस दयालु मजिस्ट्रेटने फौरन जवाब नहीं दिया। उसने अपने लिखे हुए कुछ आँकड़ोंकी तरफ देखा और उनको जोड़ डाला। जो जोड़नेसे आया वह तीनसे बराबर बराबर तकसीम नहीं होता था।

उसने पहलेसे अपने दिलमें यह खयाल बना लिया था कि अगर तीनसे बराबर तकसीम हो गया तो मैं प्रमुख मजिस्ट्रेटकी रायसे सहमत हो जाऊँगा, लेकिन तीनसे बराबर तकसीम नहीं हुआ। फिर भी अपनी दयावृत्तिसे मजबूर होकर, इसने प्रमुख मजिस्ट्रेटकी रायका अनुमोदन किया।

"मेरा भी खयाल है, इस दफाको लगाना चाहिये।" इसने कहा।

"और आपकी क्या राय है?" प्रमुख मजिस्ट्रेटने गंभीर मजिस्ट्रेट की तरफ फिरकर पूछा।

"मैं आपसे हर्गिज सहमत नहीं हो सकता।" इसने कठोरतासे जवाब दिया—"अखबारोंमें बराबर निकलता रहता है कि ज्यूरी अभियुक्तको छोड़ देते हैं; और मजिस्ट्रेट लोगोंने यही काम किया तो वे लोग क्या कहेंगे? मैं तो आपकी सलाह बिल्कुल नहीं मान सकता।"

प्रमुख मजिस्ट्रेटने अपनी घड़ीकी तरफ देखा। "अफसोसकी बात है, लेकिन क्या किया जाय।" यह कहते हुए उसने सरपंचको प्रश्नावली पढ़नेके लिए दे दी। सब उठकर खड़े हो गये और सरपंच एक कदम आगे बढ़ा, खाँसा और प्रश्न तथा उसके उत्तर पढ़कर सुना दिये। सारी अदालतने – पेशकार, वकील और सरकारी वकीलने– आश्चर्य प्रकट किया। अभियुक्त लोग स्तब्ध बैठे रहे। उनकी समझमें नहीं आया कि ज्यूरियोंने जो उत्तर दिये हैं उनका क्या मतलब है। हर एक आदमी इसके बाद बैठ गया और प्रमुख मजिस्ट्रेटने सरकारी वकीलसे पूछा—"अभियुक्तोंको क्या सजा दी जाय?"

सरकारी वकीलको इस बातकी बड़ी खुशी हुई कि मस्लोवाको सजा मिलेगी; क्योंकि इस बातकी उसे आशा न थी। उसने अपने भाषणकी वाक्पटुताको इस सफलताका कारण समझा। आवश्यक सूचनाओंको खोज निकालनेके बाद वह उठा और बोला—"मेरी रायमें साइमन कारटिंकिनरपर दफा १४५२ और दफा १४५३ लगनी चाहिये। यूफीमियाँ बोचकोवापर दफा १६५९ और कैट्रीना मस्लोवापर दफा १४५४।"

"इन तीनों दफाओंके अनुसार ज्यादासे ज्यादा जो सजा दी जा सकती है, दी जानी चाहिये।

"अदालत अब सजा तै करनेके लिए बरखास्त होती है।" प्रमुख मजिस्ट्रेटने उठते हुए कहा। हर एक आदमी इसके बाद उठकर खड़ा हो गया। सबके दिलमें यह खुशी हुई कि चलो, काम खतम हुआ। लोग कमरे से बाहर निकलने या इधर-उधर टहलने लगे।

"आप लोगोंको मालूम है महानुभाव!" पीटर जेरासीमोविचने नेख्लीडूके पास आकर कहा, जिससे सरपंच कुछ बातें कर रहा था। "कि हम लोगोंने इस मुकदमेमें लज्जास्पद अन्याय किया। उसको साइबेरिया कालेपानी भिजवा दिया।"

"आप क्या कह रहे हैं?" नेख्लीडूने अचम्भेमें कहा। इस बार उसे इस टीचरका घनिष्ठ व्यवहार बुरा नहीं मालूम हुआ।

"आपने नहीं देखा कि हम लोगोंने अपने उत्तरमें यह नहीं लिखा कि मुजरिम तो है लेकिन कत्ल करनेका इरादा नहीं था। पेशकारने अभी हमसे बताया है कि सरकारी वकीलकी राय उसे पन्द्रह वर्षकी कालेपानीकी सजा देनेकी है।"

"ठीक है, तै भी यही हुआ था।" सरपंचने कहा।

पीटर जेरासीमोविचने इस रायका विरोध करना शुरू किया। वह कहने लगा—"चूँकि उस औरतने रुपया नहीं लिया, इसका मतलब ही यह है कि उसका कत्ल करनेका कोई इरादा हो ही नहीं सकता था।"

"लेकिन बाहर जानेके पहले मैंने उत्तरको पढ़कर सुना दिया था और उस समय किसीने कोई आवाज नहीं की।" सरपंचने अपने पक्षका समर्थन करते हुए कहा।

"मैं तो कमरेके बाहर चला गया था।" पीटर जेरासीमोविचने नेख्लीडूकी तरफ मुँह करके कहा—"और आप शायद अपने खयालमें मग्न रहे होंगे जिससे यह बात हो गयी।"

"मैंने कभी यह सोचा ही नहीं।"—नेख्लीडूने कहा।

"आपने सोचा ही नहीं ?"

"लेकिन अब यह दुरुस्त किया जा सकता है ?" नेख्लीडूने पूछा।

"नहीं जनाब, अब यह मामला खतम हो गया।"

नेख्लीडूने अभियुक्तोंकी तरफ देखा। ये लोग, जिनकी किस्मतका फैसला हो रहा था, चुपचाप और बिना हिले-डुले कटहरेके पीछे और सिपाहियोंके आगे बैठे हुए थे। मस्लोवा मुस्करा रही थी। नेख्लीडूके दिलमें एक बुरी भावना पैदा हो रही थी। अभीतक वह यह आशा करता था कि मस्लोवा छूट जायेगी और इसी शहरमें रहेगी। ऐसी हालतमें नेख्लीडू यह निश्चय नहीं कर सका था कि मैं उसके साथ किस प्रकारका व्यवहार करूँगा। उसके साथ किसी तरहका भी संपर्क रखना कठिन था। लेकिन साइबेरिया और कालेपानी इन दोनों बातोंने उसके साथ किसी भी प्रकारके संपर्ककी भावनाका खात्मा कर दिया। घायल चिड़िया थैलेमें अपना फटफटाना बन्द कर देगी और उसे अपने अस्तित्व-की याद न दिलायेगी।

तेईसवाँ अध्याय

पीटर जेरासीमोविचका अंदाजा सही था।

प्रमुख मजिस्ट्रेट सलाह मशविरेवाले कमरेसे वापस आया। उसके हाथमें एक कागज था। उसने पढ़कर सुनाया।

"आज बतारीख २८ अप्रैल सन् १८८-को बफरमान शाहंशाह रूस अदालत फौजदारी माँ—ज्यूरीके फैसलेकी बिना पर दफा ७७१, ७७६ और ७७७ के मुताबिक यह हुक्म करती है कि साइमन कारटिंकिन कौम किसान उम्र तैंतीस वर्ष और कैट्रीना मस्लोवा कौम मिश्चंका, उम्र २८ वर्षकी सारी मिल्कियत जब्त कर ली जाय और इनको साइबेरिया काले-पानी भेज दिया जाय। कारटिंकिनको ८ वर्षके लिए और मस्लोवाको चार वर्षके लिए। जाब्तेकी दफा २५ में बतायी हुई सारी बातें इनपर लागू होंगी। बीचकोवा कौम मिश्चंका उम्र ४३ सालको यह सजा दी जाती है कि उसके निजी और हासिल किये हुए जितने हकूक हैं सब छीन लिये जायँ, और उसे ३ वर्षके लिए जेलमें बंद कर दिया जाय। जाब्तेकी दफा ४८ में बतायी गयी सारी बातें उसपर लागू होंगी। मुकदमेका खर्च अभियुक्तोंसे बराबर बराबर वसूल किया जाय। अगर इनके पास काफी जायदाद नहीं है तो खर्चकी अदायगी सरकारी खजानेसे की जाय। जो चीजें शहादतमें रखी गयी हैं वे बेच दी जायँ। अँगूठी वापस कर दी जाय और शीशेके मर्तबान फोड़ दिये जायँ।"

कारटिंकिन अपने हाथ लटकाये और अपने होंठोंको हिलाता हुआ खड़ा था। बोचकोवा बिल्कुल शान्त मालूम होती थी। मस्लोवाने जब सजा सुनी तो उसका चेहरा गुलाबी हो गया। "मैं अपराधिनी नहीं हूँ, अपराधिनी नहीं हूँ!"—उसने एकाएक चिल्लाना शुरू किया जिससे सारा कमरा गूँज उठा। "यह जुल्म हो रहा है। मैंने यह अपराध नहीं

किया है। मैं कभी भी नहीं चाहती थी। मेरा कभी भी खयाल नहीं था। मैं सच कह रही हूँ सच।" यह कहती हुई वह बेंचके ऊपर गिर गयी, जोर जोरसे सिसकने और फूट फूटकर रोने लगी। कारटिंकिन और बोचकोवा बाहर चले गये, लेकिन वह वहीं बैठी रोती रही। यहाँतक कि सिपाहीको उसके चोगेकी बाँह पकड़कर घसीटना पड़ा, तब वह अपनी जगहसे उठी।

"इस मामलेको इसी तरह छोड़ देना नामुकिन है। यह नहीं हो सकता।" नेख्लीडूने अपने दिलमें कहा और उसके दिलसे बुरे खयालात बिल्कुल जाते रहे। वह मस्लोवाके पीछे पीछे दालानमें बढ़ा। वह एक दफा उसे और देखना चाहता था लेकिन नहीं जानता था कि क्यों। दर्वाजेपर काफी भीड़ थी। वकील और ज्यूरी इस बातपर खुश थे कि काम खतम हो गया था और बाहर निकल रहे थे। इसलिए नेख्लीडूको कुछ क्षणतक इन्तजार करना पड़ा, जब वह दालानमें पहुँचा तो मस्लोवा आगे बढ़ चुकी थी। वह दालानमें तेजीसे उसके पीछे बढ़ता गया। इस बातका जरा भी ध्यान नहीं किया कि लोग मुझे देख रहे हैं। दौड़कर वह मस्लोवाके पासतक पहुँच गया। एक कदम आगे भी बढ़ गया और वहाँ जाकर रुक गया। मस्लोवाका रोना बन्द हो चुका था। अब वह सिर्फ सिसक रही थी और अपने लाल बदरंग चेहरेको रूमालके किनारेसे पोंछ रही थी। मस्लोवा इसके पाससे गुजर गयी लेकिन उसने इसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। फिर नेख्लीडू दौड़कर प्रमुख मजिस्ट्रेटके पास पहुँचा। जब नेख्लीडू यहाँ पहुँचा वे अदालत छोड़ चुके थे और बाहरके कमरेमें थे। ये हल्के भूरे रंगका ओवरकोट पहन चुके थे और अपने नौकरसे अपनी चाँदीसे मढ़ी हुई छड़ी ले रहे थे।

नेख्लीडूने पहुँचते ही कहा—"श्रीमन्, क्या मुझे इस बातकी इजाजत देंगे कि इस मुकदमेके बारेमें, जो अभी खतम हुआ है, मैं आपसे दो बातें कर लूँ? मैं ज्यूरीका आदमी हूँ।"

"जरूर राजकुमार नेख्लीडू!" प्रमुख मजिस्ट्रेटने कहा—'बड़ी

खुशीसे बातें कीजिये। मेरा खयाल है कि हमसे आपसे पहले भी मुलाकात हुई है।" यह कहते हुए उसने इनसे हाथ मिलाया और बताने लगा कि पहले पहल इनसे अमुक रात्रिको मुलाकात हुई थी जब कि इनके साथ इतने आनन्दसे वह नाचा था कि कोई भी नौजवान इससे अच्छा नहीं नाच सका था। "अच्छा, यह बताइये कि मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।"

"मस्लोवाके बारेमें जो उत्तर दिया गया है उसमें एक भूल हो गयी है। वह जहर पिलानेकी अपराधिनी नहीं है, फिर भी उसे काले-पानीकी सजा मिल गयी है।" नेख्लीडूने अपने उदास चेहरेसे कहा।

"अदालतने तो आप लोगोंके उत्तरके अनुसार ही सजा दी है।" प्रमुख मजिस्ट्रेटने कहा और आगेके दर्वाजेकी तरफ बढ़ गया, हालाँकि ये उत्तर कुछ परस्पर-विरुद्ध थे। उसे याद आया कि मैं जिस समय ज्यूरीको समझा रहा था उस समय यह कहना भूल गया था कि अगर मुजरिम शब्दके साथ बिना कत्ल करनेके इरादेका वाक्य न जोड़ा जाय तो मुजरिम शब्दके माने हो जाते हैं, "मुजरिम कत्लके इरादेसे।" जल्दीमें वह इस बातको बताना भूल गया था।

"क्या यह गलती नहीं दुरुस्त की जा सकती?"

"अपील करनेके लिए कोई न कोई तो बिना मिल ही जायेगी। आप किसी वकीलसे बातचीत कीजिये!" प्रमुखने कहा और अपनी टोपी सरपर रखकर वह दर्वाजेकी तरफ बढ़ने लगा।

"लेकिन यह तो बड़ी भयंकर बात है।"

"आप देखिये कि मस्लोवाके सामने दो रास्ते थे।" प्रमुखने कहा और नेख्लीडूके प्रति अधिकसे अधिक शिष्टाचार प्रकट करनेकी कोशिश की। इसके बाद अपनी गलमूछें अपने कोटके कालरके ऊपर कायदेसे सजाकर वह नेख्लीडूकी बाँहमें अपनी बाँह डालकर फाटककी तरफ बढ़ने लगा और बोला—"आप भी चल रहे हैं न?"

"जी हाँ" नेख्लीडूने कहा। इसने भी अपना कोट पहन लिया और इसके पीछे पीछे चल दिया।

ये लोग प्रकाशमय और प्रसन्न सूरजकी रोशनीमें पहुँच गये। सड़कोंपर पहियोंकी खड़खड़ाहट होनेसे उन्हें जरा जोरसे बातें करनी पड़ती थीं।

"आप देखिये! स्थिति आश्चर्यजनक है।" प्रमुखने कहा—"मस्लोवाके लिए इन दो बातोंमेंसे एक ही हो सकती थी। या तो वह बिल्कुल छोड़ दी जाती और उसे थोड़े दिनकी सजा दे दी जाती; या अगर इसके हवालातके दिनोंका खयाल करते तो बिल्कुल छोड़ दिया जाता। एक दूसरी बात यह थी कि उसे कालेपानी साइबेरिआ भेज दिया जाता। इन दोनोंके बीचमें कोई बात नहीं हो सकती थी। अगर आप लोगोंने इतना और लिख दिया होता कि कत्ल करनेका इरादा नहीं था तो वह बिल्कुल बरी कर दी गयी होती।"

"जी हाँ! यह बात छूट गयी जो कि बिल्कुल अक्षम्य है।" नेख्लीडूने कहा।

"बस, यहीं तो मामला खराब हो गया।" प्रमुखने मुस्कराते हुए कहा और अपनी घड़ीकी ओर देखा। उसकी क्लैराने जो वक्त मुकर्रर किया था उसमें सिर्फ ४५ मिनट और बाकी थे।

"इसलिए अब अगर आप चाहें तो वकीलोंसे बातचीत कीजिये। अपील करनेकी बिना कोई निकालनी ही पड़ेगी और यह आसानीसे की जा सकती है।" इसके बाद वह बग्घीकी तरफ मुड़ा और पुकारा—'डोरियन्सकाया जाना है। ३० कोपेक दूँगा। मैं इससे ज्यादा कभी नहीं देता।"

"बहुत अच्छा हुजूर, मैं ले चलूँगा।"

"नमस्कार, अगर मैं आपकी कुछ सेवा कर सकूँ तो तैयार हूँ। मैं डोरियन्सकायामें रहता हूँ। बँगलेका नाम है डोरनीकफ। पता तो याद रहेगा?" यह कहते हुए उसने झुककर सलाम किया। अब वह गाड़ीमें बैठकर रवाना हो गया।

चौबीसवाँ अध्याय

प्रमुखसे बातचीत करने और ताजी हवा लगनेसे नेख्लीडूको कुछ शान्ति मिली। उसने यह सोचा कि जिस असाधारण वातावरणमें मेरा सारा दिन गुजरा, उसने मेरे हृदयमें विशेष रूपसे उत्ताप पैदा कर दिया है।

"निःसन्देह यह संयोग बहुत विलक्षण और आश्चर्यजनक है। मस्लोवाकी बदनसीबीको कम करना मेरे लिए बहुत आवश्यक है। और मैं इसके लिए जल्दसे जल्द कार्यवाही शुरू करूँगा। मुझे तुरत यह पता लगाना चाहिये कि यहाँ मकशन और फनारिन कहाँ बैठते हैं।" उसने अपने मनमें दो प्रसिद्ध वकीलोंका नाम लिया। वह अदालत वापस आया और ओवरकोट उतारकर ऊपर पहुँचा। पहले ही बरामदे-में फनारिनसे उसकी भेंट हो गई। नेख्लीडूने उससे कहा—"मैं कार्य-वश आपकी ही खोज कर रहा था।" फनारिन नेख्लीडूकी सूरत-शक्ल और नामसे परिचित था। वह मिलते ही बोला—'फर्माइये, क्या हुक्म है।"

"मैं इस समय काफी थक गया हूँ, पर यदि आपके काममें अधिक देर न लगे तो अभी बता दीजिये कि क्या बात है। पधारिये।" अब वह नेख्लीडूको एक कमरेमें ले गया जो शायद किसी जजकी कैबिनेट थी। दोनों मेजके पास बैठ गये।"

"फर्माइये, क्या काम है।"

"सबसे पहली बात यह है कि मैं आपसे इस मामलेको बिल्कुल गुप्त रखनेकी प्रार्थना करूँगा। मैं जाहिर नहीं करना चाहता कि, मैं इस मामलेमें दिलचस्पी लेता हूँ।

"बेशक, बेशक।"

"आज मैं ज्यूरीमें था और हमने एक स्त्रीको—एक निर्दोष स्त्रीको–साइबेरिया कालेपानी भेज दिया। इससे मुझे बड़ी परेशानी है।" नेख्लीडूको अपने आप शर्माते देखकर खुद आश्चर्य हुआ। फनारिनने फौरन उसकी ओर देखा। फिर वह सिर नीचा करके सुनने लगा।

"हाँ, तो फिर?"

"हमने एक स्त्रीको सजा दे दी है और मैं बड़ी अदालतमें अपील करना चाहता हूँ।"

"सिनेटमें?" फनारिनने उसकी बातको सही करते हुए कहा।

"हाँ, मैं चाहता हूँ कि आप स्वयं इस मुकदमेकी पैरवी करें।" नेख्लीडू वार्तालापके सबसे अधिक कठिन अंशको समाप्त करना चाहता था, इसलिए उसने कहा—"इसका सारा खर्च जो कुछ भी हो मैं बरदाश्त करूँगा।"

वकील इन बातोंमें नेख्लीडूकी अनुभवहीनता देखकर कृपाभावसे मुस्कराया—"अजी! यह सब तै हो जायेगा। मामला क्या है?"

नेख्लीडूने सब हाल बता दिया।

"अच्छी बात है, मैं कल ही काममें लग जाऊँगा और मुकदमा देखूँगा। आप परसों आइये, नहीं तो बृहस्पतिके दिन ठीक रहेगा। छः बजेके बाद आइये। मैं आपको जवाब दे दूँगा। अच्छा, आज्ञा दीजिये, मुझे अभी यहाँ कुछ काम है।"

नेख्लीडू उससे बिदा लेकर बाहर निकला।

वकीलके साथ बातचीत करके नेख्लीडू सोच रहा था कि मैंने मस्लोवाकी पैरवीका प्रबन्ध कर दिया और मुझे कुछ शान्ति मिली। अब वह सड़कपर पहुँचा। मौसम बहुत सुन्दर था। वह वसन्तकी वायुकी गहरी साँस लेकर खुश हुआ। उसे चारों ओर गाड़ीवानोंने घेर लिया। वे कहने लगे कि "चलिये" पर वह पैदल ही चलता रहा। फौरन ही उसकी आँखोंके सामने कटूशा और उसके प्रति अपने आचरणके अनेक चित्र आ गये। वह खिन्न हो गया और उसे सब कुछ उदास दिखाई

देने लगा। उसने अपने दिलमें कहा—"नहीं, मैं इन सब बातोंपर बादमें विचार करूँगा। अभी तो मुझे इन अरुचिकर भावनाओंसे निवृत्त होना आवश्यक है।"

नेख्लीडूको याद आया कि मुझे कोरचेगिन-परिवारके साथ भोजन करना है। उसने अपनी घड़ी देखी। अभी इतनी देर नहीं हुई थी कि वहाँपर वह समयसे न पहुँच सके। ट्रामकारकी सीटी उसे सुनाई पड़ी। वह दौड़ा और कूदकर सवार हो गया। बाजारमें पहुँचकर वह उसपरसे उतर गया और एक गाड़ी लेकर दस ही मिनटमें विशाल कोरचेगिन भवनमें जा पहुँचा।

पचीसवाँ अध्याय

विशाल कोरचेगिन-भवनके मोटे-ताजे दर्बानने दर्वाजा खोलते हुए कहा—"हुजूर ! पधारिये, हुजूर ! सरकार आपका इन्तजार कर रहे हैं। लोग भोजन करने बैठ गये हैं। लेकिन हमको हुक्म मिला है कि जैसे ही आप आवें, आप पधार जायँ।" दर्बान इनके साथ-साथ सीढ़ियोंतक गया और उसने घंटी बजायी।

नेख्लीडूने अपना ओवरकोट उतारते हुए पूछा—"क्या कोई नये आदमी भी आये हैं?"

"घरके आदमियोंके अलावा महाशय कोलोसोव और माइकैल सर्जिविच भी हैं।"

एक अत्यन्त सुन्दर अर्दलीने, जो पूँछदार कोट और सफेद दस्ताने पहने था, ऊपरसे देखा। "आइये हुजूर, आपका इन्तजार हो रहा है।"

नेख्लीडू ऊपर गया और सुन्दर विशाल नृत्यभवनमें होते हुए, जिससे उसका अच्छी तरह परिचय था, खानेके कमरेमें पहुँचा। यहाँ माता सोफिया बेसलीविनाके अलावा, जो अपना कमरा छोड़कर कभी बाहर न निकलती थी, सारा परिवार मेजके चारों ओर बैठा था। मेजके प्रधान स्थानपर वृद्ध कोरचेगिन था। उसकी बाईं ओर डाक्टर था और दाहिनी ओर एक मेहमान आइवन आइवनिच था जो पहले मार्शल आफ नोबेलिटी था और अब बैंक-डाइरेक्टर था। यह कोरचेगिनका मित्र और राजनैतिक विचारमें उदार दलका था। मेजके दूसरे कोनेपर स्वयं मिसी बैठी थी। उसके बगलवाला स्थान खाली था।

वृद्ध कोरचेगिनने अपनी लाल आँखें नेख्लीडूकी तरफ उठाकर अपने नकली दाँतोंसे ग्रास चबाते हुए प्रयासपूर्वक कहा—अच्छा आ गये! ठीक है, हमने अभी मछली ही आरंभ की है। बैठ जाइये!

इसके बाद उसने, मोटे-ताजे रोबदार खानसामाकी तरफ मुँह करके, खाली जगहकी तरफ आँखसे इशारा करते हुए कहा—'स्टीफेन !' यों तो नेख्लीडू कोरचेगिनको बहुत अच्छी तरह जानता था और पहले भी उसे कई बार भोजन करते देख चुका था पर आज, उसके लाल चेहरेको, उसकी मोटी गर्दनको जिसमें वेस्टकोटसे ऊपरका हिस्साका हिस्सा गुलू-बन्दसे बँधा था तथा उसके सारे मोटे-ताजे सैनिक अवयवोंको देखकर उसे जितनी अरुचि हुई, पहले कभी न हुई थी। नेख्लीडूको आप ही आप याद हो आया कि यह निर्दय मनुष्य, जिस समय यह पदाधिकारी था, सिपाहियोंको अकारण ही किस प्रकार बेंतोंसे पिटवाया करता था और फाँसीपर लटका दिया करता था, केवल इसलिए कि वह धनवान् था और उसे किसीकी दयाकी कोई आवश्यकता नहीं थी।

स्टीफेनने कहा—"अभी लीजिये सरकार।" और उसने दीवारके पास खड़ी आलमारीसे, जिसपर बहुतसे चाँदीके बर्तन शोभा दे रहे थे, शोरबेका बड़ा चम्मच निकाला और अर्दलीको अपनी गर्दनसे इशारा किया। अब वह मिसीके पासवाले स्थानपर साफ चाकू, काँटे और रूमाल सजाने लगा। ये रूमाल बड़ी शानके साथ लपेटे हुए रक्खे थे, जिनमें पारिवारिक चिह्न सबसे ऊपर कढ़ा हुआ था। नेख्लीडू मेजके चारों ओर हर एकसे हाथ मिलाता फिरा, वृद्ध कोरचेगिन और महिलाओंको छोड़कर सब अपने अपने स्थानपर खड़े हो गये। नेख्लीडूको इस प्रकार मेजका चक्कर काटना और उन सबसे हाथ मिलाते फिरना, जिनमेंसे बहुतसे व्यक्तियोंको वह जानतातक न था, बड़ा क्षोभकारी और विलक्षण काम मालूम हुआ। उसने देर हो जानेके लिए क्षमा प्रार्थना की, अब वह मिसी और कैथरीन ऐलेक्जीविनाके बीचमें बैठनेवाला ही था कि कोरचेगिनने आग्रह किया कि यदि तुम एक गिलास शराब न भी पियो तो भी कमसे कम अपनी भूख बढ़ानेके लिए आलमारीपर सजे हुए कुछ स्वादिष्ठ पदार्थ अवश्य ग्रहण करो, जैसे पनीर, नमकीन मछली इत्यादि। भोजन आरम्भ करनेसे पहिले नेख्लीडू न जानता था कि

वह कितना भूखा है। मक्खन और रोटी खानेके बाद वह चावसे भोजन करने लगा।

"कहिये, आप समाजकी नींव खोखली करनेमें सफल हुए ? अपराधियोंको मुक्त कर दिया और निर्दोषोंको दण्ड दे दिया न ?" कोलोसोवने पूछा। इस प्रश्न द्वारा वह एक सुधार-विरोधी समाचारपत्रके आक्षेपपर व्यंग्य कस रहा था, जो उस पत्रने ज्यूरी द्वारा मुकदमा करनेके बारेमें किया था।

नेख्लीडूने कोलोसोवकी बातका कोई उत्तर न दिया, यद्यपि लोग इसे अशिष्ट समझ सकते थे। वह गर्म गर्म शोरवा पीता रहा।

मिसी उस समयतक चुप रही, जबतक कि नेख्लीडूने अपना कौर निगल न लिया, और फिर उसने कहा—"तुम तो बड़ी बुरी तरह थक गये होगे और भूखके मारे तुम्हारा बुरा हाल हो गया होगा !"

नेख्लीडूने कहा—"नहीं, कुछ विशेष नहीं थका। और तुम ? तुम चित्र देखने गयी थीं ?"

"नहीं, हमने वह विचार स्थगित कर दिया। हम सालामाटोव परिवारके साथ टेनिस खेलते रहे। यह बिल्कुल ठीक है कि मि० क्रुक टेनिस खूब अच्छा खेलते हैं।"

नेख्लीडू यहाँ अपना मन बहलानेके लिए आया था। वह इस भवनमें आना पसन्द करता था इसलिए कि यहाँकी सुघरी हुई विलासप्रियताका उसपर अच्छा प्रभाव पड़ता था और इसलिए भी कि यहाँके मुलायम चाटुकारितापूर्ण विक्षेपरहित वातावरणमें घिरे रहनेसे उसे एक खास आनन्द आता था। पर कितनी आश्चर्यजनक बात थी कि उसे आज एक-एक करके यहाँकी सारी चीजें—जैसे दरबान, चौड़ा जीना, फूल, अर्दली, मेजकी सजावटसे लगाकर स्वयं मिसीतक—उसे रूपहीन और नीरस दिखाई दे रही थीं, सारा मकान घृणित मालूम हो रहा था।

नेख्लीडू अभीतक दुविधामें पड़ा था कि उसे मिसीको किस दृष्टिसे देखना चाहिये। कभी उसे मानो वह चन्द्रमाके प्रकाशमें देखता, तो

उसमें सौंदर्यके सिवा और कुछ नहीं दिखाई देता। उसे कभी वह मानो सूर्यके प्रकाशमें देखता और तब उसमें उसे अनेक अवगुण दिखाई देते जिनकी ओरसे वह आँखें बन्द नहीं कर सकता था। आज सूर्यका प्रकाश था। आज उसे मिसीके चेहरेकी झुर्रियाँ दिखाई दीं, उसके बालोंमें माँग निकालनेके ढंगकी ओर उसका ध्यान गया; उसने उसकी नुकीली कुहनियोंको देखा, और उसका सबसे अधिक ध्यान मिसीके अँगूठोंके नाखूनोंकी ओर गया जो पिताके नाखूनोंकी तरह थे।

कोलोसोवने कहा—"टेनिस बड़ा नीरस खेल है। हम बचपनमें 'लप्टा' खेला करते थे। उसमें इससे कहीं अधिक आनन्द आता था।"

मिसीने कहा—"आप कभी खेलकर देखते तब न। टेनिस बड़ा रोचक होता है।" नेख्लीडूको ऐसा मालूम हुआ कि मिसीने 'बड़ा' शब्दपर खास तौरसे जोर दिया। इसके बाद एक वाद-विवाद छिड़ गया, जिसमें माइकेल सर्जीविच, कैथरीन एलेक्जीविनाने भाग लिया। अध्यापिका, विद्यार्थी और बालक चुप रहे।

कोरचेगिनने हँसते-हँसते कहा—"ऐसी प्रतियोगिता हमेशा चलती है।" अब उसने अपनी वास्कटमेंसे रूमाल निकला, जोरसे कुर्सी खिसकायी और मेज छोड़कर चला गया।

उसके बाद और लोग भी उठ खड़े हुए और एक दूसरी मेजके पास गये जहाँ कटोरियोंमें गर्म सुगन्धित जल भरा रखा था। उन्होंने कुल्ले किये। इसके बाद वही बात-चीत फिर छेड़ दी।

मिसीने नेख्लीडूसे कहा—"क्या आप नहीं मानते कि पुरुषका चरित्र जितना अच्छी तरह खेलमें व्यक्त होता है उतना और किसी तरह नहीं। क्यों जी, यही बात है न ?" मिसीको नेख्लीडूके चेहरेपर किंचित् असंतुष्ट भाव दिखाई दिये जिससे वह सशंक हुई। उसने उसकी वजह जाननी चाही।

नेख्लीडूने कहा—"मैंने तो कभी इसपर विचार नहीं किया। मैं नहीं कह सकता।"

इसके बाद मिसीने पूछा—"माके पास चलोगे?"

'हाँ, चलूँगा। नेख्लीडूने ऐसे स्वरमें कहा जिससे स्पष्ट प्रकट होता था कि वह कहीं जाना नहीं चाहता। उसने सिगरेट निकालकर जलायी।

मिसीने उसकी ओर चुपचाप प्रश्नात्मक ढंगसे देखा। इससे नेख्लीडू लज्जित हो गया। वह सोचने लगा कि किसीके घर जाकर उन लोगोंको उदास कर देना कितनी बुरी बात है, इसलिए उसने सहृदयता प्रकट करनेकी चेष्टा करते हुए कहा—"यदि रानी साहबा मुझे अपने पास आनेकी इजाजत देंगी तो मैं सहर्ष चलूँगा।"

मिसीने कहा—"माँको तो बड़ी प्रसन्नता होगी। वहीं सिगरेट भी पीते रहना। इवान, आइवन आइवनिच भी वहीं हैं।"

गृह-स्वामिनी रानी सोफिया वेसविना हरवक्त लेटी रहती थीं। यह आठवाँ साल था जबसे यह महिला मेहमानोंके आनेपर लैस और रिबनसे सजधजकर, मखमल, हाथीदाँत, पीतल, इत्र और पुष्पोंके बीचमें लेटी रहती थी और कभी बाहर नहीं जाती थी। केवल अन्तरंग मित्रोंसे या, उसीके शब्दोंमें, उन व्यक्तियोंसे मिलती थी जो साधारण श्रेणीके लोगोंसे दूर रहते थे।

नेख्लीडूको इन अन्तरंग मित्रोंकी श्रेणीमें इसलिए परिणत किया गया कि वह चतुर समझा जाता था। उसकी माता इस परिवारकी घनिष्ठ मित्र थी और वह मिसीके लिए एक योग्य वर भी समझा जाता था।

सोफ़ियाका कमरा बड़े और छोटे ड्राइंग रूमके पीछे था। मिसी नेख्लीडूके आगे-आगे जा रही थी। वह बड़े ड्राइङ्ग रूममें अकस्मात् खड़ी हो गयी और एक छोटी-सी सुनहरी कुर्सी पकड़कर उसके चेहरेकी ओर देखने लगी।

मिसी अपने विवाहके लिए अत्यन्त उत्कण्ठित थी। चूँकि नेख्लीडू सुयोग्य वर था और वह भी उसे पसन्द करती थी इसलिए उसने अपने आपको इस विचारका अभ्यस्त बना लिया था कि मैं उसकी नहीं प्रत्युत

नेख्लीडू मेरा ही होगा। अपने लक्ष्यकी प्राप्तिके लिए वह उस दृढ़ कौशलके साथ काम करती रही थी जो मानसिक विकार-युक्त व्यक्तियोंमें अक्सर पाया जाता है। अब वह नेख्लीडूसे बात-चीत करने लगी जिससे नेख्लीडू अपने दिलकी बात बता दे।

मिसीने कहा —"मैं देखती हूँ कि कोई न कोई बात जरूर हुई है। बताओ, बात क्या है?"

नेख्लीडूको अदालत याद आ गयी। वह झेंप गया। उसने त्योरियाँ चढ़ा लीं। उसने सच-सच कहनेकी इच्छा करते हुए कहा—"हाँ, एक बात हो गयी है जो बड़ी अस्वाभाविक और गम्भीर है।

"कौन-सी बात है! बताओ।"

"अभी नहीं। अभी मत पूछो। अभी इसपर अच्छी तरह विचार करनेका मुझे समय नहीं मिला।" और वह शरमा गया।

"तो तुम मुझे न बताओगे?" मिसीके चेहरेकी एक नस फड़क उठी और उसने उस कुर्सीको खिसका दिया जिसे वह पकड़े हुए थी।

नेख्लीडूने उत्तर दिया—"नहीं, मैं न बता सकूँगा।" उसे प्रतीत हुआ कि इस उत्तरके द्वारा मैंने स्वयं वास्तवमें एक महत्त्वपूर्ण घटना होना स्वीकार कर लिया है।

"अच्छी बात है, तो आओ।" इतना कहकर मिसीने अपना सर झटका मानो वह व्यर्थके विचारोंको मनसे निकाल डालना चाहती हो। अब वह उसके आगे, पहलेसे ज्यादा तेज कदम रखती हुई, चली।

नेख्लीडूने देखा कि मिसीका मुँह आँसू रोकनेकी चेष्टामें बेहद पिचका हुआ है। उसे इस बातकी लज्जा आयी कि मैंने मिसीका दिल दुखाया। इससे वह दुःखित तो हुआ, लेकिन वह जानता था कि अगर मैंने ज़रा भी दुर्बलता दिखायी तो बड़ी आफत आ जायगी, और मैं उसके साथ हमेशाके लिए बँध जाऊँगा। और आज इस बातसे और भी डरता था अतः वह उसके पीछे-पीछे चुपचाप रानीके कमरेको चला गया।

छब्बीसवाँ अध्याय

नेख्लीडूव परिचित सड़कोंसे होते हुए मकानकी तरफ चला। उसके दिलमें ये वाक्य बार बार उठते थे "लज्जाजनक और वीभत्स, वीभत्स और लज्जाजनक।" किसीसे बातचीत करते समय जिस खिन्नताका अनुभव उसे हो रहा था वह अभीतक थी। वह समझता था कि अगर बाह्यरूपसे देखा जाय तो मेरा पक्ष मजबूत है; क्योंकि मैंने किसीसे कभी कोई ऐसी बात नहीं कही थी जिससे मैं बँध गया होऊँ। मैंने कभी विवाहका प्रस्ताव नहीं किया। साथ ही वह जानता था कि मैं वास्तवमें उसके साथ बँध गया हूँ। उसने वचन दे दिया था कि 'मैं तुम्हारा ही हूँ'। फिर भी आज उसका रोम रोम पुकार कर कह रहा था कि मैं उसके साथ विवाह न कर सकूँगा।

"लज्जाजनक और महत्त्वपूर्ण, वीभत्स और लज्जाजनक!" वाक्यको उसने दुहराया; और ये वाक्य केवल अपने और किसीके पारस्परिक सम्बन्धके ही बारेमें नहीं थे बल्कि हर चीजके बारेमें थे। जब वह अपने मकानकी देहलीमें पहुँचा, यही वाक्य उसकी जबानपर थे—"सब कुछ लज्जाजनक और वीभत्स है।" उसका नौकर कोरनी उसके पीछे-पीछे जब खानेके कमरेमें पहुँचा, जहाँ मेजपर चाय और खानेके लिए तश्तरी ढकी तैयार रखी थी, नेख्लीडूने कहा—"मैं भोजन न करूँगा, तुम जाओ।"

कोरनी चला गया तो नेख्लीडू चायदानीके पास पहुँचकर अपने हाथसे चाय बनानेकी तैयारी करने लगा। लेकिन इसी समय उसके कानोंमें एग्राफिना पेट्रोभ्नाके पैरोंकी आहट सुनाई दी। इससे वह बैठकमें चला गया जिससे कि वह इसे यहाँ न देख ले। उसने दरवाजा बन्द कर लिया। अबसे तीन महीने पहले उसकी माँकी मृत्यु इसी कमरेमें हुई थी।

"नहीं नहीं" उसने मन-ही-मन इस कमरेमें आकर सोचा कि मुझे स्वतन्त्रता तो जरूर प्राप्त करनी चाहिये। किससे? कोरचेगिन परिवारसे, मेरी वेसलीविनासे और अपने पैतृक स्वत्वोंसे तथा इन सारे झगड़े-झंझटोंसे। अहा! मैं आजादीसे साँस ले सकता तो कैसा अच्छा होता। विदेश जाता, रोम जाता और अपने चित्र बनानेमें लगता। उसे याद आया कि चित्रकलामें मुझे विशेष योग्यता प्राप्त नहीं। "खैर," उसने अपने मनमें कहा—"और कुछ न सही स्वच्छन्दतापूर्वक साँस तो ले सकूँगा। पहले कुस्तुनतुनियाँ और फिर रोम। बस, जरा यह ज्यूरीका झगड़ा खतम कर दूँ और वकीलसे मामला तै कर लूँ।"

इसी समय एकाएक उसके मस्तिष्कमें सामने उस काली आँखों और तिर्छी चितवनवाली स्त्रीकी तस्वीर साफ साफ आ गयी। उसे याद आया कि किस प्रकार कैदियोंका बयान खतम हो जानेके बाद वह रोने-चिल्लाने लगी थी। उसने झटपट राखदानीमें सिगरेट कुचल दिया, दूसरा जलाया और फिर वह कमरेमें टहलने लगा। उस स्त्रीके साथ उसकी जितनी घड़ियाँ बीती थीं उनकी याद उसे एक एक कर आने लगी। उसे याद आया कि उसके साथ मुलाकात कैसे हुई थी और यह भी याद आया कि किस प्रकार उसके ऊपर पाशविक प्रवृत्तिका भूत सवार हो गया था तथा किस प्रकार उसकी तृप्तिके बाद निराशा हुई थी। उसे सफेद पोशाक, नीली बग्घी और गिर्जेकी प्रभातकालकी प्रार्थनाकी याद आयी। मैं उससे प्रेम करता था, सचमुच प्रेम करता था और मेरा प्रेम स्वच्छ तथा पवित्र था। मैं इससे पहले भी उसे प्यार करता था; हाँ, मैं उसे उस समय भी प्यार करता था जब अपनी फूफुओंके पास जाकर पहली बार ठहरा था और अपना लेख तैयार कर रहा था। उसे स्मरण आया कि उस समय मैं कैसा था। उस ताजगी, उस जवानी और उस जीवनके उभारका झोंका उसे आ लगा। इससे वह अत्यन्त खिन्न हो गया।

उस समयके और आजके नेख्लीडूमें महान् अन्तर था। यदि अधिक

नहीं तो उतना अवश्य जितना गिर्जेकी रातवाली कटूशामें और उस वेश्यामें था जिसने व्यापारीके साथ प्रेमलीला की थी और जिसे उस दिन उन सबने मिलकर सजा दी थी। उस समय वह स्वतंत्र और निर्भय था और उसके सामने अनेक संभावनाएँ खुली थीं। अब वह अपने आपको एक मूर्खतापूर्ण, सारहीन, नीरस, उच्छृङ्खल जीवनके जालमें फँसा हुआ पाता था जिससे निकलनेकी चेष्टा करनेपर भी (और ऐसी चेष्टा वह कभी न करता था) उसे कोई मार्ग दिखाई न देता था। उसे याद आया कि किस प्रकार मैं उस समय अपनी स्पष्टवादितापर अभिमान करता था, किस प्रकार मैंने हमेशा सच बोलनेका नियम बना लिया था, और किस प्रकार मैं उस नियमका पालन किया करता था; और अब किस प्रकार झूठके दलदलमें कितना गहरा फँस गया हूँ जिस झूठको मेरे चारों ओरके लोग सच समझते थे। जहाँतक उसकी बुद्धि काम करती थी, उसे इन असत्यताओंसे निकलनेका कोई उपाय दिखाई नहीं देता था। वह दलदलमें फँस गया था, उसमें रहनेकी उसे आदत पड़ गयी थी और उसीमें पड़ा करवटें बदल रहा था।

नेख्लीडूके सामने प्रश्न यह था कि मेरी वेसलीविना और उसके पति-से किस तरह अपना सम्बन्ध तोड़ा जाय जिससे वह उससे और उसकी सन्तानसे निगाह मिलानेसे लज्जित न हो। मिसीके जालसे किस तरह छूटे? अपने सिद्धान्त और अपने वास्तविक जीवनके पारस्परिक संघर्षसे कैसे बचे; क्योंकि वह एक तरफ यह मानता था कि जमीनपर मिल्कियत रखना अनुचित है, और दूसरी तरफ अपनी मातासे पायी हुई जमींदारी लिये हुए था। कटूशाके प्रति अपने पापका प्रायश्चित्त किस प्रकार करे? कमसे कम यह अंतिम समस्या यों ही नहीं छोड़ी जा सकती। जिस स्त्रीको उसने किसी समय प्यार किया था उसका परित्याग वह नहीं कर सकता था और न उसे साइबेरियाकी जेल-यातनाओंसे बचानेके लिए किसी वकीलको कुछ दे दिलाकर ही सन्तुष्ट हो सकता था। उसे तो सख्त सजा भी न मिलनी चाहिये थी। पापका प्रायश्चित्त रुपयेसे किया जाय? जिस

समय मैंने कटूशाको पहले पहल रुपये दिये थे उस समय भी तो मैंने सोचा था कि अपने पापका प्रायश्चित्त कर रहा हूँ।

नेखलीडूको स्पष्ट रूपसे उस अवसरकी याद आयी जब रास्तेमें रोक-कर कटूशाकी जेबमें नोट सरकाकर वह भाग गया था। उसके दिलमें फिर वही ग्लानि और खिन्नता पैदा हो गयी जो उस समय हुई थी। उसने कहा—"ओह! वे रुपये! हे भगवान्! हे भगवान्! कितना वीभत्स है!" वह जोरसे चिल्ला उठा जिस प्रकार उस अवसरपर चिल्ला उठा था। ऐसा काम तो "कमीनेपन और धूर्तताका हो सकता था।" उसने जोरसे कहा और वह निश्चेष्ट होकर खड़ा हो गया, "मैं सचमुच वही कमीना हूँ? अगर मैं नहीं हूँ तो और कौन है?" उसने अपने दिलमें कहा। "और एक यही करतूत थोड़े है।" उसने अपने आपको अपराधी सिद्ध करते हुए कहा। "क्या मेरी वेसलीविना और उसके पति-के प्रति मेरा व्यवहार धूर्तता-पूर्ण और घृणित नहीं था?" और धनके प्रति मेरा सिद्धान्त? इस बहानेसे कि सम्पत्ति मुझे माँसे मिली है, उसका उपयोग करना और साथ-साथ उसे नाजायज समझते रहना? और मेरा अकर्मण्य तिरस्करणीय जीवन! सबसे अधिक कटूशाके प्रति मेरा आच-रण! बदमाशी और कमीनापनका। दुनिया मेरे सम्बन्धमें चाहे जो समझे, और सम्भव है, मैं उसकी आँखोंमें धूल झोंक सकूँ, पर अपनी आँखोंमें तो नहीं झोंक सकता।"

नेखलीडूके जीवनमें आत्मपरिष्कार करनेका अवसर कई दफा आ चुका था। आत्मपरिष्कारसे उसका अभिप्राय उस मानसिक अवस्थासे था जो, बहुत दिनोंकी लगातार मोहनिद्राके बाद, कार्यशीलताके पूर्ण अभावके अनन्तर आत्मामें एकत्रित कूड़े-कर्कटको, जिससे कि वास्तविक जीवनका अंत-सा हो जाता है, निकालकर बाहर फेंक देनेके लिए प्रेरित करती है। इस प्रकारकी जागृतिके बाद नेखलीडू अपने लिए अनेक प्रकारके नियम बनाने लग गया था और वह आजीवन इन नियमोंके पालन करते रहनेका निश्चय करता था, वह अपनी डायरी लिखता, नये

जीवनका श्रीगणेश करता और निश्चय करता कि इसपर दृढ़ रहूँगा। वह इसे अँगरेजीमें "नया पृष्ठ बदलना" कहता था, पर प्रत्येक बार सांसारिक प्रलोभन उसे फिर अपने जालमें फाँस लेते और उसे पता न चलता। "मैं फिर गिर जाता हूँ और अक्सर, पहलेसे भी नीचे।"

इस प्रकार उसने कई बार आत्मोत्थान और आत्मपरिष्कार किया था। पहली बार उसने यह बात उस समय की थी जब वह पहले-पहल गर्मियोंमें अपनी फूफुओंके पास जाकर ठहरा था। यह उसके जीवनकी अत्यन्त प्रबल और अह्लादजनक जाग्रति थी। इसका प्रभाव कुछ दिनों तक स्थिर रहा। दूसरी जाग्रति उस समय हुई जब वह सिविल सर्विस छोड़कर लड़ाईके जमानेमें फौजमें भर्ती हुआ था और अपने देशपर प्राण न्योछावर करनेका संकल्प किया था। लेकिन फौजमें पहुँचकर नैतिक उन्नतिकी जड़ पूरे तौरसे कट गयी। इसके बाद एक बार और जाग्रति हुई जिससे प्रेरित हो वह सैनिक जीवन छोड़ कलाकी सेवाके लिए विदेश चला गया था।

तबसे अबतक यद्यपि काफी समय बीत चुका था लेकिन आत्मपरिष्कारका कोई अवसर नहीं आया और इसलिए नेख्लीडूके अंतःकरणकी आवाज और वर्तमान जीवनके रंग-ढंगमें परस्पर इतनी विषमता पायी जाती थी जितनी पहले कभी नहीं थी। जब उसने देखा कि मेरे बाह्य और आंतरिक जीवनमें इतना भारी अन्तर है तो वह भयसे चौंक पड़ा। खाई इतनी गहरी थी और अपवित्रताका शिकंजा इतना मजबूत हो चुका था कि उसे आत्मपरिष्कारकी भावनातकमे सन्देह होने लगा था। प्रलोभनकरी माया अन्दरसे आवाज देती—"क्या तुमने पूर्णता प्राप्त करने और अच्छे होनेकी कोशिश पहले नहीं की? और क्या उन सब प्रयत्नोंका कोई फल निकला? अब और प्रयास करनेमें क्या रखा है? क्या तुम अकेले आदमी हो? न मालूम तुम्हारे जैसे और कितने होंगे। यही जीवन-चक्र है;" लेकिन नेख्लीडूकी आत्मा, जो कि शक्तिमती, अनादि और सत्य है, जाग उठी और उसपर विश्वास किये बिना वह

नहीं रह सकता था। यद्यपि वह जो कुछ था और जो कुछ होना चाहता था, उन दोनोंमें बड़ा अन्तर था फिर भी उसकी जाग्रत् आत्माको कुछ असम्भव और अप्राप्य नहीं जान पड़ता था।

"कुछ भी हो, मैं यह माया-जाल तोड़ दूँगा।" उसने दृढ़तासे कहा—"और सबको सच सच बता दूँगा तथा सत्यका ही आचरण करूँगा।" "मैं मिसीसे सच बात कह दूँगा, उसे बता दूँगा कि मै दुराचारी हूँ, और उससे विवाह नहीं कर सकता। मैंने व्यर्थ ही उसे इतना उत्तेजित कर दिया है। मैं मेरी वेसलीविनासे भी कह दूँगा, पर उससे क्या कहना है? उसके पतिसे कहूँगा। कहूँगा कि मैं धूर्त हूँ और मैं उसे अबतक धोखा देता आया हूँ। मैं अपनी सम्पत्तिको इस ढंगसे त्याग दूँगा कि मुझे सत्यकी प्राप्ति हो सके। कटूशाको बता दूँगा कि 'मैं कमीना हूँ और मैंने तुम्हारे विरुद्ध पापाचरण किया है, और मैं तुम्हारी मुसीबत कम करनेके लिए सब कुछ करनेको तैयार हूँ।' हाँ मैं उससे मिलूँगा और उससे क्षमा माँगूँगा।"

"हाँ, मैं उससे क्षमा प्रार्थना करूँगा, उसी तरह जिस तरह बालक करते हैं...। यदि आवश्यकता पड़ी तो उससे विवाहतक कर लूँगा।" वह फिर रुका और अपने सीनेके सामने बच्चोंकी तरह हाथ बाँधकर ऊपरकी तरफ आँखें उठा किसी अदृश्य पुरुषको सम्बोधित करके बोला—"भगवन्! मेरी सहायता कर और मेरे इन सारे कलंकोंको धोकर मुझे पवित्र कर दे।"

इस प्रकार वह भगवान्से सहायताकी, अपनी आत्मामें वास करनेकी और उसका परिष्कार करनेकी प्रार्थना करता रहा; और वह जिस बातकी प्रार्थना कर रहा था वह उसके अन्तःकरणमें पहले ही आ चुकी थी। उसकी आत्मामें अधिष्ठित भगवान्ने उसके अन्तःकरणकी दृष्टि खोल दी थी। वह भगवान्के साथ सम्पर्क कर चुका था, इसलिए वह न केवल अपने आपको स्वतन्त्र और जीवनोल्लाससे परिपूर्ण पाता था बल्कि अपने भीतर धर्मका भी उदय देखता था। आदमी जो कुछ भी

सर्वोत्तम कार्य कर सकता है उसे करनेकी शक्ति वह अपनेमें पाने लगा। जिस समय वह ये बातें मनमें कह रहा था; उसकी आँखोंमें आँसू भरे हुए थे, अच्छे आँसू और बुरे आँसू; अच्छे इसलिए कि वे आनन्दके थे, वे उसकी आत्मिक जागृतिपर बह रहे थे। उसकी आत्मा इधर कई सालसे मोहनिद्रामें अचेत थी। बुरे आँसू इसलिए कि वे करुणाके थे जिन्हें वह अपने अच्छेपनपर गिरा रहा था।

उसे गर्मी लगने लगी। और उसने पास जाकर खिड़की खोल दी। खिड़की बागके सामने थी। चाँदनी रात थी। शान्त और ताजी, कोई चीज खड़खड़ाती हुई निकल गयी। इसके बाद फिर सर्वत्र शान्ति छा गयी। लम्बे-चौड़े 'पापलर' वृक्षकी छाया खिड़कीके सामने जमीनपर फैली हुई थी और स्वच्छ पृथ्वीपर उसकी शाखाओंकी पेचीदा बनावट स्पष्ट रूपसे दिखाई दे रही थी। बायीं और अस्तबलकी छत चाँदनीमें सफेद मालूम होती थी। सामनेकी ओर वृक्षोंकी उलझी हुई शाखाओंमेंसे होकर बागकी दीवारकी काली छाया नजर पड़ रही थी। नेखलीडूने छतकी ओर, चाँदनीमें नहाये हुए उद्यानकी ओर तथा उस विशाल वृक्षकी छायाकी ओर देखा। अब वह ताजी, स्फूर्ति पैदा करनेवाली हवाके घूँट भरने लगा।

"अहा! कैसा आनन्द है! कैसा आनन्द है! हे भगवन्, कैसा आनन्द है!" उसने कहा, जिसका अर्थ यह था कि उसके अन्तःकरण-की यह अवस्था थी।

सत्ताईसवाँ अध्याय

मस्लोवा अपनी जेलकी कोठरीमें क़रीब छः बजे शामको पहुँची। वह बहुत थकी हुई थी। पैदल चलनेकी उसे आदत थी नहीं, इसलिए उसके पैरोंमें छाले पड़ गये थे। उस दिन उसे पथरीली सड़कपर कोई दस मील चलना पड़ा था। सजा सुनकर, जिसकी उसे बिलकुल आशा न थी, वह अत्यन्त पस्त हो गयी थी और भूखसे भी परेशान थी। मुकदमेके पहले वक्तमें उसके पास बैठे सिपाही लोग जब रोटी और उबाला हुआ अंडा खा रहे थे, उसके मुँहमें पानी भर रहा था और उसे भूख मालूम होने लगी थी लेकिन उनसे माँगकर खाना उसने अपनी शानके खिलाफ समझा। तीन घण्टेके बाद भूख मर गयी, सिर्फ उसे कमजोरी मालूम होने लगी और उसी समय सजा सुनायी गयी, जिसकी उसे बिलकुल आशंका न थी। पहले तो वह समझी कि शायद मैंने मजिस्ट्रेटका मतलब नहीं समझा। वह इस बातकी कल्पना ही नहीं कर सकती थी कि मुझे साइबेरियामें जाकर कैदीकी जिन्दगी बितानी पड़ेगी। इसलिए पहले उसने अपने कानोंपर विश्वास नहीं किया। लेकिन जब उसने देखा कि मजिस्ट्रेट और ज्यूरी शान्त हैं और सजाको बिलकुल स्वाभाविक तथा साधारण समझते हैं तब वह क्रुद्ध हो उठी। उसने अदालतमें जोरसे कहा—"मैं निर्दोष हूँ।" उसने जब देखा कि मेरी चिल्लाहटको भी लोगोंने यही समझा कि ऐसा तो होता ही है, सभी कैदी ऐसा करते हैं, चिल्लानेसे सजा कम नहीं हो जाती तो वह हिम्मत हारकर रोने लगी और समझने लगी कि मुझे उस निर्दयतापूर्ण, आश्चर्यजनक अन्यायके सामने, जो कि मेरे साथ किया गया है, झुकना ही होगा। सबसे आश्चर्य उसे इस बातपर हुआ कि जवान लोगोंने—बुड्ढोंने नहीं—उन्हीं आदमियोंने जो उसकी ओर

हमेशा मुग्ध दृष्टिसे देखा करते थे (उनमेंसे एक सरकारी वकील भी था जिसे उसने बिलकुल दूसरी मनोवृत्तिमें देखा था), उसे सजा दिलायी थी। मुकदमा शुरू होनेके पहले और अदालत उठनेके समय जब वह कैदियोंके कमरेमें बैठी थी यही पुरुष उसके पाससे इस प्रकार बार बार निकलते थे और घूर-घूरकर देखते थे मानो उन्हें उस तरफ कोई काम हो। फिर इन्हीं नौजवान आदमियोंने उसे बिना किसी कारणके सख्त सजा दिलायी, यद्यपि थी वह बिलकुल निरपराध। पहले तो वह रोयी, इसके बाद चुप हो रही और कैदियोंके कमरेमें बिलकुल चुप होकर बैठ गयी। फिर इस बातका इन्तजार करने लगी कि कोई उसे जेलखाने ले जानेके लिए आयेगा। इस समय सिर्फ उसे तम्बाकू पीनेकी जरूरत मालूम होती थी। जिस समय वह ऐसी हालतमें थी, बोचकोवा और कारटिंकिन इसी कमरेमें, सजा पानेके बाद, लाये गये। बोचकोवाने फौरन ही उसे बुरा-भला कहना शुरू किया। बोचकोवा उसे "कैदी" कहकर पुकारने लगी।

"हा, तुझे क्या फायदा हुआ। सफाई देने चली थी, सफाई दे पायी? कुतिया कहींकी! तू इसीके लायक थी और यही तुझे मिला। साइबेरियामें पहुँचकर तेरी यह तड़क-भड़क न रहेगी। समझी!"

मस्लोवा अपनी आस्तीनोंमें हाथ डाले, सर झुकाये, चुपचाप बैठी हुई सामनेके गन्दे फर्शको देखती रही। उसने इतना ही कहा—"मैं तुमसे नहीं बोलती। तू भी मुझसे कुछ मत बोल।" दो-तीन दफा यही कह-कहकर वह चुप हो गयी। जब बोचकोवा और कारटिंकिन वहाँसे अन्यत्र ले जाये गये, और एक चपरासीने आकर मस्लोवाको तीन रूबल दिये, तब उसकी तबीयत कुछ खुश हुई।

"मस्लोवा तुम्हारा ही नाम है?" उसने पूछा। यह एक महिलाने तुम्हारे लिए भेजा है और रूबल उसे दे दिये।

"महिलाने! किस महिलाने?"

"इसे ले लो, मैं ज्यादा बातें नहीं कर सकता।"

यह रकम किटिवाने भेजी थी जो चकला चलाती थी। गवाही देनेके बाद किटिवा जब अदालतसे जाने लगी तब उसने चोबदारसे पूछा था कि "क्या मैं मस्लोवाको कुछ रुपये दे सकती हूँ ?" उसने कहा था—"हाँ, दे सकती हो।" इजाजत मिलनेपर उसने मुलायम चमड़ेका अपना नफीस दस्ताना अपने सफेद मोटे हाथसे निकाला था और रेशमी सलूकेकी पिछली जेबसे एक बढ़िया बटुआ निकालकर, उसमेंसे नोट निकाले। उन नोटोंमें एक नोट दो रुबलका, एक ५५ कोपेकका, दो बीस कोपेक और दस कोपेकके सिक्के लेकर चोबदारको दे दिये थे और चोबदारने इसीके सामने चपरासीको बुलाकर यह रकम दे दी और कहा कि कटूशाको दे आओ।

"देखो, कृपा करके इसे जाकर जरूर दे देना।" कैरोलिन अलबर्टोम्ना किटिवाने कहा था।

चपरासीको उसकी यह बात बुरी मालूम हुई; क्योंकि इससे उसके प्रति अविश्वास प्रकट होता था। यही वजह थी कि उसने मस्लोवाके साथ रूखा व्यवहार किया था।

रकम मिल जानेपर मस्लोवाको खुशी हुई; क्योंकि पैसेसे ही उसे वह चीज मिल सकती थी जो वह इस समय चाहती थी। वह मनमें सोच रही थी कि "अगर कहीं मुझे एक सिगरेट मिल जाता और मैं उसे पी लेती।" उसके सारे विचार इस समय एक सिगरेटपर केन्द्रित हो गये थे। वह इसकी इतनी अधिक इच्छुक हो रही थी कि जब बरामदेके खुले दर्वाजेमेंसे उसकी खिड़कीके पास दूसरेके सिगरेटोंका धुआँ आता था तो वह उसे अपनी साँससे खींचती थी। लेकिन उसे बहुत देरतक प्रतीक्षा करनी पड़ी; क्योंकि पेशकार, जिसे कैदियोंको ले जानेका हुक्म देना चाहिये था, उसके बारेमें बिल्कुल भूल गया। वह उस लेखके बारेमें, जिसे सेंसरने रोक दिया था, वकीलोंसे बातचीत करने लगा था और एकसे उसने बहस भी छेड़ दी थी।

अन्तमें पाँच बजेके करीब उसे जानेकी आज्ञा दी गयी और पिछले

दर्वाजेसे गारदके आदमी वही निजनीके रहनेवाले चूआश, उसे बाहर ले गये। इसके बाद, जब ये लोग अदालतके हातेमें ही थे, कटूशाने गारदके इन आदमियोंको बीस कोपेक दिये और कहा कि मेरे लिए दो रोटियाँ और सिगरेट ला दो। चूआश बहुत हँसा। उसने कोपेक लेकर कहा—"बहुत अच्छा, मैं लाये देता हूँ।" वह गया और सचमुच रोटियाँ और सिगरेट ले आया और जो रेजगारी बची, ईमानदारीसे वापस कर दी। रास्तेमें उसे सिगरेट पीनेकी इजाजत नहीं मिली, इसलिए जेलके दर्वाजेतक अपनी सिगरेट पीनेकी इच्छाको तृप्त किये बिना ही मस्लोवाको टहलते टहलते आना पड़ा। जब वह जेलके फाटकपर पहुँची तब रेलसे आये हुए सौ कैदी दाखिल हो रहे थे। इन कैदियोंमें दाढ़ी-वाले भी थे, दाढ़ी-मूँछ मुड़ाये भी थे, बुड्ढे भी थे, जवान भी थे, रूसी भी थे और विदेशी भी। कुछ ऐसे थे जिनका सर घुटा हुआ था। इनके पैरोंमें बेड़ियाँ पड़ी हुई थीं, जिन्हें ये खनका रहे थे। जेलका अगला कमरा पसीनेकी बू, शोर और गर्दसे भरा हुआ था। पाससे गुजरते हुए सभी कैदी मस्लोवाको देखते थे। कुछ तो करीब आकर उसे धक्का देते हुए आगे बढ़ जाते थे।

एकने कहा—"देखो, यह पतुरिया बड़ी बढ़िया है।"

दूसरा बोला—"सलाम!" और उसकी तरफ आँख मारी।

उनमें एक कैदीका रंग गहरा था। वह बड़ी बड़ी मूछें रखाये हुए था। उसकी गुद्दी और चेहरेके बाकी बाल साफ थे। वह अपनी बेड़ियाँ खनखनाता हुआ मस्लोवाके करीब आया। बेड़ियोंको पैरोंमें दबाकर वह झपटकर कटूशासे लिपट गया।

"आओ, आओ, नखरे न करो।" उसने अपने दाँत निपोरते हुए जोरसे कहा। उसकी आँखें चमक उठीं। लेकिन मस्लोवाने उसे धक्का देकर हटा दिया।

"हरामजादा कहींका! तू क्या कर रहा है?" नायब इन्सपेक्टरने

पीछेसे आकर इस कैदीको जोरसे डाँटा। कैदी पीछे हट गया और नायब मस्लोवाकी तरफ झुका।

"तुम यहाँ क्यों खड़ी हो?" मस्लोवा यह कहनेवाली थी कि मैं अदालतसे लाकर यहाँ खड़ी कर दी गयी हूँ लेकिन वह इतनी थक गयी थी कि कुछ न बोली।

गारदके आदमियोंमेंसे एकने, आगे बढ़कर, नायबको सलाम किया और कहा—"हुजूर, मैं इसे अदालतसे लाया हूँ।"

"तो इसे अफसर-वार्डरके सुपुर्द कर दो। मैं इस किस्मका तमाशा नहीं चाहता।"

"बहुत अच्छा हुजूर।"

"सोकोलोव! इसे अंदर ले जाओ।"—नायब इन्सपेक्टरने चिल्लाकर कहा।

अफसर-वार्डर नजदीक आया। उसने मस्लोवाके कन्धेपर गुस्सेसे हाथ रखकर ढकेला और उसे पीछे पीछे आनेका इशारा किया, और स्त्रियोंकी बैरकमें ले जाकर पहुँचा दिया। यहाँ इसकी तलाशी हुई। उसके पास मुमानियत की हुई कोई चीज नहीं मिली (उसने सिगरेट रोटियोंमें छिपा लिया था)। कटूशा उसी कोठरीमें पहुँचा दी गयी जिससे सुबह निकलकर गयी थी।

अट्ठाईसवाँ अध्याय

जिस कमरेमें मस्लोवाको बन्द किया गया था वह २१ फुट लम्बा और १६ फुट चौड़ा था। इसमें दो खिड़कियाँ और एक टूटा-फूटा बड़ा चूल्हा था; दो तिहाई हिस्सेमें तख्ते बिछे हुए थे। इन तख्तोंके पटरे झुक और बरर गये थे। दर्वाजेके सामने एक गहरे रंगकी हजरत ईसाकी मूर्ति लटकी हुई थी जिसके सामने एक मोमबत्ती भी लगी थी। बाँयीं तरफ फर्श काले रंगसे रँग दिया गया था जिसपर एक बदबूदार टब रखा था। मुआइना खतम हो चुका था और औरतें रातभरके लिए बन्द कर दी गयी थीं।

इस कमरेमें पन्द्रह प्राणी थे, जिनमें तीन बच्चे भी थे। अभी बिलकुल अँधेरा नहीं हुआ था। औरतोंमें सिर्फ दो लेटीं थीं। इनमेंसे एक क्षय रोगसे पीड़ित थी जिसे चोरी करनेके अपराधमें जेल भेजा गया था। दूसरी सनकी थी जिसे पासपोर्ट न होनेके कारण गिरफ्तार किया गया था। यह अपना ज्यादा वक्त सोनेमें ही गुजारती थी। क्षयसे पीड़ित स्त्री सो नहीं रही थी। वह आँखें खोले और अपने चोगेको तहाकर सरके नीचे रखे पड़ी थी; और अपने गलेके उठते हुए बलगमको दबानेकी कोशिश कर रही थी जिसमें खाँसी न आवे।

बाकी औरतोंमेंसे कुछ खिड़कीसे हातेके कैदियोंको देख रही थीं। इनमेंसे अधिकतर, सिवाय भूरे रंगके मोटे कपड़ेकी कमीजके और कुछ नहीं पहने थीं। तीन बैठी हुई सी रही थीं। इन तीनोंमेंसे एक वह बुढ़िया थी जिसने सुबह मस्लोवाको बिदा किया था। इसका नाम कोराब्लेवा था। यह लंबी, हृष्टपुष्ट और कठोर आकृतिकी थी। इसके माथेपर बल थे, दोहरी गुल्लू थे, कनपटीपर सफेद हो रहे बालोंकी पाटी बाँधे हुए थी। इसके गालोंपर कुछ बाल उग आये थे। इसने अपने पतिको इसलिए कुल्हाड़ीसे मार डाला था कि वह इसकी लड़कीके साथ ताल्लुक किये हुए था। इसी अपराधमें इसे साइबेरियामें कड़ी कैदकी सजा मिली थी। इस कोठरीकी औरतोंकी यही मुखिया बनायी गयी थी और यह

तिकड़म करके इन औरतोंके हाथ शराब बेचा करती थी। इसीके पास एक दूसरी, नाटे कदकी औरत बैठी हुई थी, जो मोटे टाटका बोरा सी रही थी। यह रेलके एक गुमटीवाले चौकीदारकी स्त्री थी। इसे तीन महीनेकी सजा मिली थी; क्योंकि यह झण्डी लेकर बाहर नहीं निकली जिससे एक दुर्घटना हो गयी। इसकी नाक चपटी, आँखें छोटी और काली-काली थीं। इसका हृदय कोमल था पर यह बहुत बातून थी। तीसरी औरत, जो सी रही थी, गोरी और गुलाबी रंगकी एक बिल्कुल नौजवान सुन्दरी थी। इसकी आँखें बच्चोंकी तरह चमकदार थीं। इसने अपने लम्बे सुन्दर बालोंकी पाटी बाँध ली थी। इसका नाम थ्यूडूसिया था। इसने अपने पतिको जहर देनेकी कोशिश की थी इसीसे जेल भेजी गयी थी। इसने शादीके बाद ही फौरन यह काम किया था (इसकी शादी सोलह वर्षकी उम्रमें इसकी मर्जीके खिलाफ कर दी गयी थी) लेकिन आठ महीनेके दर्मियान, जिसमें यह जमानतपर छूटी हुई थी, इसने अपने पतिसे समझौता ही नहीं कर लिया था, बल्कि यह उसको प्यार भी करने लगी थी। जिस समय इसका मुकदमा पेश हुआ था, पति और पत्नी एक प्राण दो शरीर हो रहे थे। इसके पति, ससुर और खासकर उसकी सासने, जो उसे बहुत चाहने लगी थी, उसे मुकदमेसे बरी करानेकी बहुत कोशिश की, फिर भी उसे साइ-बेरियाके कालेपानी की सख्त सजा हो गयी थी। दयालुहृदय, हँसमुख प्रसन्न थ्यूडूसियाका तख्त मस्लोवाके तख्तके पास ही बिछा था। वह मस्लोवाको इतना चाहने लगी थी कि उसकी सेवा करना उसने अपना कर्तव्य बना रखा था। दो औरतें तख्तेपर खाली हाथ बैठी हुई थीं, जिनमें एककी उम्र चालीस वर्षकी रही होगी। उसका चेहरा पीला और दुबला था, ऐसा मालूम होता था कि यह किसी समय सुन्दरी रही होगी। यह अपने दुबले-पतले सफेद सीनेसे अपने बच्चेको दूध पिला रही थी। इसके गाँवसे (किसानोंके दृष्टिकोणसे) जिस समय जबर्दस्ती रँगरूट लिये जा रहे थे, और गाँवके लोगोंने पुलिस अफसरको रोक

लिया था तथा रँगरूटोंको छीन लिया था, इसने अपने भतीजेको, जो जबर्दस्ती भर्ती किया जा रहा था, सबसे पहले बढ़कर उस घोड़ेकी लगाम जिसपर उसे ले जा रहे थे, पकड़कर छुड़ा लिया। यही इसका अपराध था। दूसरी बुढ़िया औरत, जो खाली बैठी हुई थी, भलीमानस दिखाई देती थी। इसके बाल सफेद हो गये थे और कमर झुक गयी थी। यह चूल्हेके पीछेवाले तख्तेपर बैठी एक चार वर्षके लड़केके साथ खेल रही थी। यह लड़का इसके पास आता, वह इसे पकड़नेके लिए बढ़ती, लड़का भागता और खूब हँसता था। यह लड़का सिर्फ एक छोटी सी कमीज पहने था और इसके बाल कटे थे। जब वह लड़का इसके पाससे होकर भागता तो चिल्लाता—"देखो तुम हमें नहीं पकड़ सकीं।"

इस बुढ़िया और इसके लड़केपर यह जुर्म लगाया गया था कि ये आग लगाते हैं। यह अपनी कैदको बड़ी शान्तिके साथ काट रही थी। लेकिन उसे अपने लड़केकी फिक्र थी और खास करके अपने बुड्ढेकी, जिसके बारेमें उसे डर था कि अगर उसके पास कोई सेवा करनेके लिए न रहा तो उसे बड़ी तकलीफ होगी।

इन सात औरतोंके अलावा चार औरतें एक खुली खिड़कीकी लोहेकी सलाखोंको पकड़े खड़ी थीं। ये उन कैदियोंको इशारा कर रही थीं और उन्हें देखकर आवाजें दे रहीं थी जो मस्लोवाकी वापसीपर जेलके फाटक-पर मिले थे, और अब जेलके आँगनसे होकर जा रहे थे। इन औरतोंमें-से एक बहुत मोटी-ताजी थी। इसके बाल लाल रंगके थे। इसके पीले चेहरे और हाथपर दाग पड़ गये थे। खुले हुए बटनवाले कालरमेंसे इसकी मोटी गर्दन दिखाई देती थी। इसने ऊँची कड़ी आवाजमें कुछ अश्लील बात कही और जोरसे हँसने लगी। यह स्त्री चोरीके लिए सजा काट रही थी। इसीके पास एक बदसूरत, गहरे रंगकी, स्त्री खड़ी थी। इसका कद दस वर्षके बच्चेके बराबर था। इसकी कमर लंबी और पैर छोटे छोटे थे। चेहरा लाल था, आँखें एक दूसरीसे बहुत दूरीपर थीं और होंठ मोटे थे जो दाँतोंको ढक नहीं पाते थे। बाहर सहनमें जो कुछ हो रहा

था उसे देख यह रह-रहकर जोरसे ठठाकर हँसती थी। इसपर चोरी और आग लगानेके जुर्ममें मुकदमा चलनेवाला था। इसे लोग होरोशावका कहते थे जिसका अर्थ रूसकी भाषामें "बनाव-सिंगार पसन्द करनेवाली" होता है। इसके पीछे एक बहुत गंदी दुबली-पतली कम्बख्त सूरतकी गर्भिणी स्त्री मटमैला सलूका पहने खड़ी थी। इसके ऊपर चोरीका माल छिपानेका जुर्म था। यह चुपचाप खड़ी थी और जो कुछ नीचे हो रहा था, उसे देखकर प्रसन्नताके साथ मुस्करा रही थी। इन स्त्रियोंके साथ साथ ठिंगने कदकी, मोटी, गठीले बदनकी एक किसानकी स्त्री खड़ी थी जिसकी आँखें उभरी हुई और चेहरा सहृदयतासे पूर्ण था। यह एक सात वर्षकी लड़कीकी और उस लड़केकी माँ थी जो बुढ़ियाके साथ खेल रहा था। ये दोनों बच्चे इसीके साथ जेलमें थे; क्योंकि बाहर इनकी देख-भाल करनेवाला कोई नहीं था। यह गैरकानूनी शराब बेचनेके अपराधमें जेल काट रही थी। यह खिड़कीसे कुछ दूर खड़ी हुई मोजा बिन रही थी, और यद्यपि दूसरे कैदियोंकी बात-चीत सुन रही थी, फिर भी उसे पसंद नहीं करती थी। वह त्योरियाँ चढ़ाती और आँखें बन्द कर लेती थी लेकिन उसकी सात वर्षकी लड़की छोटा सा सलूका पहने, मुलायम बाल खोले, अपनी नीली आँखें गड़ाये, लाल बालोंवाली स्त्रीका लहँगा पकड़े खड़ी थी और ध्यानसे भद्दे मजाकके उन शब्दोंको सुन रही थी जो कैदी और इन औरतोंके दर्मियान चल रहे थे। वह लड़की इन शब्दोंको चुपचाप दुहराती थी मानो याद करना चाहती हो। बारहवीं कैदी पादरीकी लड़की थी जो इन सब बातोंपर बिलकुल ध्यान नहीं दे रही थी। यह बहुत लंबी और शानदार थी। इसने अपने बच्चेको कूएँमें डुबा दिया था। यह एक मैला सलूका पहने नंगे पैर इधर-उधर फिर रही थी। इसके मोटे छोटे बाल बिखरे हुए थे। यह किसीकी तरफ नहीं देखती थी। कमरेकी एक दीवारसे दूसरी दीवारतक टहलती और जब दीवारके पास पहुँचती तो एकदम घूम जाती थी।

उनतीसवाँ अध्याय

जब दर्वाजा खटका और मस्लोवाको इस कोठरीमें दाखिल करनेके लिए दर्वाजा खुला, सबकी आँखें इसकी ओर घूम गयीं। पादरीकी लड़की भी थोड़ी देरके लिए खड़ी हो गयी और भौंहें ऊँची कर मस्लोवा-को देखने लगी। उसने एक शब्द भी नहीं कहा और फुरतीके साथ अपना टहलना फिर शुरू कर दिया।

कोराब्लेवाने अपनी सूई बोरेमें घुसा दी। वह अपनी ऐनकमेंसे मस्लोवाकी तरफ प्रश्नात्मक दृष्टिसे देखने लगी।

"हे भगवान्! तू फिर आ गयी! मैं समझती थी कि तुझे छोड़ देंगे, तो तुझे सजा मिल ही गयी!" उसने अपनी मोटी आवाजमें, जो मर्दानी थी, कहा। उसने अपनी ऐनक उतार ली और सामान बटोरकर तख्तेपर रख लिया।

"मैं और चची यहाँपर सोच रही थीं कि तुम्हें फौरन छोड़ देंगे। ऐसा भी कभी कभी हो जाता है। कभी किसीको खजाना मिल जाता है। यह तो भाग्यकी बात है।" गुमटीवाले चौकीदारकी स्त्रीने कहा— "और देखो, क्यासे क्या हो गया! हमने जो अंदाजा लगाया था वह गलत निकल गया। बेटी, चिंता न करो। भगवान्‌की यही इच्छा थी।" उसने मीठे स्वरमें कहा।

"क्या तुम्हें सजा हो गयी?" थ्यूड्सियाने सहानुभूति प्रकट करते हुए और अपने हल्के नीले रंगके शिशु सदृश नेत्रोंसे देखते हुए कहा। उसका चमकता हुआ जवानीका चेहरा बदल गया, मानो वह रो देगी।

मस्लोवाने जवाब नहीं दिया। वह अपने तख्तेपर जाकर, जो किनारेसे दूसरे नम्बरपर था, कोराब्लेवाके पास बैठ गयी।

"तुम्हें कुछ खानेको मिला था?" थ्यूड्सियाने उठकर और मस्लोवाके पास आकर पूछा।

मस्लोवाने कुछ जवाब नहीं दिया। उसने रोटियोंको तख्तपर रख दिया, और गर्दसे भरे हुए घूँघरवाले बालोंपर बँधा काला रूमाल सरपरसे खोला। बुड्ढी औरत, जो लड़केके साथ खेल रही थी, मस्लोवाके सामने

आकर खड़ी हो गयी। उसने आर्द्र हृदयसे सर हिलाते हुए "च् च्" कहा। लड़का भी उसीके पास आ गया और अपना मुँह खोलकर उन रोटियोंकी तरफ आँखें फाड़-फाड़ कर देखने लगा जिन्हें मस्लोवा लायी थी। दिन भरकी सारी बातोंके बाद मस्लोवाने जब इस सहानुभूतिपूर्ण चेहरेको देखा तो उसके होंठ काँपने लगे। उसे रुलाई आने लगी, लेकिन वह अपनी रुलाई उस समयतक रोके रही जबतक यह बुढ़िया और लड़का उसके पास नहीं पहुँचे थे। लेकिन जब मस्लोवाने इस वृद्धाके मुँहसे "च् च्" शब्द सुना और लड़केकी गम्भीर आँखोंको रोटीसे हटकर अपने चेहरेपर आते देखा, तब वह अपनेको रोक न सकी। उसका चेहरा काँपा और वह सिसकने लगी।

"मैं कहती थी कि अच्छा वकील करना।" कोराब्लेवाने कहा— कितनी सजा मिली? देशनिकाला!"

मस्लोवा जवाब न दे सकी। उसने रोटियोंकी तहमें छिपा हुआ सिगरेटका बक्स निकाला, जिसपर एक गुलाबी चेहरेवाली स्त्रीकी तस्वीर बनी थी, जिसके बाल खूब कढ़े हुए और सलूकेका अगला हिस्सा खुला था। यह बक्स इसने कोराब्लेवाको दे दिया। कोराब्लेवाने बक्सको देखा और असन्तोषसे सर हिलाया, जिसका अर्थ यह था कि मैं नहीं चाहती थी कि तू अपना पैसा ऐसे रद्दी काममें खर्च करे। फिर भी उसने एक सिगरेट निकाला, चिरागसे जलाकर एक कश खींचा और मस्लोवाके हाथमें जबर्दस्ती दे दिया। मस्लोवा अभीतक रो रही थी। इसने सिगरेट पीना शुरू किया। उसने कहा—"साइबेरियामें कड़ी कैदकी सजा मुझे दी गयी है" अपने मुँहसे सिगरेटका धुँआँ बाहर निकालते हुए वह सिसकने लगी।

"इन कम्बख्त हत्यारोंको भगवान्‌का भी डर नहीं है।" कोराब्लेवाने कहा—"देखो न बेचारी लड़कीको व्यर्थ सजा दे डाली। इसी क्षण उन औरतोंकी जोरदार भद्दी हँसी सुनाई दी जो अभीतक खिड़की-पर खड़ी हुई थीं। छोटी लड़की भी हँसी और उसकी बचपनकी खिल-

खिलाहट इन औरतोंकी मोटी चीखवाली हँसीमें मिलकर गायब हो गयी। बाहरके किसी कैदीने कुछ ऐसा काम किया था जिसे देखकर ये खिलखिला उठी थीं।

"देखो, वह सर घुटा बदमाश क्या कर रहा है?" लाल बालोंवाली स्त्रीने, जिसका मोटा शरीर हँसीके मारे हिल रहा था, कहा। और उसने झरोखेसे झाँकते हुए कुछ अर्थहीन अश्लील शब्द चिल्लाकर कहे।

"ओफ्फो! यह मोटी औरत कितनी चिल्ला रही है। किस बातपर हँस रही है?" कोराब्लेवाने कहा और फिर मस्लोवाकी तरफ मुड़कर पूछा कि कितने सालकी सजा हुई।

"चार वर्षकी।" मस्लोवाने कहा—उसके गालोंपर आँसुओंकी धारा बहने लगी। आँसूकी एक बूँद सिगरेटपर भी गिरी जिसे उसने गुस्सेसे फेंक दिया और दूसरा निकाला।

यद्यपि गुमटीवालेकी स्त्री सिगरेट नहीं पीती थी, फिर भी उसने मस्लोवाके फेंके हुए सिगरेटको उठा लिया। वह उसे सीधा करने लगी। साथ ही उसकी बकवाद भी बराबर जारी थी।

"तो यह बात हुई, बिटिया! यह सच बात है" उसने कहा—सचाईको तो कोई पूछता ही नहीं और लोगोंके जीमें जो आता है वही करते हैं। हम लोग यहाँ यही अनुमान करते थे कि तुम छूट जाओगी। कोराब्लेवा कहती थी कि तुम छूट जाओगी। मैं कहती थी कि नहीं। मेरा मन कहता था कि जरूर सजा देंगे और वही हुआ।" ऐसा मालूम होता था मानो उसे अपनी आवाज सुननेमें आनन्द आता था।

जो औरतें खिड़कीके पास खड़ी थीं वे भी मस्लोवाके पास आ गयीं; क्योंकि जो कैदी उनका मनोरंजन कर रहे थे, चले गये थे। पहले वह औरत आयी जो गैरकानूनी शराब बेचनेके लिए जेल भेजी गयी थी। उसके साथ उसकी छोटी लड़की भी आयी। "कितना कठोर दण्ड दिया है।" उसने कहा और मस्लोवाके पास बैठकर जल्दी जल्दी बुनने लगी।

"कठोर दण्ड क्यों? सिर्फ इसलिए कि पैसा नहीं था। यही वजह

थी। अगर पैसा होता और कोई अच्छा वकील किया गया होता जो अदालतके सब दाँव-पेंच जानता होता तो वह छुड़ा लेता और जरूर छुड़ा लेता।" कोराब्लेवाने कहा—"एक वकील है। उसका क्या नाम है मैं भूलती हूँ। वही जिसके बड़े बड़े बाल और लम्बी नाक है। वह तो तुम्हें फाँसीके तख्तेसे उतार ला सकता है। अफसोस! हम लोग उसे न कर सके।"

"उसको? वह तो एक हजार रुबलसे कममें तुम्हारी ओर थूकता तक नहीं।" होरोशावकाने उनके नजदीक बैठते और दाँत निकालते हुए कहा।

"मालूम होता है कि तुम भी बड़ी अभागिनी हो।" बुढ़ियाने, जिसे आग लगानेके जुर्ममें सजा हुई थी, बात काटते हुए कहा—"जरा सोचो तो कि लड़केकी स्त्रीको फुसलाया और उसे फिर जेलमें सड़नेके लिए डाल दिया और मुझे भी बुढ़ापेमें—।" इसने अपनी राम-कहानी, जो पहले सैकड़ों मर्तबा कह चुकी थी, कहना शुरू किया—"चाहे भिखारीकी झोली हो चाहे कैदखाना, इनको कोई बुलाता नहीं, ये खुद ही आते हैं।"

"अजी मुझे मालूम होता है कि ये सब एक ही तरहके हैं।" शराब बेचनेवालीने कहा और छोटी लड़कीके सरकी तरफ देखकर अपने बुननेका सामान एक तरफ रख दिया और बच्चेको अपनी गोदमें खींचकर वह उसके सरसे जूँ निकालने लगी। फिर कहा, मुझसे पूछा गया "तू शराब क्यों बेचती है?" पर उन्हें यह नहीं सूझा कि न बेचूँ तो बच्चोंको क्या खिलाऊँ?

शराबका नाम सुनकर मस्लोवाको शराब पीनेकी इच्छा हुई।

"जरा-सी शराब!" उसने कोराब्लेवासे कहा, आस्तीनसे अपने आँसू पोंछे और उसकी सिसक कम हुई।

"बहुत अच्छा, दाम निकालो।" कोराब्लेवाने कहा।

तीसवाँ अध्याय

मस्लोवाने रोटियोंकी तहमेंसे जिसमें उसने छिपा रखे थे, दाम निकाले और एक नोट कोराब्लेवाके हाथमें रख दिया। कोराब्लेवा पढ़ नहीं सकती थी, लेकिन होरोशावकाकी बातपर भरोसा करके, जो बहुत समझदार मानी जाती थी तथा उसके विश्वास दिलानेपर कि नोट दो रूबल पचास कोपेकका है, उसने मस्लोवाके दिये हुए नोटको अपनी जेबमें रखा। फिर वह रोशनदानपर चढ़ गयी, जहाँ उसने शराबकी एक छोटी बोतल छिपा रखी थी। यह देखकर सब औरतें, जिनके तख्ते दूर-दूर थे, अपने तख्तेपर चली गयीं। मस्लोवाने अपने चोगे और रूमालकी गर्द झाड़ी, अपने तख्तेपर चढ़ गयी और रोटी खाना शुरू कर दिया।

"मैंने तुम्हारे लिए चाय रख छोड़ी है" थ्यूड्रसियाने कहा और आलमारीसे एक टीनकी चायदानी, जो चिथड़ेमें लपेटी हुई थी, और एक तामचीनीका प्याला उतारा। "लेकिन मुझे डर है कि चाय ठंढी हो गयी है।" उसने कहा। चाय सचमुच ठंढी हो गयी थी और उसमें चायके बजाय टीनका स्वाद आ गया था, फिर भी मस्लोवाने प्यालेमें चाय उँड़ेली और रोटीके साथ पीना शुरू किया। "फिनिशका! यहाँ आओ।" और रोटीका एक टुकड़ा तोड़कर लड़केको दिया जो वहीं खड़ा-खड़ा उसका मुँह देख रहा था।

इतनेमें कोराब्लेवा शराब ले आयी। उसने बोतल और प्याला मस्लोवाको दे दिया। मस्लोवाने थोड़ी-थोड़ी शराब कोराब्लेवा और होरोशावकाको दी। ये कैदी इस कमरेमें उच्च वर्गमें समझे जाते थे; क्योंकि इनके पास कुछ रुपया था और ये आपसमें बाँट-चोट कर खाया-पिया करते थे। थोड़ी ही देरमें मस्लोवामें फुर्ती आ गयी और उसने

बहुत सजग रूपसे अदालतमें जो कुछ हुआ था वह बयान किया। उसने सरकारी वकीलकी नकल बनायी और कहा कि "मुझे सबसे अजीब बात यह मालूम हुई कि जितने आदमी वहाँ थे सब मेरे पीछे पीछे घूमते थे। अदालतमें लोग मुझे देखते थे," उसने कहा—"और मैं जिस कमरेमें बैठी थी वहाँपर चक्कर लगाते थे।"

"गारदका एक आदमी कहता था कि 'ये लोग तुम्हींको देखने आये हैं।' कोई आता था तो पूछता था कि कागज कहाँ है या अमुक चीज कहाँ है। लेकिन मैं जानती थी कि वह कागज नहीं ढूँढ़ रहा है, वह तो अपनी आँखें सेंकने आया है।" मस्लोवाने कहा और अपना सर हिलाया—"ये लोग सब बाकायदा कलाकार हैं।"

"हाँ, बात यही है।" गुमटीवालेकी स्त्रीने मधुर स्वरसे कहना शुरू किया—"ये सब वैसे ही चिपकते हैं जैसे शक्करपर मक्खी। दुनियाकी और बातें छोड़ दें, लेकिन इस किस्मके लोग यह नहीं छोड़ सकते; भले ये खाना छोड़ दें।"

"और यहाँ पहुँचनेपर भी" मस्लोवाने बात काटते हुए कहा—"वही बात हुई। ज्यों ही मैं फाटकपर आयी, रेलसे एक जत्था आया और इन लोगोंने मुझे इतना परेशान किया कि मैं घबरा गयी। मैं सोचने लगी कि क्या करूँ, कैसे जान बचाऊँ लेकिन नायबको मैं धन्य-वाद दूँगी कि उसने सबको भगा दिया। उनमेंसे एक तो ऐसा निकला कि मैं उससे मुश्किलसे छूटी।"

"वह कौन था? कैसी शकल थी?" होरोशावकाने पूछा।

"साँवले रंगका, मूँछोंवाला।"

"वही होगा।"

"वही कौन?"

"वही शेगलफ अभी तो इधरसे गया है।"

"यह शेगलफ कौन है?"

"शेगलफको नहीं जानती? साइबेरियासे यह दो बार भागा। अब

इसे फिर पकड़ा है लेकिन वह फिर भाग जायगा। वार्डर लोगतक इससे डरते हैं।" होरोशावकाने उससे कहा, जो मर्द कैदियोंसे चिट्ठी-पत्री करती थी और जेलखानेका सब हाल जानती थी—"वह फिर भाग जायेगा, इसमें जरा भी सन्देह नहीं।"

"मान लिया कि भाग जायेगा मगर हमको तो साथ नहीं ले जायेगा।" कोराब्लेवाने मस्लोवाको सम्बोधन करते हुए कहा—"अच्छा, यह बताओ कि अपील करनेके बारेमें वकीलोंकी क्या राय है। अब अपील करनेका यही मौका है।"

मस्लोवाने कहा—"इस बारेमें मुझे कुछ भी नहीं मालूम।"

इसी समय लाल बालोंवाली स्त्री अपने दोनों धब्बेदार हाथोंसे बालोंको खुजलाती हुई इस उच्च वर्गके समुदायमें आकर खड़ी हो गयी।

"देखो कैटेरीना, मैं इसके बारेमें तुम्हें सब कुछ बता दूँगी। सबसे पहले यह लिखना पड़ेगा कि तुम इस सजासे असन्तुष्ट हो और फिर प्रोक्यूररको नोटिस देनी होगी।"

"तुम यहाँ क्यों आयीं?" कोराब्लेवाने गुस्सेसे कहा—"शराबकी खुशबू सूँघने आयी होगी। तुम्हारी बकबककी यहाँ जरूरत नहीं। तुम्हारी सलाहके बिना ही हम जानते हैं कि हमें क्या करना है।"

"तुमसे तो कोई बात नहीं कर रहा है। तुम खामख्वाहके लिए अपना थूथन हर बातमें क्यों घुसेड़ती हो?"

"शराबके लालचमें आयी हो, शराबके लालचमें। मैं जानती हूँ, तुम यहाँ घुस आयी हो।"

"नहीं नहीं, जरा-सी शराब इसको भी दे दे।" मस्लोवाने कहा। वह तो हमेशा अपनी चीज दूसरेके साथ मिल-बाँटकर खाने-पीनेके लिए तैयार रहती थी।

"अच्छा, मैं थोड़ीसी दिये देती हूँ।"

"अच्छा, अगर यही बात है तो फिर लाओ।" लाल बालोंवाली स्त्रीने कोराब्लेवाकी तरफ बढ़ते हुए कहा—"शायद तुम समझती हो कि मैं तुमसे डर जाऊँगी।

"चुड़ैल कहींकी।"

"तू ही चुड़ैल होगी।"

"कुतिया!"

"मैं, कुतिया, चुड़ैल, हत्यारिनी।" लाल बालोंवाली स्त्रीने चिल्लाकर कहा।

"मैं कहती हूँ, तू यहाँसे चली जा।" कोराब्लेवाने कठोरतासे कहा। लेकिन लाल बालोंवाली स्त्री और नजदीक आ गयी। कोराब्लेवाने उसके सीनेमें घूँसा मारा। मालूम होता था कि लाल बालोंवाली स्त्री इसी बातका इन्तजार कर रही थी। उसने फुर्तीसे एक हाथसे तो कोराब्लेवाके बाल पकड़े और दूसरे हाथसे तमाचा मारना शुरू किया। कोरोब्लेवाने उसका यह हाथ पकड़ लिया। मस्लोवा और होरोशावकाने लाल बालोंवाली स्त्रीको पकड़कर अलग कर देना चाहा। इसने बुड्ढी स्त्रीके बाल एक क्षणके लिए छोड़ दिये, लेकिन फौरन ही पकड़ लिये और उसका सर नीचे दबा दिया। कोराब्लेवाका सर एक तरफ झुक गया, लेकिन एक हाथसे वह बराबर घूँसा मारती रही और कोशिश करती रही कि अगर लाल बालोंवाली स्त्रीका हाथ मिल जाय तो दाँतोंसे काट ले। बाकी औरतें चारों तरफ खड़ी हो गयीं और शोर मचाकर इन लड़नेवालियोंको अलग करनेकी कोशिश करने लगीं। क्षय रोगवाली स्त्री भी आ गयी। वह खड़ी खड़ी खाँसती और लड़ाई देखती रही। बच्चे भी चिल्लाने लगे और इकट्ठा हो गये। कोलाहल सुनकर स्त्री-वार्डर और जेलर भी आ पहुँचे। दोनों लड़नेवाली स्त्रियाँ छुड़ाकर अलग कर दी गयीं। कोराब्लेवाने अपने नुचे हुए बाल हाथमें उठाकर और लाल बालोंवाली स्त्रीने अपनी कमीजके फटे हिस्सोंको अपने पीले सीनेके ऊपर मिलाते हुए, शिकायत करना शुरू किया।

"मैं जानती हूँ," स्त्री-वार्डरने कहा—"यह सब शराबका कसूर है।" "ठहरो, कल मैं इन्सपेक्टरसे शिकायत करूँगी और वह तुम लोगोंकी खबर लेगा। क्या मुझे महक नहीं आ रही है? देखो (वोडका)

शराब हटा दो, नहीं तो तुम्हारी दुर्गति हो जायगी। हमारे पास तुम लोगोंका झगड़ा निपटानेको समय नहीं है। जाओ, अपनी अपनी जगह पर चुपचाप बैठो।"

लेकिन तुरन्त ही शान्ति स्थापित नहीं हुई। बहुत देरतक ये औरतें वाद-विवाद करती रहीं; और यह समझाती रहीं कि कसूर किसका है। थोड़ी देरके बाद वार्डर और जेलर कोठरीसे चले गये। औरतें शान्त हो गयीं और सोने चली गयीं।

"दोनों जेलपक्षी आपसमें मिल गये।" लालबालोंवाली स्त्रीने कमरेके दूसरे सिरेसे तख्तपर पड़े पड़े भारी स्वरमें चिल्लाकर कहा। उसके हर एक शब्दके साथ साथ गन्दी गाली थी।

"मैं कहती हूँ," कोराब्लेवाने जवाब दिया—"फिर मैं तुम्हारी दुर्गति कर दूँगी।" और उसके भी हर एक शब्दके साथ गाली थी। इसके बाद दोनों चुप हो गयीं।

"अगर मुझे पकड़ न लिया होता तो मैंने तुम्हारी मनहूस आँखें निकाल ली होतीं" लाल बालोंवाली स्त्रीने फिर कहना शुरू किया। और कोराब्लेवाने भी इसी किस्मका जवाब दिया। वे दोनों थोड़ी देरतक तो चुप रहीं और फिर गाली-गलौज होने लगा। लेकिन चुप रहनेकी अवधि धीरे धीरे बढ़ती गयी जैसे बिजली और बादलका कड़ाका जब खतम होनेको होता है तो शान्तिकी अवधि बढ़ती जाती है। अन्तमें बिलकुल शान्ति हो गयी।

बाकी स्त्रियाँ अपने अपने तख्तोंपर पड़ी थीं। कुछ स्त्रियोंने तो खर्राटे लेना शुरू किया लेकिन बुड्ढी स्त्री जो कि बहुत देरतक प्रार्थना करती थी, ईसाकी मूर्तिके सामने प्रार्थना करती रही और पादरीकी लड़कीने, जो वार्डरके चले जानेके बाद उठ बैठी थी, कमरेमें टहलना शुरू किया। मस्लोवा बराबर यह सोचती रही कि अब मैं कैदी हो गयी और मुझे सख्त मेहनतकी सजा मिली है और मुझे इस बातकी याद भी दो दफा दिला दी गयी है। एक दफा तो बोचकोवाने और दूसरी दफा लाल

बालोंवाली स्त्रीने। इस विचारने उसके हृदयमें अशान्ति पैदा कर दी। कोरोब्लेवाने, जो उसके पास तख्तपर लेटी थी, करवट ली।

"जरा सोचो तो!" मस्लोवाने धीरेसे कहा—"क्या हो गया। इसकी तो कल्पना भी नहीं हो सकती थी। दूसरे लोग करते हैं और साफ बच जाते हैं।"

"बेटी, फिक्र न करो। लोग साइबेरियामें रहते ही हैं और तुम्हारा तो वहाँ कोई न कोई ठिकाना जरूर ही लग जायगा।" कोराब्लेवाने उसे सान्त्वना देते हुए कहा।

"मैं जानती हूँ कि वहाँ मेरा ठिकाना लग जायगा लेकिन फिर भी बड़ी मुश्किलकी बात है। मुझे आरामकी जिन्दगी बितानेका अभ्यास है।"

"हाँ, लेकिन ईश्वरकी मर्जीके खिलाफ कोई क्या कर सकता है" कोराब्लेवाने लम्बी साँस लेकर कहा—"हरि इच्छा बलवान्।"

"मैं यह समझती हूँ दादी, लेकिन फिर भी बड़ी मुश्किल है।"

थोड़ी देर दोनों चुप रहीं।

"तुम्हें कुछ सुनाई देता है?" कोरोब्लेवाने चुपचाप मस्लोवाका ध्यान एक विचित्र आवाजकी ओर, जो कमरेके दूसरे कोनेसे आ रही थी, आकर्षित करते हुए कहा।

यह आवाज लाल बालोंवाली स्त्रीकी दबी हुई सिसकियोंकी थी। वह रो रही थी, क्योंकि उसने गालियाँ खायी थीं और उसे शराब भी नहीं मिली जिसकी उसको बहुत जरूरत थी। उसे यह भी याद आ गया कि सारी जिन्दगी मुझे गालियाँ मिलीं, मैं सतायी गयी और मारी-पीटी गयी। अपने दिलको सान्त्वना देनेके लिए उसने अपने पहले प्रेमी फेड्का मोलोडेंकफको याद किया जो एक कारखानेमें मजदूरी करता था। फिर उसे यह भी याद आया कि यह प्रेम कैसे समाप्त हुआ था। इस मोलोडेंकफने एक दिन नशेमें, हँसी हँसीमें इसके शरीरके मुलायम हिस्सोंपर तेजाब डाल दिया था और जब यह दर्दसे तड़पने लगी तब वह और उसके साथी ठट्ठा मारकर हँसने लगे

थे। इस बातको याद करके उसे अपने ऊपर दया आयी, और यह सोचकर कि कोई सुन नहीं रहा है उसने बच्चोंकी तरह रोना शुरू किया। उसकी नाक फनकने लगी, और उसके मुँहमें आँसू जाने लगे।

"मुझे तो इसपर बहुत तरस आता है।" मस्लोवाने कहा।

'मुझे भी तरस आता है!' कोरोब्लेवाने कहा—"लेकिन इसे इस तरह आकर तंग भी नहीं करना चाहिये था।"

इकतीसवाँ अध्याय

दूसरे दिन सुबह जब नेख्लीडू उठा, उसे ऐसा मालूम हुआ कि कोई असाधारण बात हो गयी है। लेकिन इस असाधारण बातको याद करनेके पहले उसे यह आभास हुआ कि जो बात हुई है, महत्त्वपूर्ण है और अच्छी है।

"कटूशा—मुकदमा !"

हाँ ! मुझे झूठ बोलना बन्द कर देना चाहिये और सच्ची बात बता देनी चाहिये।

विलक्षण संयोगसे उसी दिन सुबह नेख्लीडूको मेरी वेसलीविनाका पत्र मिला जिसकी वह बहुत दिनोंसे आशा कर रहा था। इस पत्रकी उसे बहुत जरूरत थी। मेरीने इस पत्रमें इसे पूरी पूरी आजादी दे दी थी और इसकी होनेवाली शादीके लिए शुभकामना भेजी थी।

"विवाह !" उसने व्यंग्यसे कहा—"इस समय मैं इससे कितनी दूर हूँ।"

नेख्लीडूको याद आया कि एक दिन पहले मैंने क्या इरादे किये थे। उसने संकल्प किया था कि दिल खोलकर सारी बातें उसके पतिसे कह दूँगा। और जिस प्रकार उसे संतोष मिलेगा, उसे करनेके लिए तैयार रहूँगा लेकिन आज वे सब बातें उतनी आसान नहीं दिखाई देती थीं जितनी कल। इसके अलावा उसे यह भी खयाल था कि जिस बात-को कोई न जानता हो उसे बताकर उसे व्यर्थमें दुखी क्यों किया जाय। हाँ, अगर वह खुद आवे और मुझसे पूछे तो मैं सब बता दूँगा लेकिन खुद इसी इरादेसे जाना और कहना—नहीं, यह बेकार होगा।

मिसीसे भी सब बातें सच सच कह देना आज उतना आसान नहीं मालूम होता था। दिल दुखाये बिना उससे कुछ कहना नामुमकिन था।

लेकिन कटूशाके सम्बन्धमें तो सब बातें कहनी ही पड़ेंगी। मैं जेलखाने जाऊँगा और उससे सब बातें कह दूँगा, उससे क्षमा माँगूँगा और आवश्यक हुआ तो मैं उसके साथ विवाह भी कर लूँगा।

जब ऐग्राफिना पेट्रोभ्ना आयी तो नेखलीडूने उससे दृढ़तासे कहा—"मुझे न तो इस मकानकी जरूरत है और न तुम्हारी सेवाकी। ऐग्राफिना पेट्रोभ्ना! मैं तुम्हारा बहुत ऋणी हूँ। तुमने मेरी बड़ी सेवा की। लेकिन मुझे न तो इतने बड़े मकानकी जरूरत है और न इतने नौकरोंकी। अगर तुम मेरी सहायता करना चाहती हो तो कृपा करके सब चीजोंको वैसे ही ठिकानेसे रख दो जैसे हमारी माताके जमानेमें हुआ करता था और जब नटाशा आवेगी तो हर एक चीज ढङ्गसे रख देगी।" नटाशा नेखलीडूकी बहन थी।

ऐग्राफिना पेट्रोभ्नाने सर हिलाया। "सब सामान रख दूँ? क्या इनकी फिर जरूरत न पड़ेगी?" उसने कहा।

"नहीं, जरूरत नहीं पड़ेगी। ऐग्राफिना पेट्रोभ्ना! मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, इनकी फिर जरूरत नहीं पड़ेगी।" नेखलीडूने ऐग्राफिनाके हिलते हुए सरके उत्तरमें कहा। "और कोर्नीसे भी कह देना कि मैं उसे दो महीनेकी तनख्वाह दे दूँगा लेकिन उसकी सेवाकी अब जरूरत नहीं।"

"बड़े अफसोसकी बात है डिमिट्री आइवनिच कि आप इस तरह सोच रहे हैं।" ऐग्राफिनाने कहा। "मैंने मान लिया कि आप विदेश चले जायेंगे फिर भी रहनेके लिए एक मकानकी जरूरत तो पड़ेगी ही।"

"तुम गलतीपर हो ऐग्राफिना पेट्रोभ्ना! मैं विदेश नहीं जा रहा हूँ। अगर मैं बाहर गया भी तो बिलकुल दूसरी तरफ।" यह कहते हुए नेखलीडूका चेहरा लज्जित हो उठा। उसने सोचा, मुझे इसे बता देना चाहिये, छिपानेकी कोई जरूरत नहीं। हरएक आदमीसे कह देना चाहिये।

"कल मेरे ऊपर एक महत्त्वपूर्ण और आश्चर्यजनक घटना हो गयी। तुम्हें याद है कि मेरी फूफी मेरी आइवनोभ्नाके यहाँ कटूशा रहा करती थी।"

"हाँ ! अच्छी तरह याद है। उसे तो मैंने सीना-पीरोना सिखाया था।"

"कल इसी कटूशापर अदालतमें मुकदमा था और मै जूरियोंमें था।"

"हे भगवान् ! कितने अफसोसकी बात है। कटूशाके ऊपर किस बातका मुकदमा चल रहा था ?"

"कत्लका। और यह सब मेरी करतूत थी।"

"यह कैसे ! आपकी करतूत कैसे हो सकती है ?" ऐग्राफिना पेट्रोम्नाने कहा और उसकी बुड्ढी आँखोंमें एक चमक सी आ गयी।

ऐग्राफिना कटूशाका सब मामला जानती थी।

"मैं ही इन बातोंका कारण हुआ और इसी वजहसे मेरी तमाम योजनाएँ बदल गयीं।"

"इससे आपका क्या सरोकार ?" ऐग्राफिना पेट्रोम्नाने मुस्कराहट दबाते हुए कहा।

"मेरा सरोकार यह है कि मैंने ही तो उसे इस ढर्रेपर लगाया और अब मेरा यह कर्तव्य है कि उसकी जो कुछ सहायता कर सकूँ, करूँ।"

"यह तो आपकी मर्जी है लेकिन इसमें आपका कोई विशेष दोष नहीं। यह होता ही रहता है और सभी ऐसा करते हैं। अगर आदमी बुद्धिमान् है तो सब बातें सुभीतेसे तै हो जाती हैं और लोग भूल जाते हैं।" ऐग्राफिनाने गम्भीरता और कठोरतासे कहा—"आप अपने ऊपर सारा दोष क्यों लेते हैं ? इसकी कोई जरूरत नहीं। मैंने सुना था कि कटूशा बुरे रास्तेपर लग गयी। तो यह किसका कसूर हो सकता है ?"

"मेरा और इसीलिए मैं इसे ठीक करना चाहता हूँ।"

"ठीक करना मुश्किल है।"

"यह तो मेरा काम है। लेकिन अगर तुम्हें अपनी चिन्ता है तो मैं तुम्हें बताता हूँ कि अपनी माताकी अन्तिम अभिलाषाके अनुसार—"

"मुझे अपनी चिन्ता बिल्कुल नहीं है। मेरे साथ मेरी प्यारी स्वर्गीय

स्वामिनीने इतनी उदारताका व्यवहार किया है कि मुझे अब किसी चीजकी जरूरत नहीं है? लाइसेंका (उसकी विवाहिता भतीजी) ने मुझे बुलाया है और जब यहाँ मेरी जरूरत न रहेगी, मैं वहीं चली जाऊँगी। मुझे चिन्ता इस बातकी है कि आपके दिलमें यह जरा-सी बात इतनी लग गयी। यह सभीके साथ होता है।"

"लेकिन मैं ऐसा नहीं समझता और इसलिए मेरी यह प्रार्थना है कि तुम यह सब सामान अलग अलग कर दो। मैं मकान किरायेपर उठा दूँ। मुझसे नाराज न होना। तुमने मेरी जो सेवाएँ की हैं उसके लिए मैं तुम्हारा ऋणी हूँ।"

आश्चर्यकी बात यह है कि जिस क्षणसे नेख्लीड्वने यह स्वीकर कर लिया कि बुराई और घृणा करने योग्य चीज उसीके हृदयमें पायी जाती है, दूसरोंके प्रति उसकी घृणा जाती रही। इसके विपरीत उसके दिलमें एग्राफिना पेट्रोभ्ना और कोर्नीके लिए सहानुभूतिपूर्ण आदर भी पैदा हो गया।

नेख्लीड्व थोड़ी देरके बाद उसी रास्तेसे और उसी गाड़ीपर अदालत-के लिए रवाना हो गया जिसपर कल गया था। उसे यह अनुभव करके आश्चर्य हुआ कि "मैं वही व्यक्ति नहीं हूँ जो कल था। मिसीके साथ विवाह, जो अभी कल ही इतना संभव मालूम होता था, आज बिल्कुल असंभव हो गया। कल उसे ऐसा मालूम होता था कि मुझे अपनी स्त्री चुननेका हक है और उसे इस बातका जरा भी सन्देह नहीं था कि अगर मैंने मिसीके साथ शादी की तो मिसीको आनन्द रहेगा। आज वह ऐसा अनुभव कर रहा था कि शादी करनेकी कौन कहे, मैं मिसीके साथ घनिष्ठतापूर्वक बात-चीत करनेके भी योग्य नहीं रहा। अगर उसे मालूम भर हो जाय कि मैं क्या हूँ तो वह हर्गिज मुझसे मिलनेके लिए तैयार न होगी। और कल ही की बात है कि मैं उसपर यह आक्षेप कर रहा था कि तू उस आदमीके साथ हँसी-मजाक करती है। लेकिन नहीं, अगर वह मुझसे मिलनेको तैयार भी हो जाय तो मुझे शान्ति कैसे मिल

सकती है, आनंदकी बात तो जाने दीजिये। मैं यह देखता हूँ कि कटूशा जेलमें है और आज या कल निर्वासित करके साइबेरिया भेज दी जा सकती है। वह स्त्री जिसका मैंने सत्यानाश कर दिया, सख्त सजा भोगनेके लिए साइबेरियाके रास्तेमें होगी और मैं घरमें बैठे बैठे लोगोंसे बधाइयाँ लूँगा या अपनी नौजवान स्त्रीके साथ दोस्तोंके यहाँ आऊँगा जाऊँगा। कटूशा तो साइबेरियाके रास्तेपर होगी और मैं मार्शलके साथ, जिसको मैंने कमीनेपनसे धोखा दिया है, स्थानीय स्कूलके मुआइनेके संबंधके प्रस्तावोंके पक्ष-विपक्षमें वोट गिनूँगा या अपनी अपूर्ण तस्वीरको तैयार करूँगा, जो कभी खतम नहीं होगी; क्योंकि मेरे पास इन सब चीजोंके लिए समय नहीं है। अब मैं इस किस्मका कोई भी काम नहीं कर सकता।" उसने अपने दिलमें मानसिक परिवर्तनका आनन्द अनुभव करते हुए कहा—"पहला काम यह है कि मैं वकीलके पास जाऊँ और मालूम करूँ कि उसने क्या फैसला किया। और फिर......जाकर उससे मिलूँ, कलके कैदीसे और उससे सब बातें कह दूँ।"

जब नेखलीडूके कल्पना-पटलपर वह चित्र आया कि कटूशासे कैसे मिलूँगा, कैसे उससे बातें करूँगा, कैसे उसके सामने अपने पापको स्वीकार करूँगा और उसे कैसे बताऊँगा कि इस पापके प्रायश्चित्त-स्वरूप मैं सब कुछ करनेको—तुमसे विवाहतक करनेको—तैयार हूँ तो उसके हृदयमें उल्लासकी विशेष भावना जाग्रत् हो उठी और आँखोंसे आँसू बहने लगे।

बत्तीसवाँ अध्याय

अदालत पहुँचनेपर नेख्लीडूको कलवाला चोबदार बरामदेमें मिला। उसने चोबदारसे पूछा कि जो कैदी सजा पा जाते हैं वे कहाँ रखे जाते हैं, और कोई उनसे मिलना चाहे तो उसे कहाँ दरख्वास्त देनी पड़ती है। चोबदारने बताया कि सजा पाये हुए कैदी कई जगह रखे जाते हैं और जबतक आखिरी फैसला नहीं हो जाता, उनसे मिलनेकी दरख्वास्त प्रोक्योररके यहाँ देनी पड़ती है।

"मैं खुद आऊँगा," चोबदारने कहा, "और इजलासके बाद आपको बुला लूँगा तथा प्रोक्योररके पास ले जाऊँगा। वे आजकल यहाँ नहीं हैं। इजलासके बाद आप तशरीफ लाइये; काम शुरू होने-वाला है।"

नेख्लीडूने चोबदारको इस मेहरबानीके लिए धन्यवाद दिया और ज्यूरियोंके कमरेमें चला गया।

मुकदमेकी तैयारी उसी तरह हुई जिस तरह कल हुई थी। सिर्फ इतनी बात हुई, ज्यूरीको फिर कसम नहीं दी गयी और प्रमुखने इनको फिर समझानेवाला भाषण नहीं दिया।

अदालतके सामने आज चोरीका मुकदमा पेश था। अपराधीपर यह अभियोग था कि इसने अपने एक साथीके साथ एक गुदामका ताला तोड़कर कुछ पुरानी चटाइयाँ, जिनकी कीमत ३ रुबल ६७ कोपेक थी, चुरायीं। पुलिसकी रिपोर्टके मुताबिक एक पुलिसवालेने इस आदमी-को और इसके साथीको, जब कि यह अपने कन्धेपर इन चटाइयोंको लिये जा रहा था, रोका। इन लोगोंने अपराधको तुरन्त स्वीकार कर लिया और दोनों हवालातमें बन्द कर दिये गये। इस लड़केका साथी, जो लोहार था, जेलखानेमें ही मर गया। इसलिए अकेले लड़केपर

मुकदमा चल रहा था। पुरानी चटाइयाँ शहादतके तौरपर मेजके ऊपर रखी हुई थीं।

कार्रवाइयाँ बिलकुल उसी तरह हुईं जिस तरह कल हुई थीं। वही गवाही, वही सबूत, वैसे ही गवाह, वही शपथ, सवाल, विशेषज्ञ और जिरह। हरएक प्रश्नका उत्तर—जो सरकारी वकील, प्रमुख या दूसरे वकील पुलिसवालेसे (जो एक गवाह था) पूछते थे—यह दे देता था—"ठीक है" या "मैं नहीं बता सकता।" यद्यपि नियंत्रणकी मशीनने इस गवाहको बिलकुल मूर्ख और मशीनका एक पुर्जा बना दिया था, फिर भी इस कैदीकी गिरफ्तारीके बारेमें कुछ न कहनेकी गवाहकी इच्छा साफ जाहिर होती थी। दूसरा गवाह बुड्ढा था, जो चिड़चिड़ा आदमी मालूम होता था। वह उस मकानका और इन चटाइयोंका मालिक था। चटाइयोंके बारेमें पूछा गया तो इसने बेमनसे चटाइयोंकी शिनाख्त की यानी उनको पहचान लिया। जब सरकारी वकीलने पूछा कि इन चटाइयोंको तुम किस काममें लाते थे तो वह नाराज हो गया। उसने कहा—"चटाइयाँ भाड़में जायँ। मुझे इनकी जरा भी जरूरत नहीं। अगर मुझे मालूम होता कि इनकी वजहसे इतना बवाल खड़ा हो जायगा तो मैं इनकी तलाशमें निकलता ही नहीं, बल्कि अपनी तरफसे दस रुबलके एक या दो नोट और दे देता जिससे यहाँ न घसीटा जाता और इन सवालोंसे बच जाता। केवल बग्घीके किरायेमें अभीतक मेरे पाँच रुबल खर्च हो चुके हैं। इसके अलावा मेरी तबियत भी अच्छी नहीं। मेरे बदनमें भी दर्द है।"

ये थे गवाहोंके बयान। मुलजिमने हरएक बात स्वीकार कर ली और जालमें फँसे जानवरकी तरह हक्का-बक्का होकर, रुकती हुई आवाजमें सारी घटना बयान कर दी। मुकदमा बिल्कुल साफ था, लेकिन सरकारी वकीलने अपने कन्धोंको ऊपर खींचते हुए, जैसा कि उसने कल किया था, ऐसे पेचीदा सवाल पूछने शुरू किये जिनमें चालाकसे चालाक मुजरिम भी फँस सकता था।

कार्रवाईसे यह प्रकट होता था कि इस लड़केको इसके बापने तम्बाकूके कारखानेमें नौकरी दिला दी थी और इसने वहाँ पाँच बरसतक नौकरी की भी। इस साल कारखानेके मालिकने हड़तालके बाद इसको निकाल दिया। नौकरी छूट जाने पर यह बेरोजगार शहरमें इधर-उधर घूमता रहा और जो कुछ पैसा इसके पास था वह शराब पीनेमें उड़ाता रहा। एक छोटेसे चायघरमें इसकी मुलाकात अपने ही एक ऐसे आदमीसे हो गयी जो पहलेसे ही बेरोजगार हो चुका था। यह लुहार था और शराबी भी। एक रातको इन दोनोंने नशेमें एक गुदामका ताला तोड़ डाला और पहली चीज जो इनके हाथमें आयी लेकर चल दिये। इन लोगोंने सब बातें कबूल कर लीं और जेल भेज दिये गये जहाँ लुहार तो हवालातमें ही मर गया। लड़केपर अब मुकदमा चलाया जा रहा था और कहा जा रहा था कि यह भयंकर प्राणी है जिससे समाजकी रक्षा होनी चाहिये!

"यह भी उतना ही भयंकर है जितना कलका मुजरिम था।" नेख्लीडूने सोचा और जो कार्यवाही हो रही थी उसे वह सुनता रहा। ये भयंकर हैं? और हम जो यहाँ बैठे फैसला दे रहे हैं भयंकर नहीं! मैं पतित दगाबाज! और ये सब जो मुझको जानते हैं कि मैं क्या हूँ, मुझसे घृणा नहीं करते बल्कि मेरी इज्जत करते हैं!

साफ है कि यह लड़का कुछ विशेष रूपसे बुरा नहीं है बल्कि एक साधारण लड़का है, जिसे सब कोई जानते हैं। और यह जो कुछ हो गया सिर्फ इसलिए कि वह ऐसी परिस्थितिमें पड़ गया जिसमें रहकर ऐसा ही चरित्र बन जाता है। इसलिए ऐसे लड़कों-को गलत रास्तेपर न जाने देनेके लिए उन परिस्थितियोंको खतम करना चाहिये जो ऐसे अभागे प्राणी पैदा कर देती हैं। अगर किसीने इस लड़केपर दया की होती और उस समय इसकी कुछ सहायता कर दी होती जब गरीबीसे विवश होकर इसे शहरमें आना पड़ा था, तो यह बात हो ही नहीं सकती थी। नेखलीडूने लड़केके रुग्ण और भयभीत

चेहरेकी तरफ देखकर कहा—या इसके बाद भी जब यह लड़का कार-खानेमें बारह घण्टे काम करनेके बाद अपने साथियोंके बहकानेसे शराब-खानेमें जाया करता था, उसको कोई समझाता कि देखो भइया, शराब-खाना बुरी जगह है, वहाँ न जाया करो, तो वह न गया होता, बुरा रास्ता न पकड़ता और उसने यह अपराध न किया होता।

बीमार, बेतुके परिश्रम, शराब और व्यभिचारके कारण शरीर बिल्कुल निर्बल, इस शहरमें इधर-उधर निरुद्देश्य फिरते हुए जैसे कोई स्वप्नमें फिरे, यह आदमी किसी गोदाममें घुस जाता है और वहाँसे कुछ पुरानी चटाइयाँ, जिनकी किसीको जरूरत नहीं, उठा लेता है और हम लोग इस बातको सोचतेतक नहीं कि उन कारणोंको कैसे नष्ट किया जाय जिनसे यह लड़का इस हालतको पहुँचा, बल्कि सोचते यह हैं कि इसको सजा देकर मामला दुरुस्त कर लिया जा सकेगा।

नेख्लीडू जब यह सोच रहा था तो उसे सामने ही होनेवाली कारवाई कुछ भी सुनाई नहीं देती थी। जो चीजें उसके सामने प्रकट हो रही थीं उनको देख-देखकर वह बहुत भयभीत होता जाता था। उसकी समझमें नहीं आता था कि ये बातें मुझे पहले क्यों नहीं दिखाई पड़ीं और दूसरे लोग इन सब बातोंको क्यों नहीं देख पाते।

तैंतीसवाँ अध्याय

अदालतके बर्खास्त होनेपर नेख्लीडू उठकर इस इरादेसे बरामदेमें चला गया कि अब अदालत वापस न आऊँगा। सरकारकी जो तबीयत चाहे सजा दे दे। मैं इस भयंकर और बीभत्स खिलवाड़में भाग नहीं ले सकता।

प्रोक्योररके कमरेके बारेमें पूछताछ करके वह सीधे, उसीके पास गया। चपरासी पहले उसे घुसने नहीं देना चाहता था। कहता था कि प्रोक्योरर काम कर रहे हैं। लेकिन नेख्लीडूने उसकी बातको कुछ पर्वाह न की। वह दरवाजेमें घुस गया जहाँ उसे एक अफसर मिला। इस अफसरसे इसने कहा कि प्रोक्योरर साहबसे जाकर कह दो कि ज्यूरीके एक आदमी आपसे मिलने आये हैं और उन्हें आपसे एक बहुत जरूरी बात कहनी है। नेख्लीडूके खिताब और उसके अच्छे कपड़ोंने उसकी मदद की। इस अफसरने जाकर प्रोक्योररको खबर दे दी और नेख्लीडू बुला लिया गया। प्रोक्योरर नेख्लीडूसे खड़ा-खड़ा मिला जो इस बातका प्रमाण था कि वह नेख्लीडूके मिलनेके आग्रहसे नाराज है।

"आप क्या चाहते हैं?" प्रोक्योररने कठोरतासे पूछा।

"मैं ज्यूरी हूँ, मेरा नाम नेख्लीडू है और मस्लोवा नामकी एक कैदी स्त्रीसे मिलना मेरे लिए अत्यन्त आवश्यक है।" नेख्लीडूने तेजी और दृढ़तासे किन्तु झेंपते हुए कहा। उसके दिलपर ऐसा आभास होने लगा कि मैं एक ऐसा कदम बढ़ा रहा हूँ जिसका मेरे जीवनपर एक निश्चयात्मक प्रभाव पड़ेगा।

"मस्लोवा? हाँ! मैं जानता हूँ। उसपर जहर देनेका जुर्म लगाया गया है।" प्रोक्योररने शान्तिसे कहा। "लेकिन आप उससे क्यों मिलना चाहते हैं?" और इसके बाद मानो अपने प्रश्नकी कठोरताको कम

करनेके लिए उसने कहा—"जबतक मुझे यह मालूम न हो जाय कि आप उससे क्यों मिलना चाहते हैं, मैं इजाजत न दे सकूँगा।"

"मुझे एक महत्त्वपूर्ण कारणवश मिलना है।" नेख्लीडूने उत्तर दिया और उसका चेहरा लाल हो गया।

"हाँ ?" प्रोक्योररने कहा और अपनी आँख उठाकर नेख्लीडूकी तरफ ध्यानसे देखा—"उसके मुकदमेकी सुनवाई हो गयी कि नहीं ?"

"कल उसके मुकदमेकी सुनवाई हुई और उसे अन्यायसे चार बरसकी सख्त सजा मिल गयी। वह बिलकुल निर्दोष है।"

"हाँ, अगर उसे कल ही सजा मिली है तो" प्रोक्योररने कहा और नेख्लीडूकी बातपर जरा भी ध्यान नहीं दिया जो उसने मस्लोवाकी निर्दोषताके बारेमें कही थी—"वह अभी पहली ही जेलमें होगी और जबतक अन्तिम फैसला नहीं हो जाता, वहीं रहेगी। वहाँपर खास खास दिन कैदियोंसे मुलाकात हो सकती है। मैं आपको सलाह दूँगा कि आप वहीं जाकर पूछिये।"

"लेकिन मुझे उससे बहुत जल्द मिलना है।" नेख्लीडूने कहा और फैसलेकी घड़ी नजदीक आनेके खयालसे उसका जबड़ा काँपने लगा।

"आप क्यों मिलना चाहते हैं ?" प्रोक्योररने कहा। उसने बेताबीसे अपनी भौंहें सिकोड़ी।

"इसलिए कि उसे निरपराध होते हुए भी सजा दी गयी है और कसूर मेरा है।" नेख्लीडूने काँपती हुई आवाजमें कहा। वह इस बातका अनुभव कर रहा था कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ उसके कहनेकी जरूरत नहीं थी।

"आपका कसूर कैसे ?" प्रोक्योररने पूछा।

"इस तरह कि मैंने ही उसे पहले बिगाड़ा और वह अपनी वर्तमान दुर्दशाको पहुँची। अगर यह वह न हो गयी होती, जिसके बननेमें मैंने मदद की, तो वह इस किस्मके जुर्मका शिकार न हुई होती।"

"जो हो, यह बात मेरी समझमें नहीं आती कि इससे और आपके उससे मिलनेसे क्या सम्बन्ध है ?"

"सम्बन्ध यह है कि मैं उसके पीछे पीछे जाना चाहता हूँ और... उसके साथ शादी करना चाहता हूँ ।" नेख्लीडूने हकलाते हुए कहा और अपनी बातके प्रभावसे उसकी आँखोंमें आँसू भर आये ।

"सचमुच ! ओफ ओह !" प्रोक्योररने कहा—"तब तो यह बहुत ही असाधारण मामला मालूम होता है । मेरा खयाल है कि आप क्रास-नोपर्स्क ग्राम मण्डलके मेम्बर हैं ।" उसने पूछा मानो उसे यह याद आ गया कि इस नेख्लीडूका नाम इससे पहले भी कभी सुना है ।

"माफ कीजियेगा, मैं यह समझता हूँ कि मैंने आपसे जो कुछ दरख्वास्त की है उससे और मेरे मेम्बर होनेसे कोई सम्बन्ध नहीं ।" नेख्लीडूने उत्तर दिया । गुस्सेसे उसका चेहरा लाल हो गया ।

"निःसन्देह कोई सम्बन्ध नहीं है" कहकर प्रोक्योरर मुस्कराया । उसकी मुस्कराहट बिलकुल दिखाई नहीं देती थी और वह जरा भी न झेंपा—"आपकी दरख्वास्त मुझे इतनी असाधारण और विचित्र मालूम हुई कि मैंने कहा ।"

"खैर, लेकिन यह तो बताइये कि क्या मुझे इजाजत मिल जायेगी ।"

"इजाजत ! जी हाँ । मैं आपको एक हुक्म लिखे देता हूँ जिससे आप फौरन दाखिल कर दिये जायेंगे । बैठ जाइये ।" उसने नेख्लीडूसे कहा ।

प्रोक्योरर मेजकी तरफ बढ़ा और बैठ गया ।

नेख्लीडू खड़ा ही रहा ।

"कृपा करके बैठ जाइये ।"

हुक्म लिखने और उसे नेख्लीडूके हाथमें देनेके बाद, प्रोक्योररने आश्चर्यसे उसे देखा ।

"मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि मैं अदालतकी कार्यवाहीमें कोई हिस्सा नहीं ले सकता ।"

"इसके लिए तो जानते ही हैं कि आपको सबल कारण अदालतमें पेश करने पड़ेंगे।

"बात यह है कि मैं किसीके अपराधपर उसे सजा देना बेकार ही नहीं बल्कि धर्मके विरुद्ध भी समझता हूँ।"

"ठीक है" प्रोक्योररने कहा। उसके चेहरेपर उसी किस्मकी मुस्कराहट थी जो मुश्किलसे दिखाई देती थी और इस बातको प्रकट करती थी कि इस तरहकी बातें उसने बहुतोंसे सुनी हैं और उसके लिए वह एक मनोरंजनकी वस्तु है—"ठीक है, लेकिन आप तो यह जरूर समझते हैं कि मैं प्रोक्योररकी हैसियतसे आपकी इस बातसे सहमत नहीं हो सकता, इसलिए मैं आपको सलाह दूँगा कि आप अदालतमें दरख्वास्त दें। अदालत आपके बयानपर गौर करेगी और फैसला करेगी कि आपकी दरख्वास्त उचित है या अनुचित। अगर अनुचित समझेगी तो आपपर जुर्माना करेगी। इसलिए आप अदालतमें दरख्वास्त दीजिये।"

"मैंने आपके सामने आपना बयान दे दिया। अब मैं कहीं भी दरख्वास्त नहीं दूँगा।" नेख्लीडूने जोशमें आकर कहा।

"अच्छी बात है, नमस्कार।" प्रोक्योररने सर झुकाते हुए कहा। वह इस बातके लिए उत्सुक था कि ऐसे विचित्र आदमीसे जल्द छुटकारा मिले तो अच्छा।

"यह कौन था जो अभी आया था?" अदालतके एक मजिस्ट्रेटने आते ही पूछा, ज्यों ही नेख्लीडू कमरेसे बाहर निकल गया।

"आप नहीं जानते, यह नेख्लीडू था। ये वही सज्जन हैं जो कासनोपर्स्क ग्राममण्डलमें अजीब बातें कहा करते थे। जरा अब तो देखिये! ये ज्यूरीमें हैं और कैदियोंमें एक औरत है, एक लड़की, जिसे देशनिकालेकी सजा मिली है। ये कहते हैं कि इस लड़कीको इन्होंने बिगाड़ा था और अब ये उसके साथ शादी करना चाहते हैं।"

"आप मजाक कर रहे हैं!"

"सच कहता हूँ। उन्होंने मुझसे यही कहा और वह भी अजीब बेताबीकी हालतमें।"

"आजकलके नौजवानोंमें कुछ सनक-सी पायी जाती है। लेकिन ये नौजवान तो हैं नहीं।"

"नहीं, नौजवान नहीं हैं लेकिन देखिये आपके वे मशहूर आइन-स्टीनको भी कितना परेशान करते थे। वे लोगोंको थकाकर अपनी बात मनवाया करते थे। बात करने लगते तो करते ही जाते थे। कभी उसका अन्त नहीं होता था।"

"ओह! ऐसे आदमियोंको तो एकदम रोक देना चाहिये। वे काम-में वास्तविक विघ्न डाल देते हैं।

चौंतीसवाँ अध्याय

प्रोक्योररके पाससे नेख्लीडू सीधे पहले जेल गया। वहाँपर मस्लोवाका बिलकुल पता नहीं था। वहाँ इन्सपेक्टरने नेख्लोडूको बताया कि संभव है, वह पुराने कच्चे जेलमें हो।

इन दोनों जेलोंमें बहुत फासला था इसलिए पुराने जेलतक पहुँचते पहुँचते नेख्लीडूको शाम हो गयी। वह इस बड़ी मनहूस इमारतकी तरफ बढ़ा लेकिन सन्तरीने उसे रोक दिया और घण्टी बजायी। घण्टीकी आवाजपर एक जेलर आया। नेख्लीडूने उसे हुक्म दिखाया जो प्रोक्योररने दिया था। लेकिन जेलरने कहा कि मैं बिना इन्स्पेक्टरकी इजाजत आपको अन्दर नहीं जाने दूँगा। अब नेख्लीडू इन्स्पेक्टरके यहाँ गया। वह जीनेपर चढ़ ही रहा था कि उसे दूरसे पियानोंपर बजती हुई रागिनी सुनाई दी। एक चिड़चिड़ी नौकरानीने, जिसकी आँखोंपर पट्टी बँधी हुई थी, दर्वाजा खोला। रागिनीकी आवाज कमरेसे निकलकर इसके कानोंमें और जोरसे प्रवेश करने लगी। यह लीजकी तैयार की हुई रागिनी थी, जिससे अब सभी ऊब गये थे लेकिन यह बज रही थी बहुत बढ़िया, यद्यपि इसका थोड़ा-सा हिस्सा ही बज रहा था। जब यह अन्तिम हिस्सेतक पहुँच जाती, इसे फिर शुरूसे बजाना आरम्भ किया जाता था। नेख्लीडूने नौकरानीसे पूछा कि इन्स्पेक्टर साहब घरपर हैं कि नहीं। उसने जवाब दिया कि घरपर नहीं हैं।

"क्या जल्दी आ जायेंगे?"

गतका बजना बन्द हो गया लेकिन फौरन ही फिर शुरू हो गया। और बार बार, तेज आवाजके साथ लेकिन बड़ी कुशलतासे, वह उसी हिस्सेतक दुहरायी जाने लगी।

"मैं जाकर पूछती हूँ।" नौकरानीने कहा और चली गयी।

गत जोरोंसे बज रही थी, लेकिन उसी हिस्सेतक पहुँचनेके पहले ही रुक गयी और उससे बजाय यह आवाज सुनाई दी—

"कह दो कि वे घरमें नहीं हैं, और आयेंगे भी नहीं। वे बाहर दौरेपर गये हैं। यहाँ लोग नाहक परेशान करने क्यों आते हैं?" एक औरतने कमरेके दर्वाजेके पीछेसे कहा और फिर वही गत बजने तथा बन्द होने लगी। इतनेमें कुरसीके पीछे हटनेकी आवाज आयी। यह साफ जाहिर था कि जो स्त्री पियानो बजा रही थी वह चिढ़ गयी थी और ऐसे बेवक्त मिलने आनेवाले इस आदमीको परेशान करना चाहती थी।

"पिताजी घरपर नहीं हैं।" एक पीली मुर्झायी हुई लड़कीने, जिसके बाल मुड़े हुए थे और ज्योतिहीन आँखोंके चारों ओर हलके पड़ गये थे, अगले कमरेके बाहर निकलकर कहा। लेकिन जब उसने देखा कि एक नौजवान आदमी बढ़िया कोट पहने खड़ा है, तो वह कुछ मुलायम पड़ गयी।

"तशरीफ लाइये, आप क्या चाहते हैं?"

"मैं इस जेलमें एक कैदीसे मिलना चाहता हूँ।"

"राजनीतिक कैदी होगा।"

"नहीं, राजनीतिक कैदी नहीं है। मैं प्रोक्योररके पाससे आज्ञा ले आया हूँ।"

"ठीक है लेकिन मैं तो कुछ जानती नहीं और पिताजी बाहर गये हैं। लेकिन आप तशरीफ लाइये न।" उसने कहा "या नायब साहबसे बात कर लीजिये। वे अभी दफ्तरमें होंगे। आप वहाँ जाकर कहिये। आपका नाम क्या है?"

"धन्यवाद! धन्यवाद।" नेख्लीडूने कहा और उसके प्रश्नका उत्तर दिये बिना ही वह बाहर निकल आया।

इसके चले आनेके बाद अभी दर्वाजा बन्द नहीं हुआ था कि फिर वही गत बजनी शुरू हुई। यह गत इस स्थानके लिए और इस बीमार

लड़कीकी शकल-सूरतके लिए, जो इसके बजानेकी जोरोंसे कोशिश कर रही थी, बिल्कुल अनुपयुक्त थी।

सहनमें नेख्लीडूको एक मूँछोंवाला अफसर मिला, जिससे उसने पूछा कि नायब इन्स्पेक्टर कहाँ हैं? ये खुद ही नायब इन्स्पेक्टर थे। इन्होंने हुक्म देखा लेकिन कहा कि "हुक्म तो पहले जेलका है, इस हुक्मसे उस जेलमें मुलाकात नहीं हो सकती। दूसरी बात यह कि अब बहुत देर हो गयी है। कृपा करके कल दस बजे आइये। उस वक्त सभी मिल सकते हैं। उस समय इन्स्पेक्टर साहब भी यहाँ रहेंगे। तब आप चाहें तो जहाँ सब मिलते हैं वहाँ मिलियेगा, और अगर इन्स्पेक्टरने इजाजत दे दी तो दफ्तरमें मिलियेगा।"

इस तरह नेख्लीडूको उस दिन मुलाकात करनेमें सफलता न हुई। वह मकान वापस आया। मस्लोवासे मिलनेके विचारसे उत्तेजित उसे अब सड़कपर चलते हुए अदालतका खयाल तक नहीं आता था। उसके दिलमें तो प्रोक्योरर और नायब इन्स्पेक्टरकी ही बातचीत गूँज रही थी।

मस्लोवासे मुलाकात करनेकी कोशिशमें और प्रोक्योररकी बातचीत तथा दो जेलखानोंपर मस्लोवासे मिलने जानेके कारण नेख्लीडू इतना उत्तेजित था कि बहुत देरतक शान्त नहीं हो सका। मकान आनेपर उसने तुरत अपनी डायरी निकाली, जिसे उसने बहुत दिनोंसे नहीं छुआ था। उसमें लिखे हुए कतिपय वाक्य उसने पढ़े और निम्नलिखित वाक्य उसमें लिख दिये।

"मैंने अपनी डायरीमें दो सालसे कुछ नहीं लिखा। मैं समझता था कि अब कभी यह बचपनकी-सी बात न करूँगा। लेकिन डायरी लिखना बचपन नहीं है। डायरी अपनी आत्मासे और अपनी आत्माके वास्तविक दैविक अंशसे जो कि हरएक मनुष्यमें पाया जाता है, वार्तालाप है। इतने दिनोंतक यह आत्मा सो रही थी। इसलिए बातचीत किससे की जाय? मैं २८ अप्रैलको अदालतमें, जब कि मैं ज्यूरीमें था, एक असाधारण घटनाकी वजहसे जाग उठा। मैंने उसे कैदियोंका चोगा

पहने हुए कैदी पोशाकमें देखा। उस कटूशाको, जिसे मैंने बिगाड़ा था, एक असाधारण भूलसे और मेरे अपने दोषके कारण देशनिकालेकी सजा मिली। मैं अभी प्रोक्योररके यहाँ गया था और जेलखाने भी गया था, जहाँ मुझे जाने नहीं दिया गया। लेकिन मैंने यह निश्चित कर लिया है कि मैं उससे मिलनेकी पूरी चेष्टा करूँगा। उससे अपने अपराध स्वीकार करूँगा और अपने पापका प्रायश्चित करूँगा, चाहे यह प्रायश्चित विवाहके रूपमें ही क्यों न हो। ईश्वर मेरी सहायता करे। मेरी आत्मामें शान्ति है और मैं आनन्दसे परिपूर्ण हूँ।"

पैंतीसवाँ अध्याय

उस रातको मस्लोवा बड़ी देरतक आँखें खोले जागती रही और उस दर्वाजेकी तरफ देखती रही जिसके सामने पादरीकी लड़की टहल रही थी। वह विचारमग्न थी और यह सोचती थी कि मैं सखालिनमें किसी कैदीसे तो शादी करूँगी नहीं लेकिन किसी तरह जेलके अफसरोंमें-से किसीसे—चाहे वह क्लार्क हो, वार्डर हो या वार्डरका नायब—अपना मामला ठीक कर लूँगी। ये लोग इसी किस्मके होते हैं। सिर्फ मुझे यही फिक्र करनी चाहिये कि मैं दुबली न हो जाऊँ, नहीं तो सब मामला चौपट हो जायगा।

उसे याद आया कि मेरा वकील मुझे किस तरह देख रहा था। प्रमुख मजिस्ट्रेट मुझे किस तरह देख रहा था। जो लोग मुझसे मिलते थे या अदालतमें किसी कामसे आते थे वे मुझे कैसे देखते थे। उसे यह भी याद आया कि मेरी संगिनी बर्था, जो जेलमें मिलने आयी थी, कह गयी थी कि वह विद्यार्थी—जिसे वह जब कटेवाके यहाँ रह रही थी चाहती थी—आया था और पूछता था तथा बड़ी सहानुभूति प्रकट करता था। उसे लाल बालोंवाली स्त्रीका झगड़ा याद आया और दुःख हुआ। उसे वह रसोइया भी याद आया जिसने उसके पास एक फाजिल रोटी भेज दी थी। उसे बहुतसे लोग याद आये, केवल नेख्लीडू नहीं याद आया। अपने बाल्य-काल, अपनी जवानी और नेख्लीडूके प्रति अपने प्रेमको उसने कभी स्मरण नहीं किया। यह स्मृति अत्यंत दुःखद होती। ये स्मृतियाँ इसकी आत्माकी गहराईमें कहीं अछूती दफन थीं। वह नेख्लीडूको भूल गयी थी। उसकी मस्लोवाको याद भी नहीं आती थी और स्वप्नमें भी उसका स्मरण नहीं होता था। आज अदालतमें उसने उसे नहीं पहचाना। इसका कारण यह नहीं था

कि पिछली दफा जब उसने उसे देखा था वह वर्दी पहने था, उसके दाढ़ी नहीं थी, उसकी छोटी-छोटी मूँछें थीं और छोटे-छोटे घूमे हुए बाल थे। अब उसके दाढ़ी निकल आयी थी और सामनेके बाल गायब हो गये थे। उसने उसे नहीं पहचाना इस वजहसे कि उसने कभी उसका खयालतक नहीं किया था। कटूशाने उसकी स्मृतिको उस भयंकर अंधकारमय रात्रिमें दफन कर दिया था जब कि नेख्लीडूव सेनासे वापस आ रहा था और वहींसे रेलपर गया लेकिन अपनी फूफीको देखने नहीं उतरा। कटूशाको गर्भिणी हो जानेकी बात मालूम थी। जबतक उसे यह आशा रही कि नेख्लीडूव वापस आयेगा, उसने उस बच्चेको, जो उसके हृदयके नीचे था, बोझ नहीं समझा। जब कभी कटूशा इस बच्चेको अपने पेटमें हल्के-हल्के और एकाएक डोलते देखती थी, इसे आश्चर्य होता था और इसकी आँखें डबाडबा आती थीं लेकिन उस रातको सब कुछ बदल गया। वह बच्चा बच्चा नहीं रह गया, पत्थरका बोझ हो गया।

नेख्लीडूवकी फूफी उसका इन्तजार करती थी, और उसे लिखा था कि इधरसे जाते समय यहाँ ठहर जाना। नेख्लीडूवने तारसे उत्तर दिया कि मैं नहीं पहुँच सकता; क्योंकि मुझे पीटर्सबर्गमें एक निश्चित समयपर पहुँचना है। जब कटूशाने यह सुना तो उसने यह इरादा किया कि स्टेशनपर जाकर उससे मिल लूँगी। गाड़ी रातको दो बजे आती थी। कटूशाने वृद्ध महिलाओंकी सेवा-सुश्रूषा करके उनको पलँगपर पहुँचा देनेके बाद रसोईदारिनकी छोटी लड़की मश्काको समझा-बुझाकर अपने साथ चलनेके लिए राजी किया। मश्काने पुराने जूते पहने, अपने सरपर एक शाल डाली, अपने कपड़े समेटे और स्टेशनकी तरफ चल दी।

पतझड़की गर्म रात थी। पानी भी बरस रहा था। तेज हवा चल रही थी। कभी गर्म गर्म बड़ी-बड़ी बूँदें गिरती थीं, कभी रुक जाती थीं। खेतोंका रास्ता मुश्किलसे दिखाई देता था और जंगलोंमें तो बिलकुल अँधेरा था। इसलिए यद्यपि कटूशाको रास्ता अच्छी तरह

मालूम था, फिर भी वह रास्ता भूल गयी और इस छोटे स्टेशनपर, जहाँ गाड़ी सिर्फ ३ मिनट रुकती थी, गाड़ी आनेके पहले नहीं—जैसी कि वह आशा करती थी—बल्कि जब छूटनेकी दूसरी घंटी बज चुकी थी, प्लेट-फार्मपर तेजीसे दौड़ती हुई पहुँची। उसने देखा कि अव्वल दर्जेकी गाड़ी-में खिड़कीपर नेख्लीडू बैठा है। यह गाड़ी रोशनीसे जगमगा रही थी। दो अफसर एक-दूसरेके सामने मखमली गद्दे पर बैठे ताश खेल रहे थे और इनके आगे मेजपर दो मोमबत्तियाँ थीं जिनसे मोम टपक रही थी। चुस्त बिरजिस और सफेद कमीज पहने हुए नेख्लीडू कुर्सीके दस्तेपर बैठा हुआ था और किसी बातपर हँस रहा था। कटूशाने जैसे ही नेख्लीडूको देखा, अपनी ठिठुरी हुई अँगुलियोंसे गाड़ीकी खिड़की खटखटायी। उसी क्षण आखिरी घंटी बज गयी। गाड़ीने पहले पीछे धक्का दिया और फिर धीरे-धीरे चलने लगी। ताश खेलनेवालोंमेंसे एक खिलाड़ी ताश हाथमें लेकर उठा और उसने बाहर देखा। कटूशाने फिर खटखटाया और अपने चेहरेसे खिड़कीको दबाया भी; लेकिन गाड़ी चल चुकी थी और वह उसको पकड़े-पकड़े आगे बढ़ी। एक अफसरने खिड़की गिरानी भी चाही लेकिन गिरा न सका। नेख्लीडूने उसको हटाकर खुद खिड़की गिरानेकी कोशिश की, गाड़ी और तेज हो गयी। इसलिए कटूशाको तेजीसे चलना पड़ा। गाड़ी और तेज और कटूशाने अपनी चाल और भी बढ़ायी। गाड़ी जब काफी तेज हो चुकी तो खिड़की गिरी। लेकिन उसी वक्त गार्डने कटूशाको धक्का देकर दूर कर दिया और स्वयं कूदकर चढ़ गया। कटूशा भीगे प्लैटफार्मपर कुछ दूर तेजीसे दौड़ती गयी—इतनी तेजीसे कि जब वह बिलकुल किनारे पहुँची तो नीचे गिरते-गिरते बची लेकिन वह उतर गयी और दौड़ती रही, यद्यपि फर्स्ट क्लासकी गाड़ी निकल चुकी थी, सेकेंड क्लासकी गाड़ी भी निकल चुकी थी और ट्रेनकी चाल तेज होती जा रही थी। तीसरे दर्जेकी गाड़ियाँ भी निकल गयीं और ट्रेन काफी तेज हो गयी। फिर भी कटूशा दौड़ती ही रही। आखिरी गाड़ी निकल गयी और गाड़ीके

पीछेकी लाल रोशनी भी आगे भागती हुई दिखाई देने लगी। लेकिन कटूशाका दौड़ना जारी रहा। अब वह उस जगह पहुँच गयी थी जहाँ इञ्जन पानी लेते हैं। हवा तेजीसे चल रही थी और उसके शालको उड़ा रही थी। उसकी साड़ी हवाके वेगसे पैरोंमें फँस जाती थी। शाल सरसे उड़कर दूर जा गिरी, लेकिन कटूशा दौड़ती ही रही।

"कैट्रिना मिखिलोभ्ना, तुम्हारी शाल उड़ गयी।" छोटी लड़कीने चिल्लाकर कहा, जो उसके पीछे पीछे दौड़ रही थी।

कटूशा रुक गयी और अपने सरपर दोनों हाथ रखकर जोर जोरसे सिसकने लगी।

"चले गये!" उसने चिल्लाकर कहा।

वे तो मखमली कुर्सीपर बैठे हैं और जगमगाती हुई गाड़ीमें शराब पी रहे हैं, हँसी-मजाक कर रहे हैं और मैं यहाँ अँधेरेमें, कीचड़में आँधी-पानीमें खड़ी हूँ!—कटूशाने अपने दिलमें कहा। और वहीं जमीनपर बैठकर इतने जोर जोरसे रोने लगी कि छोटी लड़की डर गयी और यद्यपि वह भीगी हुई थी, उससे चिमट गयी।

"बहन, घर चलो।" उसने कहा।

"अगर कोई गाड़ी निकले तो उसी गाड़ीके नीचे मैं घुस जाऊँ और मेरा खातमा हो जाय।" कटूशा छोटी लड़कीका कुछ खयाल किये बिना अपने दिलमें सोच रही थी।

कटूशाने आत्महत्या करनेका इरादा कर लिया। लेकिन जैसा हमेशा होता है, उत्तेजनाके बाद एक शान्तिकी घड़ी आती है। उसमें इसके पेटके अन्दरके बच्चेने—उसके बच्चेने एकाएक डोलना शुरू किया। वह हिला, धीरेसे हाथ-पैर डुलाये और फिर नन्हें मुलायम अंगोंको हरकत दी। एकाएक वे सब बातें, जो एक क्षण पहले उसे इतना विक्षिप्त कर रही थीं कि जीना भारी हो रहा था, नेख्लीडूके प्रति उसकी सब कटुता, उसके प्रति प्रत्यपकारकी इच्छा, अपनी जान देकर नेख्लीडूसे बदला

लेनेकी अभिलाषा जाती रही। वह कुछ शान्त हुई, उठी और शाल सरपर डालकर घरकी तरफ रवाना हो गयी।

पानी और कीचड़में शराबोर और बिलकुल थकी हुई कटूशा घर वापस आयी। उसी दिनसे उसकी आत्मामें वह पतन शुरू हुआ जिसने उसे इस स्थानपर पहुँचाया था। उसी भयंकर रातसे इसने ईश्वर और धर्ममें विश्वास करना छोड़ दिया। कटूशा स्वयं ईश्वरमें विश्वास रखती थी और यह मानती थी कि और लोग भी ईश्वरमें विश्वास रखते हैं। लेकिन उस रातके बादसे उसे निश्चय हो गया कि ईश्वरमें कोई भी विश्वास नहीं करता। ईश्वर या उसके नियमोंके बारेमें जो कुछ कहा जाता है, सब दगाबाजी और झूठ है। वह जिसे प्यार करती थी, और जो उसे प्यार करता था—वह जानती थी कि वह उसे प्यार करता है—उसीने उसका उपयोग करके उसे त्याग दिया। इसके प्रेमका तिरस्कार और दुरुपयोग किया तथापि वह सब आदमियोंसे उत्तम था, वह जानती थी। और लोग उससे भी बदतर थे। इसके बाद जो जो बातें हुईं, सभीमें कदम-कदमपर उसे अपने इस विचारकी पुष्टि मिलती गयी। नेख्लीडूकी फूफियोंने, जो बहुत धार्मिक समझी जाती थीं, उसे इस समय निकाल दिया, जब वह उनकी उतनी सेवा न कर पाती थी जितनी पहले किया करती थी। और जितने आदमी उसको मिले, सबने उसे अपने मजेका एक साधन समझा। औरतें जो मिलीं वे उसे अपने लिए रुपया कमानेका वसीला समझती थीं, और जो मर्द मिले, बुड्ढे पुलिस अफसरसे लेकर जेलके वार्डरतक, सभी उसे अपने इन्द्रियसुखका एक साधन मानते थे। दुनियामें कोई भी मजेके सिवाय और किसी चीजकी परवाह नहीं करता था। उस बुड्ढे लेखकने भी, जिसके साथ उसने अपने स्वतंत्र जीवनका दूसरा साल बिताया था, इसी विचारकी पुष्टि की थी। उसने इसे साफ साफ बताया था कि जीवनका आनन्द इसीमें है। इसीको वह कला और सौंदर्यकी उपासना कहा करता था।

हरएक आदमी अपने लिए और अपने सुखके लिए जीवित रहता है। ईश्वर और धर्मकी चर्चा दगाबाजी है। अगर किसी समय उसके दिलमें यह शंका पैदा होती थी कि दुनियाका रवैया इतना क्यों खराब है, क्यों लोग एक दूसरेको तकलीफ पहुँचाते हैं, तो वह इस प्रश्नपर विचार करना ही छोड़ देती थी। और अगर वह उदास हो जाती थी तो सिगरेट पीती या शराब पी लेती थी। और सबसे अच्छी तरकीब तो यह थी कि किसी आदमीके साथ प्रेम-व्यवहार कर लेती थी और सब शंकाएँ दूर हो जाती थीं।

छत्तीसवाँ अध्याय

नेख्लीडू घरसे जल्द निकल पड़ा। एक किसान, जो गाँवसे आया था, उसी सड़कपर अपनी गाड़ी चला रहा था। और जैसा दूध बेचने-वाले फेरीवाले चिल्लाते हैं, चिल्ला रहा था—"दूध लो! दूध!"

बग्घीवाला नेख्लीडूको बिल्कुल जेलके दर्वाजेतक नहीं ले गया। उसने उसको उस सड़कके अंतिम मोड़पर ही उतार दिया जो जेलसे करीब सौ कदमपर था।

बहुतसे स्त्री-पुरुष, जिनमेंसे अधिकांशके हाथोंमें छोटे-छोटे बंडल थे, इस मोड़पर जेलखानेसे करीब सौ कदमके फासलेपर खड़े थे। दाहिनी तरफ कई नीचे लकड़ोंके मकान थे। बायीं तरफ एक दोमंजिला मकान था जिसमें साइनबोर्ड लगा था। ईंटका विशाल भवन, असली जेल बिलकुल सामने था। लेकिन मिलनेवालोंको उसके पास जानेकी इजाजत नहीं थी। एक संतरी इसके सामने टहल रहा था। अगर कोई नजदीक जाता तो वह डाँटता था।

लकड़ीके मकानके फाटकपर, जो दाहिनी तरफ था, संतरीके सामने बेंचपर जेलर सुनहरी मोटी रस्सियोंसे अपनी वर्दी सुसज्जित किये, हाथमें नोटबुक लिये बैठा था। मुलाकाती लोग उसके पास जाते और उसको उस कैदीका नाम बताते जिससे वे मिलना चाहते थे। इस नामको वह लिख लेता था। नेख्लीडू भी उसके पास गया और कैट्रिना मस्लोवाका नाम बता दिया। जेलरने नाम लिख लिया।

"हम लोगोंको मुलाकात करनेके लिए क्यों नहीं बुला रहे हैं?" नेख्लीडूने पूछा।

"प्रार्थना हो रही है। प्रार्थना समाप्त हो जानेपर मुलाकातके लिए बुलाया जायगा।"

प्रतीक्षा करनेवाली भीड़से निकलकर नेख्लीडू अलग खड़ा हो गया। नंगे-पैर, फटे-पुराने कपड़े पहने, दबी-दबायी टोपी लगाये, चेहरेपर लाल धारियोंवाला एक आदमी भीड़से निकलकर जेलखानेकी तरफ चलने लगा।

"कहाँ जा रहा है?" राइफल लिये हुए संतरीने चिल्लाकर कहा।

"अपना काम करो।" इस उठल्लूने उत्तर दिया जो संतरीकी डाँटसे जरा भी प्रभावित नहीं हुआ था, लेकिन वापस मुड़ गया। "अच्छी बात है, अगर मुझे न जाने दोगे तो मैं इन्तजार कर लूँगा। देखो न, चिल्लाता कैसे है जैसे कहींका लाट साहब है!"

लोग हँस पड़े। मुलाकाती लोग ज्यादातर फटे-पुराने कपड़े पहने हुए थे। उनमेंसे कुछ तो चिथड़े लगे हुए थे, लेकिन कुछ भलेमानस (पुरुष और स्त्रियाँ) भी थे। नेख्लीडूके पास एक दाढ़ी-मूँछ मुड़ाये हृष्टपुष्ट लाल गालोंवाला आदमी, हाथमें पोटली लिये खड़ा था। मालूम पड़ता था कि उस पोटलीमें कुछ, नीचे पहननेके, कपड़े थे। नेख्लीडूने उससे पूछा—"क्या आप यहाँ पहली दफा आये हैं?" उसने उत्तर दिया—"नहीं मैं हर इतवारको आता हूँ।" अब इन दोनोंमें बात-चीत शुरू हो गयी। यह आदमी किसी बैंकका दरबान था और अपने भाईसे मिलने आया था जो जालसाजीमें गिरफ्तार कर लिया गया था। इस भलेमानसने अपने जीवनका सारा किस्सा नेख्लीडूको सुना दिया और नेख्लीडूसे भी उसकी जिन्दगीका हाल पूछनेवाला ही था कि एक विद्यार्थी और एक नकाबपोश महिला, जो एक बढ़िया रबर टायरकी घोड़ागाड़ीपर सवार थे, आ गये। इससे इनका ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो गया। विद्यार्थीके हाथमें एक बड़ा बण्डल था। उसने नेख्लीडूके पास आकर पूछा कि "मैं कैदियोंको कुछ रोटियाँ, जो मैं साथ लाया हूँ, देना चाहता हूँ। यह बताइये, कैसे दूँ और कहाँ दूँ। मेरे साथ मेरी भावी पत्नी है जो कैदियोंको रोटियाँ बाँटना चाहती है। उसके माता-पिताने भी उसे इस कामकी अनुमति दी है।"

"मैं तो यहाँ पहली बार आया हूँ।" नेख्लीडूने कहा "मुझे कुछ

पता नहीं, लेकिन मैं समझता हूँ कि यह बेहतर होगा कि आप उस आदमीसे बात-चीत कीजिये।" और उसने दाहिनी ओर बैठे उस सुनहरी रस्सीवाले जेलरकी ओर इंगित किया।

इन लोगोंमें बातचीत हो ही रही थी कि जेलका लोहेका बड़ा फाटक, जिसमें एक खिड़की भी थी खुला और एक अफसर वर्दी पहने बाहर आया। इसके पीछे पीछे एक जेलर था। नोटबुकवाले जेलरने घोषणा की—"अब मुलाकाती लोग आ सकते हैं।" संतरी एक ओर हटकर खड़ा हो गया। मुलाकाती लोग फाटककी तरफ दड़े मानों उन्हें यह डर लगा था कि कहीं देर न हो जाय। फाटकपर जेलर खड़ा हो गया और मुलाकातियोंको जोर जोरसे गिनने लगा— सोलह सत्रह, इत्यादि। दूसरा जेलर अन्दर दूसरे फाटकपर खड़ा था। वह भी मुलाकातियोंको उनके कन्धोंपर हाथ रखे हुए गिनता जाता था जिससे निकलते समय ऐसा न हो कि कोई मुलाकाती अन्दर हो जाय और कोई कैदी बाहर चला जाय। जेलरने बिना इस बातको देखे हुए कि वह किसको छू रहा है, नेख्लीडूके कन्धेपर हाथ मारा जिससे उसको बुरा मालूम हुआ लेकिन यह बात याद करके कि मैं किस कामके लिए आया हूँ, नाराज होने और बुरा माननेपर उसे शर्म मालूम हुई। फाटकके पीछे एक बड़ा ठाटदार कमरा था, जिसकी छोटी-छोटी खिड़कियोंमें लोहेकी छड़ें लगी थीं। इसे मिलनेका कमरा कहते थे। यहाँपर हजरत ईसाकी सूलीपर टँगी तस्वीर लगी थी जिसे देखकर नेख्लीडूको आश्चर्य हुआ।

नेख्लीडूने मनमें सोचा—इस तस्वीरका यहाँ क्या काम? क्योंकि इस तस्वीरका विषय तो स्वतंत्रता है, न कि बंधन।

नेख्लीडू अपने विचारोंमें इतना मग्न था कि उसने जेलरकी बातोंपर कुछ ध्यान नहीं दिया और मुलाकातियोंके पीछे-पीछे बढ़ता गया और औरतोंवाले हिस्सेमें जानेके बजाय मरदोंवाले हिस्सेमें पहुँच गया।

नेख्लीडूने अधिक उत्सुक लोगोंको पहले जाने दिया और खुद मिलनेके कमरेमें पीछे पहुँचा। दर्वाजा खोलनेपर उसको एकदम सैकड़ों

आदमियोंके बोलनेकी आवाज कान फोड़नेवाली मालूम हुई जिसकी वजह वह फौरन न समझ सका। लेकिन जब वह नजदीक पहुँचा तो उसने देखा कि कमरेके बीचमें एक तारकी जाली लगी है, और लोग इस जालीपर ऐसे टूट रहे हैं जैसे शक्करपर मक्खियाँ टूटती हों। इसका मतलब अब वह समझ गया। एक नहीं बल्कि तारकी दो जालियाँ इस कमरेको, जिसकी खिड़कियाँ उस फाटकके बराबर थीं जिससे होकर वह आया था, दो हिस्सोंमें बाँट देती थीं अर्थात् ये दोनों जाल फर्शसे छततक कमरेके बीच-बीचमें लगे थे। इन दोनों तारके जालोंमें सात फुटका अन्तर था। इस अन्तरालमें सिपाही लोग टहलते रहते थे। एक जालके उस तरफ कैदी थे और इस जालके इस तरफ मुलाकाती। इनके बीचमें तारोंके दो जाल लगे थे जिनमें सात फुटका फर्क था ताकि कैदी और मुलाकाती एक दूसरेको कुछ ले दे न सकें। जिनकी आँखें कमजोर हों वे पहचान भी नहीं सकते थे। बातचीत करना भी मुश्किल था और एक दूसरेतक अपनी आवाज पहुँचानेके लिए चिल्लाना पड़ता था। जालोंके इधर-उधर चेहरे ही चेहरे दिखाई देते थे। पति-पत्नी, माता-पिता और बच्चोंके चेहरे इस जालीमें धँसे जाते थे और एक दूसरेकी आकृति देखनेके लिए लालायित हो रहे थे और जो कुछ कहना था वह इस ढंगसे कहते थे कि समझमें आ जाय।

हरएक इस बातकी कोशिश करता था कि उसकी बात वह आदमी सुन ले जिसे वह सुनाना चाहता है। इसके पासवाला आदमी भी यही कोशिश करता था। फल यह होता था कि एक दूसरेकी आवाज टकरानेमें कोलाहल हो जाता था। इसी कोलाहलको नेखलीडूने घुसते ही सुना था। एक दूसरेकी बात सुन पाना बिलकुल असम्भव था। सिर्फ चेहरे ही दिखाई देते थे और चेहरेसे ही पता चल सकता था कि क्या बात हो रही है, या बात करनेवालोंका आपसका क्या रिश्ता है। नेखलीडूके पास ही एक बुड्ढी औरत अपने सरके चारों ओर रूमाल बाँधे तारकी जालीको दबाये खड़ी थी। उसकी ठुड्डी काँप रही थी और

वह एक पीले रंगके नौजवानसे, जिसका आधा सर घुटा हुआ था और जो अपनी भौंहें उठाये ध्यानसे सुननेकी कोशिश कर रहा था, जोर जोरसे कुछ कह रही थी। इस बुढ़ियाके पास एक और नौजवान आदमी किसानों ऐसा कोट पहने खड़ा था। वह सर हिला-हिलाकर एक लड़केकी बात सुन रहा था जो उसीकी तरहका था। इसके बाद चिथड़े पहने एक दूसरा आदमी खड़ा था जो अपने हाथ हिलाता था, हँसता था और चिल्लाता था। इसके बाद एक और औरत थी जो एक अच्छा ऊनी शाल अपने कंधेपर डाले हुए थी और गोदमें एक बच्चेको लिये हुए बैठी रो रही थी। शायद यह पहला अवसर था कि इस औरतने सफेद बालोंवाले आदमीको कैदीकी पोशाकमें और सर मुँड़ाये हुए देखा था। इसके बाद वह दरबान था जिससे नेखलीडूसे बाहर बात-चीत हुई थी। यह जोरोंसे चिल्लाकर सफेद बालोंवाले कैदीसे बात-चीत कर रहा था।

जब नेखलीडूने यह समझा कि मुझे ऐसी स्थितिमें बात-चीत करनी पड़ेगी तो उसके दिलमें उन लोगोंके प्रति घृणाके भाव पैदा हुए, जिन्होंने ऐसी स्थिति पैदा की थी और जो इसे जारी रख रहे थे। उसे इस बातपर आश्चर्य हुआ कि ऐसी भयंकर स्थितिमें पड़कर मनुष्य-भावनाके ऊपर कुठाराघात होते हुए देख कोई बुरा क्यों नहीं मानता। सिपाही, इन्स्पेक्टर और कैदी लोग खुद ऐसा व्यवहार कर रहे थे मानो वे इस स्थितिको आवश्यक मानते हों।

नेखलीडू इस कमरेमें करीब पाँच मिनट रहा। वह उदास हो गया। उसने देख लिया कि मैं कितना असहाय और सारी दुनियासे दूर हूँ। उसकी तबीयतमें आश्चर्यजनक रूपसे नैतिक मतली पैदा हुई जैसी जहाजमें बैठनेसे होती है।

———

सैंतीसवाँ अध्याय

"जिस कामके लिए मैं आया हूँ उसे करना चाहिये।" नेख्लीडूने अपने दिलको मजबूत करते हुए कहा "अब क्या किया जाय?" वह इधर-उधर देखने लगा। एक दुबला-पतला छोटा-सा आदमी अफसरकी वर्दी पहने मुलाकातियोंके पीछे टहल रहा था। उसके पास नेख्लीडू गया।

"महाशय, मुझे आप बता सकेंगे?" बहुत ही शिष्टतासे उसने पूछा "औरतें कहाँ रखी जाती हैं और उनसे कहाँ मुलाकात हो सकती है?"

"क्या आप औरतोंकी तरफ जाना चाहते हैं?"

"जी हाँ, मुझे एक कैदी औरतसे मिलना है।" नेख्लीडूने शिष्टतासे कहा।

"जिस समय आप बड़े कमरेमें थे उसी समय बता देना चाहिये था। आप किससे मिलना चाहते हैं?"

"मैं कैट्रिना मस्लोवा नामकी कैदीसे मिलना चाहता हूँ।"

"क्या वह राजनीतिक कैदी है?"

"नहीं! वह मामूली—।"

"और क्या उसे सजा हो गयी है?"

"जी हाँ, परसों सजा हुई है। नेख्लीडूने इस डरसे नम्रतासे कहा कि कहीं इन्स्पेक्टरका मिजाज बिगड़ न जाय जो अभीतक उसके प्रति सहानुभूतिपूर्ण था।

"अगर आप औरतोंके हिस्सेमें जाना चाहते हैं तो इधरसे आइये।" अफसरने कहा। नेख्लीडूकी चाल-ढालसे उसने यह समझ लिया था कि यह आदमी ऐसा है जिसपर विशेष ध्यान दिया जाय। सिडरफ! इन

महाशयको औरतोंके हिस्सेमें ले जाओ।" इन्स्पेक्टरने एक मूँछोंवाले जमादारकी तरफ फिरकर कहा। जमादारके सीनेपर तमगे लगे थे।

"बहुत अच्छा।"

इसी क्षण जालके नजदीकसे किसीके सिसकनेका हृदयविदारक शब्द सुनाई पड़ा।

नेख्लीडूको इस जगह हर बात आश्चर्यजनक दिखाई दी। सबसे ज्यादा आश्चर्यजनक उसे यह मालूम हुआ कि इन इन्स्पेक्टर और चीफ जेलरोंको धन्यवाद देना पड़ता है और उनका एहसान उठाना पड़ता है, जो इस मकानमें निर्दयतापूर्ण काम करनेके भागी हैं।

जमादार नेख्लीडूको मर्दोंके कमरेसे निकालकर बरामदेमें ले गया, और वहाँसे सीधे बराबरके फाटकसे होते हुए उसे औरतोंके मुलाकातके कमरेमें पहुँचा दिया।

यह कमरा भी मर्दोंके कमरेकी तरह तारकी जालियोंसे दो हिस्सोंमें बँटा था, लेकिन यह उससे छोटा था। यहाँ मुलाकाती भी कम थे और कैदी भी कम। लेकिन शोर और चिल्लाहट उतनी ही थी जितनी मर्दोंके कमरेमें। अधिकारी लोग जालीके बीचमें उसी तरह टहलते थे। लेकिन इस जगहपर एक स्त्री वार्ड अधिकारी थी, जो एक नीले किनारेके सलूकेकी, जिसमें आस्तीनपर सुनहरे रंगकी डोरी लगी हुई थी, वर्दी पहने हुए थी और नीले रंगकी पेटी बाँधे थी। यहाँ भी आदमियोंके कमरेकी तरह लोग तारकी जालीको दोनों तरफसे दबाये हुए थे। इधरकी तरफ यानी मुलाकातियोंकी तरफ शहरके आदमी थे, जो हर किस्मके कपड़े पहने हुए थे। उधरकी तरफ कैदी स्त्रियाँ थीं जिनमें कुछ जेलका सफेद कपड़ा और कुछ रंगीन पहने हुए थीं। कुछ लोग अँगूठेपर खड़े हो होकर, दूसरोंके सरसे ऊँचे हो होकर, अपनी बात सुनवानेकी कोशिश करते थे। कुछ फर्शपर बैठे बातें करते थे।

अपनी तीखी चिल्लाहट और चालढालके लिहाजसे सबसे अधिक उल्लेखनीय कैदी एक दुबली-पतली, बाल बिखेरे हुए, जिप्सी थी। इसके

सरका रूमाल इसके घुँघराले बालोंसे सरककर नीचे गिर गया था। कैदियोंकी पंक्तिमें खड़ी यह कुछ चिल्ला रही थी। यह एक जिप्सी पुरुष-से, जो नीले रंगका कोट पहने और उसके ऊपर कमरके नीचे पेटी बाँधे हुए था, तेजीसे कुछ इशारा कर रही थी। जिप्सी पुरुषके पास एक सैनिक जमीनपर बैठा एक कैदीसे बात कर रहा था। सिपाहीके बाद एक नौजवान किसान, जिसके अच्छी खासी दाढ़ी थी, जालीको जोरोंसे दबाये खड़ा था। उसका चेहरा उत्तेजित था और यह मुश्किलसे अपने आँसू दबा पाता था। एक सुन्दर अच्छे बालोंवाली कैदी, जिसकी आँखें भूरी थीं, इससे बात कर रही थी। यह थ्यूडूसिया थी और वह उसका पति था। इसीके बाद एक शोहदा था जो एक चौड़े चेहरेवाली स्त्रीसे बातें कर रहा था। इसके बाद दो औरतें थीं, एक मर्द था, फिर एक औरत थी और इनमें हर एकके सामने एक एक कैदी था। मस्लोवा इनमें नहीं थी लेकिन खिड़कीके पास कैदियोंके पीछे कोई खड़ा था। और नेख्लीडूने जान लिया कि यह वही है। इसका दिल तेजीसे धड़-कने लगा और साँसें रुकने लगीं। निर्णयकी घड़ी सामने आ गयी थी। नेख्लीडू जालीके पास गया। उसने कटूशाको पहचान लिया। यह नीली आँखोंवाली थ्यूडूसियाके पीछे खड़ी थी और थ्यूडूसियाकी बात सुनकर मुस्कराती थी। वह जेलके कपड़ोंमें नहीं थी बल्कि सफेद कपड़ा पहने थी जिसके ऊपर उसने कमरपर पेटी कस ली थी। उसका सीना उभरा हुआ था। सरके रूमालके नीचेसे कुछ काले बाल दिखाई दे रहे थे जैसे कि अदालतमें दिखाई दे रहे थे।

"एक क्षणमें सब कुछ निर्णय हो जायेगा।" नेख्लीडूने अपने दिल-में सोचा "मैं इसे कैसे पुकारूँ या यह खुद आ जायेगी ?"

कटूशा बर्थाका इन्तजार कर रही थी। उसके मनमें यह कल्पना भी नहीं आयी थी कि यह आदमी उससे मिलने आया है।

"आप किससे मिलना चाहते हैं ?" उस वार्डरने, जो तारोंके बीचमें टहल रही थी, नेख्लीडूके पास आकर कहा।

"कैट्रिना मस्लोवासे।" नेख्लीडूने कठिनाईसे कहा।

"कैट्रिना मस्लोवा! कोई तुमसे मिलने आया है।" वार्डरने जोरसे कहा।

मस्लोवाने चारों तरफ देखा। अपना सर जरा पीछे खींचकर तथा सीना उभारकर वह जालीके पास फुर्तीसे आ गयी। कैदियोंके बीचसे निकलकर उसने नेख्लीडूको आश्चर्यजनक और प्रश्नात्मक दृष्टिसे देखा। लेकिन उसके कपड़ेसे यह नतीजा निकालकर कि यह कोई अमीर आदमी मालूम होता है वह मुस्करायी।

"आप मुझसे मिलना चाहते हैं?" उसने पूछा। और जालीके नजदीक आकर अपनी तिरछी चितवनसे नेख्लीडूको देखकर मुस्करायी।

"मैं......मैं......मै तुमसे मिलना चाहता था", "मै तुमसे... मैं।" नेख्लीडू अपने स्वाभाविक स्वरसे ज्यादा तेज नहीं बोल रहा था।

"फिजूल न बको, मैं बताये देता हूँ।" उस शोहदेने, जो नजदीक खड़ा था, चिल्ला कर कहा "तुमने लिया या नहीं?"

"बहुत कमजोर है, मरनेवाली है।" किसी दूसरेने दूसरी ओरसे चिल्लाकर कहा।

मस्लोवा नेख्लीडूकी कोई बात न सुन सकी लेकिन उसके चेहरेके भावने उसे किसी ऐसी चीजकी याद दिलायी जिसे वह याद करना नहीं चाहती थी। उसके चेहरेसे मुस्कराहट जाती रही और माथेपर वेदनाकी गहरी रेखा खिंच गयी।

"मुझे आपकी बात सुनाई 'नहीं देती।" उसने भौंहें चढ़ाते हुए और तेवर बदलते हुए जोरसे कहा।

"मैं आया हूँ"......नेख्लीडूने कहा।

"मैं अपना कर्तव्य कर रहा हूँ। मैं अपने पापको स्वीकार कर रहा हूँ।" नेख्लीडूने अपने मनमें कहा और इस विचार मात्रसे ही उसकी आँखोंमें आँसू डबडबा आये, उसका गला रुँध गया और तारको दोनों हाथोंसे पकड़कर उसने फूट-फूट रो पड़ने से अपनेको रोका।

"वह अच्छी होती हो तो मैं न आता।" कोई उसके पास चिल्ला उठा।

"ईश्वर मेरा साक्षी है, मैं कुछ नहीं जानती।" एक कैदी दूसरी तरफसे चिल्ला उठी।

मस्लोवाने नेख्लीडूकी बेताबी देखी और पहचान गयी।

"आप तो……लेकिन नहीं, मुझे याद नहीं आता!" उसने जोरसे बिना उसकी तरफ देखे कहा। उसका उत्तेजित चेहरा और भी उदास हो गया।

"मैं तुमसे क्षमा माँगने आया हूँ।" नेख्लीडूने जोरसे लेकिन ऐसे स्वरसे कहा जैसे कोई कंठ किया हुआ सबक पढ़ता हो।

यह कहनेके बाद नेख्लीडू हकबका-सा गया, उसने चारों तरफ देखा, लेकिन फौरन ही उसे खयाल आया कि अगर लज्जा मालूम होती है तो अच्छी बात है। मुझे यह लज्जा सहन करनी चाहिये। अब नेख्लीडूने जोरसे कहा "मुझे क्षमा करो, मैंने तुम्हारे साथ घोर अन्याय किया है।"

मस्लोवा चुपचाप खड़ी रही और तिर्छी निगाहसे उसे देखती रही।

नेख्लीडू और ज्यादा न बोल सका। जालीसे हटकर उसने अपनी सिसक, जो उसके गलेको रूँध रही थी, दबानेकी कोशिश की।

जिस इन्स्पेक्टरने नेख्लीडूको औरतोंके हिस्सेमें भिजवाया था और जिसे उसमें कुछ दिलचस्पी पैदा हो गयी थी, वह इस कमरेमें आया। उसने नेख्लीडूको जालीके पास न देखकर पूछा कि आप जिस औरतसे मिलने आये थे उससे क्यों नहीं मिलते। नेख्लीडूने नाक साफ की, अपने शरीरको एक झटका दिया, और यह दिखाते हुए कि मैं बिलकुल शान्त हूँ कहा—"इन जालियोंमेंसे बात करना बहुत मुश्किल है। कुछ सुनाई नहीं देता।"

इन्स्पेक्टर थोड़ी देरतक सोचता रहा। "यह बात है? तो मैं उसे थोड़ी देरके लिए बाहर बुलवाता हूँ… मेरी कारलोभ्ना!" उसने वार्डर-की तरफ झुककर कहा "मस्लोवाको बाहर लाओ।"

———

अड़तीसवाँ अध्याय

एक मिनटके बाद मस्लोवा बगलके दर्वाजेसे वहाँ आ गयी। धीमे-धीमे क़दम रखती हुई वह नेख्लीडूके पास आयी और रुक गयी, और अपनी भौंहोंके नीचेसे उसको देखने लगी। उसके काले बाल उसके माथेपर उसी तरह घुँघराले बँधे हुए थे जैसे दो दिन पहले। उसका चेहरा यद्यपि अस्वस्थ और भभरिआया हुआ था फिर भी बिलकुल शान्त और आकर्षक था। लेकिन उसकी चमकदार काली आँखें खुली हुई पलकोंमेंसे अजीब तरीकेसे देख रही थीं।

"आप यहाँ बात कीजिये।" कहकर इन्स्पेक्टर हट गया। नेख्लीडू दीवारके पास रखी हुई बेंचकी तरफ बढ़ा।

मस्लोवाने इन्स्पेक्टरकी तरफ प्रश्नात्मक दृष्टिसे देखा, फिर ताज्जुबसे अपने कन्धोंको उचकाते हुए नेख्लीडूके पीछे पीछे अपनी साड़ी समेटकर बेंचपर उसके पास बैठ गयी।

"मैं जानता हूँ कि मुझे क्षमा करना तुम्हारे लिए कितना कठिन है।" नेख्लीडूने कहना शुरू किया लेकिन फिर रुक गया। आँसुओंसे उसका गला रुँध रहा था। "यद्यपि जो कुछ हो गया उसे मैं नहीं सुधार सकता फिर भी जो कुछ मेरी शक्तिमें है, मैं करूँगा, मुझे बताओ—।

"आपने मेरा पता कैसे लगा लिया?" मस्लोवाने नेख्लीडूके प्रश्नोंका उत्तर देते हुए तिरछे नेत्रोंसे न तो उसकी ओर, न और किसी दूसरी ओर देखते हुए पूछा।

"ईश्वर मेरी मदद करे, मुझे सन्मार्ग दिखावे" नेख्लीडूने अपने दिलमें कहा और मस्लोवाके चेहरेकी ओर देखा जो अब बिलकुल बदल गया था और जिसमें कोई मधुरता नहीं रह गयी थी। "मैं परसों ज्यूरीमें था!" नेख्लीडूने कहा "तुमने मुझे नहीं पहचाना?"

"नहीं, मैंने नहीं पहचाना। वह कोई पहचाननेका वक्त था? मैंने तो देखातक नहीं।"

"एक बच्चा था न?" नेख्लीडूने पूछा और झेंप गया।

"ईश्वरकी कृपासे वह फौरन ही मर गया।" कटूशाने झटपट कुछ बिगड़ते हुए और उसकी तरफसे अपना मुँह हटाते हुए कहा।

"इसका क्या मतलब?"

"मैं खुद बीमार थी और मरते मरते बची।" मस्लोवाने कहा और अपनी निगाह नीचे ही रखी।

"मेरी फूफीने तुम्हें क्यों जाने दिया?"

"बच्चेवाली नौकरानीको कौन रखता है? जैसे ही उन्हें पता चला, उन्होंने मुझे निकाल दिया। लेकिन उन बातोंमें अब क्या रखा है। मुझे कुछ याद नहीं, वे सब बातें तो अब खतम हो गयीं।"

"अभी खतम नहीं हुई हैं। मैं अपने पापका प्रायश्चित्त करना चाहता हूँ।"

"अब किस बातका प्रायश्चित्त हो सकता है! जो होना था सो हो गया।" कहकर कटूशाने कटु किन्तु मनोहर और दयनीय दृष्टिसे नेख्लीडूकी तरफ देखा जिसकी आशा नेख्लीडूको बिलकुल न थी।

नेख्लीडूको देखनेकी आशा मस्लोवाको बिलकुल नहीं थी। और यहाँ तो मिल सकनेकी उसे कोई आशा थी ही नहीं इसलिए जब उसने पहली बार नेख्लीडूको पहचाना तो वह उन स्मृतियोंको नहीं दबा सकी जिन्हें वह कभी भी जाग्रत करना नहीं चाहती थी। पहले तो उसे इस बातकी धुँधली सी याद आयी कि इस सुन्दर नौजवानके सम्पर्कमें आनेसे, जिसको मैं चाहती थी और जो मुझे चाहता था, भावना और विचारका किस प्रकार एक नया क्षेत्र मेरे लिए खुल गया था और इसके बाद नेख्लीडूकी निर्दयता, घोर निष्ठुरता याद आयी और यातना, अपमान तथा परितापकी सारी शृंखला याद पड़ गयी जो उस जादू ऐसे आनन्दके बाद कटूशाको सहन करना पड़ा था। उसको आत्मिक कष्ट

हुआ लेकिन वह इस कष्टका कारण न समझ सकी। इसलिए उसने वही किया जो हमेशा किया करती थी, अर्थात् उसने पतित जीवनके परदेमें इन स्मृतियोंको ढककर छुटकारा पा लिया। पहले तो उसने इस आदमीको, जो इसके बगलमें बैठा था, यह समझा कि यह वह नवयुवक है जिससे मैं प्रेम करती थी लेकिन उसने जब यह देखा कि ऐसा समझनेसे तकलीफ ही होती है, उसने पुराने और नये नेख्लीडूको दो अलग व्यक्ति समझना शुरू कर दिया। उसने अपने मनको समझाया कि यह, अच्छे-अच्छे कपड़े पहने, सजा-धजा खुशबूदार दाढ़ीका भला आदमी वह नेख्लीडू नहीं जिसको मैं कभी चाहती थी, बल्कि वह तो उन अनेक आदमियोंमेंसे एक है जो जरूरत पड़नेपर मेरा उपयोग करते थे और जिनसे मुझ ऐसे प्राणी, बदलेमें, जितना मुनाफा उठा सकते थे, उठाते थे। और इसलिए उसने इसकी तरफ आज मनोहर मुस्कराहटसे देखा था। वह चुप थी और विचार करती थी कि इससे कैसे फायदा उठाया जाय।

"वे सब बातें तो खतम हो गयीं।" उसने कहा "अब तो मैं साइबेरियाको निर्वासित कर दी गयी हूँ।" इन भयंकर शब्दोंको कहते कहते उसके होठ काँपने लगे।

"मैं जानता था, मुझे दृढ़ विश्वास था कि तुम निर्दोष हो।" नेख्लीडूने कहा।

"दोषी! मैं बिलकुल दोषी नहीं हूँ। जैसे अगर कोई मुझे चोर या डाकू कहे तो झूठा है। यहाँ लोग कहते हैं कि सब कुछ वकीलपर निर्भर होता है।" मस्लोवाने कहा "अपील होनी चाहिये, लेकिन कहते हैं कि उसमें खर्च बहुत होगा।"

"हाँ, अपील जरूर होनी चाहिये।" नेख्लीडूने कहा "मैंने वकीलसे बातें कर ली हैं।"

"रुपये पैसेका मुँह न देखना चाहिये और अच्छा वकील करना चाहिये।" मस्लोवाने कहा।

"जो कुछ हो सकता है, मैं जरूर करूँगा।"

थोड़ी देरके लिए दोनों चुप हो गये। कटूशा फिर उसी तरह मुस्करायी।

"अगर कुछ रुपया आप मुझे दे सकें तो बड़ा अच्छा हो।" कटूशाने सहसा कहा "ज्यादा नहीं; दस रूबल।"

"हाँ हाँ"। नेख्लीड्रूने हकबकाते हुए कहा और अपनी पाकेटबुक टटोली।

कटूशाने तेजीसे इन्स्पेक्टरकी तरफ देखा जो कमरेमें इधर उधर टहल रहा था।

"इसके सामने न दीजियेगा, नहीं तो यह छीन लेगा।"

ज्यों ही इन्स्पेक्टरकी पीठ फिरी, नेख्लीड्रूने अपनी पाकेटबुक निकाली। अभी मस्लोवाको नोट न दे पाया था कि इन्स्पेक्टर इधर फिर गया। इसलिए उसने इस नोटको अपने ही हाथमें दबा रखा। "यह औरत मर चुकी है" नेख्लीड्रूने अपने दिलमें कहा और कटूशाके चेहरेकी तरफ देखा जो कभी मधुर था और अब कलुषित और फूल-सा गया था। इसकी काली और बाँकी आँखोंमें, जो इस समय कभी इन्स्पेक्टरके आने-जानेको देखती थी और कभी इसके हाथमें दबे नोटको, अब एक दूषित चमक दिखाई देती थी। थोड़ी देरतक यह संकोच करता रहा। प्रलोभक शैतानने जो इससे रातमें बातचीत कर रहा था, फिर अपना सर उठाया। वह आन्तरिक जीवनके साम्राज्यसे निकालकर बाह्य जीवनके साम्राज्यमें लानेकी कोशिश करने लगा। और इस प्रश्नसे, कि अब क्या करना चाहिये, हटाकर उसे इस प्रश्नपर लाने लगा कि इसका क्या फल होगा, और व्यावहारिक बात क्या है।

"तुम इस स्त्रीका कुछ उपकार नहीं कर सकते।" इस प्रलोभकने कहा। तुम अपनी गर्दनके चारो तरफ सिर्फ एक पत्थर बाँध लोगे जो तुमको भी डुबा देगा, और दूसरोंके साथ उपकार करनेसे भी तुम्हें रोक देगा। क्या यह अच्छा न होगा कि जितना पैसा तुम्हारे पास है, सबका

सब इसे दे दो और इसे सलाम करो और हमेशाके लिए इससे अलग हो जाओ।" प्रलोभककी आवाजने धीरेसे कहा।

लेकिन फिर भी नेख्लीडूने यह अनुभव किया कि उसी क्षण आत्मा· में एक महत्त्वपूर्ण बात जाग्रत हो रही थी—। इसकी अन्तरात्मा इस समय तराजूपर तौली जा रही थी। जरा-सा भी जोर इधर या उधर पड़ जानेसे यह नीचे या ऊँचे आ सकती है। और नेख्लीडूने इस तराजू पर जोर डालनेके लिए उस ईश्वरसे सहायता मॉंगी जिसकी मौजूदगीका अनुभव इसने अपनी आत्मामें एक दिन पहले कर लिया था। ईश्वर तुरन्त ही इसके आवाहनपर बोल उठा। नेख्लीडूने कटूशासे हर एक बात फौरन कह देनेका निश्चय कर लिया।

"कटूशा! मैं तुम्हारे पास क्षमा माँगने आया हूँ और तुमने मुझे उसका कोई उत्तर नहीं दिया। क्या तुमने मुझे क्षमा कर दिया? क्या तुम मुझे कभी क्षमा करोगी?" नेख्लीडूने पूछा।

मस्लोवाने उसकी बात नहीं सुनी। वह तो कभी इन्स्पेक्टरको देखती थी, कभी नेख्लीडूके हाथको। ज्यों ही इन्स्पेक्टर फिरा, कटूशाने हाथ बढ़ाया और झटपट नोट लेकर पेटीके नीचे छिपा लिया।

"अजीब बात है। आप क्या कह रहे हैं!" मस्लोवाने मुस्कराकर कहा। नेख्लीडूको इस मुस्कराहटमें घृणा दिखाई दी।

नेख्लीडू यह देख रहा था कि कटूशाकी आत्मामें एक ऐसा व्यक्ति है जो मस्लोवाको वर्तमान दशामें बनाये रखनेमें उससे आग्रह कर रहा है और नेख्लीडूको उसके हृदयतक पहुँचनेसे रोक रहा है। लेकिन आश्चर्यकी बात तो यह हुई कि इसकी वजहसे वह दूर नहीं हटा बल्कि एक नवीन विशेष शक्तिसे प्रेरित होकर कटूशाके अति निकट आकर्षित हो गया। वह जानता था कि मुझे कटूशाकी आत्माको जाग्रत् करना है और यह काम बहुत कठिन होगा लेकिन इस कामकी कठिनता ही देखकर वह आकर्षित हुआ था। अब इसकी भावना कटूशाकी तरफ

ऐसी हो गयी जैसी उसकी तरफ या किसीकी भी तरफ कभी नहीं थी। अब वह कटूशासे अपने निमित्त कुछ भी नहीं चाहता था। वह सिर्फ यही चाहता था कि यह अब जो है वह न रहे बल्कि जो पहले थी वह हो जाय।

"कटूशा, तुम इस तरह क्यों बातचीत करती हो?" मैं तुमको जानता हूँ, मुझे तुम्हारी याद है और उन पुराने दिनोंकी याद है जब तुम पानोवमें थी।

"पिछली बातोंको याद करनेसे क्या फायदा?" उसने रूखे स्वरमें कहा।

"कटूशा! मैं पुरानी बातोंकी याद इसलिए करा रहा हूँ कि उनका सुधार और अपने पापका प्रायश्चित्त करूँ।" और नेख्लीडू यह कहने जा रहा था कि मैं तुम्हारे साथ शादी करनेको तैयार हूँ लेकिन जब कटूशासे उसकी आँखें चार हुईं, इन आँखोंमें नेख्लीडूने भयंकर, भद्दा और घृणित दृश्य देखा, और वह बोल न सका।

अब मुलाकाती लोग जाने लगे। इन्स्पेक्टर नेख्लीडूके पास आया और बोला कि समय हो गया।

"सलाम! मुझे अब भी तुमसे बहुत कुछ कहना है लेकिन तुम देखती हो कि अब मुमकिन नहीं है।" और हाथ मिलानेके लिए उसने अपना हाथ बढ़ाया। "मैं फिर आऊँगा।"

मस्लोवा नम्रतासे उठी और इस बातका इन्तजार करने लगी कि कोई इससे कहे कि जाओ।

"मैं समझती थी कि आपको जो कुछ कहना था, सब कह चुके।"

मस्लोवाने नेख्लीडूसे हाथ मिला लिया लेकिन उसे दबाया नहीं।

"नहीं, मैं सब बातें नहीं कह सका। मैं फिर मिलूँगा। ऐसी जगह-पर जहाँ हम बातें कर सकें। और तब, जो कुछ कहना है, कहूँगा। एक बहुत जरूरी बात कहनी है।"

"अगर यह बात है तो आइये और जरूर आइये।" मस्लोवाने जवाब दिया और उस किस्मसे मुस्करायी जैसी वह उन आदमियोंसे मुस्कराया करती थी जिनको वह खुश करना चाहती थी।

"तुम तो मेरे लिए बहनसे बढ़कर हो।" नेख्लीडूने कहा।

"आप विचित्र बात करते हैं!" कटूशाने सर हिलाते हुए फिर कहा और जालीके पीछे चली गयी।

उनतालीसवाँ अध्याय

इस मुलाकातके पहलेतक नेख्लीडू यह समझता था कि जब कटूशा मुझे देखेगी और यह जानेगी कि मेरा इरादा उसकी सेवा करनेका है तो वह खुश होगी, उसके हृदयपर असर पड़ेगा और वह पुरानी कटूशा हो जायेगी। लेकिन नेख्लीडूका हृदय काँप उठा जब उसने यह देखा कि उस कटूशाका तो अब नामोनिशान भी नहीं। उसकी जगहपर अब मस्लोवा विराजमान है। इससे उसे आश्चर्य भी हुआ और विह्वलता भी।

सबसे ज्यादा अचंभा नेख्लीडूको इस बातपर हुआ कि कटूशाको अपनी स्थितिपर लज्जा नहीं आती है—। कैदी होनेपर नहीं, कैदी होनेके लिए तो वह लज्जित थी, वेश्या होनेपर उसके हृदयमें लज्जा नहीं थी। वह इस अवस्थासे सन्तुष्ट थी बल्कि उसे इसपर गर्व भी था। इसके अलावा दूसरा कुछ हो भी नहीं सकता था। हरएक आदमी जब कुछ करना चाहता है तब उसे पहले अपने दिलको यह समझाना पड़ता है कि यह काम, या पेशा महत्त्वपूर्ण और अच्छा है। इसलिए आदमी चाहे जिस अवस्थामें हो, वह मनुष्योंके जीवनके बारेमें अपनी ऐसी ही धारणा बना लेता है कि मेरा पेशा महत्त्वपूर्ण और अच्छा साबित होना चाहिये।

लोग अक्सर ऐसा समझते हैं कि अगर कोई चोर या, हत्यारा, जासूस या वेश्या, अपने पेशेको खराब मान ले, तो उन्हें उसपर लज्जा आती है। लेकिन यह बात ठीक नहीं। सही बात बिल्कुल इससे उलटी है। जिन लोगोंको भाग्यने या उनके पापने किसी हैसियततक पहुँचा दिया है, वह हैसियत चाहे जितनी खराब क्यों न हो, ये लोग जीवनके बारेमें अपनी ऐसी धारणा बनाते हैं जिसमें इनकी हैसियत उचित और अच्छी साबित हो सके। जीवन संबंधी अपनी इस धारणाको

बनाये रखनेके लिए ये लोग उसी क्षेत्रमें रहते हैं जिस क्षेत्रके लोग इनसे सहमत हैं, या इन्हींकी तरह जीवन व्यतीत करते हैं। इसीलिए हमको ताज्जुब होता है जब हम सुनते हैं कि चोर लोग अपनी चोरीके बारेमें बड़ी बड़ी बातें करते हैं, या वेश्याएँ अपने दुराचारके सम्बन्धमें डींग मारती हैं या हत्यारे लोग अपनी निर्दयतापर गर्व करते हैं। लेकिन आश्चर्य इसलिए होता है कि इन लोगोंका क्षेत्र और वातावरण, जिसमें ये लोग रहते हैं, परिमित होता है और हम लोग इस क्षेत्रसे बाहर रहते हैं। यही बात हम अमीरोंमें भी देखते हैं, जब ये लोग अपने धन या डकैतीपर अभिमान करते हैं, सेनाओंके सेनापति जब अपनी विजयों-पर—हत्यापर—अभिमान करते हैं, और ऊँचे ओहदेपर बैठे हुए लोग अपने अख्तियार—उद्दंडतापर गर्व करते हैं। इन लोगोंके जीवनकी विषमता हम नहीं देख पाते क्योंक इनका क्षेत्र ज्यादा विस्तृत है और हम लोग भी उसी क्षेत्रके हैं।

इसी सिद्धान्तके अनुसार मस्लोवाने अपनी स्थिति और अपने जीवनके बारेमें अपने विचार बनाये थे। यह एक वेश्या थी जिसे साइ-बेरियामें निर्वासित कर दिया गया था। फिर भी जीवनके बारेमें उसकी अपनी धारणा थी। जिस धारणाके अन्तर्गत वह अपनेसे संतुष्ट, अपनी स्थितिपर गर्वके साथ संतृप्त रह सकती थी।

इस धारणाके अनुसार मनुष्य मात्रका—बुड्ढे, जवान, स्कूलके लड़के, सेनापति, शिक्षित और अशिक्षित सभीका—अन्तिम कल्याण या लक्ष्य सुन्दर स्त्रियोंके साथ सहयोग करना था। इसलिए सब आदमी, चाहे वे इसका कितना ही बहाना क्यों न करें कि वे दूसरे कामोंमें लगे हैं, वास्तवमें वे इसके अलावा किसी दूसरी चीजकी कामना नहीं रखते। मस्लोवा एक सुन्दरी थी और यह बात इसके अख्तियारकी थी कि वह इस कामनाकी तृप्ति करे या न करे। इसलिए वह एक महत्त्वपूर्ण और आवश्यक प्राणी थी। उसका पिछला और वर्तमान जीवन इस धारणा-की सचाईका समर्थन करता था।

अपने जीवनके पिछले दस सालमें वह चाहे जहाँ क्यों न रही हो, उसने यही देखा कि सभीको—चाहे नेख्लीडू रहा हो, या बुड्ढा पुलिस अफसर, ऊँचेसे ऊँचे आदमीसे लेकर जेलखानेके जेलरतक—उसकी जरूरत थी। क्योंकि जिन्हें उसकी जरूरत न थी, वह उन लोगोंको न तो देखती थी और न उनपर कुछ ध्यान देती थी। इसलिए सारा ससार उसे ऐसे प्राणियोंका समूह मालूम होता था जो कामबासनासे विक्षिप्त हों और जो हर एक सम्भव उपायसे धोखेबाजीसे, जबर्दस्ती, रुपया देकर या चालाकीसे उसपर कब्जा करना चाहते थे। मस्लोवाकी दृष्टिमें यह मनुष्यजीवनकी धारणा थी और अगर जीवनकी यह धारणा मान ली जाय तो उसमें इसकी हैसियत काफी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। इस धारणाको मस्लोवा सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण समझती थी; क्योंकि इसको मूल्यवान समझे बिना वह रह ही नहीं सकती थी। अगर एक दफा इस धारणाको वह छोड़ दे तो जीवनमें जो महत्त्व उसने समझ रखा है, जाता रहे। अतः अपने जीवनका महत्त्व बनाये रखनेके लिए वह इसी धारणापर आरूढ़ थी। जब उसने यह देखा कि नेख्लीडू मुझे इस दायरेसे निकालकर दूसरी दुनियामें ले जाना चाहता है तो उसने इसका विरोध किया; क्योंकि वह भाँप गयी कि जीवनमें मेरा महत्त्व जाता रहेगा और मेरे साथ उसने अपने बारेमें जो राय कायम कर रखी है वह भी जाती रहेगी। इसीलिए वह अपनी स्मृतिसे अपनी जवानीके पहले भागको, और नेख्लीडूके साथ अपने पुराने सम्बन्धको, बिल्कुल निकाल फेंकना चाहती थी। संसारके बारेमें जो धारणाएँ उसने बना ली थीं, पुरानी स्मृतियाँ उनसे टक्कर खाती थीं, इसलिए अपने मानसिक पटलसे उसने उन स्मृतियोंको भी धो डाला था, या यों कहना चाहिये कि उन्हें शहदकी मक्खियोंकी तरह, जो अपने परिश्रमके फलको अर्थात् शहदको बचाती हैं और उसके ऊपर मोमका गिलाफ चढ़ा देती हैं, बहुत नीचे दफन करके उनके ऊपर चुनाई कर दी थी ताकि वे कहीं बाहर न निकल आयें, इसलिए वर्तमान नेख्लीडू मस्लोवाके लिए वह आदमी

नहीं रह गया था, जिससे यह किसी समय सच्चा प्रेम करती थी। अब तो वह एक अमीर आदमी था जिससे यह फायदा उठाना चाहती थी और जिसके साथ केवल वही सम्पर्क रख सकती थी जो साधारणतया और मर्दोंके साथ रखती थी।

"नहीं, मैं असली बात उससे नहीं कह सका।" नेख्लीडू अपने मनमें सोचता जाता था और अन्य मुलाकातियोंके साथ-साथ फाटककी ओर चला जाता था। "मैंने उससे नहीं कहा कि मैं तेरे साथ शादी कर लूँगा, मैंने उससे ऐसा नहीं कहा, लेकिन मैं कहूँगा।" वह सोच रहा था।

फाटकपर उन दो जेलरोंने अब मुलाकातियोंको बाहर करना शुरू किया। ये लोग एक एकको अपने हाथसे छूते जाते थे और गिनते जाते थे ताकि कोई फालतू आदमी बाहर न चला जाय या कोई भीतर न रह जाय। कन्धेपर हाथकी थपकी इस मर्तबा नेख्लीडूको बुरी नहीं लगी। उसने इसपर ध्यानतक नहीं दिया।

चालीसवाँ अध्याय

नेख्लीडूने अपने सम्पूर्ण बाह्य जीवनको फिरसे संघटित करनेका इरादा किया।

"लेकिन यह ठीक नहीं मालूम होता।" उसने सोचा कि "जबतक मस्लोवाका मुकदमा तै न हो जाय, मैं अपने रहन-सहनके ढंगमें परिवर्तन कर दूँ। इसके अलावा यह मुश्किल काम भी है। अगर वह छूट गयी या निर्वासित हो गयी और मैं उसके साथ चला गया तो मेरे जीवनमें आप ही आप तब्दीली आ जायेगी।"

नियत तारीखपर नेख्लीडू फेनारिन वकीलके विशाल भवनपर पहुँचा। उसका बँगला बड़े-बड़े पाम और दूसरे पौधोंसे हराभरा दीखता था। बँगलेमें बड़े अच्छे-अच्छे पर्दे लगे थे। वास्तवमें इस बँगलेमें विलासकी अत्यन्त खर्चीली चीजें मौजूद थीं और इस बातका सबूत देती थीं कि इस बँगलेके मालिकने बिना मेहनतका रुपया कमाया है और जिसका प्रदर्शन वही लोग करते हैं जो जल्दी अमीर हो जाते हैं। बाहरके कमरेमें, जैसे डाक्टरोंके यहाँ होता है, उसने देखा कि बहुतसे आदमी उस मेजके पास उदास बैठे हैं, जिसपर तस्वीरदार अखबार उनके मनोरंजनके लिए रखे हैं और वकील साहबसे मिलनेके लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। वकील साहबका मुंशी कमरेमें एक ऊँची मेजपर बैठा था। नेख्लीडूको पहचानकर वह फौरन उसके पास आया और बोला कि मैं अभी जाकर इत्तला करता हूँ।

"अच्छा, राजकुमार नेख्लीडू हैं? आइये आइये!" फेनारिनने कहा और व्यापारीको एक दफा और सलाम करके वह नेख्लीडूको बात-चीत करनेके कमरेमें ले गया जो बहुत अच्छी तरह सजा-धजा था।

"सिगरेट लीजिये।" एडवोकेटने कहा। अब वह नेख्लीडूके सामने

बैठ गया। इसके होठोंपरसे मुस्कराहट नहीं दब रही थी; क्योंकि अभी जो सौदा इसने किया था उसकी सफलतासे यह आनंदित हो रहा था।

"धन्यवाद! मैं मस्लोवावाले मुकदमेके सिलसिलेमें आया हूँ।"

"अच्छा अब आपके मुकदमेके बारेमें, या यों कहिये कि उस मुकदमेके बारेमें जिसमें आपकी दिलचस्पी है, मैं यह कहता हूँ कि यह मुकदमा बहुत बुरी तरह लड़ा गया। अपील करनेकी कोई मुनासिब बिना नहीं है। फिर भी" वकील साहब ने कहा "यह कोशिश की जा सकती है कि सजा मन्सूख हो जाय और यही मैंने लिखा है।" उसने कागजके कई पन्नोंको, जिनपर खूब लिखा हुआ था, उठा लिया और तेजीसे पढ़ना शुरू किया। नीरस कानूनी शब्दावलीको वह छोड़ता जाता था, और चन्द जुमलोंपर विशेष जोर देता था।

"जो कुछ हो सकता था, मैंने इसमें कर लिया है, लेकिन सच तो यह है कि मुझे सफलताकी बहुत कम आशा है, हालाँ कि सब कुछ इसपर निर्भर है कि उस दिन सिनेटमें कौन कौन सदस्य उपस्थित रहेंगे। अगर उन लोगोंमे आपका किसीपर प्रभाव हो तो कोशिश कीजिये।"

"मैं उनमेंसे कई सदस्योंको जानता तो हूँ।"

"तो ठीक है। लेकिन जल्दी करनी चाहिये, नहीं तो ये लोग अपनी बवासीरका इलाज कराने बाहर चले जायँगे। फिर आपको तीन महीने तक इन्तजार करना पड़ेगा। और अगर नाकामयाबी रही तो सम्राट्के यहाँ एक और अपील हो सकती है। और इसमें सफलता भी तभी हो सकती है जब आप परदेके पीछे कुछ तिकड़म कर सकें। उस हालतमें भी मैं आपकी खिदमत करनेके लिए तैयार हूँ। मेरा मतलब है कि मैं दरख्वास्तका मसविदा बना दूँगा। परदेके पीछे कुछ न कर सकूँगा।"

"आपकी कृपा है। मेहनतानेके लिए क्या हाजिर करूँ?"

"मुहर्रिर आपको अपीलका मसविदा दे देगा, और मेहनताना भी बता देगा।"

"एक बात और पूछना चाहता हूँ। प्रोक्योररने मुझे इस व्यक्तिसे जेलमें मिलनेके लिए एक पास दिया था, लेकिन यहाँके लोग कहते हैं कि अगर दूसरे कमरेमें या दूसरे समय मुलाकात करनी हो तो गवर्नरसे इजाजत लेनी होगी। क्या यह जरूरी है?"

"जी हाँ, मेरा खयाल है कि यह जरूरी है। लेकिन गवर्नर आज-कल बाहर गये हैं और उनकी जगहपर सहायक गवर्नर काम कर रहे हैं। लेकिन ये तो इतने काठके उल्लू हैं कि मुश्किलसे आप इनसे कोई काम निकाल सकेंगे।"

"सहायक गवर्नर, मेसलेनीकफ हैं न?"

"जी हाँ।"

"मैं उन्हें जानता हूँ।" नेख्लीडूने कहा। वह उठकर खड़ा हो गया।

बाहरके कमरेमें मुहर्रिरने लिखी हुई अर्जी नेख्लीडूको दी और यह बताया कि मेहनताना एक हजार रूबल हुआ। उसने यह भी कहा कि फेनारिन साहब साधारणतः इस किस्मका काम नहीं करते। लेकिन उन्होंने आपके ऊपर खास मेहरबानी करके यह काम कर दिया है।

"अब इस अर्जीका क्या होगा? इसपर कौन हस्ताक्षर करेगा?"

"कैदी खुद हस्ताक्षर कर सकती है। और इसमें अगर असुविधा हो तो फेनारिन साहब भी हस्ताक्षर कर सकते हैं बशर्ते कि वह उनके नामके वकालतनामेपर हस्ताक्षर कर दे।"

"नहीं नहीं, मैं इस अर्जीको लेकर उसके पास जाऊँगा और उससे हस्ताक्षर करा लाऊँगा।" नेख्लीडूने कहा और दिलमें खुश हुआ कि नियत दिनसे पहले मस्लोवासे मिलनेका एक बहाना मिल गया।

— —

इकतालीसवाँ अध्याय

नियत समयपर जेलरने जेलके बरामदेमें सीटी बजायी। कोठरियोंके फौलादी दर्वाजे खड़खड़ाने लगे। नंगे पैरोंकी भदभदाहट और एड़ियोंकी खटपट सुनाई देने लगी। जो कैदी भंगीका काम करते थे वे बरामदेसे निकलने लगे। आसपासकी हवा बड़ी बदबूदार हो गयी। कैदी लोग मुँह-हाथ धोकर और कपड़े पहनकर सुआइनेके लिए बाहर आये और फिर अपनी अपनी चायके लिए गरम पानी लेने चले गये।

नाश्तेके समय कैदियोंमें जोरोंके साथ बातचीत हो रही थी। बातचीतके विषय थे दो कैदी, जिन्हें उस दिन बेत लगाये गये थे। एक कैदी वेसलिव था। यह कुछ पढ़ा-लिखा नवयुवक क्लर्क था। इसने ईर्ष्यावश अपनी प्रेमिकाको मार डाला था। इसके साथके कैदी इसे बहुत पसन्द करते थे; क्योंकि यह हँसमुख और उदार था और जेलके अधिकारियोंसे कट्टरताका व्यवहार करता था। इसे जेलका कायदा-कानून मालूम था और यह इसी कायदा-कानूनके अनुसार व्यवहार किये जानेका आग्रह किया करता था। इसीलिए जेलके अफसर इसे नापसन्द करते थे।

तीन हफ्ते पहले एक जेलरने एक भंगीको इसलिए मारा था कि उसने जेलरकी वर्दीपर कुछ साबुन गिरा दिया था। वेसलिवने भंगीका पक्ष लिया। वह कहता था कि कैदीको मारना कायदेके खिलाफ है।

"मैं तुम्हें कायदा-कानून पढ़ाऊँगा।" जेलरने गुस्सेसे कहा और वेसलिवको गालियाँ देना शुरू किया। वेसलिवने भी उसी तरह जवाब दिया। इसपर जेलरने इसे मारना चाहा मगर वैसलिवने जेलरका हाथ पकड़ लिया और दो या तीन मिनटतक दबाये रहा, फिर हाथको मरोड़कर जेलरको दर्वाजेसे बाहर कर दिया। जेलरने इन्स्पेक्टरसे शिकायत की। तब इन्स्पेक्टरने यह हुक्म दिया कि वेसलिव तनहाईकी कोठरीमें बन्द

कर दिया जाय। तनहाईकी कोठरियाँ एक पंक्तिमें बनी थीं। ये अंध-कारमय दर्बे थे जिनको बाहरसे बन्द कर दिया जाता था। इनके अन्दर न तो चारपाई होती थी, न मेज और कुर्सी। जो इनमें रहता था उसे गंदे फर्शपर बैठना और लेटना पड़ता था। इन कमरोंमें सैकड़ों चूहे रहते थे जो आदमीके ऊपरसे भी दौड़ा करते थे। ये चूहे इतने निडर हो गये थे कि कैदियोंकी रोटियाँ चुरा ले जाते थे और अगर कैदी हिले-डुले न तो उसे काटने दौड़ते थे। वेसलिवने कहा कि मैं तनहाईकी कोठरीमें न जाऊँगा; क्योंकि मैंने कोई अपराध नहीं किया। लेकिन जेलके अधि-कारियोंने इसे जबर्दस्ती पकड़ लिया। इसपर इसने हाथ पैर फेंके, तब दो कैदियोंने आकर इसे जेलरोंसे छुड़ा दिया। इसपर जितने जेलर थे, सभी इकट्ठा हो गये। उनमें एक पेट्रफ भी था जो बहुत बलवान् समझा जाता था। इन लोगोंने कैदियोंको मारा-पीटा, जमीनपर गिरा दिया और इनको तनहाईकी कोठरियोंमें बन्द कर दिया। गवर्नरको फौरन सूचना दी गयी कि करीब करीब बलवा हो गया है। इसपर गवर्नरने यह हुक्म दिया कि दोनों खास अपराधियों अर्थात् वेसलिव और नेपो-मनेशचीको तीस-तीस बेत लगाये जायँ। औरतोंके मुलाकातके कमरेमें यह सजा दी जानेवाली थी।

यह खबर शामसे ही जेलखानेभरमें फैल गयी थी। और सब कोठरियोंमें कैदी लोग उत्सुकतासे इसी विषयपर बातचीत कर रहे थे।

कोराब्लेवा, होरोशावका, थ्यूडूसिया और मस्लोवा अपने कोनेमें पास बैठी चाय पी रही थीं। शराब पी लेनेकी वजहसे इनका चेहरा तम-तमाया हुआ था; क्योंकि मस्लोवा, जिसे अब बराबर शराब मिलती रहती थी, अपनी संगिनीको खूब पिलाती थी।

"उसने कोई बलवा थोड़े किया है।" कोराब्लेवाने वेसलिवका जिक्र करते हुए कहा और अपने मजबूत दाँतोंसे शक्करके एक छोटे टुकड़ेको काट लिया। "उसने अपने एक साथीका पक्ष लिया था, क्योंकि आजकल यह कायदा नहीं है कि कोई किसी कैदीको मारे।"

"और वह बड़ा अच्छा आदमी भी है। मैंने सुना है।" थ्यूड्सियाने कहा। वह नंगे सर, लम्बी पाटी बाँधे लकड़ीके एक चैलेपर बैठी हुई थी जो उस तख्तके सामने, जिसपर चाय रखी थी, पड़ा था।

"अच्छा तो तुम इसके बारेमें उनसे कहो।" गुमटीवालेकी स्त्रीने मस्लोवासे कहा (उनसेका मतलब था नेख्लीड्सें)।

"मैं उनसे कहूँगी और वे मेरे कहनेपर सब कुछ करेंगे।" मस्लोवाने कहा। उसने अपने सरको झटका दिया और मुस्कराने लगी।

"लेकिन वे आ कब रहे हैं? यहाँके लोग तो उसे पकड़नेके लिए रवाना हो गये हैं।" थ्यूड्सियाने कहा "कितनी भयंकर बात है" और उसने लम्बी साँस ली।

"मैंने गाँवमें एक किसानको बेत लगते एक दफा देखा था। मेरे ससुरने मुझे एक दफा गाँवके मुखियाके यहाँ भेजा। मैं वहाँ गयी और वहाँ........।" चौकीदारकी स्त्रीने एक लम्बी कहानी शुरू की थी। लेकिन बरामदेमें कुछ आवाजें और पैरोंकी आहट सुनायी दी और यह कहानी रुक गयी।

औरतें चुप हो रहीं और कान लगाकर सुनने लगीं।

"देखो, पकड़े लिये जा रहे हैं शैतान लोग।" होरोशावकाने कहा "ये सब इसे मार डालेंगे, जरूर मार डालेंगे। जेलर उससे इतने नाराज हैं कि पागल हो गये हैं सिर्फ इसलिए कि वह उनके सामने सर नहीं झुकाता।"

ऊपर फिर शांति हो गयी। चौकीदारकी स्त्रीने अपनी कहानी सुना दी। उसने बताया कि जब मैं खलिहानमें गयी और देखा कि एक किसानको बेत लगाये जा रहे हैं तो मेरी तबियत घबरा गयी इत्यादि। होरोशाविकाने दूसरी कहानी कही। उसने बताया कि "शोग्लोवको बेत लगे थे लेकिन उसके मुँहसे उफ्तक नहीं निकला।" इसके बाद थ्यूड्सियाने चायका सामान अलग रख दिया। कोराब्लेवा और चौकीदारकी औरत सीने लगीं। मस्लोवा अपने घुटनेके चारों ओर हाथ

बाँधकर बैठ गयी। वह बहुत उदास थी। वह लेटने ही जा रही थी कि एक स्त्री वार्डरने आकर उसको बुलाया और कहा कि दफ्तर जाओ, तुमसे कोई मिलने आया है।

"देखो, हम लोगोंके बारेमें कह देना। भूल न जाना।" बुड्ढी औरत मेनशोवाने कहा, जिस समय मस्लोवा धुँधले शीशेके सामने अपने सरपर रूमाल बाँध रही थी। "हम लोगोंने घरमें आग नहीं लगायी। उस बदमाशने खुद लगा ली। उसके यहाँ काम करनेवालेने उसे खुद आग लगाते देखा और वह झूठ बोलकर अपनी आत्माको सत्यानाश नहीं करेगा। उनसे सिर्फ यही कह देना कि मेरे मित्रीसे मिल ले। मित्री उनसे सब कुछ साफ-साफ बता देगा। जरा देखो तो कि हम लोग, जिन्होंने कुछ भी नहीं किया, जेलखानेमें बन्द हैं और वह बदमाश दूसरेकी औरत लिये हुए शराबखानेमें मजे उड़ा रहा है।"

"लेकिन यह कानूनकी बात नहीं है" कोराब्लेवाने कहा।

"मैं उनसे कह दूँगी—मैं उनसे कह दूँगी।" मस्लोवाने कहा "लेकिन मैं एक बूँद और पी लूँ, अपनी हिम्मत बनाये रखनेके लिए, तो क्या हर्ज ?" उसने आँख मारते हुए कहा और कोराब्लेवाने 'वोडका' शराबका आधा प्याला लाकर उसे दे दिया, जिसे उसने पी लिया। इसके बाद उसने मुँह पोंछा और हिम्मत बनाये रखनेके लिए वह वाक्य दुहराती हुई वार्डरके पीछे-पीछे बरामदेसे होती हुई, मुस्कराती और गर्दन मटकाती चल दी।

बयालीसवाँ अध्याय

नेख्लीडूको बड़े कमरेमें देरतक प्रतीक्षा करनी पड़ी।

जब यह जेलखाने पहुँचा, इसने फाटकपर घंटी बजायी और प्रोक्योररका हुक्म उस जेलरको दिया जो ड्यूटीपर था और उससे मिलने आया।

"आप किससे मिलना चाहते हैं ?"

"कैदी मस्लोवासे।"

"इस वक्त आप नहीं मिल सकते। इन्स्पेक्टर साहब काम कर रहे हैं।"

"क्या वे दफ्तरमें हैं ?" नेख्लीडूने पूछा।

"नहीं, वे मुलाकातके कमरेमें हैं।" जेलरने कहा, जो कुछ हक्का-बक्का सा मालूम होता था।

"क्यों ? क्या आज मुलाकातका दिन है ?"

"नहीं, खास काम है।"

"मैं उनसे मिलना चाहता हूँ। कैसे मिलूँ ?" नेख्लीडूने पूछा।

"जब इन्स्पेक्टर बाहर आवें, आप उनसे मिल लीजियेगा—लेकिन ठहरिये तो।" जेलरने कहा। इसी समय एक सार्जेन्ट मेजर—जिसका चेहरा चिकना चमकदार था और जिसकी मूँछे तंबाकूके धुएँसे रँग सी गयी थीं—बगलके दर्वाजेसे बाहर आया। इसकी वर्दीकी सुनहरी डोरियाँ चमक रही थीं। इसने जेलरसे सख्तीसे कहा—"तुमने यहाँ किसी दूसरेको आनेकी इजाजत क्यों दी ?"

"मुझे सूचना मिली कि इन्स्पेक्टर साहब यहाँ हैं।" नेख्लीडूने कहा और उसे सार्जेन्ट मेजरकी बातचीतके ढंगमें परेशानी देखकर आश्चर्य हुआ।

इसी समय अन्दरका दर्वाजा खुला और पेटरफ बाहर आया। इसके बदनसे पसीना टपक रहा था।

१५

"बचा हमेशा याद रखेंगे।" उसने सारजेण्ट मेजरकी तरफ रुख करके कहा। सार्जेन्ट मेजरने नेखलीडूकी तरफ आँखसे इशारा किया और त्योरियाँ चढ़ाकर पीछेके फाटकसे बाहर निकल गया।

"कौन हमेशा याद रखेगा? यह आदमी इस तरह हक्काबक्का क्यों है? सार्जेन्ट मेजरने आँखसे मेरी तरफ इशारा क्यों किया?" ये प्रश्न नेखलीडूके मनमें आने लगे।

सार्जेन्ट मेजरने इसके बाद नेखलीडूसे कहा—"आपसे यहाँ मुलाकात नहीं हो सकती। मेहरबानी करके आप दफ्तर जाइये।"

नेखलीडू इनके कहनेके अनुसार दफ्तरकी तरफ चलनेवाला था कि इतनेमें इन्स्पेक्टर साहब पिछले दर्वाजेसे आ गये। इनके चेहरेपर अपने मातहतोंसे भी ज्यादा बौखलाहट थी। बराबर लंबी लंबी साँसें ले रहे थे। ज्यों ही इन्होंने नेखलीडूको देखा, जेलरसे कहा—'पेटरफ, जनाना फाटककी ५ नं० की कोठरीसे मस्लोवाको दफ्तर लाओ।"

"आप मेहरबानी करके इधरसे आइये।" उसने नेखलीडूकी तरफ झुककर कहा। यह लोग एक सीधे जीनेपर चढ़ने लगे और छोटेसे एक खिड़कीवाले कमरेमें दाखिल हुए। इन्स्पेक्टर बैठ गया।

"मेरी ड्यूटी बड़ी कठिन है।" उसने नेखलीडूसे कहा और एक सिगरेट निकाली।

"आप थके हुए मालूम होते हैं।" नेखलीडूने कहा।

"मैं नौकरीसे परेशान हो गया हूँ—मेरी ड्यूटी बहुत ही मुश्किल है। हम लोग कोशिश करते हैं कि इन लोगोंका कष्ट कम हो लेकिन कष्ट और बढ़ जाता है। मैं यही सोचता रहा हूँ कि इस कामसे कैसे छुटकारा मिले। बड़ी कठिन ड्यूटी है।"

नेखलीडूको यह पता चला कि इन्स्पेक्टरके सामने ऐसी कौनसी कठिनाई है लेकिन उसने देखा कि आज यह विशेष रूपसे उदास और आशाहीन तथा दयनीय अवस्थामें है।

"जी हाँ, मेरा भी ख्याल है कि आपका काम बहुत कठिन है।" नेख्लीडूने कहा—"लेकिन आप यह काम करते क्यों हैं?"

"मुझे परिवार पालना है, और कोई जरिया नहीं है।"

"लेकिन अगर इतनी—।"

"इसके अलावा आप जानते हैं कि इस ओहदेपर रहते हुए मैं कुछ सेवा भी कर देता हूँ। मैं जितनी मुलायमियत कर सकता हूँ, करता हूँ। मेरी जगहपर अगर कोई दूसरा हो तो वह कदापि न करे। इन कामोंको वह बिल्कुल दूसरी तरहसे करे। यह समझ लीजिये कि यहाँ दो हजारसे ज्यादा कैदी रहते हैं, और कैसे कैदी! आदमीको जानना चाहिये कि इन लोगोंके साथ कैसे व्यवहार करे। कहना सहल होता है, करना मुश्किल। यह तो मानना ही पड़ता है कि ये लोग भी आदमी हैं। इनपर दया आ ही जाती है।" इसके बाद इन्स्पेक्टरने नेख्लीडूको यह बताया कि कुछ दिन हुए, कैदियोंमें आपसमें झगड़ा हुआ और एक आदमी मार डाला गया।

इन्स्पेक्टर साहबका किस्सा खतम नहीं होने पाया था कि मस्लोवा जेलरके साथ आ गयी। इन्स्पेक्टरपर मस्लोवाकी दृष्टि जानेसे पहले ही उसको नेख्लीडूने दर्वाजेसे देख लिया था। उसका चेहरा तमतमाया हुआ था। वह तेजीके साथ वार्डरके पीछे पीछे मुस्कराती और गर्दन मटकाती चली आती थी। मस्लोवाने इन्स्पेक्टरको देखा तो उसका चेहरा फौरन बदल गया और वह भयभीत होकर उसको देखने लगी। लेकिन उसने अपनेको तुरन्त सँभाल लिया और निडर होकर प्रसन्नतासे नेख्लीडूसे कहा—"आपका मिजाज कैसा है?"

उसने मुस्कराते हुए नेख्लीडूसे हाथ मिलाया और जोरसे इसे हिलाया। पहली दफा उसने ऐसा नहीं किया था।

"मैं अपीलका मसविदा तुमसे हस्ताक्षर करानेके लिए लाया हूँ" नेख्लीडूने कहा। उसे आश्चर्य हुआ कि आज मस्लोवाने इतनी निडरताके साथ क्यों मेरा स्वागत किया। "वकीलने इस अपीलका

मसविदा बनाया है और इसपर तुम्हें अपना हस्ताक्षर करना होगा, और इस अपीलको हम पीटर्सबर्ग भेज देंगे।"

"बहुत अच्छा। यह हो जायगा जैसा आप कहें।" उसने कहा और आँख मारते हुए मुस्करायी।

नेख्लीडूने अपनी जेबसे एक तह किया हुआ कागज निकाला और मेजकी तरफ बढ़ा।

"क्या ये यहाँ हस्ताक्षर कर सकती हैं?" नेख्लीडूने इन्स्पेक्टरकी तरफ मुड़कर पूछा।

"जी हाँ! बैठ जाइये। यह कलम है। आप लिखना जानती हैं?" इन्स्पेक्टरने पूछा।

"जी हाँ, कभी लिख सकती थी।" उसने कहा और अपनी साड़ी और सलूकेकी बाँहोंको दुरुस्त करते हुए, मेज लगाकर मुस्कराती हुई बैठ गयी। अपने फुर्तीले हाथमें बेढंगे तरीकेसे कलम ली और मुस्कराकर नेख्लीडूको देखा।

जो कुछ लिखना था उसे नेख्लीडूने बताया और जहाँ हस्ताक्षर कराना था वह जगह भी बता दी। लम्बी साँस लेकर उसने कलमको रोशनाईमें डुबाया। रोशनाईकी बूँदें सावधानीसे कलमसे टपका दीं और इसके बाद अपना नाम लिख दिया।

"बस?" उसने पूछा और कभी नेख्लीडूको और कभी इन्स्पेक्टर-को देखने लगी। कलम रखनेके लिए वह कभी कलमदानकी तरफ और कभी कागजपर ले जाती थी।

नेख्लीडूने उसके हाथसे कलम लेकर कहा—"मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं।"

"बहुत अच्छा, कहिये।" उसने कहा और वह एकदम ऐसी गम्भीर हो गयी मानो कुछ याद आ गया हो या ऊँघ रही हो।

इन्स्पेक्टर उठकर खड़ा हो गया और नेख्लीडूको मस्लोवाके साथ छोड़कर बाहर चला गया।

तैंतालीसवाँ अध्याय

जो जेलर मस्लोवाको लाया था वह दूर खिड़कीकी सिल्लीपर, इन लोगोंसे थोड़े फासलेपर, बैठा था !

नेख्लीडूके लिए निर्णयकी घड़ी आ गयी थी। यह बराबर दिलमें अपनेको दोष देता रहा था कि मैंने पहली ही मुलाकातपर मस्लोवासे असली बात क्यों न कह दी। अब इरादा कर चुका था कि इस बार उससे जरूर कह दूँगा कि मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ। मस्लोवा मेजके उस तरफ बैठी थी। नेख्लीडू उसके सामने दूसरी तरफ जाकर बैठ गया। कमरेमें रोशनी थी इसलिए नेख्लीडूको पहली दफा बिलकुल नजदीकसे मस्लोवाके चेहरेको देखनेका मौका मिला। उसने साफ-साफ देख लिया कि मस्लोवाकी आँखोंके चारों तरफ हल्के निशान पड़ गये हैं। मुँहपर झुर्रियाँ आ गयी हैं और पलकें सूजी हुई हैं। उसपर उसे और भी ज्यादा दया आने लगी। मेजके ऊपर झुककर, जिससे उसकी बात जेलर न सुन सके—जेलर यहूदी था और उसके खसखसी गलमूँछें थीं—नेख्लीडूने कहा—"अगर अपीलका कुछ नतीजा न निकला तो हम लोग सम्राट्के यहाँ अपील करेंगे। जो कुछ सम्भव है, किया जायेगा !"

"अगर हम लोगोंने पहलेसे ही अच्छा वकील किया होता !" मस्लोवाने बात काटकर कहा 'मेरा वकील तो बिलकुल बुद्धू था। उसने कुछ किया-कराया थोड़े। वह तो मेरी तारीफ ही करता रहा !" यह कहकर वह हँसी।

"अगर उस समय यह भी मालूम होता कि आपके साथ मेरी मेल-मुलाकात है तब भी मामला दूसरा ही हो जाता। ये लोग तो सभीको चोर समझते हैं।"

"आज इसकी तो विचित्र दशा है।" नेख्लीडूने मनमें कहा।

और अपने मनकी बात कहने ही जा रहा था कि मस्लोवाने फिर कहना शुरू कर दिया—

"मैं कुछ कहना चाहती हूँ। यहाँ एक बुड्ढी औरत है, बड़ी अच्छी है। यह समझिये कि जो उसे देखता है वही ताज्जुब करने लगता है। उसे और उसके लड़केको निरपराध जेलमें रख छोड़ा है। सभी जानते हैं कि ये बेकसूर हैं। फिर भी इनपर किसी मकानमें आग लगानेका मुकदमा चलाया जा रहा है। आप समझिये कि जब उसने सुना कि मेरी आपकी मेल-मुलाकात है तो मुझसे कहा कि उनसे जाकर कहना कि मेरे लड़केसे मुलाकात करनेकी इजाजत माँगें। वह उनको सब बातें बता देगा।" मस्लोवा बातें करती जाती थी और अपना सर मटकाती हुई नेख्लीडूको देखती जाती थी। "इनका नाम मेनशव है। तो आप यह काम कर दीजिये। यह बेचारी बड़ी अच्छी है। इसको देखकर ही आप समझ लेंगे कि बिलकुल निर्दोष है। तो यह काम कर दोगे न?" यह कहकर वह मुस्करायी और उसकी तरफ देखकर आँखें नीची कर लीं।

"बहुत अच्छा। मैं इन लोनोंसे मिल लूँगा" नेख्लीडूने कहा। उसे मस्लोवाकी निःसंकोचताको देखकर अधिकाधिक आश्चर्य होता था। उसने कहा "मैं तो तुमसे खुद अपने बारेमें कुछ कहना चाहता था। तुम्हें याद है न, जो कुछ मैंने तुमसे पिछली दफा कहा था?"

"आपने बहुत सी बातें पिछली दफा कही थीं। क्या कहा था?" उसने पूछा। और वैसे ही सर हिलाते हुए उसकी तरफ मुस्करायी।

"यह कहा था कि मैं तुमसे क्षमा माँगने आया हूँ......।" नेख्लीडूने कहना शुरू किया।

"इन बातोंमें क्या रखा है, क्षमा, क्षमा। इससे क्या फायदा... अच्छा तो यह है...।"

"अपने पापका प्रायश्चित्त करने केवल शब्दोंसे नहीं, बल्कि अमली तरीकेसे। मैंने तुमसे विवाह करनेका निश्चय कर लिया है।"

मस्लोवाका चेहरा एकाएक भययुक्त हो गया। उसकी तिरछी आँखें उसपर एकटक लगी रहीं। फिर भी ऐसा मालूम होता था कि वह उसे नहीं देख रही है।

"यह किसलिए ?" उसने तेवर बदलकर कहा।

"मैं ईश्वरके प्रति इसे अपना कर्तव्य समझता हूँ।"

"आपको अब कौन-सा ईश्वर मिल गया ? आप होशकी बातें नहीं कर रहे हैं। ईश्वरकी खूब कही ! ईश्वर ! ईश्वर तो उस समय आपको याद रखना चाहिये था।" उसने कहा और चुप रह गयी। उसका मुँह खुला रह गया। इस अवसरपर नेख्लीडूको पता चला कि कटूशाकी साँसमें शराबकी बू आ रही है। अब इसकी उत्तेजनाका कारण नेख्लीडूकी समझमें आया।

"जरा शान्त तो हो" नेख्लीडूने कहा।

"मैं क्यों शान्त होऊँ ? तुम समझते हो कि मुझे नशा है ? मुझे नशा जरूर है, लेकिन मैं होश-हवासमें बातें कर रही हूँ।" उसने फुर्तीसे कहा। उसका चेहरा लाल हो गया। "मैं कैदी हूँ और वेश्या हूँ। तुम बड़े आदमी हो, राजकुमार हो। कोई जरूरत नहीं कि मेरे स्पर्शसे तुम अपनेको अपवित्र करो। तुम उन्हीं राजकुमारियोंके पास जाओ। मेरी कीमत तो दस रूबलका नोट है।"

"तुम कितनी ही निर्दयतासे बातें क्यों न करो, मेरे हृदयकी वेदनाकी थाह तुम नहीं पा सकतीं" नेख्लीडूने कहा। उसका सारा बदन काँप उठा। "तुम इस बातकी कल्पना भी नहीं कर सकती हो कि मैं अपनेको तुम्हारे प्रति कितना बड़ा अपराधी समझता हूँ।"

"अपराधी समझते हो ?" उसने क्रोधसे और उसकी नकल करते हुए कहा। "आपने उस समय तो अपनेको अपराधी नहीं समझा। आपने उस समय तो सौ रूबलका नोट फेंक दिया और कहा कि यह तुम्हारी कीमत है।"

"मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ, लेकिन अब क्या किया जाय ?"

नेख्लीडूने कहा। "मैंने यह निश्चय कर लिया है कि तुम्हें न छोड़ूँगा। और हम तुम वही करें जो हमने कहा है।"

"और मैं कहती हूँ, तुम्हें यह न करना चाहिये।" उसने कहा और जोरसे हँसने लगी।

कटूशा!" नेख्लीडूने कहा और उसका हाथ पकड़ लिया।

"जाइये। मैं कैदी हूँ, आप राजकुमार हैं। आपका यहाँ क्या काम?" उसने चिल्लाकर कहा। क्रोधके कारण उसकी सारी आकृति बदल गयी। उसने अपना हाथ छुड़ा लिया।

"तुम मेरे जरिये अपना उद्धार करना चाहते हो?" मस्लोवाने अपने हृदयके भावोंको एकदम प्रकट करते हुए कहा। "मुझसे तुमने इस दुनियामें मजा लूटा और मेरे ही भरोसे अपना परलोक भी बनाना चाहते हो! तुम्हें देखकर मुझे नफरत होती है। तुम्हारी ऐनक और यह सब, तुम्हारा गन्दा मोटा शरीर—जाइये, जाइये।" उसने चिल्लाकर कहा और उठकर खड़ी हो गयी।

जेलर इनके पास आ गया।

"तू चिल्ला क्यों रही है? इसकी—।"

"मेहरबानी करके इसे यों ही रहने दीजिये" नेख्लीडूने कहा।

"इसे अपनी हैसियत तो न भूलनी चाहिये" जेलरने कहा।

"थोड़ी देर ठहर जाइये।" नेख्लीडूने कहा और जेलर खिड़कीकी तरफ फिर चला गया।

मस्लोवा फिर बैठ गयी। उसने निगाह नीची कर ली और मजबूतीसे अपने हाथ पकड़ लिये। नेख्लीडू उसके पास जाकर खड़ा हो गया। उसकी समझमें नहीं आता था कि अब क्या करना चाहिये।

"तुम हमारी बातका विश्वास नहीं करतीं? उसने कहा।

"इस बातका कि तुम मेरे साथ शादी करना चाहते हो? यह कभी नहीं हो सकता। मैं फाँसी लगाकर मर जाना बेहतर समझूँगी। समझे?"

"खैर, लेकिन मैं तो बराबर तुम्हारी सेवा करता रहूँगा।"

"तुम्हारी जो तबियत चाहे करते रहो। मैं तुमसे कुछ नहीं चाहती। सच तो यह है।" वह बोली।

"मैं उसी समय क्यों न मर गयी।" मस्लोवाने कहा। वह दयनीय भावनासे रोने लगी।

नेख्लीडूकी जबान बन्द हो गयी। मस्लोवाके आँसू इसके हृदयको चोट पहुँचा रहे थे। उसने निगाह ऊपर उठायी, नेख्लीडूको आश्चर्यसे देखा और रूमालसे आँसू पोंछना शुरू कर दिया।

जेलर इनके पास फिर आया। उसने इनको फिर याद दिलायी कि मिलनेका समय खत्म हो गया।

"तुम आज उत्तेजित हो गयी हो। अगर मुमकिन हुआ तो मैं कल फिर आऊँगा। तुम इसपर विचार कर रखना।" नेख्लीडूने कहा।

मस्लोवाने कोई उत्तर नहीं दिया और निगाह उठाये बिना ही जेलरके पीछे पीछे कमरेसे चली गयी।

जब मस्लोवा अपनी कोठरीमें वापस गयी तब "खूब! छोकरी खूब! आजकल तो पाँचों घीमें हैं।" कोरोब्लेवाने कहा "मालूम होता है, वह तुमपर लट्टू है। जबतक वह तुमपर लट्टू है, जितना फायदा उठा सको उठा लो। वह तुम्हें इस आफतसे बचा सकता है। अमीर लोग सब कुछ कर सकते हैं।"

"हाँ, यह ठीक बात है।" चौकीदारकी स्त्रीने अपने मधुर स्वरसे कहा "जब कोई गरीब आदमी विवाह करनेका विचार करता है तो उसमें सैकड़ों विघ्न पड़ जाते हैं। और अमीर आदमीने एक दफा इरादा किया और वह काम हो गया। मैं जानती हूँ, ऐसा ही एक आदमी था और उसने क्या किया कि—।"

"अब यह बात जाने दो। यह बताओ," बुड्ढी औरतने चौकीदारिनकी बात काटकर मस्लोवासे पूछा। "क्या मेरे मुकदमेके बारेमें उनसे बातचीत की थी?"

लेकिन मस्लोवाने कोई उत्तर नहीं दिया। वह तख्तपर जाकर लेट गयी और कमरेमें एक कोनेको तिरछी आँखोंसे देखती रही। वह शाम-तक वहीं पड़ी रही।

मस्लोवाकी आत्मामें एक व्यथापूर्ण संघर्ष जारी था। नेख्लीडूने उससे जो बात कही थी, उसकी वजहसे उसे वह संसार याद आ गया, जिसमें उसने कष्ट उठाये थे, और जिसे उसने, उसका मर्म समझे बिना, घृणाके साथ त्याग दिया था। अब वह उस मोहनिद्रासे, जिसमें अभीतक वह अचेत पड़ी थी, जाग गयी थी। लेकिन जो बातें हो चुकी थीं उनकी स्पष्ट स्मृतिके साथ जीवन असम्भव था। उसमें अत्यन्त असह्य वेदनाका सामना करना पड़ता। इसलिए मस्लोवाने शामको थोड़ी-सी वोडका शराब और खरीदी और अपनी सहेलियोंके साथ उसको पिया।

चवालीसवाँ अध्याय

नेख्लीडूव जेलसे बाहर निकल ही रहा था कि एक जेलर इसकी तरफ आता दिखाई दिया। चेहरेसे मालूम होता था कि वह नेख्लीडूके यहाँ आने-जानेका गलत मतलब समझता हुआ उसकी दशापर मुस्करा रहा हो। उसके सीनेपर एक सलीब और कुछ तमगे लटके हुए थे। उसने रहस्यपूर्ण ढंगसे नेख्लीडूको एक लिफाफा दिया।

"हुजूर! यह खत किसी आदमीका है।" उसने नेख्लीडूसे कहा और लिफाफा हाथमें दे दिया।

"किस आदमीका?"

"आप पढ़ेंगे तो मालूम हो जायगा। एक राजनीतिक कैदीका है। मैं उसी वार्डमें हूँ। उसने मुझसे कहा और हालाँ कि नियम-विरुद्ध है फिर भी मनुष्यताके नाते......"जेलरकी आवाज अस्वाभाविक थी।"

नेख्लीडूको आश्चर्य हुआ कि उस वार्डका एक जेलर, जिसमें राजनीतिक कैदी रखे जाते हों, जेलखानेकी चहारदीवारीके अन्दर खुल्लमखुल्ला इस तरह चिट्ठी दे! वह नहीं समझता था कि यह आदमी जेलर भी है और जासूस भी। बहरहाल उसने खत ले लिया और जेलखानेसे बाहर आकर इसे पढ़ा।

यह खत बड़े-बड़े अक्षरोंमें लिखा था और इसका मजमून निम्नलिखित था—

"मैंने सुना है कि आप जेलखाने आते हैं और एक फौजदारीकी कैदीके मुकदमेसे दिलचस्पी रखते हैं। मेरे दिलमें भी आपसे मिलनेकी इच्छा पैदा हुई। आप मुझसे भी मिलनेकी इजाजत लीजिये। इजाजत मिल जायेगी। तब मैं आपको आपकी रक्षिताके सम्बन्धमें, साथ ही अपनी गोष्ठीके बारेमें, भी बहुत कुछ बताऊँगी।

कृपाकांक्षी
"वीरा दुखोवा"

वीरा दुखोवा नोवोग्रोव्ड गवर्नमेंटके एक दूर किनारेके गाँवमें अध्यापिका थी। नेख्लीडू और उसके कुछ मित्र एक बार भालूका शिकार करनेके लिए वहाँ गये थे और वहीं ठहरे थे। उस समय उसने नेख्लीडूसे कुछ रुपये माँगे थे, जिससे वह अपनी पढ़ाई जारी रख सके। नेख्लीडूने उसे रुपये दे दिये थे और उसके बारेमें बिलकुल भूल गया था। अब यह मालूम हुआ कि यही स्त्री राजनीतिक कैदी है और जेलखानेमें बन्द है। यहाँ उसने नेख्लीडूके बारेमें कुछ सुना होगा और अब यह उसकी सेवा करनेमें तत्परता प्रकट कर रही है।

उस समय सब बातें कितनी सीधी-सादी और आसान थीं और आज कितनी कठिन और पेचीदा हो गयी।

नेख्लीडूने उस जमाने, और दुखोवासे अपने परिचयकी घटना याद की। सारा चित्र साफ साफ सामने आ गया और उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। लेन्टसे* कुछ दिन पहले रेलवे स्टेशनसे ४० मीलकी दूरीपर यह स्थान था। शिकारमें सफलता मिली थी। दो रीछ मारे गये थे। वापस आनेके पहले शिकारियोंकी मण्डली खाना खा रही थी। इस झोपड़ेके मालिकने, जिसमें शिकारी लोग ठहरे थे, आकर कहा कि पादरीकी लड़की राजकुमार नेख्लीडूसे कुछ बातें करना चाहती है।

"खूबसूरत है?" किसीने पूछा।

"कृपा करके ऐसी बातें न कीजिये।" नेख्लीडूने कहा और गंभीरतासे उठकर चला गया था। अपना मुँह पोंछते हुऐ और अपने मनमें अनुमान करते हुए कि आखिर पादरीकी लड़की मुझसे क्या कहना चाहती है, नेख्लीडू उस आदमीके प्राइवेट कमरेमें चला गया था।

वहाँ एक लड़की बदसूरत लेकिन मजबूत फेल्टकी टोपी और गरम चोगा पहने हुए बैठी थी। इसकी आँखें, जिनकी भौंहें कमानसी थीं, सिर्फ खूबसूरत थीं।

---

* यह त्योहार ईस्टरके पहिले होता है। इसमें ईसाई उपवास रखते हैं।

"बेटी! यह देखो, इनसे बातें करो।" बुड्ढी गृहिणीने कहा था, "ये राजकुमार खुद हैं; और मैं बाहर जाती हूँ।"

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।" नेख्लीडूने पूछा।

"मैं......मैं......मैं समझती हूँ कि आप धनाढ्य हैं, और अपना पैसा शिकार ऐसे फिजूल काममें खर्च करते हैं।" लड़कीने हकबकाते हुए कहा था, "मैं जानती हूँ...मैं सिर्फ एक चीज चाहती हूँ...कि लोगोंकी सेवा कर सकूँ। लेकिन मैं कोई सेवा नहीं कर सकती; क्योंकि मैं कुछ नहीं।" इसकी आँखोंमें इतनी सचाई और दया थी, इसके भावोंमें इतनी दृढ़ता और दया थी कि नेख्लीडूने, जैसा उसमें अक्सर हो जाता था, अपनेको उसकी स्थितिमें रख दिया। उसके मतलबको समझकर सहानुभूति प्रकट की।

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"मैं यहाँ अध्यापिका हूँ और यूनिवर्सिटीका इम्तहान देना चाहती हूँ लेकिन उसकी मुझे इजाजत नहीं। यह नहीं कि वे मुझे पढ़नेकी इजाजत नहीं देते। पढ़नेकी इजाजत तो देते हैं, लेकिन मेरे पास साधन नहीं है। आप मेरी सहायता कर दीजिये और जब मेरी पढ़ाई पूरी हो जायगी, मैं आपका कर्ज वापस कर दूँगी। मैं यह सोचती थी कि अमीर आदमी रीछ मारते हैं और किसानोंको शराब पिलाते हैं, और ये सब बुरी बातें हैं। ये लोग अच्छा काम क्यों नहीं करते? मुझे सिर्फ ८० रूबल कुल चाहिये......लेकिन अगर आप न देना चाहें तो भी कुछ हर्ज नहीं।" उसने खिन्न होकर कहा।

"न देनेकी कौनसी बात! इसके विपरीत मैं आपका बहुत ऋणी हूँ कि आपने मुझे यह मौका दिया। मैं अभी लाये देता हूँ।" यह कह कर नेख्लीडू बाहर निकला। वहीं उसका एक साथी मिला, जो खड़ा उसकी बातें सुन रहा था। इसकी बकवादपर कुछ भी ध्यान न देते हुए, नेख्लीडूने इसके बटुयेसे रूबल निकाल लिये और उस महिलाको लाकर दे दिये।

"मुझे धन्यवाद दीजिये। मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।" नेख्लीडू-ने कहा।

आज उन सब बातोंकी याद नेख्लीडूको बड़ी भली मालूम होती थी। उसे बहुत हर्ष हुआ। उसे यह याद आया कि किस तरह एक अफसरने इस बातपर उससे गन्दा मजाक किया था और इसपर इसके साथ उसकी लड़ाई होते होते बची। किस तरह उसके एक दूसरे मित्रने उसका पक्ष लिया था, जिसकी वजहसे दोनोंकी मित्रतामें और भी घनिष्ठता बढ़ गयी थी। यह शिकार कितना सफल था और जब उस रातको वे रेलवे-स्टेशनपर वापस आये थे, कितने खुश थे।

बरफकी गाड़ियोंका ताँता घोड़ों द्वारा खिंचा जा रहा है, और यह बरफकी पतली सड़कोंपर जंगलके बीचसे, तेजीके साथ बहता चला जा रहा है। कभी ऊँचे-ऊँचे पेड़ आ जाते हैं, कभी छोटे-छोटे खरपतवारकी झाड़ियाँ, जिनकी टहनियाँ बरफसे झुकी हैं। अँधेरेमें लाल रोशनी चमक रही है। किसीने खुशबूदार सिगरेट जलाया। जोजफ, भालू हाँकनेवाला, कभी एक बरफकी गाड़ीसे दूसरी बरफकी गाड़ीमें बैठता। घुटने घुटने बरफमें चल रहा है। सब चीजोंका इन्तजाम करता फिरता है और कभी यह बताता है कि वह देखो एक हिरन बरफमें उछल रहा है या पेड़की पत्तियाँ खा रहा है। वह देखो भालू है जो गहरी माँदमें सो रहा है। इत्यादि इत्यादि।"

ये सब बातें नेख्लीडूके स्मृतिपटलपर आ गयीं, लेकिन सबसे आनन्ददायक बात उसे यह याद आयी कि उस समय मेरा स्वास्थ्य कितना अच्छा था। शरीरमें कितना बल था और चिन्ताओंसे कितना आजाद था। जब कुहरेदार हवाको गहरी साँस लेकर अपने फेफड़ेमें ले जाता था तो चोगा उसके सीनेमें कस जाता था। अच्छी बरफ नीची टहनियोंसे टपक टपककर उसके चेहरेपर गिरती थी। उसका बदन गर्म रहता था और चेहरा तरोताजा। और उसकी आत्मा भय, चिन्ता और

आत्मभर्त्सनासे मुक्त थी। उस समय कितना आनन्द था और अब, हे ईश्वर, कितनी यातना है! कितना कष्ट है!

स्पष्ट था कि वीरा दुखोवा क्रान्तिकारी थी और क्रान्तिकारी होने-की वजहसे जेलमें रखी गयी थी। मैं उससे मिलूँगा खासकर इसलिए कि उसने मस्लोवाके बारेमें सलाह-मशविरा देनेका वादा किया है— नेख्लीडूने सोचा।

पैंतालीसवाँ अध्याय

दूसरे दिन नेख्लीडूव सुबह तड़के उठा। उसे याद आया कि कल मैंने क्या-क्या किया। इससे वह भयभीत हो उठा।

लेकिन भय होते हुए भी वह अपने दिलमें और भी दृढ़ था कि जो काम मैंने शुरू किया है उसे जारी रखूँगा।

इस बातको जानकर कि मेरा कर्तव्य क्या है, वह घरसे निकला और मेसलेनीकफसे मिलने गया। उद्देश्य यह था कि जेलमें मस्लोवासे और मेनशव माँ और बेटोंसे मुलाकात कर सके, जिनके बारेमें मस्लोवाने कहा था। इसके अलावा वह दुखोवासे भी मिलनेकी इजाजत लेना चाहता था जिससे मुमकिन है मस्लोवाका भी भला हो जाय।

नेख्लीडूवको देखते ही मेसलेनीकफका चेहरा खिल उठा। इसका चेहरा पहलेकी तरह मोटा और लाल था। जब वह सैनिक विभागमें था तब जिस प्रकार अच्छे-अच्छे कपड़े पहनता था और मोटा था आज भी वैसा ही था। उस समय वह ब्रश की हुई चुस्त और बिल्कुल नये फैशन और काटकी सैनिक वर्दी पहनता था। अब वह सिविलियनकी वर्दी पहनता था लेकिन यह भी उसके हृष्ट-पुष्ट शरीरमें वैसे ही चुस्त होती थी और उसके चौड़े सीनेको उसी प्रकार प्रदर्शित करती थी। उम्रमें फर्क होते हुए भी (मेसलेनीकफकी उम्र ४० वर्षकी थी) ये दोनों आदमी ऐक दूसरेसे मिलते-जुलते रहते थे।

"आओ यार आओ! खूब आये, चलो तुम्हें अपनी स्त्रीसे मिलावें। हमारी मीटिंगमें अभी १० मिनट बाकी हैं। मेरे अफसर बाहर गये हैं, यह तुम जानते हो इसी लिए शासनका मैं ही प्रमुख हूँ।" उसने कहा। उसका संतोष बिलकुल स्पष्ट था।

"भाई, मैं कामसे आया हूँ।

"किस कामसे ? मेसलेनीकफने चिन्तित, किंचित् कठोर स्वरमें अपनेको सचेत करते हुए कहा ।

"एक व्यक्ति है जिससे मुझे बहुत दिलचस्पी है। वह जेलमें है। (जेल शब्द सुनकर मेसलेनीकफका चेहरा कुछ कठोर हो गया।) मैं चाहता हूँ कि उससे मुलाकातके सार्वजनिक कमरेमें न मिलकर, मैं दफ्तरमें मिलूँ और जिस समय सब मिलते हैं उस समय नहीं बल्कि दूसरे समय। मैंने सुना है कि इसकी इजाजत तुम दे सकते हो।"

"जरूर, जरूर; प्रियवर, मैं तुम्हारे लिए सब कुछ करनेको तैयार हूँ" मेसलेनीकफने कहा और नेख्लीडूके घुटनोंपर अपने दोनों हाथोंसे थपकी दी, जिसका मतलब यह था कि वह अपनी शान घटाकर बात करना चाहता था "लेकिन याद रखो, मैं सिर्फ एक घंटेका बादशाह हूँ।"

"तब तुम मुझे उससे मिलनेकी इजाजत दे दोगे ?"

"क्या वह औरत है ?"

"हाँ।"

"किस जुर्ममें पकड़ी गयी है ?"

"जहर देनेमें, लेकिन उसके साथ अन्याय किया गया है।"

"यही तो मैं कहता हूँ। देख लो अपनी ज्यूरी प्रथाका नतीजा! ये ज्यूरीवाले, बस यही करते हैं।" इसने आधी बात न जाने क्यों फ्रांसीसी भाषामें कही। "मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे सहमत न होगे। परन्तु इससे क्या ? मेरी तो यह निश्चित राय है" उसने कहा। और वही खयाल जाहिर किये जिन्हें एक प्रतिक्रियावादी संकुचित अखबारमें यह पिछले बारह महीनेसे पढ़ता आ रहा था। "मैं जानता हूँ कि तुम उदार दलके आदमी हो।"

"मैं तो यह नहीं कह सकता कि मैं उदार दलका हूँ या नहीं।" नेख्लीडूने मुस्कराकर कहा। उसे आश्चर्य होता था जब लोग उसे एक राजनीतिक दलका मानकर उदार दलका कहा करते थे। जब कभी वह यह कहता था कि किसी आदमीको सजा देनेके पहले, उसे अपनी सफाई

पेश करनेका मौका मिलना चाहिये, और सजा पानेके पहले हर-एक आदमी बराबर है, किसीके साथ बुरा व्यवहार न होना चाहिये, और न किसीको मारना-पीटना चाहिये, खासकर उन लोगोंको जिनपर अभी कानूनके मुताबिक मुकदमा नहीं चला, तब लोग उसे एक राजनीतिक दलका समझ लेते थे और उसे उदार दलका कहने लगते थे। "मैं यह नहीं कह सकता कि मैं उदार दलका हूँ या नहीं, लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूँ कि आजकलकी ज्यूरीप्रथा चाहे कितनी ही खराब क्यों न हो, पुराने ट्राइब्युनलसे हर हालतमें अच्छी है।"

"और वकील किसको किया है?"

"फेनारिनको।"

"अच्छा! फेनारिनको?" मेसलेनीकफने मुँह बनाते हुए कहा। उसे याद आ गया कि फेनारिनने एक मुकदमेमें एक साल पहले किस प्रकार गवाही देते हुए इससे जिरह की थी और मीठे-मीठे शब्दोंमें आध घण्टेतक इसको किस तरह बेवकूफ बनाया था।

"मैं तुम्हें सलाह दूँगा कि उससे कोई वास्ता न रखो! फेनारिन खराब आदमी है।"

"मुझे एक और प्रार्थना करनी है।" नेखलीडूने उस बातका कोई उत्तर दिये बिना कहा "एक नौजवान औरत है जिसे मैं बहुत दिनोंसे जानता हूँ। वह अध्यापिका थी, बेचारी दयाकी पात्र है। वह भी जेलमें है और मैं उससे मिलना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे उससे मिलनेकी इजाजत दे सकते हो?"

मेसलेनीकफने अपना सर एक तरफ झुका लिया और सोचने लगा।

"वह तो राजनीतिक कैदी है न?"

"जी हाँ। लोग यही कहते हैं।"

"हाँ, लेकिन बात यह है कि राजनीतिक कैदियोंसे, सिर्फ उनके रिश्तेदारोंको ही मिलनेकी इजाजत दी जाती है। फिर भी मैं तुम्हें एक व्यापक हुक्म दिये देता हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम इसका बेजा फायदा

न उठाओगे। तुम्हारी इसी संरक्षिताका क्या नाम है, दुखोवा न? खूबसूरत है?"

"वीभत्स!"

मेसलेनीकफने अरुचि प्रकट करते हुए अपना सर हिलाया। मेजपर जाकर एक कागजके टुकड़ेपर, जिसका सरनामा छपा हुआ था, निम्नलिखित हुक्म लिखा—

"पत्रवाहक राजकुमार डिमिट्री आइवनिच नेख्लीडूको यह इजाजत दी जाती है कि वे मस्लोवा और अस्पतालमें काम करने वाली कैदी दुखोवासे जेलखानेके दफ्तरमें मुलाकात कर सकें।"

"वहाँ जाकर तुम देखोगे कि हमने किस किस्मका प्रबन्ध कर रखा है। ठीक इन्तजाम रखना बड़ा मुश्किल हो जाता है; क्योंकि वहाँ आजकल बड़ी भीड़ हो गयी है। विशेषकर ऐसे आदमी बहुत हो गये हैं जिनको देशनिकालेकी सजा मिली है, लेकिन मैं बहुत सावधानीसे देखभाल करता हूँ और इस काममें मेरी रुचि भी है। तुम वहाँ यह भी देखोगे कि कैदी लोग कितने आरामसे और कितने सन्तुष्ट हैं। लेकिन इसके लिए ऐसे आदमियोंकी आवश्यकता होती है जो इनसे व्यवहार करना जानते हों। कुछ दिन हुए छोटा मोटा झगड़ा हो गया, लोग सरकारी आज्ञाका निरादर करने लगे। कोई दूसरा आदमी होता तो उसे बलवा कह सकता था, और न मालूम कितनोंको मुसीबतमें फाँस देता। लेकिन हम लोगोंने ऐसा इन्तजाम किया कि सब काम शान्तिसे हो गया। आवश्यकता इस बातकी होती है कि सहानुभूति भी दिखाई जाय और रोब भी कायम रखा जाय।" उसने अपनी मुट्ठी बाँध ली। उसकी मोटी उँगलीमें सफेद जवाहरके नगकी अँगूठी थी। कलफ किये हुए कमीजके कफसे, जिसमें सोनेके बटन लगे हुए थे, वह मुट्ठी बाहर निकल रही थी। "सहानुभूति और रोब, इसकी आवश्यकता है।"

"इसके बारेमें मैं तो कुछ भी नहीं कह सकता।" नेख्लीडूने कहा, "मैं वहाँ दो मर्तबा हो आया हूँ और बहुत उदास लौटा।"

"मैं कहता हूँ कि तुम काउन्टेस पासकूसे मिलो," मेसलेनीकफने कहा। अब उसकी बातचीतमें गर्मी आने लगी। "इस महिलाने इसी किस्मके कामके लिए अपनेको समर्पित कर दिया है और बड़ी सेवा कर रही है। उसके कारण—और अगर आप प्रशंसा न समझें तो मैं कहूँगा कि मेरे कारण भी—अब सब बातें बदल गयीं, और ऐसी बदल गयीं कि पुरानी भयंकरता अब बिल्कुल नहीं रही और कैदी लोग वास्तवमें बहुत चैनसे रहते हैं। तुम वहाँ जाओगे तो देखोगे ही। अब रही फेनारिनकी बात, सो व्यक्तिगत रूपसे मेरा उसका कोई परिचय नहीं है। इसके अतिरिक्त मेरी सामाजिक हैसियत भी मुझे उससे दूर रहनेके लिए बाध्य करती है—इसमें शंका नहीं कि वह बड़ा बुरा आदमी है और फिर वह अदालतमें ऐसी ऐसी बातें कहता है।"

"आपका शुक्रिया" नेख्लीडूने कागज हाथमें लेते हुए कहा। और अन्य बातोंको सुने बिना ही अपने साथीसे विदा होने लगा।

"लेकिन क्या तुम मेरी स्त्रीसे मुलाकात न करोगे ?"

"माफ कीजिये, इस वक्त मेरे पास समय नहीं है।"

"कहते क्या हो ? वह मुझसे बहुत नाराज होगी।" मेसलेनीकफने कहा और अपने पुराने मित्रके साथ साथ पहले जीनेतक आया। उसकी यह आदत थी कि जिन्हें अव्वल दर्जेका नहीं बल्कि दूसरे दर्जेका समझता था, जिसमें इसने नेख्लीडूको रख छोड़ा था, उन्हें इस जीनेतक पहुँचा देता था। "तो थोड़ी ही देरके लिए जाकर मिल आओ।"

लेकिन नेख्लीडू अपनी बातपर दृढ़ रहा। दरबान और अर्दलीने दौड़कर नेख्लीडूको उसकी छड़ी और ओवरकोट दिया, दर्वाजा खोला जिसके बाहर एक पुलिसमैन खड़ा था। नेख्लीडू अपने मनमें यह कहता हुआ कि मैं ठहर ही नहीं सकता, बाहर निकल आया। मेसलेनीकफने पुकारकर कहा—"अच्छी बात है; बृहस्पतिवारको आना। मेरी स्त्रीने उस दिन भोज दिया है और मैं उससे कह दूँगा कि तुम अवश्य आओगे।"

———

छियालीसवाँ अध्याय

नेख्लीड्र् मेसलेनीकफके मकानसे सीधे जेलखाने पहुँचा और इन्स्पेक्टर-के मकानपर, जिसे वह एक दफा देख आया था, गया। उसे घटिया किस्मके पियानोकी फिर आवाज सुनाई दी। इस समय वह पुरानी गत नहीं बज रही थी बल्कि एक दूसरी रागिनीका तेजी और जोरके साथ अभ्यास किया जा रहा था। पट्टी बँधी आँखवाली नौकरानीने कहा कि इन्स्पेक्टर साहब घरपर मौजूद हैं। और उसे एक छोटेसे बैठनेके कमरेमें ले गयी, जहाँ एक सोफा पड़ा था और एक मेज रखी थी। मेजपर एक बड़ी लालटेन क्रोचेटके काम किये हुए कपड़ेपर रखी थी। इस लालटेनके ऊपर गुलाबी रंगके कागजका बना हुआ एक शेड था जो एक तरफ जल गया था। इन्स्पेक्टर साहब अपने पुराने उदास और परेशान चेहरेके साथ आये।

"बैठ जाइये। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?" इन्होंने कहा और अपनी वर्दीका, बीचका, बटन बन्द किया।

"मैं अभी सहायक गवर्नरसे मिलने गया था। उनके पाससे यह हुक्म लाया हूँ। मैं कैदी मस्लोवासे मिलना चाहता हूँ।"

"मर्कोवा?" इन्स्पेक्टरने पूछा, क्योंकि बाजेकी आवाजके कारण उसे ठीक सुनाई नहीं दिया था।

"मस्लोवा।"

"ठीक है, मैं समझ गया।" यह कहते हुए इन्स्पेक्टर साहब उठे और उस दर्वाजेपर जाकर, जिसमेंसे गानेकी आवाज आ रही थी, पुकार-कर कहने लगे—

"मेरी, तनिक ठहर जाती तो अच्छा था।" इसके स्वरसे प्रकट होता था कि संगीतसे इसकी तबीयत ऊब गयी है। "एक बात भी सुनाई नहीं देती।"

पियानो बन्द हो गया। लेकिन किसीके चलनेकी आवाज सुनाई दी और किसीने दर्वाजेसे झाँका।

इन्स्पेक्टरको बाजेके रुक जानेकी वजहसे कुछ इतमीनान-सा हुआ। उसने एक मोटा सिगरेट जलाया और एक नेख्लीडूको भी देना चाहा।

नेख्लीडूने माफी चाही। "मैं मस्लोवासे मिलना चाहता हूँ।"

"मस्लोवासे ?" उससे मिलना आज मुनासिब न होगा।

"क्यों ?"

"उसकी वजह क्या बताऊँ। आपकी ही गलती है।" इन्स्पेक्टरने हलकेसे मुस्कराते हुए कहा। "राजकुमार ! उसके हाथमें कुछ पैसे न दिया कीजिये। आप चाहें तो मुझे दे दीजिये। मैं उसके नामपर जमा रखूँगा। मालूम होता है, कल आपने उसे कुछ रुपये दिये थे। उसने शराब खरीदी (इस शराबको निकालनेमें बड़ी मुश्किल हो रही है) और आज वह बिलकुल नशेमें है और लड़ाई-झगड़ा कर रही है।"

"एँ ?"

"जी हाँ। मुझे मजबूर होकर सख्ती करनी पड़ी और मैंने उसे एक अलग कोठरीमें रख छोड़ा है। यों तो वह बड़े शान्त स्वभावकी औरत है, लेकिन कृपा करके उसे कुछ न दीजियेगा। ये लोग इतने... ।"

कल जो कुछ हुआ था, नेख्लीडूके मनके सामने साफ साफ आ गया। वह भयभीत हो उठा।

"और दुखोवा, जो राजनीतिक कैदी है ? क्या मैं उससे मिल सकता हूँ ?"

"जी हाँ। उससे आप मिल सकते हैं।" इन्स्पेक्टरने कहा। इसी अवसरपर एक ५-६ वर्षकी छोटी लड़की कमरेमें आयी और नेख्लीडूके चेहरेकी तरफ देखती हुई अपने पिताके पास जाकर खड़ी हो गयी। "कैसे आयीं, क्या चाहती हो ? देखो, गिर न पड़ना।" इन्स्पेक्टरने इस लड़कीसे पूछा; क्योंकि यह लड़की मुस्कराती हुई नेख्लीडूकी

ओर देखती हुई अपने पिताके पास बढ़ रही थी। उसका पैर कालीनमें फँस गया था।

"अच्छा, अगर मैं मिल सकता हूँ तो जाता हूँ" नेख्लीडूने कहा।

"इन्स्पेक्टरने छोटी लड़कीको गलेसे लगा लिया, जो अभीतक नेख्लीडूको देख रही थी। वह उठा और प्रेमसे लड़कीको एक तरफ करते हुए अगले कमरेमें गया। अभी वह ओवरकोट भी नहीं पहन पाया था कि फिर पियानोके बजनेकी आवाज सुनाई देने लगी। इन्स्पेक्टर और नेख्लीडू जीनेसे उतरे। इन्स्पेक्टरने कहा, "मेरी लड़की बाजा सीख रही है और कन्सर्टमें काम करना चाहती है।"

दोनों जेलखाने पहुँचे। इनके पहुँचते ही जेलका फाटक फौरन खुल गया। जेलर लोगोंने सलाम किया और देखते रहे कि वह कहाँ जाता है। चार आदमी, जिनका आधा सर मुडा था, अपने सरपर टबमें कुछ भरे हुए लिये जा रहे थे। ये इसको देखकर दुबक गये। इनमेंसे एकने अपनी त्योरी चढ़ा ली। इसकी काली आँखें चमक रही थीं।

"प्रतिभाको उन्नत करनेकी आवश्यकता पड़ती है। इसे दफन कर देना ठीक नहीं होता। लेकिन इस छोटेसे मकानमें, आप समझिये, बड़ी परेशानी हो जाती है।" इन्स्पेक्टरने बातचीतका सिलसिला जारी रखते हुए और इन कैदियोंपर बिलकुल ध्यान न देते हुए कहा। अपने पैर घसीटता हुआ वह नेख्लीडूके साथ बड़े कमरेमें चला गया।

"आप किससे मिलना चाहते हैं?"

"दुखोवासे।"

"वह तो बुर्जीमें रहती है। उसके लिए तो थोड़ी देर इन्तजार करना पड़ेगा।" इन्स्पेक्टर कहा।

"तो मैं इस दर्मियान मेनशफ नामके कैदियोंसे क्यों न मिल लूँ? वही माँ और बेटे, जिनपर आग लगानेका जुर्म है।"

"हाँ जरूर मिल लीजिये, वे २१ नं० की कोठरीमें हैं। वे बुलाये जा सकते हैं।"

"और जो मैं मेनशफसे उनकी कोठरीमें ही मिलना चाहूँ तो मिल सकूँगा ?"

"लेकिन मैं समझता हूँ कि मिलनेके कमरेमें सबसे अच्छा रहेगा।"

"नहीं, मैं कोठरीमें मिलना ज्यादा पसन्द करूँगा। यह मेरे लिए ज्यादा दिलचस्पीकी बात होगी।"

"तो आपकी दिलचस्पीकी यह चीज मिल गयी।"

इसी क्षण एक बढ़िया वर्दी पहने अफसर, इन्स्पेक्टरका नायब, बगलके कमरेसे दाखिल हुआ।

"सुनो" इन्स्पेक्टरने अपने नायबसे कहा "राजकुमारको मेनशफकी कोठरी नं० २१ में ले जाओ और इसके बाद दफ्तरमें ले आना। मैं जाता हूँ। दूसरेको बुलाये लाता हूँ। उसका क्या नाम है ?"

"वीरा दुखोवा"।

इन्स्पेक्टर साहबका नायब गोरे रंगका एक नौजवान आदमी था। इसने मूँछोंपर खिजाब लगा रखा था। उसके बदनसे इत्रकी खुशबू आती थी। "इस रास्ते।" उसने मिठासके साथ मुस्कराते हुए कहा "हमारी संस्थामें आपको दिलचस्पी है ?"

"जी हाँ, बहुत दिलचस्पी है। इसके अलावा मैंने यह जिम्मेदारी अपने ऊपर ली है कि एक आदमीकी मदद करूँ जो, कहा जाता है कि, निरपराध होनेपर भी यहाँ कैद है।"

नायबने अपना कन्धा मटकाया। "जी हाँ! कभी कभी ऐसा भी होता है।" उसने कहा और बहुत शान्ति तथा शिष्टतासे एक तरफ हट गया जिससे राजकुमार नेख्लीदू बदबूदार बरामदेमें पहले दाख़िल हो सकें। "लेकिन यह भी अक्सर होता है कि ये लोग झूठ बोलते हैं। यह रास्ता है, इधर चलिये।"

कोठरियोंके दर्वाजे खुले हुए थे और कुछ कैदी बरामदेमें थे। नायबने जेलरोंका सलाम, गर्दन हिला हिलाकर, स्वीकार किया। वह कैदियोंको भी देखता जाता था। ये लोग दीवारसे लगकर अपनी अपनी

कोठरियोंमें, सैनिक सिपाहीकी तरह, हाथ लटकाकर खड़े हो गये थे और देखते जाते थे कि नायब कहाँ जा रहा है। नायब एक बरामदेसे निकलकर नेख्लीड्रको दूसरे बरामदेमें, जो बायीं तरफ था, ले गया। इन दोनोंके बीचमें लोहेका एक दर्वाजा था।

यह बरामदा पहले बरामदेसे भी ज्यादा तंग और अन्धकारमय था। इसमें और भी ज्यादा बदबू आती थी। बरामदोंमें दोनों तरफ दर्वाजे थे लेकिन इन दर्वाजोंमें एक इंचवाले सूराख थे। यहाँ एक बुड्ढा जेलर तैनात था जिसके चेहरेपर उदासी थी और झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं।

"मेनशव कहाँ है?" नायब इन्स्पेक्टरने पूछा।

"बायीं तरफ आठवीं कोठरीमें।"

"और ये कोठरियाँ? क्या ये भरी हुई हैं?" नेख्लीड्रने पूछा।

"जी हाँ, एकको छोड़ कर सब भरी हैं।"

सैंतालीसवाँ अध्याय

"क्या मैं अन्दर देख सकता हूँ ?" नेख्लीडूने पूछा ।

"जी हाँ ।" नायबने मुस्कराते हुए जवाब दिया । वह जेलरसे कुछ सवाल पूछने लगा । नेख्लीडूने छोटे सूराखोंमेंसे झाँककर देखा । एक लम्बासा, छोटी काली दाढ़ीवाला नौजवान बनियाइन-जाँघिया पहने इस कमरेमें टहल रहा था । दर्वाजेपर किसी आदमीका खटका सुन, इसने त्योरियाँ चढ़ाकर दर्वाजेकी तरफ देखा लेकिन टहलना जारी रखा ।

नेख्लीडूने दूसरे सूराखसे झाँका । उसकी आँखें एक बड़ी डरी हुई आँखोंसे चार हो गयीं जो इस छेदसे उसकी तरफ देख रही थीं । वह जल्दीसे एक तरफ हो गया । तीसरी कोठरीमें इसे एक छोटे कदका आदमी जेलके कपड़ोंसे अपने सर और सारे शरीरको ढके हुए दिखाई दिया । चौथीमें एक पीले चौड़े चेहरेका आदमी अपनी कुहनी घुटनेपर रखे और सर झुकाये बैठा था । पैरकी आहट पाकर इस आदमीने अपना सर उठाया और ऊपर देखा । इसके चेहरेपर, खास तौरसे इसकी बड़ी बड़ी आँखोंपर, निराशापूर्ण उदासीके चिह्न थे । यह साफ दिख रहा था कि उसे इस बातमें भी दिलचस्पी नहीं थी कि उसकी कोठरीका मुआइना करने कोई आया है । चाहे जो आया हो, यह कैदी समझता था कि उससे इसकी कोई भलाई न होगी । भयंकरताका यह दृश्य देखकर नेख्लीडू अब किसी दूसरी कोठरीमें झाँकनेकी हिम्मत न कर सका और वह सीधे मेनशवकी कोठरी नं० २१ की तरफ बढ़ा । जेलरने दर्वाजेका ताला खोला । एक नौजवान आदमी, जिसकी गर्दन लम्बी और पट्ठे मजबूत थे तथा जिसकी आँखें छोटी और गोल थीं, तख्तके पास खड़ा था और जल्दी जल्दी चोगा पहन रहा था । यह आनेवालोंकी तरफ घबराहटसे फिरा । नेख्लीडूपर इसकी गोल दयनीय आँखोंका बहुत असर पड़ा,

जो डरी हुई, कभी उसे, कभी जेलरको और कभी नायबको देखती थीं और पूछती थीं कि आखिर आये किसलिए।

"देखो, एक महानुभाव तुम्हारे मामलेके बारेमें आये हैं।"

"बहुत कृपा की।"

"हाँ, मुझसे तुम्हारे बारेमें कहा गया था" नेख्लीडूने कहा और कोठरीके अन्दर होकर वह गन्दी खिड़कीकी तरफ बढ़ गया। "और तुम्हारे मुकदमेकी सब बातें तुम्हींसे सुनना चाहता हूँ।"

मेनशव भी खिड़कीके पास चला गया। उसने तुरन्त अपना किस्सा कहना शुरू कर दिया। पहले तो वह थोड़ी देरतक इन्स्पेक्टरके नायबको देखकर शर्माता था मगर बादको निडर हो गया। जब नायब कोठरीसे निकलकर, बरामदेमें बाहर कुछ हुक्म देनेके लिए गया तब तो यह बिल्कुल निडर हो गया। इसने अपनी कहानी उसी ढंगसे बयान की जैसे साधारण अच्छे किसान आम तौरपर करते हैं। इस कहानीको कैदीके मुँहसे, जो अपमानजनक कपड़े पहने हो, जेलके अन्दर सुनना नेख्लीडूके लिए बहुत आश्चर्यजनक मालूम हुआ। नेख्लीडू सुनता जाता था, साथ ही चारों तरफ निगाह भी दौड़ा रहा था। कभी वह छोटे-छोटे खटोलें-को देखता था, जिनपर पयालसे भरे गद्दे पड़े थे, कभी खिड़कीमें लगे हुए लोहेके मोटे सीकचे देखता था, कभी गन्दी नम दीवारें और कभी जेलका कपड़ा तथा जूता पहने हुए इस अभागे कुरूप बनाये हुए किसानका दयनीय चेहरा और आकृति।

नेख्लीडूकी उदासी बढ़ती जाती थी। वह चाहता था कि कैदी जो कुछ बयान कर रहा है, अगर झूठा हो तो अच्छा है। यह विचार करना बड़ा भयंकर था कि लोग किसी आदमीको बिना किसी कारण पकड़ लेते हैं और उसे कैदियोंके कपड़े पहनाकर ऐसी भयंकर जगहमें रखते हैं। फिर यह सोचना तो और भी भयंकर था कि 'संभव है, जो कुछ यह कह रहा है, और जो देखनेमें सच्ची कहानी मालूम होती है, बिल्कुल झूठ और गढ़ी हुई हो।' किस्सा यह था—शादीके थोड़े ही दिन बाद

गाँवके सरायवालेने, इस नौजवानकी स्त्रीको भगा दिया। इस आदमीने हर जगह दौड़धूप करके कोशिश की कि इसके साथ न्याय हो। पर उस सरायवालेने हर जगह सरकारी कर्मचारियोंको रिश्वत दे दी और वह छूट गया। एक दफा यह आदमी जबर्दस्ती अपनी स्त्रीको पकड़कर अपने घर ले आया, लेकिन दूसरे दिन वह भाग खड़ी हुई। फिर यह उसे लाने गया और जब सरायवालेके यहाँ गया तो अपनी स्त्रीको वहाँ देखा लेकिन सरायवालेने यह कहकर कि वह यहाँ नहीं है, इसको निकाल दिया। फिर भी यह वहाँसे हटा नहीं। इसपर सरायवालेने और उसके नौकरने इसे इतना पीटा कि खून निकल आया। दूसरे दिन सरायमें आग लग गयी। इस नौजवान आदमी और इसकी माँपर आग लगानेका जुर्म लगाया गया। वास्तवमें आग इसने नहीं लगायी थी। उस दिन तो यह अपने एक दोस्तके यहाँ गया था।

"तो क्या तुमने सचमुच आग नहीं लगायी?"

"श्रीमान्, मैंने तो इस बातका अपने मनमें खयालतक नहीं किया। यह काम मेरे उसी दुश्मनका है। मैंने सुना था कि उसने कुछ ही दिन पहले उस मकानका बीमा करा लिया था। लोगोंने कह दिया कि 'मैंने और मेरी माँने यह काम किया' और इसकी धमकी दी। इसमें शक नहीं कि मैं एक दफा उसके पास गया था; क्योंकि मुझसे सहा नहीं जाता था, लेकिन आग लगानेकी बात बिल्कुल झूठ है। मैं आगके नजदीक नहीं गया। उसने खुद ही आग लगा ली और अपराध मेरे सिर मढ़ दिया। जिस समय आग लगी, मैं वहाँ मौजूद नहीं था, लेकिन उसने कह दिया कि जिस समय मैं और मेरी माँ वहाँ थे, आग लगी।"

"क्या यह सच है?"

"ईश्वर मेरा साक्षी है। मैं सच सच कह रहा हूँ। हुजूर, मेहरबानी करके..." यह आदमी नेख्लीडूके पैरों पड़ रहा था। नेख्लीडू मुश्किलसे इसको रोक पाया। "मेरे ऊपर दया करो...मैं अकारण पीसा जा रहा

हूँ।" इसका चेहरा काँपने लगा। यह अपनी बाँहोंको आँखोंपर रखकर रोने लगा और गन्दी कमीजकी आस्तीनोंसे आँसू पोछने लगा।

"आप तैयार हैं?" नायबने पूछा।

"हाँ...अच्छा, रोओ मत। तुम्हारे लिए जो कुछ हो सकेगा, मैं करूँगा।" नेख्लीडूने कहा और बाहर चला गया। मेनशव दर्वाजेके पास ही खड़ा था इसलिए जेलरने जब दर्वाजा बन्द किया तो इसे चोट लग गयी। जेलरने दर्वाजेमें ताला लगा दिया लेकिन वह सूराखसे देखता ही रहा।

अड़तालीसवाँ अध्याय

चौड़े बरामदेसे होता हुआ नेख्लीडू जब वापस आ रहा था तो इसने देखा कि हलके पीले रंगके चोगे, बड़ी मोहरीके छोटे पायजामे और जेलके जूते पहने कुछ लोग खड़े हैं और उत्सुकतासे इसको देख रहे हैं। (खानेका समय था इसलिए कोठरियोंके दर्वाजे खुले हुए थे।) इनको देखनेसे नेख्लीडूके हृदयमें सहानुभूति उत्पन्न हुई। उसे बहुत दुःख और ग्लानि हुई कि देखो कुछ लोग ऐसे हैं कि जिन्होंने इनको पकड़-कर यहाँ बन्द कर रखा है। उसे इस कारण भी लज्जा आयी कि मैं शान्तिपूर्वक इनकी परेशानियोंका विश्लेषण कर रहा हूँ। एक बरामदेमें कोई आदमी अपने जेलके जूते खटखटाता कोठरीके दर्वाजेमें घुस गया। इसमेंसे कई आदमी निकले, और वे नेख्लीडूके रास्तेमें खड़े होकर उसके सामने सर झुकाने लगे।

"हुजूर! सरकार! हमारा मामला भी तै करा दीजिये।"

"मैं सरकारी आदमी नहीं हूँ। मुझे कुछ भी नहीं मालूम।"

"आप सरकारी अफसर हों चाहे न हों, लेकिन दुनियासे तो आते हैं। किसी सरकारी अफसरसे ही कह दीजिये।" एक दुःखित स्वरने कहा—"और हम लोगोंपर दया कीजिये। दूसरा महीना हो गया और हम यहीं पड़े सड़ रहे हैं।"

"क्या मतलब? क्यों?" नेख्लीडूने पूछा।

"यह हम क्या जानें। लेकिन हमें यहाँ पड़े पड़े दो महीने हो गये।"

"यह सच बात कह रहा है; लेकिन संयोगकी बात है।" नायबने कहा—"इन लोगोंके पास पासपोर्ट नहीं था। इसलिए ये लोग गिरफ्तार किये गये हैं। उचित तो यह था कि इन्हें इनके सूबोंमें भेज दिया जाता, लेकिन वहाँका जेलखाना जल गया और वहाँके अधिकारियोंने हम लोगोंको लिख दिया कि यहाँ किसीको मत भेजना। इसी कारण ये यहीं

रह गये, यद्यपि हम लोगोंने और और प्रान्तोंके आदमियोंको, जिनके पास पासपोर्ट नहीं था, उनके सूबोंमें भेज दिया।"

"एँ! बस, इतनी सी बातपर?" आश्चर्यसे यह कहकर नेख्लीडू दर्वाजेपर खड़ा हो गया।

चालीस आदमी, जो जेलकी पोशाक पहने हुए थे, उनके और नायबके चारों ओर भीड़ लगाकर खड़े हो गये और बहुतसे एक ही साथ बोलने लगे। नायबने उनको ऐसा करनेसे रोक दिया।

"हरएक आदमी बारी बारीसे बात करे।"

एक लम्बा खूबसूरत किसान, जिसकी उम्र पचास वर्षकी रही होगी, आगे बढ़कर खड़ा हो गया। यह पत्थरकी इमारतें बनाता था। इसने नेख्लीडूसे कहा—"हम लोगोंके लिए अपने अपने घर वापस जानेका हुक्म हो गया था लेकिन फिर यह कहकर हम पकड़ लिये गये कि पास-पोर्ट नहीं है। पासपोर्ट हमारे पास है लेकिन उसके फिरसे नया करानेमें पन्द्रह दिनकी देर हो गयी। हरसाल ऐसा ही होता है। जबतक मियाद खतम न हो जाय, सरकारी कर्मचारी नया पासपोर्ट नहीं बनाते। इसके पहले कोई कुछ कहता सुनता भी नहीं था, लेकिन इस साल पकड़कर हम लोगोंको दो महीनेसे जेलमें रख छोड़ा है, मानो हम कोई मुजरिम हों!"

"हम लोग थवई हैं, और एक ही सभाके हैं। ये लोग कहते हैं कि हमारे सूबेका जेलखाना जल गया। लेकिन इसमें हमारा क्या कसूर? आप हम लोगोंकी मदद कर दीजिये।"

नेख्लीडू इन लोगोंकी बात सुनता था लेकिन वह समझ नहीं रहा था कि यह सुन्दर बुड्ढा आदमी क्या कह रहा है; क्योंकि उसका ध्यान तो एक बड़े, कई पैरोंवाले, चीलरपर था जो उस आदमीके गालोंके ऊपर रेंग रहा था।

"यह क्या बात है? क्या केवल इसी वजहसे ऐसा हो सकता है?" नेख्लीडूने नायबकी तरफ घूमकर कहा।

"जी हाँ, इनको भेज देना चाहिये था और ये लोग अपने अपने घर पहुँच जाते, लेकिन मालूम नहीं क्या बात है। लोग भूल गये क्या—"

नायबकी बात खतम नहीं होने पायी थी कि एक छोटे कदका आदमी, जेलके कपड़े पहने, भीड़से निकलकर अपना मुँह बनाता हुआ बोला—"हम लोगोंके साथ अकारण बुरा व्यवहार किया जाता है।"

"कुत्तोंसे भी बदतर!" वह कह रहा था।

"देखो देखो, बहुत बढ़कर बातें मत करो। जबान सँभालो, नहीं तो जानते हो......।"

"जानते क्या हैं?" छोटे कदके आदमीने चिल्लाकर कहा—"हमने कौन-सा अपराध किया?"

"चुप रहो।" नायबने चिल्लाकर कहा और यह छोटा-सा आदमी चुप हो गया।

'लेकिन इन बातोंका मतलब क्या है' नेख्लीडूने अपने मनमें कहा। कोठरीसे बाहर आते समय इसे कोठरीके दर्वाजेसे सूराखों द्वारा सैकड़ों आँखें देख रही थीं।

"क्या यह सच हो सकता है कि यहाँपर बिल्कुल निरपराध आदमी कैद रहते हों?" नेख्लीडूने बरामदेसे निकलते हुए जोरसे कहा।

"आप इम लोगोंसे क्या कराना चाहते हैं? ये लोग झूठ भी तो बोलते हैं। इनकी बातें सुनिये तो ये सबके सब निरपराध प्रतीत होते हैं।" नायब इन्स्पेक्टरने कहा—"और इनमेंसे कुछ लोगोंका बिलकुल निरपराध होना भी असम्भव नहीं।"

"देखिये, इन लोगोंने कोई अपराध नहीं किया है।"

"हाँ, हम यह मानते हैं, लेकिन लोग बहुत खराब हो गये हैं। कुछ लोग तो बड़े उद्दण्ड हैं। इनकी पूरी निगरानी करनी पड़ती है। कल ऐसे ही दो आदमियोंको सजा देनी पड़ी।"

"सजा देनी पड़ी? कैसे दी गयी?"

"बेत लगाये गये, सरकारी हुक्मसे।"

"लेकिन मैंने सुना है कि बेत लगाना बन्द हो गया।"

"उन लोगोंके लिए बन्द नहीं हुआ जिनसे अधिकार छीन लिये गये हैं। इन लोगोंको बेत लग सकता है।"

नेख्लीडूको उस दिनकी बात याद आ गयी, जब वह बड़े कमरेमें बैठा इन्तजार कर रहा था। अब वह उस सजाका रहस्य समझ गया जो उस दिन दी गयी थी। उसके हृदयमें कौतूहल, उदासी, परेशानी और नैतिक उलझन पैदा हो गयी और इस भावनाने उसपर एकाधिपत्य स्थापित कर लिया।

इन्सपेक्टरके नायबकी बातको अनसुनी करके नेख्लीडूने जल्दीसे बरामदेको छोड़ दिया और वह दफ्तर चला गया। इन्सपेक्टर दफ्तरमें था और किसी काममें लगा हुआ था। वह बिल्कुल भूल गया था कि दुखोवाको बुलानेके लिए किसीको भेजना चाहिये था। उसे केवल इतना याद था कि मैंने यह वादा किया है कि जब नेख्लीडू वापस आयेगा, उसे बुला लिया जायेगा।

"तशरीफ रखिये; मैं उसे बुलाये लेता हूँ।"

उनचासवाँ अध्याय

दफ्तरमें दो कमरे थे। पहले कमरेमें एक टूटा-फूटा आतशदान था और दो गन्दी खिड़कियाँ थीं। एक कोनेमें कैदियोंके नापनेके लिए एक काला "नपना" रखा हुआ था और दूसरे कोनेमें ईसा मसीहकी एक मूर्ति थी जो साधारणतः ऐसी जगहोंपर प्रायः रखी जाती है जहाँ लोगोंको यातना पहुँचायी जाती है। इस कमरेमें कई जेलर खड़े थे। दूसरे कमरेमें लगभग बीस व्यक्ति—मर्द और औरतें—अलग अलग, जोड़े जोड़े बैठे धीमी आवाजमें बातें कर रहे थे। खिड़कीके पास मेज रखी थी।

इन्स्पेक्टर मेजपर बैठ गया? उसने नेख्लीडूको भी अपने पास ही एक कुर्सीपर बिठा लिया। नेख्लीडू बैठकर कमरेके भीतरके आदमियोंको देखने लगा।

पहला आदमी, जिसकी तरफ उसका ध्यान आकर्षित हुआ, सुडौल चेहरेका एक नौजवान था। यह छोटी जैकेट पहने हुए एक अधेड़ औरतके सामने, जिसकी भौंहें काली थीं, कुछ कह रहा था और अपने हाथसे बराबर इशारा करता जाता था। इन्हींके पास, हरे रंगकी ऐनक लगाये, एक बुड्ढा, आदमी बैठा था। यह एक नौजवान कैदीके हाथ पकड़े उसको कुछ बता रहा था। स्कूलका एक विद्यार्थी भयभीत दृष्टिसे इस बुड्ढे आदमीको एकटक देख रहा था। एक कोनेमें प्रेमी और प्रेमिकाका एक जोड़ा बैठा हुआ था। लड़की अभी बिल्कुल कमउम्र और सुन्दर थी। इसके बाल छोटे और खूबसूरत थे। यह बढ़िया कपड़े पहने थी। इसके चेहरेपर उत्साहके चिह्न दिखाई देते थे। नौजवान आदमी भी सुडौल बना हुआ था। इसके बाल लहरदार थे। यह रबरका जैकेट पहने हुए था। इस कोनेमें बैठे हुए एक दूसरेसे धीरे धीरे बातें कर रहे

थे और प्रेममें बिल्कुल डूबे हुए दिखाई देते थे। मेजके बिल्कुल नजदीक सफेद बालोंवाली एक स्त्री, काला कपड़ा पहने हुए, एक दुबले-पतले नौजवानके कन्धेपर सर रखे बैठी थी। यह युवा भी रबरका जैकेट पहने था। देखनेसे मालूम होता था, जैसे इसे क्षयका रोग हुआ है। बुड्ढी औरत, जो इसके कन्धेपर अपना सर रखे थी, सम्भवतः इसकी माँ थी। यह वृद्धा उससे कुछ कहना चाहती थी, लेकिन अपनी सिसकियोंके कारण कुछ कह नहीं पाती थी। उसने कहनेकी कई बार चेष्टा की, लेकिन सिसकियोंने उसे रोक दिया। नौजवान आदमी अपने हाथमें कागज लिये कभी उसे मोड़ता और कभी अपने चेहरेपर, जिससे रोष प्रकट हो रहा था, दबाता था। इन्हींके पास छोटे बालोंकी, एक हृष्टपुष्ट गुलाबी चेहरेवाली लड़की बैठी थी। उसकी आँखें उभरी हुई थीं। वह भूरे रंगका कपड़ा पहने हुए थी और रोती हुई माँ के पास बैठी प्रेमके साथ चुप करा रही थी। इस लड़कीकी हरएक चीज सुन्दर थी। उसके बड़े बड़े सफेद हाथ, छोटे घुँघराले बाल, उसकी नाक और उसके होंठ सभी सुन्दर थे। लेकिन सबसे अधिक सुन्दरता थी उसकी निर्मल नीले रंगकी आँखोंमें। इसकी सुन्दर आँखें माँकी तरफसे हटकर थोड़ी देरके लिए, नेख्लीडूके आनेपर, उसकी आँखोंसे मिल गयीं। लेकिन इसने फौरन अपनी निगाह नेख्लीडूसे हटा ली और माँसे कुछ कहा। प्रेमी, प्रेमिकाओंके पास ही एक गहरे रंगका आदमी बैठा था। इसका चेहरा उदास था और बाल बिखरे हुए थे। यह एक बिना दाढ़ीके आदमीसे गुस्सेमें बातचीत कर रहा था। यह आदमी देखनेमें स्काप्ट्सी* सम्प्रदायका मालूम होता था।

नेख्लीडू इन्स्पेक्टरके पास बैठा बैठा कौतूहलसे चारों ओर देख रहा था। एक छोटा सा लड़का, जिसके बाल छोटे छोटे कटे हुए थे, इसके पास आया और महीन आवाजमें बोला—"आप किसका इन्तजार कर रहे हैं?"

---

* स्काप्ट्सी लोग आख्ता होकर पवित्रता प्राप्त करते हैं।

नेख्लीडूको इस प्रश्नसे आश्चर्य हुआ लेकिन लड़केका छोटा गम्भीर चेहरा और उसकी चमकदार तीक्ष्ण दृष्टि देखकर उसने भी गम्भीरतासे कहा—"मैं अपनी जान-पहचानकी एक स्त्रीकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"क्या वे आपकी बहन हैं?"

"नहीं, मेरी बहन नहीं हैं।" नेख्लीडूने ताज्जुबसे कहा और लड़केसे पूछा—"तुम कौन हो और यहाँ किसके साथ हो?"

"मैं? मैं अम्माके साथ हूँ।" उसने उत्तर दिया "वे राजनीतिक कैदी हैं।"

"मेरी पावलोभ्ना, कोलियोको ले जाओ।" इन्स्पेक्टरने कहा। संभवतः वह लड़केका नेख्लीडूसे बातचीत करना कायदेके खिलाफ मानता था।

मेरी पावलोभ्ना वही लड़की थी जिसकी तरफ नेख्लीडूका ध्यान आकर्षित हुआ था। वह सीधे उठकर खड़ी हो गयी और करीब करीब मर्दानी चालसे नेख्लीडू और बच्चेके पास पहुँची।

"यह आपसे कुछ पूछ रहा है? यही पूछ रहा होगा कि आप कौन हैं।" मेरीने हल्कीसी मुस्कराहटके साथ कहा और नेख्लीडूके चेहरेकी तरफ एक विश्वासपूर्ण भावसे देखा। मानों उसे इस बातमें जरा भी संदेह नहीं था कि सारी दुनियाके साथ उसका बर्ताव भाई-बहनका-सा था।

"यह हर एक बात जानना चाहता है।" उसने कहा और लड़केकी तरफ ऐसी मधुर प्रेमपूर्ण दृष्टिसे देखा कि लड़का और वह दोनों एक दूसरेको देखकर मुस्कराने लगे।

"ये मुझसे पूछ रहे थे कि मैं किससे मिलने आया हूँ।"

"मेरी पावलोभ्ना, अजनबी लोगोंसे बातचीत करना कानूनके खिलाफ है।" इन्स्पेक्टरने कहा।

"बहुत ठीक, बहुत ठीक।" उसने कहा और वह कोलियाका छोटा

हाथ अपने बड़े सफेद हाथोंमें पकड़े हुए क्षय रोग-पीड़ित लड़कीकी माँके पास चली गयी।

"यह छोटा बच्चा कौन है?" नेख्लीडूने इन्स्पेक्टरसे पूछा।

"इसकी माँ एक राजनैतिक कैदी है और यह इसी जेलमें पैदा हुआ है।" इन्स्पेक्टरने कहा, मानो वह इस बातपर अभिमान प्रकट कर रहा है कि यह संस्था कितनी असाधारण है।

"क्या यह संभव है?"

"जी हाँ। अब यह इसके साथ साइबेरिया जा रहा है।"

"और यह लड़की कौन है?"

"यह मैं नहीं बता सकता।" इन्स्पेक्टरने अपना कंधा मटकाते हुए कहा "इसके अलावा यह देखिये दुखोवा भी आ गयी।"

पचासवाँ अध्याय

कमरेके पीछेवाले दर्वाजेसे दुबली-पतली, पीली बीरा दुखोवा, लुढ़कती-पुढ़कती कमरेमें दाखिल हुई।

"तशरीफ लाकर आपने बड़ी कृपा की।" उसने कहा और नेख्लीडूसे हाथ मिलाया। "मुझे आप पहचानते हैं? आइये, बैठ जाइये।"

"मुझे इस स्थितिमें आपसे मिलनेकी आशा नहीं थी।"

"मैं बहुत खुश रहती हूँ। यहाँ इतना आनंद है, इतना आनंद कि अब मुझे किसी चीजकी आवश्यकता नहीं।" वीरा दुखोवाने कहा। उसकी बड़ी, गोल और दयापूर्ण आँखोंमें भयकी भावना थी। उसकी अत्यंत पतली गर्दनके चारों तरफ सलूकेका मुड़ा हुआ गंदा कालर था।

नेख्लीडूने पूछा—"आप जेलखाने कैसे पहुँचीं?"

इसके उत्तरमें वीरा दुखोवाने जोशके साथ सारा किस्सा बयान करना शुरू किया। उसकी भाषामें कुछ विशिष्ट शब्द भी थे; जैसे प्रचार, संगठन, मण्डल, उपमण्डल, इत्यादि। इन शब्दोंको नेख्लीडूने कभी नहीं सुना था। वीरा दुखोवा समझती थी कि इन शब्दोंसे सारी दुनिया परिचित है। नेख्लीडूने उसकी पतली गर्दन तथा उसके पतले बिखरे हुए बालोंको देखा। उसकी समझमें न आया कि इसने ये सब बातें, जो अभी बतायी हैं, आखिर क्यों कीं और क्यों बयान कर रही है? नेख्लीडूको इसके ऊपर दया आयी लेकिन यह वैसी दया नहीं थी जैसी उसे मेनशवके ऊपर आयी थी, जो बदबूदार कोठरीमें निरपराध बंद था। उसकी नजरोंमें यह दयाकी पात्र इसलिए थी कि इसके दिमागमें सनक थी। यह बात तो साफ थी कि यह अपनेको "प्रधान अभिनेत्री" समझती थी और अपने लक्ष्यकी सफलताके लिए अपनी जानतक देनेके लिए तैयार थी। लेकिन वह यह नहीं बता सकती थी कि क्या तो वह लक्ष्य था और क्या थी उसकी सफलता।

वीरा दुखोवा निम्नलिखित अभिप्रायसे नेख्लीडूसे मिलना चाहती थी। इसकी एक सखी शुस्तोवा नामकी एक लड़की, जो उसके कथनानुसार उसके उपमण्डलकी थी भी नहीं, पाँच महीने पहले उसके साथ गिरफ्तार कर ली गयी थी। और पेट्रोपावलाव्सके किलेमें बन्द कर दी गयी थी; क्योंकि उसके पास कुछ कागज मिले (जिन्हें दूसरोंने उसके पास रख दिया था और जो कानूनन् नाजायज थे। वीरा दुखोवा यह समझती थी कि उसकी गिरफ्तारीके लिए मैं किसी हदतक जिम्मेदार हूँ। इससे उसने नेख्लीडूसे प्रार्थना की कि आपका सम्बन्ध बड़े बड़े लोगोंसे है, इसलिए आप मेरी महिला मित्रकी रिहाई करानेमें कुछ मदद कर दीजिये।

इसके अलावा दुखोवाने नेख्लीडूसे यह भी कहा कि आप मेरे एक दूसरे मित्रसे, जिसका नाम गुरकेविच है और जो पेट्रोपावलाव्सके किलेमें बन्द है, मिलनेकी इजाजत माँगिये और उसकी माँसे भी मिलिये तथा गुरकेविचके लिए विज्ञानकी कुछ पुस्तकें मँगा दीजिये जिनकी उसे अपने अध्ययनके लिए आवश्यकता है।

नेख्लीडूने पीटर्सबर्ग पहुँचकर यथासम्भव प्रयत्न करनेका वादा किया। अब रही वीरा दुखोवाकी अपनी कहानी; सो उसने कहा— "दाईगिरीकी शिक्षा प्राप्त करनेके बाद मेरा सम्बन्ध नोरोदोवाल्सतफूके नामकी एक क्रान्तिकारी संस्थासे हो गया। पहले तो सब बातें अच्छी तरह होती रहीं। लोग घोषणाएँ लिखते थे, और कारखानोंमें तथा मिलोंमें प्रचारका काम खूब चल रहा था। संयोगसे पार्टीका एक सदस्य गिरफ्तार हो गया और इस संस्थाके कागज-पत्र पकड़े गये। जितने लोगोंका इस पार्टीसे सम्बन्ध था वे सब अन्तमें गिरफ्तार हो गये। मैं भी गिरफ्तार कर ली गयी और अब निर्वासित कर दी जाऊँगी। लेकिन इससे क्या होता है; मैं बहुत ही आनन्दमें हूँ।" उसने दयनीय मुस्कराहटके साथ अपनी कहानी समाप्त करते हुए कहा।

नेख्लीडूने बड़ी बड़ी आँखोंवालीके बारेमें भी पूछा। वीरा दुखोवाने

बताया—यह एक सेनापतिकी लड़की है और एक क्रान्तिकारी दलमें बहुत दिनोंसे काम करती रही है। अब इसे सजा हो गयी है; क्योंकि इसने एक सिपाहीको गोली मार देना अदालतमें स्वीकार कर लिया था। कुछ षड्यन्त्रकारियोंके साथ यह एक मकानमें रहती थी, जहाँ इनका एक छापाखाना भी था। एक रातको पुलिसवाले इस मकानकी तलाशी लेने आये तो मकानमें रहनेवालोंने अपना बचाव करनेका निश्चय किया। इन्होंने बत्तियाँ बुझा दीं और उन चीजोंको नष्ट करना शुरू कर दिया जो इनके खिलाफ मुकदमेमें इस्तेमाल की जा सकती थीं। पुलिस जबर्दस्ती घुस आयी और किसी षड्यन्त्रकारीने एक सिपाहीको गोलीसे मार डाला। जब तहकीकात होने लगी तब इस लड़कीने कहा कि गोली मैंने मारी है, यद्यपि उसके हाथमें पिस्तौल भी नहीं था, और एक चीटीके मारनेमें भी उसे दुःख होता है। वह अपनी बातपर अन्ततक दृढ़ रही, और अब उसे आजन्म कालेपानीपर साइबेरिया भेजा जा रहा है।"

"बड़ी परोपकारिणी और सच्चरित्र स्त्री है!" वीरा दुखोवाने कहा।

तीसरी बात, वीरा दुखोवा मस्लोवाके बारेमें कहना चाहती थी। वह जानती थी—जैसा कि जेलका हर एक आदमी जानता था—कि मस्लोवाके जीवनकी क्या कहानी है और मस्लोवाके साथ नेख्लीडूका कैसा सम्बन्ध रह चुका है। उसने नेख्लीडूको यह सलाह दी कि मस्लोवाकी बदली या तो राजनैतिक कैदियोंके वार्डमें करा दीजिये या उसे अस्पतालमें नियुक्त करा दीजिये। उस समय अस्पतालमें बहुतसे बीमार थे और नर्सोंकी जरूरत थी। मस्लोवा नर्सोंकी मददके लिए भेजी जा सकती थी।

नेख्लीडूने वीराको इस सलाहके लिए धन्यवाद दिया और ऐसा ही करना स्वीकार किया।

— — —

इक्यावनवाँ अध्याय

वीरा दुखोवा और नेख्लीडूकी बातचीत हो रही थी कि इन्स्पेक्टरने आकर कहा—"समय हो गया।" नेख्लीडूने वीरासे बिदा माँगी और दर्वाजेपर जाकर वहाँ जो कुछ हो रहा था, देखने लगा।

"महाशयो! समय हो गया, समय हो गया।" इन्स्पेक्टर कह रहा था। वह कभी उठता था और कभी बैठता।

इन्स्पेक्टरके इस हुक्मको सुनकर कैदियोंकी बातचीतमें और भी तेजी हो जाती थी, और कोई कमरेसे बाहर नहीं निकलता था। कुछ उठकर खड़े हो गये थे और खड़े खड़े ही बातें करते थे। कुछ बैठे बैठे बातें करते जाते थे; कुछ बिदा होते समय रोने लग गये थे। क्षयसे पीड़ित नौजवान और उसकी माँकी दशा दयनीय थी। यह आदमी अपने हाथके कागजको बार बार मरोड़ता जाता था। उसका चेहरा रुष्ट-सा था; क्योंकि वह इस बातकी बेहद कोशिश कर रहा था कि माँकी भावनासे उसपर कोई असर न पड़े। माँने यह सुनकर कि बिदा होनेका समय आ गया, अपना सर उसके कन्धेपर रख दिया और जोर जोरसे सिसकने लगी। बड़ी, और सहानुभूतिपूर्ण आँखोंवाली स्त्री—जिसपर नेख्लीडूकी आँखें बराबर लगी हुई थीं—सिसकती हुई माँके सामने खड़ी हुई, उसकी सान्त्वनाके लिए, कुछ कह रही थी। नीली ऐनक लगाये हुए बुड्ढा आदमी, अपनी लड़कीका हाथ पकड़े, उसकी हर एक बातपर सर हिला रहा था। नौजवान प्रेमी और प्रेमिका उठकर खड़े हो गये थे और एक दूसरेका हाथ पकड़े एक दूसरेकी आँखोंमें चुपचाप देख रहे थे।

"यहाँपर यही लोग सबसे अधिक आनंद में हैं;" छोटा कोट पहने

हुए एक नौजवानने, जो नेख्लीडूकी बगलमें खड़ा था और यहाँकी सब बातें देख रहा था, कहा और इन प्रेमियोंकी तरफ इशारा किया।

नेख्लीडू और इस नौजवान आदमीकी आँखें अपने ऊपर लगी देख कर इन प्रेमी और प्रेमिकाने—अर्थात् रबरका कोट पहने हुए नौजवान और सुन्दरी युवतीने—अपने अपने हाथ फैलाकर एक-दूसरे की हथेलियाँ पकड़कर नाचना शुरू कर दिया।

"आज रातको इसी जेलमें इन दोनोंका विवाह होगा और यह औरत इसके साथ साइबेरिया जायेगी।" नौजवानने कहा।

"यह कौन है?"

"यह एक कैदी है। इसे देशनिकालेकी सजा हुई है। इन्हीं दोनोंको कुछ आनंद मिल जाय, नहीं यहाँ तो दुःख ही दुःख रहता है।" नौजवान आदमीने कहा, और क्षयसे पीड़ित लड़केकी माँकी सिसक इसके कानमें आयी।

"भलेमानसो! कृपाकर मुझे सख्ती करनेके लिए मजबूर न करो।" इन्स्पेक्टरने कहा और कई बार इसी वाक्यको दुहराता गया। "मेहरबानी करके खतम कीजिये" उसने मुलायम और संकुचित ढँगसे कहा। "वक्त हो गया, आप लोग क्यों ठहरे हुए हैं? यह हो नहीं सकता...... आपसे यह प्रार्थना मैं अन्तिम बार कर रहा हूँ," उसने ऊबकर कहा और अपना एक सिगरेट बुझाकर दूसरा जला लिया।

यह बिलकुल स्पष्ट था कि यद्यपि बिना अपनी जिम्मेदारी माने दूसरेको कष्ट पहुँचानेके तरीके कौशलपूर्ण पुराने और प्रचलित थे, फिर भी इन्स्पेक्टर मन ही मन यह अनुभव कर रहा था कि दूसरोंको दुःख पहुँचानेके अपराधियोंमेंसे मैं भी एक हूँ। इसका प्रमाण उसके सामने इस कमरेमें प्रत्यक्ष था। और यह भी साफ दिख रहा था कि इस भावनासे उसके हृदयको क्लेश हो रहा है। अन्तमें कैदी और मुलाकाती विदा होने लगे। कैदी अंदरके दर्वाजेसे और मुलाकाती बाहरके दर्वाजेसे जाने लगे। रबरकी जाकेटवाला कैदी तथा क्षयरोग-ग्रस्त

युवक और बिखरे बालोंवाला आदमी चला गया। मेरी पावलोभ्ना जेलमें पैदा हुए लड़केके साथ, कमरेसे निकलकर जेलके अन्दर चली गयी।

मुलाकाती भी बाहर चले गये। नीली ऐनक लगाये हुए बुड्ढा आदमी भारी कदम रखता हुआ बाहर निकला और उसके पीछे-पीछे नेख्लीडू।

"जी हाँ यह विचित्र दशा है," बातूनी नौजवानने नेख्लीडूके साथ सीढ़ियोंपर उतरते उतरते कहा "फिर भी हमें इन्स्पेक्टरको धन्यवाद देना चाहिये कि वह इतना दयालु आदमी है कि नियमका पालन कठोरताके साथ नहीं करता। दो चार बातें कर लेने पर उन बेचारोंको कुछ शान्ति मिल ही जाती है।"

बातचीतमें इस नौजवान आदमीने अपना नाम मेडिनरटफ् बताया। बातचीत करते हुए ये लोग बड़े कमरेमें पहुँच गये जहाँ इन्स्पेक्टर थके हुए कदमोंको उठाता हुआ इनके पास आया।

"अगर आप मस्लोवासे मिलना चाहते हैं" उसने कहा "तो कल तशरीफ लाइये।" वह चाहता था कि नेख्लीडूके साथ अपने व्यवहारको मधुर रखे।

"बहुत अच्छा" नेख्लीडूने कहा और वहाँसे फौरन चल दिया।

निरपराध मेनशवकी यातनाएँ बड़ी भयंकर थीं। उसकी शारीरिक यातना इतनी नहीं थी जितनी मानसिक यातनाएँ। उसे ईश्वर और धर्ममें विश्वास नहीं रह गया था; क्योंकि लोगोंने उसे अकारण इतना सताया था कि उसका विश्वास बिल्कुल जाता रहा था।

उन सैकड़ों निरपराध लोगोंका कष्ट और अपमान भी भयंकर था, जो सिर्फ इसलिए उनपर आ पड़ा था कि किसी कागजपर वह नहीं लिखा था जो लिखा होना चाहिये था। पशु-अवस्था-प्राप्त जेलरोंकी मानसिक अवस्था भी भयंकर थी, जिनका काम ही था अपने भाइयोंको सताना और जिनका यह पूर्ण विश्वास था कि हम इस तरह एक

महत्वपूर्ण लाभदायक कर्त्तव्यका पालन कर रहे हैं। लेकिन सबसे भयं-कर दशा तो इस रुग्ण, वृद्ध और दयाशील इन्स्पेक्टरकी थी जिसको विवश होकर माँको लड़केसे, बापको बेटीसे, अलग करना पड़ता था, जो इसीकी तरह और इसके बच्चोंकी तरह थे।

"यह सब कुछ किसलिए है!" नेख्लीडूने अपने मनमें कहा, और इसके दिलमें, और दिनोंसे ज्यादा, ऐसी नैतिक मतली पैदा हुई कि वह शारीरिक मतली बन गयी। यह दशा उसकी हमेशा हो जाया करती थी जब वह जेल जाया करता था और इस सवालका जवाब उसे नहीं मिला।

बावनवाँ अध्याय

दूसरे दिन नेख्लीडू वकीलसे मिलने गया और उससे मेनशवके मुकदमेके बारेमें बातचीत की और यह प्रार्थना की कि मेनशवका भी मुकदमा ले लो। वकीलने कहा कि मैं मिसिल देखूँगा और अगर, जैसा कि आप (नेख्लीडू) कहते हैं और जो सम्भव भी मालूम होता है, मामला वैसा ही है तो मैं बिना मेहनताना लिये उस मुकदमेको कर दूँगा। इसके बाद नेख्लीडूने उन एक सौ तीस आदमियोंका हाल बताया, जिन्हें सिर्फ एक गलतीके लिए जेलमें बन्द कर दिया गया था। यह किसके हाथमें था, इसमें दोष किसका है!

वकील थोड़ी देरतक चुप रहा। सम्भवतः वह ठीक ठीक उत्तर सोच रहा था।

"दोष किसका था? किसीका नहीं।" उसने निश्चयपूर्वक कहा "प्रोक्योररसे पूछिये तो वे कहेंगे गवर्नरका दोष है, गवर्नर कहेंगे प्रोक्योररका दोष है। दोष किसीका नहीं।"

"मैं अभी नायब गवर्नरके पास जा रहा हूँ। उनसे कहूँगा।"

"कहना बेकार है," वकीलने मुस्कराते हुए कहा "वह तो इतना—आपके वे दोस्त या कोई रिश्तेदार तो नहीं हैं न?—इतना बेवकूफ है, और साथ ही साथ बड़ा काइयाँ भी।"

नेख्लीडूको मेसलेनीकफकी यह बात याद आ गयी जो उसने वकील साहबके बारेमें कही थी। उसने इस बातका कोई उत्तर नहीं दिया। लेकिन उससे बिदा हो मेसलेनीकफके यहाँ चला गया। नेख्लीडूको उससे दो बातें करानी थी। एक तो मस्लोवाको जेलके अस्पतालमें भेजवाना था और उन एक सौ तीस आदमियोंके बारेमें बात-चीत करनी थी, जिनको पासपोर्ट न होनेके कारण बिना किसी अपराधके कैदमें

रख छोड़ा था। ऐसे आदमीसे एहसान लेना, जिसकी इज्जत उसकी निगाहमें न थी, नेख्लीडूको बहुत बुरा मालूम होता था। लेकिन स्वार्थ-साधनका एकमात्र यही उपाय था, इसलिए इसका उपयोग करना जरूरी था।

नेख्लीडू जब मेसलेनीकफके घरके सामने पहुँचा, उसने कई गाड़ियाँ फाटकपर खड़ी देखीं। उसे याद आ गया कि मेसलेनीकफकी पत्नीने आज ही अपना भोज रखा था।

"आहा! नेख्लीडू साहब हैं? कैसा मिजाज है? क्या बात है कि आजकल आप दिखाई नहीं देते?" मेसलेनीकफने नेख्लीडूका अभिवादन करते हुए कहा—"आइये और श्रीमतीको प्रणाम कर आइये। कोरचेगिन कुटुम्ब भी आया हुआ है और—नदीन, बुकशेव्डन भी हैं। शहरकी सब सुन्दरियाँ जमा हैं।" इस महत्त्वपूर्ण जवानने कहा और अपना कन्धा जरा-सा उठाया ताकि कामदार वर्दी पहने हुए इसका नौकर इसके फौजी ओवरकोटको पहना दे। "नमस्कार श्रीमान्!" कहते हुए इसने मेसलेनीकफसे हाथ मिलाया और चल दिया।

"आइये, आइये, बड़ी खुशी हुई।" मेसलेनीकफने उत्तेजित होते हुए कहा और नेख्लीडूका हाथ जोरोंसे पकड़ लिया। मोटा होनेपर भी मेसलेनीकफ तेजीसे जीनेपर चढ़ गया। इस समय यह विशेष रूपसे प्रफुल्लित हो रहा था; क्योंकि उस महत्त्वपूर्ण व्यक्तिने उसको इज्जत दी थी।

"कामकी बातें तो बादको होंगी। जो कुछ तुम कहते हो, मैं कर दूँगा" मेसलेनीकफने कहा। वह नेख्लीडूको खींचता हुआ नाचके बड़े कमरेमें ले गया। "कह दो कि राजकुमार नेख्लीडू पधारे हैं," उसने एक अर्दलीसे बिना रुके हुए कहा। अर्दली तेजीसे बढ़ता हुआ इनके पाससे होता आगे बढ़ गया।

"भाई, जो हुक्म दोगे, मैं कर दूँगा; लेकिन पहले मेरी पत्नीसे तो मिल लो। देखो उस दिन मैंने तुम्हें बिना मिले जाने दिया तो मेरे ऊपर डाँट पड़ गयी।"

बैठनेके कमरेतक इन लोगोंके पहुँचनेके पहले ही अर्दलीने नेख्लीडू-के आनेकी खबर वहाँ पहुँचा दी थी। यहाँपर अनेक टोपियों और सरोंके बीचमें नेख्लीडूने देखा कि नायब गवर्नरकी पत्नी ऐना इगनैटिव्ना मुस्कराती हुई इसका स्वागत कर रही है। बैठनेके कमरेके दूसरे कोनेपर चायकी मेजके चारों तरफ कुछ महिलाएँ बैठी थीं और कुछ सैनिक और सिविलियन इनके पास खड़े थे। स्त्रियों और पुरुषोंकी आवाजें बराबर आ रही थीं।

"हम लोगोंने तो यह समझा था कि आप हमको एकदम भूल गये। क्या हमारी कोई बात आपको बुरी मालूम हुई?" इन शब्दोंसे ऐना इगनैटिव्वाने नेख्लीडूका स्वागत किया। इन शब्दोंका उद्देश्य यह था कि यह प्रभाव डाला जाय कि नेख्लीडू और उसके दर्मियान घनिष्ठता है, जो वास्तवमें थी नहीं।

"आप पहचानती हैं न? श्रीमती टेलव्सकाया, श्रीमती चरनव, नजदीक बैठ जाइये। मिसी, हमारी मेजपर आ जाओ। वहाँसे तुम्हारी चाय यहाँ चली आयेगी और आप भी चले आइये। उसने एक अफसरसे कहा, जिसका नाम शायद वह भूल गयी थी "राजकुमार! एक प्याली चाय।"

"मैं आपसे हरगिज सहमत नहीं हो सकती। सीधी बात है कि वह उसे प्यार नहीं करती थी।" एक स्त्रीकी आवाज सुनाई दी।

"लेकिन वह दिलसे तो प्रेम करती थी।"

"बार-बार क्या वही बेवकूफीके मजाक करती हो।" दूसरी महिलाने—जिसके जिस्मपर रेशम, सोना और जवाहिरात चमक रहे थे—हँसते हुए कहा।

"ये तो बड़े अच्छे हैं। ये छोटे-छोटे बिस्कुट कितने हल्के हैं। मैं एक और लूँगी।"

"क्या आप लोग जल्दी जा रहे हैं?"

"हाँ, आजका दिन हमारा अन्तिम दिन है, इसीसे हम आये हैं।"

"हाँ, गाँवमें तो बहुत ही अच्छा मौसम होगा। आज-कल वसन्त ऋतु बहुत आनन्ददायक है।"

मिसी सरपर टोपी लगाये हुए थी और गहरी धारियोंका बहुत ही चुस्त कपड़ा पहने थी। इस पोशाकमें वह बड़ी सुन्दर दीख पड़ती थी। उसने नेख्लीडूको देखा तो वह झेंप गयी।

"मैंने समझा कि तुम चले गये।" मिसीने नेख्लीडूसे कहा।

"जानेवाला ही हूँ, एक कामकी वजहसे ठहरा हूँ और उसी कामके लिए यहाँ आया भी हूँ।"

"क्या अम्माँसे न मिलोगे? वे तुमसे मिलनेको कह रही थीं," मिसीने कहा। और यह जानकर कि जो कुछ मैं कह रही हूँ, सही नहीं है और उसे मैं भी जानती हूँ, वह और भी झेंप गयी।

"मेरा खयाल है कि मुझे समय न मिलेगा," नेख्लीडूने उदासीसे कहा, यह प्रकट करते हुए कि मैंने तुम्हारा झेंपना नहीं देखा।

मिसीके माथेपर बल पड़ गये। उसने अपने कन्धे हिलाये और एक बढ़िया पोशाक पहने हुए अफसरकी तरफ झुकी, जिसने उसके हाथसे चायका खाली प्याला, जिसे वह लिये हुए थी, ले लिया और अपनी तलवार कुर्सीसे लड़ाते हुए इस प्यालेको दूसरी मेजपर ले जाकर रख दिया।

"होम फन्डमें आपको जरूर चन्दा देना चाहिये।"

"मैं इन्कार थोड़े ही कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि जो कुछ मुझे देना है उसे मैं लाटरीमें लगा दूँ और फिर जीतनेपर शानसे चन्दा दूँ।"

"अपनी खबरदारी करना" एक आवाज आयी और फिर बनावटी हँसी सुन पड़ी।

ऐना इग्नैटिव्ना खुशीके मारे फूली नहीं समाती थी। इसका भोज खूब सफल रहा था।

"मिखीने मुझसे कहा कि आप जेलके काममें अपना समय दे रहे हैं। मैं आपकी सेवाकी भावनाको समझ रही हूँ।" ऐनाने नेख्लीडूसे

कहा "मित्री (ऐना अपने मोटे पति मेसलेनीकफको मित्री कहती थी) में दोप हो सकते हैं लेकिन वह दयालु है। इन अभागे कैदियोंको वह अपने बच्चोंकी तरह समझता है। इन्हें किसी और दृष्टिसे नहीं देखता। वह बड़ा भला आदमी है..." इतना कहकर वह रुक गयी; क्योंकि उसे अपने पतिकी भलमनसाहतको प्रमाणित कर सकने योग्य कोई शब्द नहीं मिला, जिसके हुक्मसे आदमियोंको कोड़े लगते थे। वह मुस्कराती हुई एक बुड्ढी औरतकी तरफ झुकी, जो बहुत बनाव-शृङ्गार किये हुए उसी समय आयी थी।

नेख्लीडूने उतनी बातचीत की जितनीकी आवश्यकता थी और उठकर मेसलेनीकफके पास चला गया।

"क्या मुझे, कुछ मिनट दे सकेंगे?"

"जरूर! क्या मामला है? आओ, यहाँ बैठ जाओ।"

ये लोग एक छोटेसे जापानी ढंगके बने बैठनेके कमरेमें दाखिल हुए, और खिड़कीके पास बैठ गये।

तिरपनवाँ अध्याय

अच्छा आओ, सिगरेट पिओगे ? लेकिन ठहर जाओ, यहाँ गड़बड़ न हो जाय," मेसलेनीकफने कहा और राखदानी लाकर रख दी। "हाँ फिर।"

'दो बातें हैं जो मैं करना चाहता हूँ।"

"खैरियत तो है ?" मेसलेनीकफके चेहरेपर उदासी छा गयी।

"मैं उसी औरतके बारेमें आया हूँ," नेख्लीडूने कहा।

"हाँ, मैं समझ गया। वही, जिसको निरपराध सजा दे दी गयी है।"

"मैं आपसे यह प्रार्थना करूँगा कि उसे जेलके अस्पतालमें काम करनेके लिए भेज दिया जाय। मैंने सुना है कि यह हो सकता है।"

मेसलेनीकफ अपने होंठ दबाकर कुछ सोचने लगा।

"यह तो मुश्किल मालूम होता है, फिर भी मैं पूरी पूरी कोशिश करूँगा और कल इसका उत्तर तारके जरिये तुम्हारे पास भेज दूँगा।"

"मैंने सुना है कि जेलखानेमें इस समय बहुतसे लोग बीमार हैं और उनकी सेवा-शुश्रूषाकी जरूरत है।"

"ठीक है। मैं कल आपको बताऊँगा।"

"बहुत अच्छा, जरूर बताइयेगा।"

बैठनेके कमरेसे बहुतोंकी आवाज और कभी कभी स्वाभाविक हँसी भी सुनाई दे रही थी।

"यह विकटर है, और जब अपनी धुनमें होता है तो बहुत ही मजे की बातें करता है," मेसलेनीकफने कहा।

"दूसरी बात जो मैं आपसे कहना चाहता था," नेख्लीडूने कहा, "वह यह है कि एक सौ तीस आदमी सिर्फ इसलिए जेलमें बन्द हैं कि उनके पासपोर्टपर नये दस्तखत नहीं हुए हैं। इन लोगोंको एक महीना हो गया।" नेख्लीडूने इनका पूरा किस्सा सुना दिया।

"तुमको ये सब बातें कैसे मालूम हो गयीं ?" मेसलेनीकफने कहा। उसके चेहरेसे असन्तोष और बेचैनी जाहिर होने लगी।

"मैं एक कैदीसे मिलने गया था और जेलके अन्दर बरामदेमें पहिले इन लोगोंने मुझे घेर लिया और कहा,—"

"तुम किस कैदीसे मिलने गये थे ?"

"एक किसानसे, जो कि निरपराध होते हुए भी जेलमें बंद है। मैंने इस कैदीके मुकदमेको एक वकीलके सुपुर्द कर दिया है, लेकिन यह तो दूसरी बात है। प्रश्न यह है कि यह कैसे संभव हो जाता है कि जिन्होंने कोई अपराध नहीं किया ऐसे लोग सिर्फ इसलिए जेलमें बंद किये जाते हैं कि इनके पासपोर्टपर फिरसे हस्ताक्षर नहीं हुए। और—।"

"यह तो प्रोक्योररका काम है," मेसलेनीकफने रोषसे बात काटते हुए कहा "यह है नतीजा उस प्रथाका जिसको आप लोग न्यायका सही और फुर्तीका तरीका बतलाते हैं। सरकारी वकीलको जेलका मुआइना करना और यह देखना चाहिये कि वहाँ कितने कैदी हैं और वे कानूनके अनुसार हैं या नहीं। लेकिन इन लोगोंको तो ताश खेलनेसे ही छुट्टी नहीं मिलती।"

"तो इसका मतलब क्या मैं यह समझूँ कि आप इस मामलेमें कुछ नहीं कर सकते !" नेखलीडूने निराशा प्रकट करते हुए कहा। उसे यह बात याद आ गयी कि वकीलने पहले ही कहा था कि नायब गवर्नर प्रोक्योररके ऊपर सब दोष मढ़ देते हैं।

"नहीं, मैं कुछ तो जरूर कर सकता हूँ और इस मामलेकी देख-भाल अभी करता हूँ।"

"उसके लिए तो और भी बुरा हुआ। दुनिया उसे हँसती है", एक औरतकी आवाज बैठनेके कमरेसे आयी।

"और अच्छा हुआ। मैं इसे भी लूँगा।" दूसरी तरफसे एक पुरुषका कंठस्वर सुनाई दिया। इसके बाद ही एक स्त्रीके हँसनेकी

चौवनवाँ अध्याय

सबसे अधिक व्यापक एक अन्धविश्वास यह है कि हर एक आदमीका अपना कोई विशिष्ट गुण होता है—जैसे कोई दयालु होता है, और कोई निर्दय; कोई मूर्ख होता है, कोई बुद्धिमान्; कोई फुर्तीला होता है, कोई आलसी इत्यादि। सभी आदमी इस तरहके नहीं होते। यह जरूर कह सकते हैं कि किसीमें निर्दयतासे दयालुता ज्यादा पायी जाती है या मूर्खताकी अपेक्षा बुद्धि ज्यादा। या कोई आलसी कम है और फुर्तीला ज्यादा। लेकिन आप यह नहीं कह सकते कि कोई आदमी दयालु और बुद्धिमान् है और दूसरा बुरा और मूर्ख। फिर भी हम मनुष्य मात्रको इसी तरह विभाजित करते हैं, जो कि गलत है। आदमी नदियोंकी तरह होते हैं। सबका पानी एक ही तरहका होता है, लेकिन हर एक नदी कहीं कम, कहीं ज्यादा तेज, कहीं मन्द और कहीं चौड़ी होती है, कहीं पानी साफ हो जाता है कहीं मटमैला, कहीं ठंढा और कहीं गरम। आदमियोंका भी यही हाल है। हर एक आदमीके दिलमें हर किस्मके मानसिक गुणोंका अंकुर पाया जाता है। कभी एक गुण प्रकट हो जाता है, कभी दूसरा, कभी मनुष्य बिलकुल बदल जाता है, हालाँ कि शरीर वही होता है।

कुछ लोगोंमें यह परिवर्तन बहुत जल्द-जल्द होते हैं और नेख्लीडूव इसी किस्मका आदमी था। इसमें जो परिवर्तन हुए उनकी वजह शारीरिक और आत्मिक दोनों थीं। आज भी उसमें उसी प्रकारका परिवर्तन आया।

कटूशाके मुकदमे और उसकी पहली मुलाकातके बाद नेख्लीडूवने एक नया जीवन पानेपर जिस आनन्दका अनुभव किया था, वह बिलकुल जाता रहा और कटूशाकी पिछली मुलाकातके बाद इस आनन्दकी जगह

पर घृणा और भय उत्पन्न हो गया था। उसने निश्चय कर लिया था कि कट्यूशाका कभी त्याग न करूँगा और अगर वह राजी हो जायगी तो उसके साथ विवाह करनेका इरादा पक्का रखूँगा। लेकिन यह स्थिति बड़ी मुश्किल मालूम होती थी, और उसकी वजहसे उसे कष्ट भी था।

मेसलेनीकफसे मिलनेके दूसरे दिन बाद नेख्लीडू कट्यूशासे मिलने फिर जेलखाने गया।

इस बार इन्स्पेक्टरने उसे न तो दफ्तरमें और न वकीलके कमरेमें, बल्कि औरतोंके मुलाकातवाले कमरेमें मिलनेकी इजाजत दी।

दयालु होते हुए थी इन्स्पेक्टर इस बार पहलेकी अपेक्षा नेख्लीडूसे कुछ खिंचा हुआ था। मालूम होता है कि मेसलेनीकफसे बातचीतके फलस्वरूप ज्यादा एहतियात बरतनेका हुक्म जेलमें पहुँच चुका था। "आप उससे मिल सकते हैं" इन्स्पेक्टरने कहा "लेकिन मैंने जो कुछ रुपयेके बारेमें कहा है, उसे याद रखियेगा। रही कट्यूशाको अस्पताल भेजनेकी बात जिसके बारेमें गवर्नर साहबने मुझे लिखा है, वह तो हो जायगी, डाक्टर इससे सहमत हो जायँगे। कठिनाई सिर्फ यह है कि कट्यूशा खुद नहीं जाना चाहती। वह कहती है कि मैं इन गंदे भिखारियोंकी सेवामें अपना समय क्यों लगाऊँ? राजकुमार! आप इन लोगोंको नहीं जानते।"

नेख्लीडूने उत्तर नहीं दिया, सिर्फ यही कहा कि मुलाकात करा दीजिये। इन्स्पेक्टरने जेलरको बुलाया और नेख्लीडू उसके पीछे-पीछे औरतोंके मिलनेके कमरेमें चला गया। वहाँपर और कोई नहीं था, सिवाय मस्लोवाके जो बैठी प्रतीक्षा कर रही थी। जालीके पीछेसे वह शान्तिके साथ संकोच करती हुई आकर नेख्लीडूके पास खड़ी हो गयी और बगैर उसकी ओर देखे हुए बोली—

"माफ करना डिमिट्री आइवनिच! परसों मैंने बहुत-सी बातें ऐसी कह दीं जो गलत थीं।"

"माफ मैं करूँ?" नेख्लीडूने कहना शुरू किया।

"बहरहाल तुम्हें मेरा पीछा छोड़ देना चाहिये," मस्लोवाने बात काटते हुए कहा। नेख्लीडूने उसके भयंकर तीक्ष्ण नेत्रोंमें, जिससे वह नेख्लीडूको देख रही थी, पुराना खिंचा हुआ रोषपूर्ण भाव देखा।

"मैं तुम्हें क्यों छोड़ दूँ?"

"छोड़ देना चाहिये।"

'आखिर क्यों?'

कटूशाने उसकी तरफ निगाह उठाकर देखा और नेख्लीडूको ऐसा लगा कि उसमें वही पुराना रोषपूर्ण भाव है।

"बात तो यही है," उसने कहा "तुम्हें मुझे छोड़ना पड़ेगा। जो कुछ मैं कह रही हूँ, ठीक कह रही हूँ। मैं यह नहीं कर सकती। इस विचारको आप बिल्कुल त्याग दीजिये।" कटूशाके होंठ काँपने लगे और वह थोड़ी देरके लिए चुप हो गयी। "मैं सच कहती हूँ, मैं फाँसी लगाकर मर जाना बेहतर समझूँगी।"

नेख्लीडूको ऐसा मालूम हुआ कि कटूशाके इनकारमें घृणा और अक्षम्य रोष है। लेकिन इसके साथ ही कुछ अच्छी बात भी है। वह यह कि वह अपने पहले इन्कारका समर्थन कर रही थी। इससे नेख्लीडूके दिलके सब सन्देह शान्त हो गये। उनके स्थानमें वे गंभीर और विजयपूर्ण भावनाएँ पैदा हो गयीं जिनका अनुभव वह कटूशाके संबंधमें करता था।

"कटूशा! जो कुछ मैंने कहा है वह मैं फिर कहूँगा।" नेख्लीडूने बड़ी गंभीरतासे कहा "मैं तुमसे कहता हूँ कि मेरे साथ शादी कर लो। अगर तुम नहीं चाहती हो और जबतक तुम नहीं चाहोगी, मैं सिर्फ तुम्हारे साथ-साथ रहूँगा और जहाँ जाओगी वहाँ जाऊँगा।"

"जो जीमें आवे, करो। इसके अलावा मैं कुछ और न कहूँगी।" उसने कहा। उसके होंठ फिर काँपने लगे।

नेख्लीडू भी चुप हो गया; क्योंकि उसके मुँहसे बात नहीं निकलती थी।

"मैं इसके बाद गाँव जाऊँगा और फिर वहाँसे पीटर्सबर्ग।" उसने

कहा, जब वह अधिक शान्त हो गया "और मैं इस बातकी पूरी कोशिश करूँगा कि तुम्हारे......और हमारे मुकदमेपर फिरसे विचार हो, और अगर ईश्वरने चाहा तो सजा मन्सूख हो जायेगी।"

"और अगर मन्सूख न हुई तो भी कोई पर्वाह नहीं। मैं इसी योग्य थी। इस मुकदमेमें न सही तो दूसरे तरीकोंसे।" और नेख्लीडूने देखा कि कटूशा मुश्किलसे अपने आँसू रोक पा रही है।

"अच्छा, यह बताओ मेनशवसे तुम मिले?" कटूशाने एकाएक अपने भावको छिपानेके लिए कहा "यह बिल्कुल सही बात है कि ये लोग निरपराध हैं। है न यह बात?"

"मेरा भी यही खयाल है।"

"बेचारी बुढ़िया बड़ी अच्छी औरत है।" कटूशाने कहा।

नेख्लीडूने इसके बाद मेनशवके बारेमें जो कुछ पता लगाया था, कटूशा को बताया और पूछा कि क्या मेनशवको किसी चीजकी जरूरत नहीं है।

कटूशाने कहा "उनको किसी चीजकी जरूरत नहीं है।"

दोनों फिर चुप हो गये।

"अच्छा, अब रही अस्पतालकी बात।" कटूशाने एकदम अपनी तिरछी आँखोंसे उसे देखते हुए कहा "अगर तुम चाहते हो तो मैं चली जाऊँगी और शराब भी न पिऊँगी।"

नेख्लीडूने कटूशाकी आँखोंकी तरफ देखा। उनमें मुस्कराहट थी।

"बहुत अच्छी बात है।" नेख्लीडूने कहा। इसके अलावा वह और कुछ न कह सका और वहाँ से चला आया।

"ठीक है। कटूशा बिलकुल बदल गयी है।" नेख्लीडूने अपने मनमें कहा। अपने पुराने समस्त संशयोंके बाद, अब उसे एक नयी बातका अनुभव हुआ। इसका अनुभव उसे पहले कभी नहीं हुआ था! प्रेम निश्चय ही अजेय है।

मस्लोवा जब अपनी दुर्गंधपूर्ण कोठरीमें, मुलाकातके बाद, वापस गयी, उसने अपना चोगा उतारा। फिर अपनी गोदमें हाथ रखकर वह

अपने तख्तपर अपनी जगह बैठ गयी। कोठरीमें उस वक्त चौकीदारकी स्त्री, मेनशवकी बुड्ढी माँ लादीमीरकी स्त्री और उसका बच्चा तथा क्षय रोगसे पीड़ित स्त्री थी। पादरीकी लड़कीको पागल बताकर एक दिन पहले अस्पताल भेज दिया गया था। बाकी औरतें कपड़ा धोने गयी हुई थीं। बुड्ढी औरत सो रही थी और कोठरीका फाटक खुला हुआ था। चौकीदारके बच्चे बाहर बरामदेमें थे। लादीमीरकी स्त्री अपने बच्चेको गोदमें लिये और चौकीदारकी स्त्री अपनी फुर्तीली उँगलियोंसे मोजा बुनती हुई मस्लोवाके पास आकर खड़ी हो गयीं।

"कहो, बातचीत हो गयी?" इन लोगोंने पूछा।

मस्लोवा ऊँचे तख्तपर चुपचाप बैठी अपने पैर हिला रही थी, जो फर्शतक नहीं पहुँचते थे।

"नाक-भौं चढ़ानेसे क्या फायदा?" चौकीदारकी स्त्रीने कहा "असल बात तो यह है कि आदमीको उदास न होना चाहिये। हँसो-बोलो कटूशा!" और उसकी उँगलियाँ फुर्तीके साथ चल रही थीं।

कटूशाने उत्तर नहीं दिया।

"यहाँकी भी स्त्रियाँ कपड़ा धोने गयी हैं।" लादीमीरकी स्त्रीने कहा। "मैंने सुना है, ये कह रही थीं कि आज बहुत कुछ दान हुआ है और बड़ा सामान आया है।"

"फिनश्का!" चौकीदारकी स्त्रीने पुकारा "वह शैतान न जाने कहाँ कहाँ चला गया!"

इसने सूइयोंको उनके गोलोंमें और मोजोंमें खोंस दिया और बरामदेमें चली गयी।

इसी समय बरामदेसे औरतोंकी आवाज सुनाई दी। कोठरीमें रहनेवाली औरतें आने लगीं। ये जेलके जूते पहने हुए थीं, लेकिन इनके पैरोंमें मोजे नहीं थे। हर एकके हाथमें एक एक रोटी थी, किसीके हाथमें दो भी थीं। थ्यूडूसिया फौरन मस्लोवाके पास पहुँची।

"क्या मामला है? कुछ गड़बड़ तो नहीं हुई?" इसने पूछा और

मस्लोवाकी स्वच्छ नीली आँखोंमें प्रेमसे देखा। "यह चायके साथ खानेके लिए है।" कहते हुए, उसने आलमारीपर रोटी रख दी।

"क्यों? उसने तुम्हारे साथ शादी करनेका अपना विचार बदला तो होगा नहीं?" कोराब्लेवाने पूछा।

"नहीं, उन्होंने विचार तो नहीं बदला है, लेकिन मैं नहीं चाहती;" मस्लोवाने कहा "और मैंने उनसे यह बात कह भी दी है।"

"बता दी तो बेवकूफी की।" कोरोब्लेवाने गहरे स्वरसे कहा।

"जब साथ-साथ रहना नहीं है तो शादी करनेसे क्या फायदा? थ्यूड्सियाने कहा।

"तुम्हारे पति हैं न? वे तुम्हारे साथ जा रहे हैं।" चौकीदारकी स्त्रीने कहा।

"ठीक है, लेकिन हमारी तो शादी पहले ही हो गयी है।" थ्यूड्सियाने कहा, "आखिर वे ब्याह क्यों करें, जब कि उन्हें कटूशाके साथ रहना नहीं है।"

"क्यों करें? बेवकूफीकी बात मत करो। अगर वे कटूशाके साथ शादी कर लें तो यह रानी हो जायेगी।" कोराब्लेवाने कहा।

"वे कहते हैं" मस्लोवाने कहा "कि जहाँ जहाँ तुम्हें ले जायेंगे, मैं भी जाऊँगा। अगर वे जायँ तो अच्छा, न जायँ तो अच्छा। मैं उनसे न कहूँगी कि तुम चलो या न चलो। अब ये पीटर्सबर्ग जा रहे हैं इस मुकदमेकी पैरवीमें। वहाँ बड़े बड़े मंत्रियोंके साथ उनकी रिश्तेदारी है। लेकिन जो भी हो, मुझे उनकी कोई जरूरत नहीं।" मस्लोवाने कहा।

"ठीक है। कोई जरूरत नहीं।" कोराब्लेवाने एकदमसे सहमत होते हुए कहा। वह अपने थैलेके अन्दरकी चीज देख रही थी और उसके दिमागमें कोई दूसरी बात आ गयी थी। "अच्छी बात है, तो दो-एक बूँद पी न लिये जायँ।"

"तुम पिओ।" मस्लोवाने कहा "मैं तो न पिऊँगी।"

मुस्कराते हुए कहा "आपने अपने ऊपर कामका बहुत अधिक बोझ लाद लिया है। शायद इतना आप न सँभाल सकें।"

"नहीं, लेकिन यह मुकदमा बड़ा विचित्र है" नेख्लीडूने कहा और मुकदमेका खुलासा वकीलको सुनाया। मुकदमा यह था कि किसी गाँवमें एक किसान था जो बाइबिल पढ़ता था। वह अपने मित्रोंमें बराबर उसके बारेमें बात-चीत और बहस-मुबाहसा भी करता था। पादरियोंने इस बातको जुर्म समझा और थानेमें इसकी रिपोर्ट कर दी। मजिस्ट्रेटने मुकदमेको देखा और सरकारी वकीलने फर्द-जुर्म तैयार करके पेश कर दिया। न्यायाधीशोंने मुकदमा चला दिया।"

"यह तो वास्तवमें बड़ी भयंकर बात है।" नेख्लीडूने कहा "क्या यह बात सच है?"

"आपको ताज्जुब किस बातपर होता है?"

"किस बातपर? सभी बातोंपर ताज्जुब है। मैं यह समझ सकता हूँ कि पुलिसका अफसर तो चुपचाप हुक्म मानकर कार्रवाई शुरू कर देता है लेकिन सरकारी वकील इस किस्मका फर्द-जुर्म कैसे तैयार कर सकता है? पढ़ा-लिखा आदमी!"

"हम लोग यहो तो गलती करते हैं! यह नहीं समझते कि सरकारी वकील और जज लोग, आम तौरपर, उदार पुरुष नहीं हुआ करते। एक समय था जब ये लोग ऐसे होते थे, लेकिन अब स्थिति बिल्कुल बदल गयी है। अब ये लोग सिर्फ सरकारी मुलाजिम होते हैं। इनको चिन्ता इस बातकी रहती है कि तनख्वाहका दिन कब आवेगा। तनख्वाह ले लेनेके बाद इन्हें सिर्फ तनख्वाह बढ़ानेकी फिक्र रहती है। इनका सारा सिद्धान्त यहीं खतम हो जाता है। जिसपर आप चाहिये, इनसे मुकदमा चलवा दीजिये और सजा दिला दीजिये।"

"ठीक है, लेकिन ऐसा कोई कानून तो है नहीं कि अगर कोई अपने मित्रोंके साथ बैठकर बाइबिल पढ़े तो उसे सारी जिन्दगीके लिए कैद करके साइबेरिया भेज दिया जाय?"

"जी हाँ, निर्वासित किया जा सकता है, अगर आप यह साबित कर दें कि बाइबिल पढ़नेसे उसका मतलब लोगोंको उस तरहका अर्थ समझाना है जिस तरह समझानेका हुक्म नहीं है। इस प्रकार उसने चर्च द्वारा निश्चित किये हुए बाइबिलके अर्थका निरादर किया और जनताके सामने यूनानी सनातनधर्मका यह अपमान हो गया। दफा १९६ के मुताबिक इस जुर्मकी सजा अपराधीको साइबेरियाका निर्वासन है।"

"असम्भव!"

"मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि कानून यही है। मैं तो इन सज्जनोंसे अर्थात् जजोंसे हमेशा यही कहता हूँ।" वकीलने कहा "मैं इनका बहुत ही कृतज्ञ हूँ; क्योंकि अगर हम लोग अभीतक जेल नहीं पहुँचे तो सिर्फ इनकी मेहरबानीसे। हम लोगोंके अधिकारोंको छीनकर साइबेरियाके नजदीकवाले हिस्सेमें भेज देना इनके लिए बड़ी आसान बात है।"

"अगर ऐसी बात है, और हर चीज गवर्नर तथा दूसरे लोगोंके मन पर निर्भर है कि वे जब चाहें तो कानूनको काममें लावें और जब न चाहें तो न लावें तो फिर मुकदमे किस लिए होते हैं?"

यह बात सुनकर वकील जोरसे हँस पड़ा और बोला—"आपका प्रश्न तो बड़ा विचित्र है मित्र! यह तो आप फिलासफीकी बात कर रहे हैं और अगर आप इसी विषयपर बात करना चाहें तो मैं तैयार हूँ, लेकिन आप शनिवारके दिन आइये। आपको हमारे मकानपर वैज्ञानिक, साहित्यिक और कलाकारोंको देखनेका मौका मिल जायगा। उस समय आप इन बारीक प्रश्नोंपर वाद-विवाद भी कर सकते हैं।" वकीलने कहा जिसके 'बारीक प्रश्नों'के शब्दोच्चारणमें एक प्रकारका व्यङ्ग था। "आप मेरी स्त्रीसे मिल चुके हैं न! आइये, जरूर आइये।"

"आपको इसके लिए धन्यवाद! मैं आनेकी कोशिश करूँगा।" नेखलीडूने कहा। लेकिन वह अपने दिलमें समझता था कि मैं झूठ बोल रहा हूँ; क्योंकि अगर वह किसी बातके लिए कोशिश कर सकता था

तो इसके लिए कि वकील साहब और उनके वैज्ञानिक कलाकारों और साहित्यिकोंके चक्करसे दूर रहे।

उस हँसीसे—जो नेख्लीडूकी इस बात पर हुई थी कि 'मुकदमोंका कोई उद्देश्य ही नहीं रहता, अगर जज लोगोंको यह स्वतन्त्रता है कि वे चाहे कानूनपर अमल करें या न करें जिसके लिए वकील साहबने खास लहजेमें 'फिलासफी' और 'बारीक प्रश्न' शब्दोंका उच्चारण किया था— नेख्लीडूको यह मालूम हो गया कि मेरे तथा वकील और वकीलके मित्रोंके दृष्टिकोणमें कितना अन्तर है। उसने यह भी अनुभव कर लिया कि यद्यपि मेरे और मेरे पुराने मित्र शूनबाकके विचारोंमें कितना अन्तर है फिर भी जो अन्तर वकील साहब तथा उनके मित्रोंमें और उसके व्यक्तिगत विचारोंमें पाया जाता है वह कहीं ज्यादा है।

दूसरा अध्याय

जेलखाना बहुत दूर था और देर हो रही थी इसलिए नेख्लीडूने एक बग्घी किरायेपर कर ली। कोचवान अधेड़ उम्रका आदमी था। उसके चेहरेसे बुद्धिमत्ता और दया टपकती थी। सड़कपर चलते हुए उसने एक बड़ा मकान, जो बन रहा था, नेख्लीडूको दिखाया और कहा—

"देखिये, कितना बड़ा मकान बन रहा है!" उसने इस प्रकार कहा मानो इस मकानके बननेमें उसका भी कुछ हाथ हो और उसे उसपर अभिमान हो रहा हो।

यह मकान वास्तवमें बहुत बड़ा था। रचनाशैली पेचीदा और मौलिक थी। मजबूत देवदारको बल्लियोंकी पाड़, जो लोहेके बन्धनोंसे जकड़ी हुई थी, इस मकानके चारों ओर खड़ी की गयीं थीं। सड़क और इस मकानके बीचमें एक बड़ा-सा तख्ता था। पाड़के ऊपर मजदूर लोग, जो चूने और गारेसे लथपथ थे, चींटियोंकी तरह इधरसे उधर काम करते दिखाई देते थे।

कोई ईंटें चुन रहा था, कोई ईंटें गढ़ रहा था, कोई चूने और गारेकी वजनी बाल्टियाँ और तसले ऊपर ले जाता था और खाली नीचे ले आता था। एक अच्छे कपड़े पहने हुए मोटे सज्जन, जो शायद कारीगर थे, पाड़के पास खड़े थे और ऊपर बता बताकर एक ठेकेदारको कुछ समझा रहे थे। यह ठेकेदार ब्लाडीमीर जिलेका एक किसान था और बहुत आदरके साथ उनकी बात सुन रहा था। कारीगर और ठेकेदारके पाससे हो होकर बड़ी बड़ी, लदी हुई, गाड़ियाँ फाटकसे अन्दर जाती थीं और खाली वापस लौट आती थीं।

नेख्लीडू मकानको देखकर सोचने लगा कि देखो तो, इन लोगोंको कितना विश्वास है जो काम कर रहे हैं! और जो लोग काम करा रहे

हैं, उनकी भी यह प्रथा अच्छी है; घरमें इनकी स्त्रियाँ, जिनके पेटमें बच्चा है, अपनी शक्तिसे ज्यादा मेहनत करती हैं, और इनके बच्चे चँदवेदार टोपी पहने हुए, जो भूखसे पीड़ित होकर चन्द दिनोंमें मर जानेवाले हैं, शरीरकी ठठरी लिये हुए अपने दुबले-पतले हाथ-पैर सिकोड़ते हैं और बुड्ढोंकी तरह मुस्कराते हैं!

और वे बेकार और वाहियात मकान उन बेकार और वाहियात लोगोंके लिए बना रहे हैं जो उन्हें लूटते और उनका नाश करते हैं।

"हाँ, यह वाहियात मकान है।" नेख्लीडूने अपने विचारोंको प्रकट करते हुए कहा।

"वाहियात क्यों है?" गाड़ीवालेने कुछ बुरा मानकर कहा। "इसकी वजहसे लोगोंको रोटियाँ मिलती हैं। यह वाहियात क्यों हुआ?"

"क्योंकि यह काम बेकार है।"

"यह बेकार कैसे हो सकता है! अगर बेकार होता तो लोग इसको कराते ही क्यों? इसकी वजहसे लोगोंका पेट पलता है।"

नेख्लीडू विशेषतः चुप हो गया; क्योंकि पहियोंकी खड़खड़ाहटमें बातचीत करना मुश्किल था।

गाड़ी जब जेलखानेके नजदीक आयी तो गाड़ीवानने गाड़ीको पथरीली सड़कसे मोड़कर काली सड़कपर लगाया। अब बातचीत करना आसान हो गया और कोचवानने नेख्लीडूसे फिर बातचीत शुरू कर दी।

"देखिये तो; आजकल गाँवोंसे कितने आदमी शहरको आ रहे हैं।" उसने कहा और अपने कोचबक्सपर घूमकर उसने किसानोंके एक दलकी तरफ इशारा किया जो भेड़के चमड़ेका कोट पहने, कन्धेपर झोला डाले आरा और बसूला लिये जा रहे थे।

"क्या इस साल और सालसे ज्यादा आदमी आ रहे हैं?" नेख्लीडूने पूछा।

"बहुत ज्यादा। इस साल तो हर एक जगह भीड़ लगी हुई है और

बड़ा कष्ट है। जिनके यहाँ काम हो सकता है वे मजदूरोंको घास फूसकी तरह फेकते हैं। कहीं भी नौकरी नहीं मिलती।"

"इसका क्या कारण है?"

"बहुतसे आदमी आ गये हैं इसीलिए कोई जगह खाली नहीं रही।"

"लेकिन बहुत से आदमी क्यों आ गये? ये गाँवमें ही क्यों नहीं रहे!"

"गाँवमें इनके लिए कोई काम नहीं है। जमीन ही नहीं मिलती।"

नेख्लीडूको वेदना हुई, मानो उसके फोड़ेमें चोट लग गयी हो। लोग समझते हैं कि घावकी जगहमें चोट लगती ही रहती है, लेकिन वहाँ चोट लगनेका अनुभव इसलिए होता है कि वह जगह घायल होती है।

नेख्लीडूने सोचा कि क्या यह बात सभी जगह हो रही है? और उसने गाड़ीवालेसे कुछ प्रश्न पूछने शुरू किये।

उसने पूछा कि तुम्हारे गाँवमें कितनी जमीन है, कितनी जमीन तुम्हारे पास है और तुमने अपना गाँव क्यों छोड़ा?

"हमारे यहाँ हर एक आदमीके पास एक एक बीघा जमीन है और हमारे घरवालोंके पास तीन आदमियोंका हिस्सा है।" गाड़ीवालेने खुशी खुशी बताना शुरू किया "मेरा बाप और मेरा एक भाई घरपर रहते हैं और खेतका काम देखते हैं। मेरा दूसरा भाई फौजमें है लेकिन घरमें देखनेको क्या रखा है इसलिए मेरा भाई भी मास्को आनेकी बात सोच रहा है।"

"क्या खेत लगानपर नहीं मिलते?"

"आजकल लगानपर कहाँ मिलते हैं?" जमींदार लोग जो कुछ थे उन्होंने अपनी जायदाद बरबाद कर दी जो अब महाजनोंके पास चली गयी है। उनसे लगानपर जमीन मिलती नहीं; क्योंकि ये लोग खुद अपना फार्म बनाये हुए हैं। आजकल एक फ्रान्सीसी हमारे गाँवका राजा हो रहा है। उसने हमारे पुराने जमींदारसे रियासत खरीद ली है। वह लगानपर जमीन नहीं देता। बस मामला खतम समझिये।"

"यह फ्रान्सीसी कौन है?"

"इसका नाम डूफर है। शायद आपने उसका नाम सुना हो। वह बड़े बड़े थियेटरोंमें काम करनेवाले अभिनेताओंके लिए बनावटी बाल बनाता है। यह बड़ा अच्छा धन्धा है। उसमें इसने बहुत रुपया पैदा किया। इसने हमारे जमींदारसे सारी रियासत मोल ले ली और अब हम लोग इसके अधीन हैं। इसकी जैसी तबीयत चाहती है उसी तरह हम लोगोंको सताता है। ईश्वरकी कृपा है कि यह फ्रान्सीसी खुद तो भला आदमी है लेकिन इसकी स्त्री, जो कि रूसी है, बिलकुल जानवर है! ईश्वर उससे बचावे। वह तो लोगोंको लूटती है, बड़ी तकलीफ देती है। देखिये जेलखाना आ गया। क्या मैं गाड़ी फाटकतक ले चलूँ? शायद फाटकतक गाड़ी ले जानेकी आज्ञा न दें।"

तीसरा अध्याय

जब अगले फाटकपर नेखलीडूने घंटी बजायी तो इस खयालसे कि आज मस्लोवाकी न जाने क्या हालत हो, उसका दिल घबराने लगा। उसको मस्लोवाके अन्दर तथा उन लोगोंके अन्दर जो जेलमें थे, एक रहस्य दिखलाई देता था। इस रहस्यसे भी वह घबराया। उसने जेलरसे, जिसने दरवाजा खोला, कुछ पूछा। फिर जेलरने बतलाया कि मस्लोवा अस्पतालमें है। जब नेखलीडू वहाँ पहुँचा तो एक दयालु बुड्ढे आदमीने, जो अस्पतालके दरवाजेपर दरबानी करता था, नेखलीडूको फौरन अन्दर दाखिल कर लिया और उससे यह पूछकर कि किससे मिलना है, उसने बच्चोंके बैरककी तरफ जानेको कहा।

एक नौजवान डाक्टर, जिसके शरीरसे कारबोलिक एसिड्की गन्ध आती थी, रास्तेमें ही नेखलीडूको मिला। उसने कठोरतासे पूछा कि क्या चाहते हो। वह डाक्टर कैदियोंको हमेशा सुविधाएँ देनेकी कोशिश करता रहता था इसलिए जेलके अधिकारियों और बड़े डाक्टरसे उसका बराबर संघर्ष चलता रहता था। इस बातकी आशंका न करके कि नेखलीडू कोई गैरकानूनी बात करनेके लिए कहेगा और यह प्रकट करनेके लिए मैं किसीके साथ रियायत नहीं करता, इससे रुष्ट होनेका बहाना किया, और कहा "यहाँ स्त्रियाँ नहीं हैं। यह तो बच्चोंकी बैरक है।"

"जी हाँ, मैं जानता हूँ; लेकिन यहाँ एक कैदी सहायक नर्सका काम करती है।"

"हाँ, दो स्त्रियाँ यहाँ हैं। उन दोनोंमेंसे आप किसको चाहते हैं?"

"मेरी घनिष्ठता मस्लोवासे है।" नेखलीडूने उत्तर दिया "और मैं उससे बातें करना चाहता हूँ। मैं उसके मुकदमेकी अपील सिनेटमें दाखिल करनेके लिए पीटर्सबर्ग जा रहा हूँ, और यह मैं उसे देना

चाहता हूँ। यह सिर्फ एक तस्वीर है।" और अपनी जेबसे एक लिफाफा निकाला

"बहुत अच्छा, दे दीजिये।" डाक्टरने कुछ मुलायम पड़ते हुए कहा और एक बुढ़ियाकी तरफ झुककर, जो सफेद एप्रन पहने हुए थी, उसने कहा, "कैदी मस्लोवाको बुला लाओ।" "आप यहाँ बैठियेगा या मुलाकातके कमरेमें जाइयेगा?"

"धन्यवाद।" नेख्लीडूने कहा और डाक्टरकी मनोवृत्तिमें अपने प्रति सन्तोषजनक परिवर्तन देखकर उसने डाक्टरसे पूछा—"आप अस्पतालमें मस्लोवाके कामसे सन्तुष्ट हैं या नहीं?"

"जी हाँ, वह ठीक काम करती है। उसके पहले जीवनको देखते हुए हम कह सकते हैं कि वह अच्छा खासा काम कर रही है, लेकिन देखिये, वह तो आ गयी।"

बुड्ढी नर्स एक दरवाजेसे आयी जिसके पीछे-पीछे मस्लोवा थी जो धारीदार नीले रंगका कपड़ा पहने, सफेद एप्रन लगाये और सरपर रूमाल बाँधे थी जिससे उसके सारे बाल ढके हुए थे। जब उसने नेख्लीडूको देखा, उसका चेहरा लाल पड़ गया और वह ठिठक गयी, मानो उसे कोई संकोच था। इसके बाद उसने त्योरियाँ चढ़ा लीं और आँखें नीची किये हुए तेजीसे रास्तेमें पड़े टाटके ऊपर होती हुई नेख्लीडूकी तरफ बढ़ी। जब वह नेख्लीडूके पास पहुँची तो उसने हाथ मिलाना नहीं चाहती थी, लेकिन बादको जब उसने हाथ बढ़ाया और मिलाया, उसका चेहरा और भी लाल हो गया।

नेख्लीडूसे मस्लोवाकी उस दिनसे मुलाकात नहीं हुई थी, जिस दिन मस्लोवाने आवेशमें आनेके लिए क्षमा माँगी थी। नेख्लीडूको यह आशा थी कि मस्लोवा उस समय जैसी थी वैसी ही आज भी होगी लेकिन आज वह बिलकुल बदली हुई थी। उसके चेहरेमें आज एक नयी चीज पायी जाती थी—कुछ झेंप, कुछ गम्भीरता। नेख्लीडूको ऐसा लगा कि मस्लोवा उससे कुछ खिंची हुई है। उसने मस्लोवासे वही बात

दुहरा दी जो डाक्टरसे कही थी, अर्थात् मैं पीटर्सबर्ग जा रहा हूँ। उसने मस्लोवाको तस्वीरका वह लिफाफा भी दिया, जिसे वह पनोवसे लाया था।

"यह पनोवमें मिला एक पुराना फोटो है। शायद तुम इसे पसन्द करो, ले लो।"

अपनी काली भौंहें उठाकर मस्लोवाने नेख्लीडूको, ताज्जुबमें आकर, तिरछी आँखोंसे देखा मानो वह पूछ रही है कि इससे क्या फायदा और बिना एक शब्द कहे उसने फोटोग्राफ लेकर अपने एप्रनकी जेबमें रख लिया।

"मैं तुम्हारी मौसीसे पनोवमें मिला था।" नेख्लीडूने कहा।

"मिले थे?" मस्लोवाने बेरुखीसे कहा।

"तुम यहाँ अच्छी तरहसे हो न?" नेख्लीडूने पूछा।

"जी हाँ, अच्छी तरह हूँ।" उसने उत्तर दिया।

"बहुत तकलीफ तो नहीं है?"

"नहीं, सिर्फ यही बात है कि अभी मेरे लिए यह सब नया है।"

"मुझे बड़ी खुशी है। वहाँसे तो यहाँ अच्छा ही है।"

"वहाँसे कहाँसे?" उसने पूछा और उसका चेहरा फिर लाल हो गया।

"वहाँसे अर्थात् उस जेलसे।" नेख्लीडूने जल्दीसे उत्तर दिया।

"क्यों बेहतर है?" मस्लोवाने पूछा।

"मेरा खयाल है कि यहाँके लोग अच्छे हैं और यहाँ उस किस्मके लोग न होंगे जैसे वहाँ थे।"

"वहाँ भी बहुतसे अच्छे लोग हैं।" मस्लोवाने कहा।

"मैं मेनशावके बारेमें लोगोंसे मिला था और मुझे आशा है कि वह छूट जायगा।" नेख्लीडूने कहा।

"ईश्वर करे वह छूट जाय! वह बुढ़िया बेचारी कितनी अच्छी है।" उसने कहा "कितनी नेक है!" और हल्केसे मुसकरायी।

"मैं आज पीटर्सबर्ग जा रहा हूँ, तुम्हारा मुकदमा जल्दी पेश होगा और मैं आशा करता हूँ कि सजा जल्दी ही मन्सूख हो जायेगी।"

"मन्सूख हो या न हो, तो सब बराबर है।"

"क्यों, ऐसा क्यों ?'

"खैर—" उसने कहा और तेजीसे प्रश्नात्मक दृष्टिसे नेख्लीडूकी तरफ देखा।

"नेख्लीडूने उसके शब्द और उसकी दृष्टिका मतलब समझ लिया कि वह जानना चाहती थी कि नेख्लीडू क्या अभीतक अपने निश्चयपर दृढ़ है या उसके इन्कारको स्वीकार कर लिया।

"मैं यह नहीं जानता कि छूट जाना या कैद रहना तुम्हारे लिए बराबर क्यों है।" नेख्लीडूने कहा। "लेकिन जहाँतक मेरा सम्बन्ध है, मेरे लिए यह एकसा है, चाहे तुम छूटो या न छूटो, मैं दोनों हालतोंमें उस बातको करनेके लिए तैयार हूँ जो मैंने तुम्हें बतायी है।" उसने निश्चितरूपसे कहा।

मस्लोवाने अपना सर उठाया। उसकी काली तिरछी आँखें नेख्लीडूपर और उसके परे जमी रहीं। उसका चेहरा खुशीसे चमकने लगा लेकिन जब उसने कुछ कहना शुरू किया, उसके शब्द कुछ और कहते थे और आँखें कुछ और।

"बेहतर है, आप उस बातको न कहिये।" मस्लोवाने कहा।

"मैं कह रहा हूँ, जिससे तुम जान लो।"

"जो कुछ कहना-सुनना था, वह कहा-सुना जा चुका। अब कुछ कहना बाकी नहीं।" उसने कहा और अपनी मुस्कराहट मुश्किलसे रोक सकी।

"अस्पतालके वार्डमें एकाएक शोर हुआ और एक बच्चेके रोनेकी आवाज सुनाई दी।

"मालूम होता है, मुझे बुला रहे हैं।" उसने कहा और बेचैनीसे चारों तरफ देखने लगी।

"अच्छी बात है। सलाम।" उसने कहा।

मस्लोवाने नेख्लीडूके बढ़े हुए हाथको, जिसे उसने मिलानेके लिए बढ़ाया था, देखते हुए भी नहीं देखा। वह बिना ही हाथ मिलाये पलट गयी और उसी टाटके किनारेपर तेजीसे बढ़ती हुई अपने दिलकी प्रसन्नताको छिपाती हुई लौट गयी।

"इसके दिलमें क्या बात चल रही है, यह क्या सोच रही है, इसके हृदयमें कौनसी भावना पैदा हो रही है, क्या यह मेरी परीक्षा लेना चाहती है, या अब वह मुझे क्षमा नहीं करेगी, इसके मनमें या हृदयमें जो कुछ है उसे प्रकट नहीं करती। पहलेसे इसका हृदय कोमल हो गया है या कठोर?" नेख्लीडू इसी प्रकारके प्रश्न मनमें करता था, किन्तु उसे उत्तर नहीं मिलता था। वह सिर्फ इतना जानता था कि मस्लोवा बदल गयी है और उसकी आत्मामें एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है। वह परिवर्तन नेख्लीडूको केवल मस्लोवासे ही संयुक्त नहीं कर देता था, बल्कि उस ईश्वरसे भी संयुक्त करता था जिसके कारण यह परिवर्तन हो रहा था।

इसके सम्पर्कसे नेख्लीडूके हृदयमें आनन्द और उत्साह प्रवाहित होने लगा।

मस्लोवा जब अपने वार्डको वापस गयी, जिसमें आठ बिस्तर बिछे हुए थे, उसने नर्सकी आज्ञाके अनुसार बिस्तर लगाने शुरू किये और चद्दर लेकर इतनी ज्यादा झुक गयी कि पैर फिसल गया और गिरते-गिरते बची।

एक छोटा लड़का, जो अच्छा हो चुका था और जिसकी गर्दनमें पट्टी बँधी हुई थी, उसको देख रहा था। वह हँस पड़ा। मस्लोवा भी हँसीको न रोक सकी और जोरसे हँसने लगी। इस हँसीमें इतनी छूत थी कि और बहुतसे बच्चे भी हँस पड़े जिसपर एक नर्सने क्रोधसे मस्लोवाको बुरा-भला कहना शुरू कर दिया।

"किस बातपर तुम खिलखिला रही हो? यह तो वह जगह है नहीं जहाँ तुम पहले रहा करती थीं। जाओ, खाना ले आओ।"

मस्लोवा चुप हो गयी और चीनीके बर्तन हाथमें लेकर वहाँ चली गयी जहाँ उसे भेजा गया था लेकिन पट्टी बँधे हुए लड़केको, जिसे हँसनेसे रोका गया था, देखकर वह फिर दबी हुई हँसी हँसने लगी।

जब कभी मस्लोवा अकेली होती, लिफाफेसे फोटोग्राफको जरा-सा निकालकर तस्वीरको बार बार प्रशंसात्मक ढंगसे देखा करती थी। शामको उसकी ड्यूटो खतम हो जाया करती और वह अपने सोनेके कमरेमें, जिसमें नर्स भी रहती थी, अकेली रहते समय इस फोटोग्राफको लिफाफेसे बिलकुल बाहर निकाल लेती, और स्तब्ध आँखोंसे हर एक चेहरेको, कपड़ेको, बरामदेकी सीढ़ियोंको और पृष्ठस्थ झाड़ियोंको, जो तस्वीरमें इसके, नेख्लीडूके और नेख्लीडूकी फूफियोंके चेहरोंके पीछे आ गयी थीं अनन्य मनसे देखती थी। यह धुँधले पीले फोटोग्राफको एकटक देखा करती थी, और बार बार विशेष रूपसे अपने सुन्दर जवानीके चेहरेको, जिसके माथेपर धुँघराली लटें आ गयी थीं, अत्यन्त प्रशंसात्मक दृष्टिसे आँखें गड़ा गड़ाकर देखा करती थी। एक दिन यह इस तस्वीरको देखनेमें इतनी मग्न थी कि इसकी संगिनी नर्स कमरेमें आ गयी और इसे पता न चला।

"उन्होंने तुम्हें यह क्या दिया है?" अच्छे स्वभावकी मोटी नर्सने पूछा और फोटोग्राफको झुककर देखने लगी। "वह कौन है, तुम हो?"

"और कौन हो सकता है?" मस्लोवाने कहा और अपनी संगिनीके चेहरेको मुस्कराते हुए देखा।

"और यह उनकी तस्वीर है? और यह उनकी माँकी है?"

"नहीं। उनकी फूफीकी है। उस समय तुम मुझे नहीं पहचान सकतीं न?"

"नहीं। सारा चेहरा बदल गया है। मैं समझती हूँ कि यह दस बरसकी पुरानी तस्वीर है।"

"दस बरस नहीं, यह तो उस जिन्दगीकी तस्वीर है।" मस्लोवाने कहा। फौरन ही उसकी स्फूर्ति जाती रही, उसका चेहरा उदास हो गया। उसकी भौंहोंके बीचमें एक गहरी रेखा बन गयी।

"यह क्या कहती हो? उस समय भी तो तुम्हारे जीवनमें हर प्रकारकी सुविधाएँ थीं।"

"सुविधाएँ! क्या कहती हो?" मस्लोवाने अपनी आँखें बन्द करके और अपना सर हिलाते हुए इन शब्दोंको फिर दुहराया। "नरक-से बदतर जीवन था।"

"नरक कैसे?"

"नरक कैसे! आठ बजे रातसे चार बजे सुबहतक हर एक रात-को वही बात।"

"अगर यह बात है तो ये लोग इस कामको छोड़ क्यों नहीं देतीं?"

"अगर ये चाहें तो भी छोड़ नहीं सकतीं। लेकिन इस विषयपर बात करनेसे क्या फायदा?" मस्लोवाने जोरसे कहा। वह एकदम उठ खडी हुई, और फोटोग्राफको मेजकी दराजमें डाल दिया। क्रोधाश्रुओंको कठिनाईसे आँखोंमें रोकती हुई वह कमरेके बाहर भाग गयी और अपने पीछे दरवाजा बन्द कर लिया।

मस्लोवा जब इस तस्वीरको देखती थी, इसकी कल्पनामें उसे न केवल अपना पुराना रूप दीख जाता था प्रत्युत उसकी कल्पनामें उस समय-का आनन्द-स्वप्न भी दिखाई दे जाता था और नेख्लीडूके साथ आजके आनन्दकी सम्भावना भी। लेकिन उसकी संगिनीके शब्दोंने उसे याद दिला दिया कि आज वह क्या है और पहले क्या थी, और उसको अपने जीवनकी समस्त भयंकर बीभत्सताएँ याद आ गयीं जिनका वह अस्पष्ट रूपसे अनुभव कर चुकी थी, लेकिन स्पष्ट रूपसे अपने मानसिक नेत्रोंके सामने लानेकी कभी हिम्मत न कर सकी थी।

आज, इस समय उन भयंकर रातोंकी स्मृतियाँ साफ-साफ उसकी

दृष्टिके सामने आ गयीं; विशेष रूपसे उस रातकी स्मृति उसकी दृष्टिके सामने आयी जब कारनिवल (सर्कस) हो रहा था, और वह एक विद्यार्थीका इन्तजार कर रही थी जिसने वादा किया था कि दूसरे लोगों-से ज्यादा पैसा लगाकर वह मस्लोवाको अपने लिए तै कर लेगा। उसे याद आया कि कैसे, खुली गर्दनका रेशमी सलूका, जिसपर शराबके धब्बे पड़े थे, पहने हुए अपने उलझे हुए बालोंमें लाल 'बो' लगाये हुए पस्त, कमजोर, कुछ नशेमें अपने यहाँ आये हुए लोगोंको, विदा करनेके बाद, करीब दो बजे सुबह, जब नाच बन्द हो चुका था, वह पियानोके पास आ बैठी थी और पास ही पियानो बजानेवाली एक दूसरी स्त्री भी बैठी हुई थी जिसके चेहरेकी हड्डियाँ दिखलाई देती थीं और मुँहभरमें मुँहासे निकले थे। यह स्त्री वायोलिनपर पियानो बजाती थी। यहाँ बैठकर उसने अपने कठोर जीवनपर किस प्रकार रोना शुरू किया था और इस पियानो बजानेवालीने भी कहा था कि उसे अपनी स्थिति बड़ी दुःखद जान पड़ती है। वह भी चाहती थी कि अपने जीवनको बदल दे और कैसे बर्था उसी समय आ गयी थी और उन तीनोंने अपने जीवनमें परिवर्त्तनका किस प्रकार निश्चय किया था।

इन लोगोंने समझा कि रात समाप्त हो गयी और जानेवाली ही थीं कि अगले कमरेसे कुछ नशेमें चूर आदमियोंकी आवाज सुनाई दी। वायोलिन बजानेवालोंने वायोलिनका सुर छेड़ा और पियानो बजानेवालीने रूसकी अत्यन्त आनन्दजनक गतकी पहली कड़ी बजायी। एक छोटे कदका आदमी, जो पसीनेसे तर था, सफेद टाई बाँधे और फटा कोट पहने खाँसते हुए इसकी तरफ बढ़ा। उसके बदनसे शराबकी बू आती थी। बाजेकी पहली कड़ी समाप्त होते ही इसने अपना कोट उतारकर इसे लिपटा लिया। इतनी ही देरमें एक दूसरा मोटा आदमी, जो दाढ़ी रखाये और ड्रेस कोट पहने था (ये सब सीधे नाच-घरसे आये थे), बर्थाके पास आया और उसे पकड़ लिया। बहुत देरतक ये लोग नाचते, चिल्लाते और शराब पीते रहे......। इसी तरह एक साल बीता, दूसरा

साल बीता, तीसरा साल बीता, परिवर्तन करें तो कैसे करें और इन सब बातोंका जिम्मेदार नेख्लीडू था।

और एकाएक मस्लोवाके हृदयमें नेख्लीडूके प्रति कटुताकी भावना फिर जाग उठी। उसका दिल चाहता था कि नेख्लीडूको खूब बुरा-भला कहे। आज उसे नेख्लीडूसे एक दफा और यह कह देनेका मौका मिला था कि 'मैं तुम्हें अच्छी तरह पहचानती हूँ; मैं तुम्हारी बात हर्गिज नहीं मानूँगी और इस बातको तो कदापि स्वीकार न करूँगी कि तुम मुझसे उसी प्रकार आध्यात्मिक फायदा उठा लो जैसा शारीरिक फायदा उठाया था।' लेकिन वह मौका हाथसे निकल चुका था अतः उसको शराब पीनेकी इच्छा हुई जिससे अपने प्रति पैदा होनेवाली दयाकी भावनाको और नेख्लीडूको बुरा भला कहनेकी व्यर्थ इच्छाको दबा सके। अगर वह जेलखानेके अन्दर होती तो अपनी प्रतिज्ञा तोड़ देती लेकिन वह तो जेलखानेके अस्पतालमें थी जहाँ उसे शराब छोटे डाक्टरसे माँगे बिना मिल ही नहीं सकती थी; लेकिन मस्लोवा छोटे डाक्टरसे डरती थी, क्योंकि वह इसे छेड़ता था और मस्लोवाके लिए अब पुरुषोंके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध अरुचिकर हो गया था। दरवाजेके बाहर वह थोड़ी देरतक बैठी रही। फिर अपने छोटेसे कमरेमें वापस आ गयी और अपनी संगिनीके शब्दोंकी कुछ परवाह न कर वह बहुत देरतक अपने भ्रष्ट जीवनपर रोती रही।

———

चौथा अध्याय

नेख्लीडूको पीटर्सबर्गमें चार काम करने थे—मस्लोवाकी दरख्वास्त सिनेटमें देना, थ्यूडूसिया बीस्कोवाका मुकदमा जो पिटीशन कमेटीके सामने था, औा वीरा दुखोवाका काम उसके मित्र शुस्तोवाको जेलसे छुड़ाना और जिन्डारमीनके दफ्तरसे एक माँको इजाजत दिलानी थी कि वह अपने लड़केसे जेलमें मिल सके।

नेख्लीडू जब पीटसबर्ग आया तो अपनी मौसीकी कोठीपर ठहरा, अर्थात् काउन्टेस चार्सकायाके यहाँ, जो एक भूतपूर्व मन्त्रीकी स्त्री थी। वहाँ आते ही नेख्लीडू ऐसे बड़े लोगोंमें पहुँच गया जो इसके लिए अब बिल्कुल अपरिचित-से हो गये थे। यह बात इसके लिए बहुत अरुचिकर-सी थी, लेकिन इससे बचनेकी कोई सम्भावना नहीं थी। अगर यह अपनी मौसीके यहाँ न ठहरकर होटलमें ठहरता तो मौसी नाराज हो जाती। यहाँ ठहरनेसे यह लाभ था कि उसकी मौसी-से बड़े-बड़े लोगोंकी जान-पहचान भी थी जो इस मौकेपर उसके काममें बहुत लाभदायक हो सकती थी।

"मैंने तुम्हारे बारेमें न जाने क्या क्या बड़ी विचित्र बातें सुनी हैं।" काउन्टेस कैथरीन आइवनोव्ना चार्सकायाने नेख्लीडूसे आते ही, उसको कहवेका एक प्याला देते हुए, कहा, "तुम तो आजकल हावर्ड बन रहे हो, कैदियोंकी मदद करते हो, जेलखानोंका चक्कर लगाते हो और सुधार करते फिरते हो।"

"नहीं, ऐसा तो नहीं है।"

"है क्यों नहीं? अच्छी बात है, यह तो करना ही चाहिये, लेकिन मैंने सुना है कि तुम्हारे साथ कोई प्रेम-कथा लगी हुई है। मुझे बताओ कि वह क्या है।"

नेख्लीडूने मौसीको मस्लोवाके साथ अपने सम्बन्धका कच्चा चिट्ठा सुना दिया।

"हाँ हाँ, मुझे याद आ गया। तुम्हारी माँ इसके बारेमें मुझसे कहती थी। यह तो उस समयकी बात है जब तुम उन बुढ़ियोंके साथ रहते थे। मेरी समझमें वे यह चाहती थीं कि तुम्हारा विवाह अपनी सरपरस्तीमें पली हुई इस लड़कीके साथ कर दें। तो क्या यह वही लड़की है?"

"नहीं, अब तो सब बातोंका अन्त हो चुका। मैं इतना ही चाहता हूँ कि उसकी सहायता करूँ, क्योंकि उसपर व्यर्थका अपराध लगाया गया है। मैं ही इन बातोंका और उसके वर्तमान दुर्भाग्यका भी कारण हूँ। मैं चाहता हूँ कि जो कुछ मैं कर सकूँ, उसके लिए करूँ।"

"लेकिन मैंने तो यह सुना है कि तुम उससे शादी करना चाहते हो।"

"हाँ, यह मेरा विचार तो जरूर था, लेकिन वह नहीं चाहती।"

कैथरीन आइवनोव्नाने अपने भतीजेकी तरफ भौंहें उठाकर और आँखें नीची करके चुपचाप आश्चर्यमें देखा। उसका चेहरा एकदम बदल गया और उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा—

"ठीक है, वह तुमसे अधिक बुद्धिमती है। तुम बेवकूफ हो। अगर वह चाहती तो क्या तुम उससे विवाह कर लेते?"

"जरूर कर लेता।"

"यह जानते हुए भी कि वह क्या रह चुकी है?"

"हाँ, चूँकि मैं ही वैसे जीवनका कारण था, इससे विवाहके लिए मैं और भी उद्यत था।"

"ठीक है, तुम पक्के बेवकूफ हो।" उसकी मौसीने कहा और अपनी मुसकराहटको दबाया। "'अव्वल दर्जेके बेवकूफ हो।"

"लेकिन उसे तो साइबेरिया निर्वासित करके भेजा जा रहा है। मैं

उसकी अपील करनेके लिए यहाँ आया हूँ और आपसे मेरी एक प्रार्थना यही है—"

"तो ऐसे मुकदमोंकी अपील कहाँ होती है ?"

"सिनेटमें ।"

"अच्छा, सिनेटमें होती है, वहाँ तो मेरे चचेरे भाई लियो काम करते हैं, लेकिन वे तो दूसरे महकमेमें हैं । यह काम किसके पास होता है, किसके पास होगा, मैं नहीं जानती । खैर, दूसरा काम तुम्हारा क्या है ?"

"मेरा दूसरा काम किलेमें है ।"

"किलेमें ? तो उसके लिए मैं एक चिट्ठी बैरन क्रिगस्मथके नाम दे सकती हूँ । बड़ा ही अच्छा आदमी है । उसे तो तुम जानते होगे । वह तुम्हारे बापका साथी है । आजकल उसे प्रेतविद्यामें बड़ी दिलचस्पी हो गयी है, लेकिन इससे क्या होता है । वह बड़ा भला आदमी है । तुम क्या कराना चाहते हो ?"

"वहाँसे मैं एक हुक्म चाहता हूँ कि एक माताको अपने लड़केसे मिलनेके लिए, जो जेलखानेमें है, इजाजत मिल जाय लेकिन मैंने सुना था कि यह काम क्रिगस्मथसे नहीं बल्कि चेरीवान्स्कीसे हो सकता है ।"

"मैं चेरीवान्स्कीको पसन्द नहीं करती । हाँ, वह मैरीटीका पति है । मैं उससे कह सकती हूँ । मेरे कहनेसे वह इस कामको करा देगी । बड़ी अच्छी स्त्री है ।"

"मुझे एक स्त्रीकी तरफसे पेटीशन दाखिल करनी है । यह जेलखानेमें है लेकिन उसे उसका अपराध नहीं बताया गया है ।"

"कौन-सा अपराध किया है ? ये सब जानती हैं और अच्छी तरह जानती हैं । अच्छा है, ये बालकटी औरतें जेल भेज दी जाती हैं ।"

"अच्छा है या बुरा, यह मैं नहीं जानता । लेकिन इन लोगोंको कष्ट होता है । आप तो ईसाई धर्मको मानती हैं और बाइबिलमें बतायी हुई बातोंको स्वीकार करती हैं, फिर इतनी हृदयहीन क्यों हैं ?"

"बाइबिलसे और इन बातोंसे क्या प्रयोजन ? बाइबिल बाइबिल है और बुरी चीज बुरी चीज है। अगर मैं निहलिस्ट लोगोंके प्रति विशेष-कर बालकटी निहलिस्ट औरतोंके प्रति अहिंसाकी भावना प्रकट करने लगूँ तो उसमें ज्यादा बुराई है, क्योंकि मैं उनकी सूरतसे बेजार हूँ।"

"आप उनकी सूरतसे क्यों बेजार हैं।"

"पहली मार्चकी * घटनाके बाद, तुम मुझसे बेजार होनेका कारण पूछते हो ?"

"पहली मार्चकी दुर्घटनामें इन लोगोंका हाथ तो था नहीं।"

"इससे क्या होता है ? जो उनका काम नहीं उसमें ये हाथ क्यों डालती हैं ? यह औरतोंका तो काम नहीं है ?"

"अगर यह औरतोंका काम नहीं है तो फिर आप क्यों कहती हैं कि मैरीटी उस काममें मेरी मदद कर सकेगी ?"

"मैरीटी ? मैरीटी मैरीटी है और ये लोग न जाने क्या हैं ? ये सभीको उपदेश देना चाहती हैं।"

"ये उपदेश देना नहीं चाहती हैं, बल्कि लोगोंको मदद देना चाहती हैं।"

"दुनिया जानती है कि किसकी मदद की जाय और किसकी न की जाय। इन लोगोंके बीचमें पड़नेकी क्या जरूरत ?"

"लेकिन किसान लोग आजकल बड़ी तकलीफमें हैं। मैं अभी गाँवसे आया हूँ। क्या यह आप आवश्यक समझती हैं कि किसान लोग अपनी शक्तिसे ज्यादा मिहनत करें और पेट भर कभी खानेको न पावें। और हम लोग अत्यन्त विलास तथा व्यसनमें अपना जीवन व्यतीत करें ?" नेखलीडूने कहा और अपनी मौसीके सरल स्वभावसे प्रभावित होकर अपने दिलकी बात साफ-साफ कह दी।

* सन् १८८१ में पहली मार्चको सम्राट् अलेक्जँडर द्वितीयकी *हत्या की गयी थी।*

"तुम क्या चाहते हो ? तुम यह चाहते हो कि मैं अपने हाथसे काम-काज करने लगूँ और खाऊँ कुछ न ?"

"नहीं, मैं नहीं कहता कि तुम्हें खानेको न मिले। सिर्फ यही चाहता हूँ कि हम सब काम-काज करें और सबको खानेको मिले।"

उसकी मौसीने अपनी भौंहें ऊपर खींची और अपनी आँखें झुकाये हुए नेख्लीडूकी तरफ आश्चर्यसे देखा।

"भैया, तुम्हारा अन्त अच्छा होनेवाला नहीं है।" उसने कहा।

"यह क्यों ?"

इतनेमें सेनापति और भूतपूर्व मन्त्री काउन्टेस चार्सकायाके पति, जो लम्बे कदके और चौड़े कंधोंके आदमी थे, कमरेमें दाखिल हुए।

"अहा ! डिमिट्री ! कैसे हो !" उसने कहा और अपना ताजा उस्तरेसे मुड़ा हुआ गाल नेख्लीडूको चूमनेके लिए झुका दिया। "कब आये ?" उसने चुपकेसे अपनी स्त्रीका माथा चूम लिया।

"यह तो अननुकरणीय है" काउन्टेसने अपने पतिकी तरफ घूमकर कहा। "यह चाहता है कि मैं बाहर निकलकर कपड़े धोऊँ और आलूपर निर्वाह करूँ। यह है तो अव्वल दर्जेका बेवकूफ, फिर भी इसका काम कर दीजिये। बड़ा मूर्ख है।" काउन्टेसने फिर कहा "और सुना, कि न्यामन्स्कीकी माँकी दशा इतनी खराब है कि लोग उसके बचनेकी उम्मीद नहीं करते।" उसने अपने पतिसे कहा "जाकर उन्हें देख आइये।"

"बहुत अच्छा। तुमने तो बहुत बुरी बात सुनायी।" उसके पतिने कहा।

"जाओ, इनके साथ चले जाओ और बातचीत कर लो। इतनेमें मैं कुछ चिट्ठियाँ लिख डालूँ।

नेख्लीडू बैठनेके कमरेसे निकलकर पासवाले कमरेमें मुश्किलसे पहुँचा होगा कि काउन्टेसने उसे फिर बुलाया।

"तो क्या मैं मैरीटीको खत लिख दूँ ?"

"मेरी मौसी ! जरूर लिख दो ।"

"मैं जगह छोड़ दूँगी । उसमें तुम जो कुछ 'बालकटी औरत' के बारेमें लिखना चाहो, लिख देना । वह अपने पतिको हुक्म दे देगी और वह काम कर देगा । मुझे खोटी न कहना । ये औरतें, जिनकी सिफारिश तुम लेकर आये हो, बड़ी खराब होती हैं । लेकिन मैं उनका बुरा नहीं चाहती और न उन्हें तंग ही करना चाहती हूँ । अच्छा, जाओ, लेकिन शामको 'किसीवेटर' का भाषण सुनने जरूर वापस आ जाना । यहाँ प्रार्थना भी होगी, और अगर तुम बचनेकी कोशिश न करोगे तो इससे तुम्हारी आत्माका बहुत कल्याण होगा । मैं जानती हूँ, तुम्हारी बेचारी माँ और तुम सब लोग इन बातोंमें बहुत पीछे थे । अच्छा, जाओ आशीर्वाद ।"

काउन्ट आइवन मिखैलिचने नेखलीडूकी बातें उसी प्रकार सुनीं जिस प्रकार वह अपने महकमेके स्थायी सेक्रेटरियोंकी रिपोर्ट सुना करता था । नेखलीडूकी बात सुनकर उसने कहा, "मैं तुम्हें दो खत देता हूँ, उनमेंसे एक खत अपील विभागके सेनेटर उल्फके नाम है ।"

"इनके बारेमें तरह-तरहकी बातें सुनी जाती हैं ।"

"लेकिन है वह बड़ा ही सज्जन पुरुष है ।" उसने कहा "वह मेरा एहसानमन्द है और जो कुछ उससे हो सकेगा, करेगा ।"

काउन्ट आइवन मिखैलिचने दूसरा पत्र नेखलीडूको पिटीशन कमेटीके एक प्रभावशाली सभासदके नाम दिया । थ्यूडिसिया बीरुकोवाकी कहानी, जैसा कि नेखलीडूने बयान किया था, काउन्टको बहुत दिलचस्प मालूम हुई और जब नेखलीडूने कहा कि इसके बारेमे सम्राज्ञीको लिखनेका मैं विचार कर रहा हूँ, तो काउन्टने उत्तर दिया कि यह कहानी वास्तवमें मर्मस्पर्शिनी है और अगर मौका मिला तो मैं उसे सम्राज्ञीसे स्वयं बयान करूँगा लेकिन वादा नहीं कर सकता । अभी तो यही उचित होगा कि पिटीशन नियमपूर्वक दाखिल कर दिया जाय । अगर कोई मौका हुआ और गुरुवारको सम्राज्ञीसे मिलनेका अवसर मिला तो मैं

यह कहानी उनसे कहूँगा। ज्यों ही नेख्लीडूको ये दोनों खत मिले और उसकी मौसीने उसे मैरीटीके नामकी चिट्ठी दे दी, वह फौरन इन लोगोंसे मिलनेके लिए रवाना हो गया।

नेख्लीडू पहले मैरीटीके पास गया। मैरीटीको वह छोटेपनसे ही जानता था। वह एक ऊँचे घरानेकी लड़की थी, लेकिन उसका घराना धनी नहीं था। उसे यह भी मालूम था कि मैरीटीने एक ऐसे आदमीसे शादी की है जिसे लोग अच्छा नहीं कहते, लेकिन जो अब बराबर बड़े बड़े ओहदे पाता जा रहा है। नेख्लीडूको अपने स्वभावके अनुसार ऐसे आदमीका एहसान लेना बुरा मालूम हुआ, जिसकी वह इज्जत नहीं करता। ऐसी स्थितिमें उसके हृदयमें एक प्रकारका असन्तोष और परेशानी पैदा हो जाती थी और उसे यह निश्चय करना कठिन हो जाता था कि ऐसे आदमीका एहसान ले या न ले। अन्तमें उसे यही निश्चय करना पड़ा कि एहसान ले लेना चाहिये यद्यपि वह अपनी स्थितिमें और उस वर्गके आदमियोंकी स्थिति में, जिस वर्गमें वह अब अपनेको नहीं समझता था लेकिन उस वर्गके आदमी उसे अपने ही वर्गका मानते थे, बड़ा अन्तर देखता था। अपने पुराने ढर्रेपर आज वह फिर आ गया, और अपनी प्रवृत्तियोंके विरुद्ध वह उस वर्गमें पायी जानेवाली अनैतिक भावना तथा विचारशून्यताके चक्करमें फँस गया। इस भावना और विचार-शून्यताको उसने अपनी मौसीके यहाँ अनुभव किया था और उसने अत्यन्त गम्भीर विषयपर बात करते हुए भी हँसी-मजाक और हल्केपनसे बातचीत करना शुरू कर दिया था।

पीटर्सबर्गने, जहाँ आये हुए अभी नेख्लीडूको बहुत दिन नहीं हुए थे, उसकी शारीरिक स्फूर्ति, बुद्धि और नैतिक जीवनमें मन्दता पैदा कर दी थी।

यहाँपर हर एक बात ऐसी सुखद और सुसंगठित थी; और लोग नैतिक बातोंमें इतने स्वच्छन्द थे कि जीवन बड़ी आसानीसे कटता था।

एक बढ़िया साफ और तमीजदार कोचवानने, नफीस साफ और

तमीजदार पुलिसवालेके पाससे, नफीस साफ और छिड़की हुई सड़कपर नफीस साफ मकानोंमें घुमा-फिराकर उसे उस मकानपर पहुँचा दिया जहाँ मैरीटी रहती थी।

दरबानने, जो बहुत ही साफ वर्दी पहने बैठा था, बड़े कमरेका दरवाजा खोला। वहाँ एक प्यादा मौजूद था जिसकी वर्दी और भी साफ थी और जिसके कपड़ोंमें सुनहरी रस्सियाँ लगी हुई थीं। इसने अपनी दाढ़ीमें खूब कंघी कर रखी थी। यहाँपर भी एक अर्दली बिल्कुल नयी वर्दी पहिने हुए अपने कामपर खड़ा था।

"न तो जनरल साहब और न उनकी श्रीमतीजी ही इस समय किसीसे मिल सकते हैं। श्रीमतीजी हवा खाने बाहर जा रही हैं।"

नेख्लीडूने कैथरीन आइवनोव्नाका पत्र निकाला। और एक मेजकी तरफ बढ़ा जिसपर मिलनेवालोंके लिए मुलाकातकी कापी रखी हुई थी। वह लिखने लगा, मुझे अफसोस है कि किसीसे मेरी मुलाकात न हो सकी। इतनेमें प्यादा जीनेसे ऊपर चला गया। दरबानने बाहर निकलकर कोचवानको पुकारना शुरू किया। अर्दली अपने हाथ लटकाकर तनकर खड़ा हो गया और अपनी आँखोंसे, एक छोटे कदकी दुबली-पतली महिलाका जो अपनी शानके प्रतिकूल तेजीके साथ जीनेसे उतर रही थी, स्वागत करने लगा।

"अहा! राजकुमार डिमिट्री आइवनिच नेख्लीडू हैं!" उसने मुलायम और मधुर स्वरमें कहा, "मुझे मालूम होना चाहिये था।"

"अयँ! आपको मेरा नाम याद है?"

"जरूर याद है। क्या तुम नहीं जानते कि मेरी बहनें और मैं सभी तुमपर लट्टू थीं।" उसने फ्रांसीसी भाषामें कहा, "लेकिन तुम तो बहुत ही बदल गये हो... कितने अफसोसकी बात है कि मुझे बाहर जाना पड़ रहा है। चलो ऊपर चलें" उसने कहा। "आओ" कहकर वह खड़ी हो गयी, और संकोचमें पड़ गयी। फिर उसने घड़ीकी तरफ देखा। "नहीं, मैं ठहर नहीं सकती। मैं कामन्स्कीके घर जा रही हूँ।

वहाँ अन्त्येष्टि-संस्कार सम्बन्धी प्रार्थनामें मुझे शामिल होना है। माँको अत्यन्त कष्ट है।"

"कामन्स्की कौन है?"

"क्या सुना नहीं? उनका लड़का द्वन्द्व युद्धमें मारा गया। वह पोजनसे लड़ा था। यही उनका एकलौता बेटा था। बड़ी भयंकर बात है, माता बहुत दुखी है।"

"हाँ, मैंने कुछ सुना तो है।"

"अच्छा, अब मैं चलूँ और तुम आज रातको या कल आओ।" उसने कहा और तेज हलके कदमसे वह फाटककी तरफ चली गयी।

"मैं आज रातको तो आ नहीं सकता।" नेख्लीडूने कहा और उसके पीछे चलने लगा. "लेकिन मुझे आपसे एक प्रार्थना करनी है।" नेख्लीडूने देखा कि एक बढ़िया घोड़ोंकी जोड़ी फाटकके सामने लगी थी।

"क्या बात है?"

"यह मेरी मौसीका पत्र आपके नाम है।" नेख्लीडूने कहा और उसको एक छोटा-सा लिफाफा, जिसपर एक बहुत बड़ा 'क्रेस्ट' बना हुआ था, दिया—"इसी चिट्ठीमें सब बातें लिखी हुई हैं।"

"मैं जानती हूँ काउन्टेस कैथरीन आइवनोव्ना यह समझती हैं कि मैं अपने पतिपर, उसके कामकाजके मामलेमें, प्रभाव डाल सकती हूँ लेकिन यह उनकी गलती है। न तो मैं कुछ कर सकती हूँ और न हस्तक्षेप करना चाहती हूँ। लेकिन आपके और काउन्टेसके लिए मैं अपना यह नियम तोड़नेको तैयार हूँ। मामला क्या है?" उसने कहा और अपने छोटे काले दस्ताने पहने हुए हाथोंसे जेबकी तलाश करने लगी।

"एक लड़की है जो किलेमें गिरफ्तार है। वह बीमार भी है और निरपराध भी।"

"उसका नाम क्या है?"

"शुस्तोवा—लीडिया शुस्तोवा। इस पत्रमें सब कुछ लिखा है।"

"बहुत अच्छा, मुझसे जो कुछ हो सकेगा, मैं करूँगी। उसने कहा और अपनी छोटी मुलायम गद्दीकी खुली गाड़ीमें धीरेसे कूदकर बैठ गयी। गाड़ीके, वार्निश किये हुए, हिस्से धूपमें चमकने लगे। इसने अपना बटुवा खोला।

नेख्लीडूने टोपी उठाकर सलाम किया और ये असली घोड़े कुछ फुनफुनाते हुए पत्थरोंपर टापें खटखटाते चल दिये। गाड़ीमें रबरके नये टायर लगे हुए थे। वह तेजीसे चल पड़ी। ऊँची-नीची सड़कपर वह कभी कभी जरा-सी उछल जाती थी।

पाँचवाँ अध्याय

अब कहाँ जाना चाहिये जिससे असफल न होना पड़े, इसपर विचार करनेके बाद नेख्लीडूने निश्चय किया कि अब सिनेट चलना चाहिये। वहाँ पहुँचनेपर विशाल दफ्तरमें कई बड़े स्वच्छ और शिष्ट सरकारी मुलाजिमोंसे उसकी मुलाकात हुई। नेख्लीडूको यहाँ इन सरकारी अफसरोंसे यह पता चला कि मस्लोवाकी पिटीशन आयी है और विचार तथा रिपोर्टके लिए उन्हीं सिनेटर उल्फके पास भेज दी गयी है जिनके नाम नेख्लीडूके पास चिट्ठी थी।

"सिनेटकी एक बैठक इस हफ्ते होनेवाली है।" नेख्लीडूसे एक अफसरने बताया। "लेकिन मस्लोवाका मुकदमा मुश्किलसे पेश हो सकेगा। हाँ, अगर विशेष प्रार्थना की जाय तो मुमकिन है कि बुधके दिन यह पिटीशन सुन ली जाय।"

सिनेटसे नेख्लीडू बग्घीपर चढ़कर पिटीशन-कमेटीके प्रभावशाली सभासद बैरन वारोबिवसे मिलने गया जो एक बड़े सरकारी मकानमें रहते थे। दरबानने नेख्लीडूसे कड़े लहजेमें बताया कि बैरनसे सिर्फ उसी दिन मुलाकात हो सकती है जो दिन उन्होंने इसके लिए नियत कर रखा है। आज वे सम्राट्के सामने पेशीमें गये हुए हैं और दूसरे दिन भी उन्हें रिपोर्ट लेकर जाना है।" इसलिए नेख्लीडूने अपने मौसाका पत्र दरबानको दे दिया और खुद सिनेटर उल्फसे मिलने चला गया।

उल्फ दोपहरका खाना खा ही चुका था कि नेख्लीडू पहुँच गया। उल्फ इस समय अपने दस्तूरके अनुसार सिगार पीकर और कमरेमें टहलकर खानेको हजम कर रहा था। वह अपनेको सिर्फ सज्जन ही नहीं समझता था, बल्कि इज्जतदार आदमी भी समझता था। इज्जतका मतलब वह यह लगाता था कि किसीसे रिश्वत न ले। लेकिन वह इसमें

कोई बेईमानी नहीं समझता था कि तरह-तरहके भत्तों और सफर-खर्चोंके लिए गवर्नमेंटके पास दरख्वास्तें भेजता रहे और इसके बदलेमें गवर्नमेंटके लिए वह सब कुछ करनेके लिए तैयार था। सैकड़ों निरपराध आदमियोंका नाश कर देने और केवल इसलिए कि ये अपने देशसे और अपने पूर्वजोंके धर्मसे प्रेम रखते थे उनको जेल भेज देने तथा निर्वासित कर देनेमें जैसा कि उसने पोलैंड प्रान्तकी गवर्नरीके समय किया था, उसे जरा भी बेईमानी नहीं मालूम होती थी। वह इस बातमें भी कोई बेईमानी नहीं देखता था कि अपनी स्त्रीकी (जो उसपर मोहित थी) और अपनी सालीकी सम्पूर्ण सम्पत्ति उड़ा ले। इसके विपरीत वह यह समझता था कि अपने कुटुम्बके इन्तजामका यही सबसे अच्छा तरीका है।

नेख्लीडू जब कमरेमें ले जाया गया, उल्फने टहलना बन्द कर दिया और नेख्लीडूसे मिला, लेकिन किसी कदर व्यंग्यपूर्ण मुस्कराहटसे मिला। यह मुस्कराहट इस बातके प्रकट करनेके लिए थी कि मैं कितना सज्जन हूँ। उसने नेख्लीडूके दिये हुए पत्रको पढ़ा।

"कृपा करके बैठिये और मुझे माफ कीजियेगा अगर मैं आपकी इजाजतसे इस कमरेमें टहलता रहूँ।" उसने कहा और कोटकी जेबोंमें हाथ डालकर दबे पाँव अपने पढ़नेके विशाल कमरेमें, जो बिल्कुल ठीक ढंगसे सजा हुआ था, टहलने लगा।

"आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई और काउंट आइवन मिखेलिचकी इच्छा अगर पूरी कर सकूँ तो मुझे और भी प्रसन्नता होगी।" कहते उसने अपने मुँहसे खुशबूदार नीला धुआँ निकाला और सावधानीके साथ मुँहसे सिगार निकालकर हाथमें ले लिया जिससे राख जमीनपर न गिर पड़े।

"मेरी केवल यही प्रार्थना है कि यह मुकदमा जल्द ले लिया जाय ताकि अगर कैदीको साइबेरिया जाना है तो वह जल्दी चल दे।" नेख्लीडूने कहा।

"हाँ हाँ, निजनीसे जो पहला स्टीमर जाता है उससे। मैं समझ गया।" उसने कहा और शानसे मुस्कराया। वह पहले ही समझ लेता था कि आदमी उससे क्या कहना चाहता है। "कैदीका नाम क्या है?"

"मस्लोवा।"

उल्फ मेजकी तरफ बढ़ा। उसपर कुछ कागज रखे हुए थे। उन्हें वह देखने लगा।

"हाँ हाँ, मस्लोवा। ठीक है मैं औरोंसे कह दूँगा और यह मुकदमा बुधके दिन होगा।"

"तो क्या मैं वकीलको तार देकर बुला लूँ?"

"वकीलको किस लिए? लेकिन आप चाहें तो बुला लीजिये।"

"सम्भव है, अपीलकी बिना काफी न हो।" नेख्लीडूने कहा। "लेकिन मैं समझता हूँ कि मुकदमेके देखनेसे मालूम हो जायगा कि सजा एक गलतफहमीकी वजहसे हो गयी थी।"

"हाँ हाँ, हो सकता है, लेकिन सिनेट मुकदमेंका फैसला उसकी योग्यताकी बिना पर नहीं करती।" उल्फने सिगारको देखकर कठोर स्वरमें कहा "सिनेट तो सिर्फ इस बातपर विचार करती है कि कानूनकी पाबन्दी ठीक-ठीक की गयी है और उसके सही माने लगाये गये हैं या नहीं।"

"लेकिन मैं समझता हूँ कि यह एक असाधारण मुकदमा है।"

"मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ, सभी मुकदमे असाधारण होते हैं। हम अपने कर्तव्यका पालन करेंगे। बस, इतना ही मैं कह सकता हूँ।" सिगारमें अभीतक राख लगी हुई थी लेकिन इसमें दराज हो गयी थी, इससे नीचे गिर जानेका डर था।

"क्या आप अक्सर पीटर्सबर्ग आते हैं?" उल्फने कहा और हाथमें सिगारको इस तरह लिये रहा कि राख न गिरे, लेकिन राख गिरने लगी। उल्फ सावधानीसे उसे राखदानीकी तरफ ले गया जिसमें वह गिर पड़ी। अब उसने घण्टी बजायी।

नेख्लीडूने झुककर सलाम किया।

"अगर आपको तकलीफ न हो तो बुधके दिन आइये और शामको खाना यहीं खाइये। मैं उस समय निश्चित रूपसे उत्तर दे सकूँगा।" उसने कहा और मिलानेके लिए हाथ बढ़ाया।

देर हो चुकी थी; नेख्लीडू अपनी मौसीके घर वापस चला आया।

———

छठाँ अध्याय

दूसरे दिन जब नेख्लीडू कपड़ा पहन चुका और जानेवाला ही था कि प्यादेने आकर उसे मास्कोके वकीलका एक कार्ड दिया। वकील साहब अपने कामसे पीटर्सबर्ग आये थे और उनका यह भी विचार था कि अगर सिनेटके सामने मस्लोवाका मुकदमा जल्दी होनेवाला हो तो उस अवसरपर वे भी मौजूद रहें। इधर नेख्लीडूने तार भेजा था, उधर वे वहाँसे चल दिये थे, इसलिए वह तार उन्हें नहीं मिला था। नेख्लीडू-से जब उन्हें यह मालूम हुआ कि मुकदमा कब होनेवाला है और कौन कौन सिनेटर उस मुकदमेको सुनेंगे तो वे मुस्कराये।

"तीनों सिनेटर तीन किस्मके हैं। "उल्फ तो पीटर्सबर्गका सरकारी अफसर है। स्कोवरोडनिकव शास्त्रीय दण्डविज्ञानी है और बे व्याव-हारिक दण्डविज्ञानी है। इसलिए वह सबसे ज्यादा फुर्तीला है।" वकील साहबने कहा "सबसे ज्यादा आशा उसीसे की जाती है। खैर पिटीशन-कमेटीका क्या हुआ?"

"मैं बैरन वारोबिबके पास आज जा रहा हूँ। कल उनसे मुला-कात नहीं हो सकी।"

"आप जानते हैं कि ये वारोबिब बैरन क्यों कहलाते हैं?" एडवो-केटने यह देखकर पूछा कि नेख्लीडूने इतने साधारण रूसी नामके साथ इस विदेशी उपाधिके प्रति हलका-सा व्यंग बोलकर जोर दिया था। "कारण यह है कि सम्राट् पालने इनके पितामहको इनामके तौरपर यह उपाधि दी थी। इनके पितामह दरबारमें चपरासी थे। इन्होंने सम्राट्को किसी तरह खुश कर लिया और उन्होंने इनको बैरन बना दिया। 'मेरी यही इच्छा है, इन्कार न करना' सम्राट्ने यही कहा था और इसी तरह वे लोग बैरन बन गये और उन्हें इस उपाधिपर बड़ा अभिमान भी है। वह है वास्तवमें मिट्टीका धोंधा।"

"अच्छा जो हो, मैं उन्हींसे मिलने जा रहा हूँ।" नेख्लीडूने कहा।

"बहुत अच्छी बात है। हम लोग साथ साथ चलें। आप मेरी गाड़ीपर चले चलिये।"

ये दोनों उठकर खड़े ही हुए थे कि अगले कमरेमें आकर एक प्यादेने नेख्लीडूको मैरीटीका एक पत्र दिया। वह पत्र फ्रांसीसी भाषामें था। उसके शब्द निम्नलिखित थे—

"आपको प्रसन्न करनेके लिए मैंने अपने सिद्धान्तोंका उल्लंघन करते हुए अपने पतिपर आपके सिफारिशी आदमीके लिए जोर डाला है। मालूम यह होता है कि यह व्यक्ति फौरन ही रिहा किया जा सकता है। मेरे पतिने कमाण्डरको लिख दिया है इसलिए निःस्वार्थ होकर आइये, मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगी।"

"जरा खयाल तो कीजिये," नेख्लीडूने वकीलसे कहा "कितने जुल्मकी बात है। एक औरत है जिसे सात महीनेसे इन लोगोंने काल-कोठरीमें बन्द कर रखा है जो कि वास्तवमें बिलकुल निरपराध थी और जिसको छुड़ानेके लिए सिर्फ एक शब्दकी जरूरत थी।"

"यही हमेशा होता है। खैर जो हो, आप जो चाहते थे वह तो हो गया।"

"जी हाँ, लेकिन इस सफलतासे मुझे दुःख हुआ। जरा खयाल तो कीजिये कि उस बेचारीपर क्या बीती होगी। उसे आखिर क्यों जेलमें बन्द किया गया?"

"आप सच कहते हैं, लेकिन किसी मामलेमें बहुत गहराईपर जाना ठीक नहीं होता। अच्छा, तो मैं आपको अपनी सवारीपर ले चलूँ।" वकीलने कहा और ये लोग अपने मकानसे बाहर निकले। एक नफीस गाड़ी, जिसे वकील साहबने किरायेपर किया था, दरवाजेपर आकर लग गयी। "आप बैरन गोरोकीफसे मिलने जा रहे हैं न?

वकील साहबने कोचवानसे, जहाँ जाना था बता दिया और नफीस घोड़ोंकी जोड़ीने जल्दीसे नेख्लीडूको उस कोठीके सामने लाकर खड़ा

कर दिया जिसमें बैरन रहा करता था। बैरन इस वक्त मकानपर ही था। वर्दी पहने हुए, एक नौजवान अफसर जिसकी गर्दन लम्बी और पतली थी और जिसकी घाँटी उभरी हुई थी, दो महिलाओंके साथ पहले कमरेमें बैठा हुआ था।

"आपका शुभ नाम ?" घाँटीवाले नौजवानने पूछा और महिलाओंके सामने होता हुआ, बहुत दबी चाल और तमीजके साथ, नेख्लीडूके सामने आकर खड़ा हो गया।

नेख्लीडूने अपना नाम बतला दिया।

"आइये, तशरीफ लाइये।" नौजवान आदमीने कमरेके दरवाजेतक दबे पाँव आकर और दरवाजा खोलकर कहा। जब नेख्लीडू अन्दर दाखिल हुआ तो उसने देखा कि मझोले कदका एक गठीला आदमी छोटे-छोटे बाल रखे, फ्राक कोट पहने, एक बड़ी मेजके बराबर आराम-कुर्सीपर प्रसन्नवदन बैठा हुआ था।

"तुमसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। मैं और तुम्हारी माँ एक दूसरेको बहुत दिनोंसे जानते थे और मित्र थे। मैंने तुम्हें बचपनमें देखा था और फिर जब तुम फौजमें अफसर हो गये थे तब। बैठ जाओ और यह बताओ कि मैं तुम्हारी क्या सेवा करूँ......" नेख्लीडूने थ्यूडूसियाकी कहानी शुरू की और इसने अपनी सफेद कटी हुई दाढ़ी हिलाते हुए कहा—"हाँ हाँ, कहते जाओ, कहते जाओ, मैं समझ रहा हूँ। बड़ी हृदयग्राही बात कर रहे हो। क्या तुमने पिटीशन दाखिल कर दी।

"पिटीशन बिल्कुल तैयार है।" नेख्लीडूने कहा और दरख्वास्तको अपनी जेबसे बाहर निकाला। "लेकिन मैंने यह सोचा कि पहले इस सम्बन्धमें आपसे बातें कर लूँ जिससे इस मुकदमेपर विशेष रूपसे ध्यान दिया जा सके।"

"बड़ा अच्छा किया। इस मुकदमेकी मिसिलपर मैं खुद अपना नोट लिखूँगा।" बैरनने कहा और अपने हँसमुख चेहरेपर करुणाकी भावना लानेकी असफल कोशिश की। "बहुत ही हृदयस्पर्शी बात है। यह तो

स्पष्ट है कि यह औरत उस समय बहुत छोटी थी। पतिने इसके साथ कठोर व्यवहार किया जिससे इस स्त्रीके दिलमें घृणा पैदा हुई, लेकिन कुछ दिन बीतनेके बाद ये दोनों एक दूसरेसे प्रेम करने लगे। खैर, मैं ही इस मुकदमेपर नोट लिखूँगा।"

"काउण्ट आइबन मिखैलिच भी आपसे इस मामलेके बारेमें कहनेवाले थे।"

नेख्लीडूके मुँहसे ये शब्द मुश्किलसे निकले होंगे कि बैरनका चेहरा बदल गया।

"बेहतर है आप दरख्वास्त दफ्तरमें दे दीजिये और मैं जो कुछ कर सकता हूँ, करूँगा।" उसने कहा।

सातवाँ अध्याय

पीटर्सबर्गके कैदियोंके कष्टको हटाना जिस आदमीपर निर्भर था वह एक प्रसिद्ध बुड्ढा जनरल था अर्थात् वह जर्मन जातिका एक बैरन था। लोग कहते थे कि यह अपनी बुद्धिकी मृत्युके बाद भी सजीव बना था। उसे बहुतसे तमगे मिले थे लेकिन वह सिर्फ एक तमगा लगाता था—सफेद सलीबका तमगा। यह तमगा, जिसकी जनरल बहुत इज्जत करता था, काकेशसमें तैनात होनेके जमानेमें मिला था। और मिला था इसलिए कि अनेक रूसी किसानोंने, जिनके बाल कटे हुए थे, और जिन्होंने वर्दी पहनकर बन्दूक और संगीन लेकर इसकी आज्ञासे एक हजारसे ज्यादा ऐसे आदमियोंको मार डाला था जो अपनी स्वतंत्रता, अपने घर और कुटुम्बकी रक्षा करते थे। इसके बाद यह पोलैंडमें तैनात हुआ। वहाँपर भी इसने ऐसे किसानोंसे अनेक प्रकारके अपराध कराये और अपनी वर्दीको सुशोभित करनेके लिए इसे अनेक तमगे मिले। इसके बाद यह दूसरी जगह काम करने चला गया और अब, जब कि बुड्ढा हो गया था, इसे यह काम मिल गया था जिससे इसको रहनेके लिए अच्छा मकान मिला था और अच्छी खासी आमदनी और इज्जत निश्चित हो गयी थी। ऊपरसे जो कायदे-कानून बनकर आते उनकी पाबन्दी यह बड़ी दृढ़ता और उत्साहसे करता था। इन नियमोंको यह विशेष महत्त्व देता था और समझता था कि दुनियाकी चाहे और बातें बदल जायँ लेकिन ऊपरसे आये हुए कायदे-कानूनोंमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। इसकी ड्यूटी थी राजनीतिक कैदियोंको—औरत मर्द दोनोंको—काल-कोठरीमें इस तरह बंद रखना कि इनमेंसे आधे दस बरसमें मर जायँ, कुछ पागल हो जायँ, कुछको क्षय हो जाय, कुछ भूखे रहकर या शीशेसे अपनी नस काटकर अथवा फाँसी लगाकर या आगमें जलकर आत्महत्या कर लें।

बुड्ढा जनरल इन सब बातोंसे अपरिचित नहीं था; क्योंकि . यह सब इसकी आँखोंके सामने ही होता था। लेकिन इन घटनाओंसे उसके अंतःकरणपर वैसे ही कोई प्रभाव नहीं पड़ता था जैसे वज्राघात, बाढ़ इत्यादिमें होनेवाली दुर्घटनाओंका। ये घटनाएँ सम्राट् द्वारा ऊपरसे भेजे हुए कायदे-कानूनोंके पालन करनेका परिणाम हुआ करती थीं। इन कायदे-कानूनोंकी पाबन्दी अनिवार्य रूपसे आवश्यक थी इसलिए यह सोचना बिल्कुल व्यर्थ था कि इनकी पाबन्दीका नतीजा क्या निकलता है। बुड्ढा जनरल इन समस्याओंपर विचार करना भी उचित नहीं समझता था; क्योंकि सैनिकोंकी हैसियतसे इन बातोंपर विचार न करना वह राज्यके प्रति अपना कर्तव्य समझता था। वह सोचता था कि कहीं ऐसा न हो कि मैं इन विचारोंके प्रभावमें आकर कमजोर पड़ जाऊँ, और अपने कर्तव्योंके पालन करनेमें, जिन्हें वह बहुत महत्त्व देता था, कमजोरी दिखा बैठूँ। यह बुड्ढा जनरल हफ्तेमें एक बार कालकोठरीकी गश्त करता था—जो इस ओहदेके कर्तव्योंमेंसे एक था—और कैदियोंसे पूछता था कि तुम्हें कुछ कहना तो नहीं है। कैदी लोग तरह-तरहकी याचनाएँ करते थे, जिनको यह चुपचाप सुनता और कभी भी पूरा नहीं करता था; क्योंकि ये कायदे-कानूनमें नहीं आती थीं।

"आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।" जनरलने नेख्लीडूसे कहा जब वह उससे मिलने गया। ये मित्रता-सूचक शब्द उसके कंठसे भरे हुए निकले। उसने लिखनेकी मेजके सामने पड़ी हुई कुर्सीपर बैठनेका इशारा करते हुए नेख्लीडूसे कहा—"आप क्या पीटर्सबर्गमें बहुत दिनोंसे हैं?"

नेख्लीडूने उत्तर दिया—"मैं आज ही आया हूँ।"

"आपकी माँ रानी साहबा अच्छी तरह हैं?"

"उनकी मृत्यु हो गयी।"

"माफ कीजियेगा, मुझे बड़ा अफसोस हुआ। मेरा लड़का कहता था कि आपकी उससे मुलाकात हुई थी।"

जनरलका लड़का भी अपनी जिंदगी पिता-सी बना रहा था।

यह सैनिक कालेजसे निकलकर अब जाँच-दफ्तरमें काम कर रहा था। अपने ओहदेपर इसे बड़ा अभिमान था। इसको सरकारी जासूसोंकी देख-रेखका काम मिला था।

"क्या नहीं जानते कि मैं और आपके पिता साथ-साथ काम करते थे? हम लोगोंमें बड़ी दोस्ती थी और आप अभी किसी महकमेमें हैं न?"

"जी नहीं, मैं कहीं नौकर नहीं हूँ।"

जनरलने अपना सर झुका लिया, मानो उसे यह बात पसंद नहीं आयी।

"जनरल, मैं आपके पास एक याचना करने आया हूँ।"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। मैं आपकी सेवा कैसे कर सकता हूँ?"

"अगर मेरी याचना अनुचित हो तो क्षमा कीजियेगा। लेकिन मैं इस निवेदनके लिए मजबूर हूँ।"

"क्या है?"

"गुरुकेविच् नामका एक कैदी किलेमें बंद है। उसकी माँ उससे मिलना चाहती है। अगर यह न हो सके तो कमसे कम इस बातकी इजाजत चाहती है कि उसे कुछ किताबें भेज सके।"

जनरलने इस बातपर न तो संतोष प्रकट किया न असंतोष। लेकिन अपना सर एक तरफ झुकाकर आँखें बन्द कर लीं, मानों कुछ सोच रहा हो, यद्यपि वह कुछ सोच नहीं रहा था। उसे नेख्लीडूकी प्रार्थनामें कोई दिलचस्पी भी नहीं थी; क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि हर एक बात कायदे-कानूनके मुताबिक ही तै करनी है। वह कुछ भी सोच नहीं रहा था बल्कि अपने मस्तिष्कको आराम दे रहा था।

"आप जानते ही हैं," उसने अंतमें कहा "यह मेरे अख्तियारकी बात नहीं है। मुलाकातके बारेमें सम्राट् द्वारा स्वीकृत एक कानून है। अब रह गयी किताबोंकी बात, सो उसके लिए जेलमें उपयुक्त पुस्तकोंका

एक पुस्तकालय है, और कैदी लोग उन पुस्तकोंको ले सकते हैं जिनकी इजाजत है।"

"लेकिन वह तो विज्ञानकी किताबें चाहता है। वह अध्ययन करना चाहता है।"

"आप उन लोगोंका विश्वास करते हैं!" जनरलने बड़बड़ाकर कहा और थोड़ी देर चुप रहा। "ये लोग अध्ययन करना नहीं चाहते, यह तो इन लोगोंकी बेचैनी है।"

"लेकिन किया क्या जाय? इनको अपनी कठिन अवस्थामें कुछ न कुछ करके समय तो काटना है ही।" नेख्लीडूने कहा।

"ये लोग हमेशा शिकायतें ही किया करते हैं।" जनरलने कहा, "हम लोग इनको अच्छी तरह पहचानते हैं।"

जनरलने कैदियोंके ऊपर एक व्यापक रूपसे यह टिप्पणी की मानो इन लोगोंकी कोई विशेष रूपसे खराब जाति हो।

"इन लोगोंको यहाँ इतनी सुविधाएँ मिली हुई हैं जितनी दूसरे किसी जेलमें न होंगी।" जनरलने कहा और अपनी बातका औचित्य सिद्ध करनेके लिए उन सुविधाओंका वर्णन शुरू किया जो उन कैदियोंको मिली हुई थीं। मानो इस संस्थाका उद्देश्य यह था कि जो लोग यहाँ बन्द हों उन्हें एक सुखद निवासस्थान दिया जाय।

"यह सच है कि पहले यहाँ कैदियोंका जीवन कठोर था, लेकिन अब ये लोग बहुत अच्छी तरह रखे जा रहे हैं।" उसने कहा "इन लोगोंको तीन बार खानेको मिलता है। एक खानेमें इनको गोश्त दिया जाता है, जिसमें काटलेट, रिसोलकी किस्मकी चीजें मिलती हैं। (रिसोल एक फ्रांसीसी खाना है, जो गोश्त या मछलीको कीमा करके अंडे या आलूमें मिला रोटीमें लपेटकर तल दिया जाता है।) रविवारके दिन एक दफा और खाना दिया जाता है जिसमें कोई मीठा खाना होता है। ईश्वर हर एक रूसीको उसी प्रकार जीवन दे जैसा यहाँके कैदियोंको है तो कैसा अच्छा हो।"

सभी बुड्ढे आदमियोंकी तरह जनरलने, अपने मनका विषय, बात करनेके लिए पाकर इसके अनेक प्रमाण दिये कि कैदी लोग किस प्रकार अनुचित माँगें पेश करते हैं और कृतघ्नता दिखाते हैं।

"कैदियोंको धार्मिक विषयोंकी पुस्तकें दी जाती हैं और पुराने अखबार मिलते हैं। फिर यहाँ पुस्तकालय भी है, लेकिन ये लोग कभी पढ़ते नहीं। पहले तो कुछ दिलचस्पी दिखाते हैं, बादको देखिये तो नयी किताबोंके आधे सफे आपको बिना कटे मिलेंगे और पुरानी किताबोंका तो एक सफा भी नहीं उलटते। हम लोगोंने परीक्षा ली।" बुड्ढे जनरल ने जरा-सी मुस्कराहटका आभास देते हुए कहा—"हम लोगोंने जान-बूझकर किताबोंमें कहीं कहीं कागजके छोटे-छोटे टुकड़े रख दिये और जब ये किताबें कैदियोंके पढ़ लेनेपर वापस आयीं तो कागजके टुकड़े जहाँके तहाँ रखे मिले। लिखनेकी भी मुमानियत नहीं है।" उसने कहा। एक स्लेट और एक स्लेटकी पेंसिल दी जाती है जिससे ये लोग अपने दिलबहलावके लिए लिखा करें। लिख चुकें तब स्लेटको पोंछ डालें और चाहें तो फिर लिखें। लेकिन ये लोग लिखते भी नहीं। एक बात जरूर है, कुछ दिनके बाद ये शान्त हो जाते हैं। पहले तो थोड़े दिनोंतक ये बेचैन रहते हैं, लेकिन बादको ये मोटे होने लगते हैं और बहुत ही शान्त हो जाते हैं।" जनरलने इस प्रकार वक्तृता दी। वह नहीं समझ रहा था कि उसके शब्दोंमें कितना भयंकर अर्थ छिपा हुआ है।

नेख्लीडू जनरलकी वृद्ध और मोटी आवाज सुनता रहा। सफेद भौंहोंके नीचे उसकी ज्योतिहीन आँखों, काष्ठवत् हाथ-पैरों और लटकी हुई खालवाले घुटे हुए जबड़ोंको, जिसे सैनिक वर्दीका कालर रोके हुए था, तथा सफेद सलीबको, जिसे यह आदमी बड़े अभिमानसे पहने हुए था विशेषकर इसलिए कि उसने इस तमगेको असाधारण रूपसे निर्दयता-पूर्ण और व्यापक कत्लके बाद प्राप्त किया था, नेख्लीडूने देखा। वह समझ गया कि बुड्ढे आदमीको जवाब देना या उसके ही शब्दोंका अर्थ समझाना बेकार है। नेख्लीडूने कोशिश करके दूसरी बात छेड़ी और

शुस्तोवा नामके कैदीके बारेमें पूछा जिसकी रिहाईका हुक्म प्रातःकालकी सूचनाके अनुसार निकल चुका था।

"शुस्तोवा—शुस्तोवा ? मुझे सबके नाम याद नहीं रहते; क्योंकि सैकड़ों हैं।" उसने कहा, मानो वह इस बातसे असंतोष प्रकट कर रहा था कि यहाँ इतने कैदी क्यों मौजूद हैं। इसने घंटी बजायी और अपने सेक्रेटरीको बुलानेका हुक्म दिया। जबतक सेक्रेटरी आवे आवे, उसने नेख्लीडूको गवर्नमेण्टकी नौकरी कर लेनेके लिए समझाना शुरू किया। उसने कहा कि जारकी सेवा करने और देशकी सेवा करनेके लिए 'ईमानदार भद्र' पुरुषोंकी विशेष रूपसे आवश्यकता है। (यह इसी वर्गमें अपनी गणना करता था।) उसने यह भी कहा कि "मैं बुड्ढा हो गया हूँ फिर भी मुझमें जितनी शक्ति है, उससे सेवा करता जाता हूँ।" यह वाक्य उसने अपने कथनको समाप्त करनेके लिए कहा था।

सेक्रेटरी एक रूखा-सूखा, दुबला-पतला आदमी था। उसकी आँखों-से बेचैनी और बुद्धिमत्ता टपकती थी। उसने सूचना दी कि शुस्तोवा किसी अजीब किलेमें रखी गयी है और उसकी रिहाईका कोई हुक्म अभीतक नहीं आया है।

"जिस दिन हमें हुक्म मिलेगा उसी दिन हम उसे छोड़ देंगे। हम लोग किसीको कैद रखना नहीं चाहते और यहाँ इन लोगोंके आनेसे हमें कोई फायदा भी नहीं।" जनरलने कहा और मुस्करानेकी कोशिश की जिससे इसकी बुढ़ापेकी आकृति बिगड़ गयी।

नेख्लूडू उठकर खड़ा हो गया और कोशिश करने लगा कि इस भयंकर वृद्ध पुरुषके प्रति मेरे हृदयमें पैदा होनेवाली दया और घृणाकी भावना कहीं प्रकट न हो जाय। इस बुड्ढेने दिलमें यह अनुभव किया कि अपने पुराने साथीके इस बहके हुए विचारशून्य लड़केके प्रति कठोरता दिखाना उचित नहीं। इसलिए उसे कुछ उपदेश दिये बिना जाने देना उचित न समझा।

"अच्छी बात है, जाओ, सलाम। देखो, जो कुछ मैंने कहा है

उसका बुरा न मानना। ये बातें मैंने प्रेम-वश कही हैं। जिन्हें हमने यहाँ बन्द कर रखा है इनका साथ न करना। इन लोगोंमें कोई निरप-राध नहीं है। ये सभी बड़े पतित हैं और हम इनको बड़ी अच्छी तरह जानते हैं।" जनरलने कहा। उसके स्वरमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं मालूम होता था।

"सबसे अच्छी बात यह होगी" उसने कहा "कि जाकर जारकी सेवा करने लगो। जारको और इस देशको सज्जन पुरुषोंकी आवश्यकता है। मान लो अगर मैं या दूसरे जारकी सेवा करना छोड़ दें, जैसा तुमने कर रखा है, तो कौन बचेगा। लोग शासन-प्रणालीपर आक्षेप करते हैं, लेकिन सरकारकी मदद नहीं करना चाहते।"

गहरी साँस लेकर नेख्लीडूने झुककर सलाम किया। जनरल द्वारा कृपापूर्वक बढ़ाये हुए उसके हड्डीदार बड़े हाथसे हाथ मिलाया और कमरेके बाहर चला आया।

जनरलने असन्तोषपूर्वक अपना सर हिलाया। वह अपनी कमरको मलता हुआ उठ खड़ा हुआ।

आठवाँ अध्याय

दूसरे दिन मस्लोवाका मुकदमा सिनेटके सामने पेश होनेवाला था। नेखलीडू और वकील साहबकी मुलाकात इस इमारतके शानदार फाटक-पर हो गयी जहाँ बहुत-सी गाड़ियाँ खड़ी थीं।

मुकदमेकी सुनवाई जल्दी शुरू हो गयी, और दर्शकोंके साथ नेखलीडू बायीं तरफ जाकर सिनेटके कमरेमें दाखिल हुआ। ये सभी और फेनारिन भी एक कठघरेके पीछे बैठ गये। पीटर्सबर्गका वकील ही सिर्फ कठघरेके सामनेकी डेस्कतक गया।

अर्दलीने अपने नियमानुसार बड़े गम्भीर स्वरसे पुकारा—"अदालत आ रही है।" सब लोग खड़े हो गये। सिनेटर अपनी अपनी वर्दियोंमें दाखिल हुए और ऊँचे पुश्तेवाली कुर्सियोंपर बैठ गये। मेजके ऊपर झुके हुए ये लोग फौजदारी अदालतके जजोंके समान स्वाभाविक दीखनेका प्रयत्न करने लगे। चार सिनेटर मौजूद थे—निकीतिन बड़ी कुर्सीपर बैठा। उसका चेहरा पतला, आँखें फौलादी और दाढ़ी-मूँछें मुड़ी हुई थीं। उसने अर्थसूचक भावसे अपने होंठ दबा रखे थे। वह अपने सफेद छोटे हाथोंसे मिसिलके कागज उलट-पुलट रहा था। स्कोवरोड-निकव मोटा भारी था। उसके चेहरेपर मुँहासे थे। वह विद्वान् और कानूनका विशेषज्ञ था। चौथा वह था, जिसके चेहरेसे बुजुर्गी टपकती थी और जो सबसे पीछे आया था।

सिनेटरोंके साथ उनका मुख्य पेशकार और सरकारी वकील भी आया जो एक दुबला-पतला, दाढ़ी-मूँछ मुड़ाये, मझोले कदका नौजवान था। इसका रंग कुछ गहरा था और काली आँखोंमें उदासी थी। यद्यपि यह विचित्र वर्दी पहने हुए था और नेखलीडूने इसे छः बरस पहले देखा था फिर भी इसे फौरन पहचान लिया; क्योंकि विद्यार्थी-जीवनमें यह आदमी नेखलीडूका बड़ा मित्र रह चुका था।

"सरकारी वकील यह सेलेनिन है न!" नेखलीडूने अपने वकीलसे फिरकर पूछा।

"हाँ, क्यों?"

"मैं इसे अच्छी तरह जानता हूँ।"

"बड़ा अच्छा आदमी है, और नपी तुली बात करनेवाला अच्छा वकील भी है। ऐसे आदमीसे मिलकर आपको अपने मुकदमेके बारेमें दिलचस्पी पैदा करानी चाहिये थी।"

"यह आदमी तो अपने अंतःकरणके अनुसार ही काम करेगा।" नेख्लीडूने कहा और उसे सेलेनिनके साथ अपना घनिष्ठ और पुराना सम्बन्ध, उसके आकर्षक गुण, पवित्रता, ईमानदारी और अत्युत्तम कुटुम्बका प्रभाव, जो इसके स्वभावपर पड़ा था, याद आ गया।

"जी हाँ, लेकिन अब तो बहुत देर हो गयी।" फेनारिनने धीरेसे कहा और वह मुकदमेकी कार्यवाही सुनने लगा जो शुरू हो चुका था।

"आप किस मुकदमेके लिए आये हैं?" एलानचीने फेनारिनसे पूछा।

"बता तो दिया कि मस्लोवाका मुकदमा है।"

"हाँ ठीक है, यह मुकदमा आज होगा लेकिन—"

"लेकिन क्या?" वकीलने पूछा।

"बात यह है कि सिनेटर लोग मस्लोवाके मुकदमेमें कोई बहस सुननेकी जरूरत नहीं समझते। इसीलिए इस मुकदमेका फैसला करनेके बाद, जो अभी खतम हुआ है, अदालतमें आकर फिर न बैठेंगे। लेकिन मैं इत्तला किये देता हूँ।"

"इसका मतलब?"

"मैं इत्तला कर दूँगा, मैं इत्तला कर दूँगा।" एलानचीने कहा और कागजपर कुछ लिख लिया।

सिनेटरोंका इरादा यह था कि मानहानिके मुकदमेमें फैसला देनेके बाद वे फिर बहसके कमरेसे बाहर न आवें और वहीं बैठे-बैठे सिगरेट और चाय पीते हुए, दूसरे काम, जिसमें मस्लोवाका मुकदमा भी था, खतम कर दें।

———

नवाँ अध्याय

ज्यों ही सिनेटर लोग बहसके कमरेमें मेजके चारों तरफ बैठ गये, उल्फने बड़े जोशके साथ मातहत अदालतके फैसलेको मंसूख करनेके पक्षमें दलीलें पेश करना शुरू किया। प्रमुख सिनेटर, जो कटु स्वभावका था, आज विशेष रूपसे चिढ़ा हुआ था।

एलानचीने आकर इत्तिला दी कि "नेख्लीदू और उनके वकील मस्लोवाके मुकदमेपर विचार करते समय मौजूद रहनेकी प्रार्थना करते हैं।"

उल्फने महीन आवाजसे मस्लोवाकी अपीलको बहुत अच्छी तरह समझाया। इस मर्तबा भी इसकी बातोंमें कुछ पक्षपात दिखाई देता था और सजाको मंसूख करनेकी स्पष्ट इच्छा प्रकट होती थी।

"आपको कुछ कहना है?" प्रमुख सिनेटरने फेनारिनकी तरफ मुड़कर कहा। फेनारिन उठकर खड़ा हो गया। अपना चौड़ा सफेद सीना उभार कर उसने बहुत अच्छी तरहसे हर एक बातको साफ साफ समझाकर यह दिखा दिया कि छः बातोंमें फौजदारीकी अदालतने कानूनका सही मतलब न समझकर किस प्रकार गलती की है। इसके अलावा उसने संक्षिप्त रूपसे मुकदमेकी घटनाओंपर भी प्रकाश डाला और यह दिखाया कि सजा देकर कितना बड़ा अन्याय किया गया है। इसका यह संक्षिप्त और जोरदार भाषण वास्तवमें सिनेटरकी दयावृत्तिको उत्तेजित करनेके लिए किया गया था जिसे सिनेटर लोग अपनी कानूनी योग्यता और कुशाग्र बुद्धिसे पहले ही समझ रहे थे। इसका भाषण तो सिर्फ इसलिए आवश्यक था कि इसे अपने एक कर्तव्यका पालन करना था।

फेनारिनकी बहसके बाद सभीको यह विश्वास हो गया कि सिनेटको अदालतका फैसला जरूर मन्सूख कर देना चाहिये। जब

फेनारिनने अपनी बहस खतम कर दी, और विजयसूचक मुस्कराहटसे, जो उसके होठोंपर थी, चारों तरफ घूमकर देखा, तो नेख्लीडूको पूरा विश्वास हो गया कि मुकदमा जीत गया। जब उसने सिनेटर लोगोंको देखा तो उसे यह मालूम हुआ कि मुस्कराहट और विजयकी यह भावना केवल फेनारिनके ही चेहरेपर थी। सिनेटर और सरकारी वकील, न तो मुस्कराये और न उन्होंने अपने चेहरेसे विजयकी कोई भावना प्रकट की। वे तो उन लोगोंके समान दीखते थे जो बहस सुनते सुनते थक गये हों और अपने मनमें कह रहे हों कि ऐसी बातें तो हमने बहुत दफा सुनी हैं, तुमने तो सब बेकार बातें कही हैं। नेख्लीडूने देखा कि जब फेनारिनने अपना भाषण समाप्त किया तो इन लोगोंको प्रसन्नता हुई और इस बातपर संतोष हुआ कि अब यह आदमी अपनी व्यर्थकी बातसे हमें यहीं रोके न रहेगा। वकीलकी बहसके समाप्त होते ही प्रमुख, सरकारी वकीलकी तरफ, झुके। सेलेनिनने, संक्षेपमें लेकिन बहुत साफ साफ इस बातकी बहस की कि मातहत अदालतका फैसला कायम रखा जाय। इसने बताया कि अपीलकी सारी बुनियाद अपूर्ण और कमजोर है। इसके बाद सिनेटर लोग अपने, बहसके, कमरेमें चले गये। इस मुकदमेके बारेमें सिनेटर लोगोंमें मतभेद था। उल्फकी राय अपील मंजूर करनेकी थी। बेने जब मुकदमा समझा तो वह भी बहुत जोशके साथ उल्फके पक्षमें हो गया। उसने अपने साथी जजोंके सामने वह दृश्य रखा जो मातहत अदालतमें हुआ था। निकीतिन इसके खिलाफ था। वह नियम-पालन और सख्तीके पक्षमें रहा करता था इसलिए निर्णय अब स्कोवरोडनिकवकी रायपर निर्भर हो गया, उसने अपील खारिज करनेकी राय दे दी। वजह यह थी कि नेख्लीडूका यह दृढ़ विचार कि नैतिक दृष्टिसे वह इस औरतसे शादी करना चाहता है, उसे बहुत घृणात्मक मालूम हुआ।

स्कोवरोडनिकव डार्विनके सिद्धान्तोंका माननेवाला और प्रकृतिवादी था। वह नीति और धर्म दोनोंको घृणापूर्ण मूर्खता ही नहीं समझता था,

बल्कि अपने लिए व्यक्तिगत अपमान मानता था। एक वेश्याके मुकदमेमें इस प्रकारकी चहल-पहल, एक मशहूर वकीलका, और नेख्लीदूका, उसके लिए सिनेटमें आना उसको बहुत बुरा मालूम हुआ। इसलिए अपनी दाढ़ीको दुबारा मुँहमें भरतीकर वह मुँह बनाने लगा और बहुत होशियारीसे यह दिखलाने लगा कि मुझे इस मुकदमेमें इसके सिवा और कुछ नहीं मालूम कि अपीलकी बिना बहुत कमजोर है इसीलिए वह प्रमुखसे मिल गया और मातहत अदालतका फैसला बरकरार रहा।

इस तरह सजा बहाल रही।

दसवाँ अध्याय

"बड़ा जुल्म है।" नेख्लीडूने कहा जब वह वकीलके साथ इन्तजार करनेवाले कमरेमें पहुँचा। वकील साहब अपने पोर्ट फोलियोमें अपने कागजोंको दुरुस्त करते हुए बोले "इतने साफ मामलेमें भी ये सिर्फ लफ्जको पकड़ते हैं और महत्त्व देते हैं, उसमें हस्तक्षेप करना नहीं चाहते।"

"बड़ा जुल्म है, यह मुकदमा जो फौजदारी अदालतमें ही खराब हो गया।" वकीलने कहा।

"और सेलेनिन भी अपीलकी नामंजूरीके पक्षमें था। बड़ी भयंकर बात है।" नेख्लीडूने फिर कहा। अब क्या किया जाय?"

"अब सम्राट्के सामने अपील होनी चाहिये। आप तो यहाँ हैं ही। स्वयं दरख्वास्त दाखिल कर दीजियेगा। मस्विदा बना दूँगा।"

सिनेटसे निकलकर नेख्लीडू और वकील साहब साथ साथ थोड़ी दूर पैदल चले। वकील साहबने कोचवानको हुक्म दिया था कि गाड़ीको पीछे पीछे ले आना।

नेख्लीडू बहुत उदास हो गया। उसके उदास हो जानेका मुख्य कारण यह था कि सिनेटने अपील नामंजूर कर दी और मस्लोवा जो निरर्थक यातना सह रही थी उसका भी समर्थन कर दिया। उदासीका दूसरा कारण यह था कि इस अपीलको नामंजूर हो जानेकी वजहसे नेख्लीडूको अपना जीवन मस्लोवाके जीवनके साथ संयुक्त करना और भी कठिन हो गया। वर्तमान बुराइयोंकी भयंकर कहानियोंने, जिन्हें वकील साहबने इतने रसके साथ बयान किया था, उसकी उदासीको और भी बढ़ा दिया तथा सेलेनिनकी कठोर, सहानुभूतिशून्य दृष्टिने भी—जिसने उसे देखा था—उदास बना दिया। यही सेलेनिन कभी बड़े मधुर, स्पष्ट

और उच्च स्वभावका आदमी था। यह दृश्य नेख्लीडूके मनके सामने बराबर नाचता रहता था।

नेख्लीडू जब मकान वापस आया तो दरबानने उसे खत दिया और तिरस्कार-भरी हरकतसे बताया कि किसी औरतने बड़े कमरेमें लिखकर यह खत आपके लिए दिया है। यह पत्र शुस्तोवाकी माँका था। उसने लिखा था कि मैं अपनी लड़कीके हितचिन्तक और रक्षकको धन्य-वाद देने आयी थी और प्रार्थना की थी कि नेख्लीडू वैसीलिवेस्कीमें गली नं० ५ के मकान नं०—में पधारकर दर्शन दें। उसने यह भी लिखा कि वीरा दुखोवाके खयालसे आपका आना बहुत आवश्यक है। कृतज्ञता प्रकट करके लोग आपको परेशान न करेंगे। वहाँ शब्दों द्वारा किसी प्रकारकी कृतज्ञता प्रकट न की जायेगी। आपके दर्शनमात्रसे लोग कृतकृत्य हो जायँगे। अगर कष्ट न हो तो दूसरे दिन सुबह आइये।

पिछले कुछ दिनोंमें नेख्लीडूके ऊपर जो छाप पड़ी थी उससे वह बिल्कुल ही निराश हो गया था। मास्कोमें जो योजनाएँ उसने बनायी थीं वे अब युवावस्थाके स्वप्नके समान मालूम होने लगीं जो जीवनकी समस्याओंके सामने आनेपर अनिवार्य रूपसे भ्रमपूर्ण सिद्ध हो जाती हैं।

मैरीटी सरपर हैट लगाये, काले नहीं बल्कि कई रंगोंके हल्के कपड़े पहने, हाथमें चायका प्याला लिये, काउन्टेसकी आरामकुर्सीपर बैठी हुई चहक रही थी और उसकी सुन्दर मुस्कराती हुई आँखें चमक रही थीं। जब नेख्लीडू कमरेमें दाखिल हुआ, मैरीटीने उसके जरा देर पहले कोई बात इतनी हास्यजनक और अश्लीलतापूर्ण हास्यकी कही थी—यह बात उनकी हँसीके ढंगसे प्रकट होती थी—कि मृदुल स्वभाव मूँछदार काउ-न्टेस कैथरीन आइवनोव्नाका मोटा शरीर हँसीसे हिल रहा था। और मैरीटी अपने मुस्कराते हुए मुँहको एक तरफ किये, सरको जरा झुकाये, अपने हँसमुख और सजीव चेहरेसे एक विशेष प्रकारकी शरारतके भाव प्रकट करती हुई अपनी संगिनीको ओर देख रही थी।

"तू तो मुझे मार डालेगी।" काउन्टेसने खाँसते हुए कहा।

"मिजाज तो अच्छा है ?" कहनेके बाद नेख्लीडूव बैठ गया।

उसने नेख्लीडूसे पूछा कि तुम्हारे अनेक कामोंका क्या हुआ ? नेख्लीडूने बताया—"सिनेटमें मुझे असफलता रही और सेलेनिनसे मुलाकात हो गयी।"

"अहा ! कितनी पवित्र आत्मा है। वह एक निर्भय और निष्कलंक वीर पुरुष है।" दोनों महिलाओंने एक साथ कहा। ऐसे विशेषण पीटर्सबर्गके समाजमें सेलेनिनके लिए आम तौरसे व्यवहृत होते थे।

"उसकी स्त्री किस तरहकी है ?" नेख्लीडूने कहा।

"उसकी स्त्री ?" मैं किसीपर टीका-टिप्पणी नहीं करना चाहती लेकिन इतना जरूर कहूँगी कि वह अपने पतिको समझ नहीं पाती।"

"क्या यह सम्भव है कि सेलेनिन भी अपीलको नामंजूर करानेके पक्षमें था ?" मैरीटीने वास्तविक सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा, "कितनी भयंकर बात है। उस स्त्रीके लिए मैं कितनी दुखी हूँ।"

नेख्लीडूने भौंहें चढ़ायीं और बातचीतका विषय बदलनेके लिए उसने शुश्तोवाके बारेमें कहना शुरू किया जो किलेमें बन्द थी, और जो मैरीटीकी कृपासे छोड़ी गयी थी। नेख्लीडूने मैरीटीको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और यह कहने ही जा रहा था कि यह कितने जुल्मकी बात है कि यह औरत और इसका सारा कुटुम्ब केवल इसलिए कष्टमें रहा कि किसीने उनके बारेमें कुछ कहा सुना नहीं।" लेकिन मैरीटीने बात काट दी। वह अपनी घृणा भी प्रकट करने लगी।

"मुझसे आप क्या कहते हैं ?" उसने कहा। "जब मेरे पतिने मुझे यह बताया कि यह स्त्री छोड़ी जा सकती थी तो यह बात मेरे मनमें आयी कि अगर वह निरपराध थी तो जेलमें रखी ही क्यों गयी ?" जो बात नेख्लीडू कहनेवाला ही था उसीको इसने बार बार कहना शुरू किया। "कितनी भयंकर बात है, कितने जुल्मकी बात है।"

काउन्टेस कैथरीन आइवनोव्नाने देखा कि मैरीटी उसके भानजेको

आकर्षित करनेकी कोशिश कर रही है। इस खयालसे वह बहुत प्रसन्न हुई।

ये लोग अधिकारके अन्याय, अभागोंकी यातना, जनताकी गरीबी, इत्यादि बातें करते रहे, लेकिन वास्तवमें बातचीतमें इन्होंने शब्द चाहे जो निकाले हों, उनकी आँखें एक दूसरेको एकटक देख रही थीं। और बराबर पूछ रही थीं कि "क्या तुम मुझे प्यार कर सकते हो?" और उनको उत्तर मिलता "हाँ"। और कामवासना आशातीत और अत्यन्त मनोहर रूप धारण करके एक दूसरेको अपनी तरफ खींच रही थी।

जब मैरीटी चलने लगी, उसने नेख्लीडूसे कहा कि मैं हर तरहसे तुम्हारी सेवाके लिए तैयार हूँ। उसने उसे दूसरे दिन थियेटरमें आनेके लिए निमंत्रित किया और कहा—"आना जरूर, थोड़ी ही देरके लिए सही; क्योंकि मुझे एक बड़ी महत्त्वपूर्ण बात कहनी है।"

"आइयेगा जरूर, न जाने फिर आपसे कब मुलाकात हो।" मैरीटीने लम्बी साँस लेकर कहा और उसने सावधानीसे अपने रत्नाभूषित हाथोंपर दस्ताने चढ़ा लिये। "हाँ, तो आओगे न?"

नेख्लीडूने वादा कर लिया।

उस रातको जब नेख्लीडू अपने कमरेमें अकेला था और बत्ती बुझाकर लेटा, उसे नींद न आयी। वह मस्लोवाका, सिनेटके फैसलेका, मस्लोवाके साथ साथ जानेके अपने निश्चयका और अपनी जमींदारीके परित्यागका चिंतन करता तो उसी समय एकाएक मैरीटीका चेहरा, उसकी लम्बी साँस, और कटाक्ष उसकी आँखोंके सामने आ जाते। वह देखता कि मैरीटी कह रही है कि न जाने तुमसे कब मुलाकात हो। मैरीटीकी मुस्कराहट उसे इतनी स्पष्ट दिखाई देती कि वह भी मुस्करा उठता "क्या यह उचित होगा कि मैं साइबेरिया चला जाऊँ? क्या अपनी संपत्तिका परित्याग करके मैंने मुनासिब काम किया है?" नेख्लीडूने अपने दिलसे पूछा।

पीटर्सबर्गकी इस रातमें, जब कि पर्देके नीचेसे खिड़कीमें रोशनी

आ रही थी, इन प्रश्नोंका उत्तर बिल्कुल अनिश्चित मिला। सब बातें गड़बड़ मालूम होती थीं। उसे अपनी पूर्व मनोदशा याद आयी, पहलेका अपना विचारक्रम याद आया परन्तु उनमें न तो पहलेकी-सी शक्ति थी और न उतनी सजीवता।

"और मान लो कि इन विचारोंको संगठित करके अपने सामने लानेके बाद मैं उनके अनुसार अपना जीवन न व्यतीत कर सकूँ—और मान लो कि सही मार्गपर चलनेके लिए मुझे भविष्यमें पश्चात्ताप करना पड़े तो?" नेख्लीडूने अपने मनसे पूछा। इन प्रश्नोंका उत्तर न दे सकने-पर उसके दिलमें ऐसी यातना और निराशा पैदा हुई जैसी कभी नहीं हुई थी और वह गहरी नींदमें सो गया। ऐसी गहरी नींद उसे उस रातको आया करती थी जब वह जुएमें कोई बड़ी रकम हार जाता था।

ग्यारहवाँ अध्याय

नेख्लीडू जब दूसरे दिन प्रातःकाल उठा तो उसे ऐसा मालूम होता था मानो कल उसने कोई पाप किया हो। वह सोचने लगा, मुझे याद नहीं पड़ता कि मैंने कोई अनुचित काम किया है। उससे कोई पाप हुआ भी नहीं था लेकिन बुरे विचार अवश्य उसके मनमें आये थे। उसने यह सोचा था कि कटूशाके साथ विवाह करने और जमींदारीके परित्याग करनेका वर्तमान प्रस्ताव अप्राप्य स्वप्न है, सामर्थ्यके बाहर है, कृत्रिम और अस्वाभाविक है। इसलिए मुझे अपने उसी जीवनपर स्थिर रहना चाहिये जिसपर चलता आया हूँ।

नेख्लीडूने कोई पाप नहीं किया था, लेकिन पापसे अधिक बुरी बात की थी! उसने अपने मनमें पापकी भावना पैदा की थी जिससे पाप-कर्म उत्पन्न होते हैं।

संभव है कि पाप कर्म दुहराया न जाय, उसका प्रायश्चित्त भी हो सकता है, लेकिन पाप-भावनासे समस्त पाप-कर्मोंका उदय होता है।

एक पाप करनेसे दूसरे पापके लिए रास्ता साफ हो जाता है। लेकिन पाप-भावना आदमीको विवश करके उस रास्तेपर घसीटती रहती है।

नेख्लीडूने जब अपने मनमें कलके विचारोंको फिर दुहराया तो उसे आश्चर्य हुआ कि मैंने उनपर एक क्षणके लिए भी क्यों विश्वास किया। मैंने जिसका निश्चय किया था वह कितना ही नया और कठिन मार्ग क्यों न हो, लेकिन मेरे जीवनके लिए एकमात्र वही मार्ग था। अपने पूर्व जीवनपर वापस जाना उसके लिए कितना ही सरल और स्वाभाविक क्यों न हो, उस मार्गको वह निश्चित रूपसे मृत्युका मार्ग समझता था। कलका प्रलोभन उसके लिए उसी प्रकारका था जैसी वह भावना होती

है जब कोई गहरी नींदसे उठता है और नींद न लगनेपर भी थोड़ी देर आरामसे पड़ा रहना चाहता है, यद्यपि वह जानता है कि उठनेका समय आ गया जो उसके लिए महत्त्वपूर्ण और आनन्ददायक कर्तव्य है तथा कर्तव्यमें लग जाना चाहिये।

उस दिन, जो नेख्लीडूके पीटर्सबर्गमें ठहरनेका अन्तिम दिन था, वह सुबह शुस्तोवासे मिलने वैसीलीव्सकी आस्ट्रो गया।

शुस्तोवा दूसरी मंजिलपर रहती थी। उसे पिछवाड़ेका रास्ता बताया गया, इसलिए पिछवाड़ेके जीनेसे होता हुआ नेख्लीडू मकानमें घुसा और रसोईघरमें पहुँचा जिसमें खानेकी जोरदार खुशबू आ रही थी। एक प्रौढ़ा आस्तीनें चढ़ाये, एप्रन बाँधे, ऐनक लगाये चूल्हेके सामने खड़ी हुई, गरम कड़ाहीमें कुछ चला रही थी।

"तुम किससे मिलना चाहते हो?" इस औरतने सख्तीसे पूछा और अपनी ऐनकके ऊपरसे इसकी ओर देखा।

नेख्लीडूको अपना नाम बतानेके लिए मौका भी न मिल पाया था कि इस औरतके चेहरेपर हक्काबक्काहट और आनन्दके चिह्न प्रकट हो गये।

"अच्छा, राजकुमार हैं!" उसने जोरसे कहा और अपना हाथ अपने एप्रनमें पोंछ डाला। "लेकिन आप पिछवाड़ेके रास्तेसे क्यों आये, हम लोगोंके संरक्षक? मैं उसकी माँ हूँ। मेरी नन्ही-सी लड़कीको लोगोंने करीब करीब मार डाला था, लेकिन आपने बचा लिया।" उसने कहा और नेख्लीडूका हाथ पकड़कर चूमना चाहा।

"मैं कल आपसे मिलने गयी थी, मेरी बहनने कहा था कि मैं आपसे मिल लूँ। वह यहीं है। इस रास्तेसे आइये।" शुस्तोवाकी माँने कहा, और अपने बाल सँभालते हुए और सरकी हुई साड़ीको खींचते हुए वह नेख्लीडूको एक तंग दर्वाजे और अँधेरे रास्तेसे ले गयी। "मेरी बहनका नाम कार्नीलोवा है। आपने उसका नाम तो सुना होगा?" उसने बहुत धीरेसे कहा और एक बन्द दर्वाजेके सामने रुक गयी। "यह भी एक राजनीतिक मामलेमें फँस गयी। बड़ी होशियार है।"

शुस्तोवाकी माँने दर्वाजा खोला। वह नेख्लीडूको एक छोटे-से कमरेमें ले गयी जिसमें गद्दीदार कुर्सीपर मेज लगाये हुए एक मोटी-सी छोटे कदकी लड़की, जिसके बाल सुन्दर थे और पीले गोल चेहरेके ऊपर अपनी माँकी तरह घूमे हुए पड़े थे, एक सूती धारीदार सलूका पहने बैठी थी।

इसीके बराबर आराम-कुर्सीपर एक नौजवान आदमी रूसी कामदार कमीज पहने इस तरह आगे झुका हुआ बैठा था कि करीब करीब मुड़-सा गया था। उसकी दाढ़ी-मूँछें हल्की सी काली थीं। ये लोग बातचीत में इतने मग्न थे कि जब नेख्लीडू कमरेमें पहुँचा तब इन्होंने उसे देखा।

"लीडिया! राजकुमार नेख्लीडू आये हैं, वही जिन्होंने......" माँ-ने कहा।

पीली लड़की उचककर खड़ी हो गयी। उसने घबराहटके साथ अपने बाल कानके पीछे किये और वह नवागन्तुककी तरफ घबरायी हुई दृष्टिसे बड़ी, सफेद आँखों द्वारा एकटक देखने लगी।

"आप ही वह भयंकर महिला हैं" नेख्लीडूने मुस्कराते हुए पूछा "जिनके लिए वीरा दुखोवाने मुझसे कहा था?"

"जी हाँ, मैं ही हूँ।" लीडिया शुस्तोवा बोली और बच्चोंकी तरह मुस्करायी जिससे उसकी सुन्दर दाँतोंकी पंक्ति झलक गयी। "मेरी मौसी आपसे मिलनेके लिए बड़ी उत्सुक थीं।" उसने कहा और अपनी चाचीको मधुर मुलायम आवाजमें दर्वाजेसे पुकारा।

"आपकी गिरफ्तारीसे वीरा दुखोवाको बड़ा दुःख था।" नेख्लीडूने कहा।

"यहाँ बैठ जाइये।" लीडियाने कहा और एक टूटी-फूटी आराम-कुर्सीकी तरफ इशारा किया जिसपरसे एक नौजवान आदमी अभी उठ खड़ा हुआ था। "ये मेरे चचेरे भाई हैं। इनका नाम जखारफ है।" उसने यह देखकर कि नेख्लीडू उस नौजवान आदमीको देख रहे हैं, कहा।

नौजवान आदमीने लीडियाके समान ही सहानुभूतिपूर्ण मुस्कराहटके

साथ मेहमानको सलाम किया। जब नेख्लीडू कुर्सीपर बैठ गया तो वह अपने लिए दूसरी कुर्सी उठा लाया और नेख्लीडूके पास बैठ गया। एक सुन्दर बालोंवाला स्कूलका लड़का, जो लगभग सोलह वर्षका था, कमरेमें आया और खिड़कीके ऊपर चुपचाप बैठ गया।

"बीरा दुखोवा मेरी मौसीकी बड़ी मित्र है। लेकिन मेरा उसका परिचय नहीं।" शुस्तोवाने कहा।

इतनेमें एक अत्यन्त मधुर चेहरेवाली स्त्री, सफेद सलूका पहने, चमड़ेकी पेटी बाँधे दूसरे कमरेसे आयी।

"आपका मिजाज कैसा है? पधारकर आपने बड़ी कृपा की।" उसने कहा और लीडियाके पास गद्दीदार कुर्सीपर बैठ गयी।

'यह बताइये, वीरा कैसी है? आप तो उससे मिले होंगे। अपनी आपत्तियोंका वह किस प्रकार मुकाबिला कर रही है?"

"वह शिकायत नहीं करती" नेख्लीडूने कहा "और अपनेको बड़े मजेमें बताती है।"

"हाँ, यह बात तो वीरा ऐसी स्त्रियोंके मुखसे निकल सकती है। मैं उसे जानती हूँ।" मौसीने मुस्कराते और सर हिलाते हुए कहा। "उसको समझनेमें देर लगती है। बड़े उच्च चरित्रकी स्त्री है। दूसरोंका उपकार और अपने लिए कुछ नहीं; यही उसका सिद्धान्त है।"

"जी हाँ, उसने अपने लिए कुछ भी नहीं माँगा। वह तो केवल आपकी भाञ्जीके बारेमें ही चिन्तित थी। उसे वास्तवमें इस बातकी बड़ी परेशानी थी, जैसा कि वह कहती भी थी, कि आपकी भाञ्जी नाहक गिरफ्तार कर ली गयी थी।"

"जी हाँ, यह सच है।" मौसीने कहा "बड़े जुल्मकी बात है। वास्तवमें इसे जो कुछ कष्ट सहना पड़ा वह मेरी वजहसे।"

"नहीं मौसी, नहीं, यह बात नहीं है। चाहे तुम होतीं या न होतीं, कागज तो मैं ले ही लेती।"

"मैं तुमसे ज्यादा जानती हूँ। देखिये" उसने नेख्लीडूसे कहा

"बात यह हुई कि एक आदमीने मुझे कुछ कागज कुछ समयके लिए अपने पास रखनेको दिये और मेरा अपना कोई मकान नहीं था, इसलिए मैं उन कागजोंको इसके पास ले आयी। उसी रातको पुलिसने इसके कमरेकी तलाशी ली, कागज ले लिये, वे लोग इसे पकड़ ले गये और अभीतक इसे बंद रखा। इससे पूछते रहे कि बता, ये कागज तुझे कहाँ मिले।"

"लेकिन मैंने उन्हें कुछ नहीं बताया।" लीडियाने फुर्तीसे कहा और बेताबीसे अपने बालोंको फिर सभाँलने लगी यद्यपि वे सँभले ही हुए थे।

"मैं कब कहती हूँ कि तुमने बता दिया?" मौसीने उत्तर दिया।

"उन्होंने मितिनको मेरी वजहसे गिरफ्तार नहीं किया।" लीडियाने कहा। वह झेंपती हुई अपने चारों तरफ बेताबीसे देखने लगी।

"क्यों न कहूँ? मैं तो सब बता देना चाहती हूँ।" लीडियाने कहा जो अब न तो मुस्करा रही थी और न बालोंको ही सँवार रही थी बल्कि बालोंको उँगलीसे लपेट रही थी। उसका चेहरा लाल होता जाता था।

"कलकी बात न भूलो, जब तुमने यही बात कहना शुरू किया था तो क्या हुआ?"

"नहीं नहीं, मुझे छोड़ दीजिये अम्माँ......मैंने कुछ नहीं कहा। मैं बिल्कुल चुप रही। जब उन लोगोंने मितिन और मौसीके बारेमे मुझसे जिरह की तो मैं चुप ही रही। यही कहा कि मैं किसी भी प्रश्नका उत्तर न दूँगी।"

"इसके बाद यह...पेट्रफ..."

"पेट्रफ जासूस है। कान्स्टेबिलीका काम करता है और बड़ा बदमाश है।" मौसीने कहा और नेख्लीडूको अपनी भाञ्जीके शब्द समझाने लगी।

"बात यह हुई" "लीडियाने जल्दी-जल्दी और उत्तेजनाके साथ

कहना शुरू किया "पेट्रफ मुझे समझाने लगा कि 'अगर तुम मुझको कोई भी बात बताओगी तो उससे किसीका कुछ भी नुकसान न होगा बल्कि इसके विपरीत सच्चा हाल बतला देनेसे यह लाभ होगा कि कमसे कम हम उन निरपराध लोगोंको तो छोड़ ही सकेंगे जिन्हें हम नाहक सता रहे हैं।' 'इसका भी उत्तर मैंने वही दिया 'मैं नहीं बता सकती।' 'अच्छी बात है, न बताओ।' इसके बाद पेट्रफने मुझसे कहा 'लेकिन जो मैं कह रहा हूँ उससे इन्कार न करना।' हाँ, इस मामलेमें मितिन तो जरूर थे'।"

"अब इसकी बात खतम करो।" मौसीने कहा।

"नहीं, नहीं मौसी! मुझे कहने दो..." लीडियाने अपने बाल खींचते हुए चारों तरफ देखना शुरू किया और बोली "देखिये तो, दूसरे दिन हमारे साथियोंने दीवालपर खटखटाकर मुझे यह बताया कि मितिन गिरफ्तार हो गया। मेरा यह ख्याल हुआ कि शायद मैंने उसके साथ विश्वासघात किया और इसकी वजहसे मुझे बड़ी यातना रही—इतनी यातना कि मैं करीब करीब पागल हो गयी।"

"और बादमें यह पता चला कि इसकी गिरफ्तारी तुम्हारी वजहसे नहीं हुई थी?"

"लेकिन मैं जानती तो नहीं थी, इसलिए जब मैंने यह सोचा कि शायद मैंने ही उसके साथ विश्वासघात किया तो एक दीवारसे दूसरी दीवार तक टहलना शुरू किया और बार-बार यही मनन करती रही कि देखो मैंने विश्वासघात किया। मैं सर ढककर लेट जाती और मेरे कानमें यह आवाज सुनाई देती 'धोखा दिया, मितिनके साथ विश्वासघात किया।' मैं जानती थी कि यह सब दिमागका फितूर है लेकिन फिर भी आवाज तो सुनाई देती ही थी। मैं सो जाना चाहती लेकिन नींद न आती। मैं इसपर विचार ही न करना चाहती लेकिन विचार जबरन मेरे मनमें आ जाते थे। बड़ी भयंकर स्थिति थी।" लीडिया इन सब बातोंके कहनेमें अधिकाधिक उत्तेजित होती गयी। वह कभी अपने बालोंको

उँगलीके चारों ओर लपेटती, कभी खोलती और बराबर चारों ओर देखती जाती थी।

' प्यारी लीडिया, शान्त हो !" माँने उसके कन्धेपर हाथ रखते हुए कहा।

लेकिन शुरतोबा न रुकी।

"सबसे भयंकर बात तो यह हुई—" उसने कहना शुरू किया, लेकिन अपनी बात खतम नहीं कर पायी और कूदकर कमरेसे बाहर चिल्लाती हुई चली गयी।

उसकी माँ उसके पीछे पीछे गयी।

"जो लोग इस तरह सताते हैं उन बदमाशोंको फाँसी दे देनी चाहिये।" स्कूलके विद्यार्थीने कहा, जो खिड़कीपर बैठा था।

"तुमने क्या कहा ?" माँने पूछा।

"मैंने कुछ नहीं कहा, ऐसे ही।" स्कूलके विद्यार्थीने उत्तर दिया और मेजपर पड़ी हुई सिगरेटको उठाकर पीने लगा।

बारहवाँ अध्याय

नेख्लीडू मास्को वापस आते ही जेलके अस्पतालमें मस्लोवाको यह दुःखद खबर सुनाने गया कि सिनेटने अदालतका फैसला बहाल रखा और तुम्हें सवेरे जानेकी तैयारी करनी चाहिये। उसे उस अर्जीमें अधिक विश्वास नहीं था जो सम्राट्को दी जानेवाली थी, जिसका मसविदा वकीलने बनाया था और जिसे नेख्लीडू अपने साथ मस्लोवासे हस्ताक्षर करानेके लिए लाया था। आश्चर्यकी बात तो यह थी कि अब उसे सफल होनेकी इच्छा भी न थी। वह साइबेरिया जाने, निर्वासितों और कैदियोंमें रहनेके विचारका आदी हो चुका था और उसे इस चित्रको सामने लानेमें कठिनाई होती थी कि अगर मस्लोवा छूट गयी तो यहाँ उसका जीवन कैसा रूप धारण करेगा।

"ठीक है, आज रूसमें भले आदमीके लिए अगर कोई उचित स्थान है तो वह जेल ही है।" नेख्लीडूने मनमें कहा और जिस समय वह जेलके दर्वाजे तक पहुँचा और उसकी दीवारोंके अन्दर गया, उसकी ऐसी धारणा हुई कि यह सिद्धान्त उसपर भी व्यक्तिगत रूपसे लागू होगा।

अस्पतालके दर्बानने नेख्लीडूको पहचान लिया और उसे तुरन्त बता दिया कि मस्लोवा अब यहाँ नहीं है।

"फिर कहाँ है?"

"जेलको फिर वापस गयी।"

"यहाँसे वह क्यों हटा दी गयी?" नेख्लीडूने पूछा।

"हुजूर, यह क्या पूछते हैं? ऐसे लोगोंकी ऐसी ही बातें होती-हैं।" दर्बानने तिरस्कारपूर्ण मुस्कराहटसे कहा—"छोटे डाक्टरके साथ वह सम्बन्ध जोड़ना चाहती थी इसलिए बड़े डाक्टरने उसे यहाँसे निकाल दिया।"

नेख्लीडूको यह जरा भी पता न था कि मस्लोवा या उसकी मनोदशा उसके लिए क्या अर्थ रखती है।

इस खबरको सुनकर नेख्लीड उतना ही दुखी हुआ जितना कोई बड़ी अनहोनी दुर्घटनाको सुनकर होता है। उसको अत्यन्त क्लेश हुआ। उसके हृदयमें पहले-पहल लज्जाकी भावना उत्पन्न हुई। अभीतक उसके हृदयमें आनन्दजनक विचार थे कि मस्लोवाकी आत्मा उन्नत हो रही है, लेकिन यह खबर सुनकर उसे अपनी मूर्खतापर हँसी आने लगी। उसे यह ख्याल हुआ कि मस्लोवाकी सारी बातें—नेख्लीडूके त्यागको स्वीकार न करना, उसके आँसू, उसकी जली-कटी बातचीत—एक पतित स्त्रीकी तरकीबें थीं, जो मुझसे पूरा पूरा फायदा उठाना चाहती थी। उसे यह भी याद आया कि पिछली मुलाकातमें मस्लोवाने कुछ जिद भी की थी। ये सारी बातें इसके दिलमें उस समय अपने आप झलक गयीं जब उसने अपने सरपर टोपी रखी और अस्पतालसे चल दिया।

नेख्लीडू दिलमें सोचने लगा—"मैं अब क्या करूँ? क्या उसके प्रति मेरी जिम्मेदारी इस समय भी है? मस्लोवाके इस कामने क्या मुझे बिल्कुल आजाद नहीं कर दिया?" लेकिन जब उसने इन प्रश्नोंको अपने दिलसे पूछा तो उसे तुरन्त ही उत्तर मिल गया कि यदि मैं इस स्थितिमें अपनेको स्वतंत्र समझता हूँ और मस्लोवाको त्याग देता हूँ तो मैं मस्लोवाको वह दंड न दूँगा जो देना चाहता था बल्कि अपनेको ही दंड दूँगा। इससे वह भयभीत हो गया।

"नहीं, जो हो गया हो गया—यह तो और भी दृढ़ करेगा मेरे निश्चयको। उसकी मनोदशासे जो कुछ इस समय उत्पन्न हो रहा है, होने दो। अगर उसकी मनोदशा उसे छोटे डाक्टरसे सम्बन्ध जोड़नेके लिए प्रेरित कर रही है तो करे। उसकी बात वह जाने। यह उसकी जिम्मेदारी है। मुझे तो वही करना चाहिये, जो मेरा अन्तःकरण कहता है। उसके साथ विवाह करनेका मेरा निश्चय—चाहे खानापूरीके ख्यालसे

ही सही—तथा उसके साथ जहाँ जहाँ वह जाय जानेका निश्चय अब बदल नहीं सकता।" नेख्लीडूने ये बातें अपने दिलसे कटुतापूर्ण हठसे कहीं, वह अस्पतालसे दृढ़ कदम बढ़ाता हुआ जेलखानेके बड़े फाटककी तरफ चल दिया।

उस समय फाटकपर जो वार्डर तैनात था उससे नेख्लीडूने कहा कि इन्स्पेक्टरको इत्तिला दे दीजिये कि मैं मस्लोवासे मिलना चाहता हूँ। वार्डर नेख्लीडूको जानता था। परिचित होनेके नाते उसने जेलकी महत्त्वपूर्ण खबर बतायी कि पुराना इन्स्पेक्टर अलग कर दिया गया है, उसकी जगहपर एक नया इन्स्पेक्टर नियुक्त किया गया है जो बहुत ही सख्त है।

"आजकल बहुत सख्ती हो रही है, इतनी कि तबियत परेशान है।" जेलरने कहा "लेकिन वह है यहीं। मैं उससे अभी कहे देता हूँ।"

नया इन्स्पेक्टर जेलमें ही था। वह फौरन नेख्लीडूसे मिलने आया। यह लम्बे कदका टेढ़े मिजाजका आदमी था, उदास, और इसके गालोंकी हड्डियाँ उभरी हुई थीं। वह धीरे धीरे चलता-फिरता था।

"मुलाकातें सिर्फ मिलनेके कमरेमें और निश्चित दिनको हो सकती हैं।" उसने नेख्लीडूको बिना देखे ही कहा।

"लेकिन मैं एक अर्जी लाया हूँ जो सम्राट्के यहाँ भेजी जायेगी। मैं इसपर हस्ताक्षर करा लेना चाहता हूँ।"

"अर्जी मुझे दे दीजिये।"

"लेकिन मैं कैदीसे भी मिलना चाहता हूँ। पहले मुझे सदा आज्ञा मिल जाती थी।"

"जी हाँ, पहले इजाजत मिल जाती थी।" इन्स्पेक्टरने उत्तर दिया और नेख्लीडूकी तरफ कनखियोंसे देखा।

"मेरे पास गवर्नरका हुक्म है।" नेख्लीडूने दृढ़तासे कहा और अपनी पाकेट-बुक निकाली।

"माफ कीजियेगा।" इन्स्पेक्टरने कहा, और अभीतक नेख्लीडूकी

तरफ नहीं देखा । अपनी लम्बी सूखी सफेद उँगलियोंसे, जिनमेंसे एकमें वह सोनेकी अँगूठी पहने था, उसने नेख्लीडूसे कागज ले लिया और उसे धीरे-धीरे पढ़ा । "दफ्तरमें पधारिये ।"

आज दफ्तर बिल्कुल खाली था । इन्स्पेक्टर मेजके पास जाकर कुर्सीपर बैठ गया और मेजपर पड़े हुए कागजोंको इधर-उधर रखने लगा । वह मुलाकातके अवसरपर मौजूद रहना चाहता था ।

जब नेख्लीडूने पूछा कि राजनीतिक कैदी दुखोवासे मिलनेकी इजाजत मिलेगी या नहीं तो इन्स्पेक्टरने तुरन्त उत्तर दे दिया—"राजनीतिक कैदियोंसे मिलनेकी अनुमति नहीं है ।" उसने कहा और फिर अपने कागजोंमें लग गया ।

दुखोवाके लिए एक खत अपनी जेबमें रखे हुए नेख्लीडूको ऐसा मालूम हुआ मानो वह एक जुर्म करनेकी कोशिश कर रहा था और उसकी चालबाजीका पता चल गया और रोक थाम कर ली गयी ।

कमरेमें मस्लोवाके आनेपर इन्स्पेक्टरने सर उठाया और मस्लोवा या नेख्लीडूको देखे बिना ही बोला "बातें कीजिये ।" वह फिर अपने कागजोंमें लग गया ।

मस्लोवा आज भी सफेद सलूका पेटीकोट पहने और सरमें रूमाल बाँधे हुए थी । जब वह नेख्लीडूके पास आयी और उसकी कठोर तथा शुष्क दृष्टि देखी तो झेंपकर लाल हो गयी । अपने सलूकेकी गोटको हाथोंसे मोड़ते हुए उसने निगाह नीची कर ली ।

मस्लोवाकी हकबकाहटसे नेख्लीडूके दिलमें दर्बानकी बात और भी जम गयी ।

नेख्लीडूका विचार था कि मस्लोवाके साथ वही व्यवहार करे जैसा वह पहले करता आया है लेकिन वह उसे इतनी घृणित लगी कि नेख्लीडू उससे हाथ मिलानेकी हिम्मत न कर सका ।

"मैं बुरी खबर लाया हू ।" नेख्लीडूने कहा और न तो उसकी तरफ देखा, न उससे हाथ मिलाया । "सिनेटने अपील नामंजूर कर दी ।"

"मैं जानती थी कि नामंजूर हो जायेगी।" मस्लोवाने विचित्र स्वर से कहा मानो उसकी साँस रुक रही हो।

पहले नेख्लीडू यह पूछता कि तुमने यह क्यों कहा। 'मैं जानती थी कि नामंजूर हो जायेगी' लेकिन आज नेख्लीडूने केवल उसकी तरफ देखा। उसकी आँखोंमें आँसू डबडबा रहे थे।

लेकिन इससे नेख्लीडूका दिल कोमल नहीं पड़ा, बल्कि उसका गुस्सा और भी बढ़ गया।

इन्स्पेक्टर कुर्सीपरसे उठा और कमरेमें इधरसे उधर टहलने लगा।

यद्यपि नेख्लीडूके दिलमें इस समय मस्लोवाके प्रति घृणा थी, फिर भी उसने सिनेटके फैसलेके ऊपर दुःख प्रकट करना आवश्यक समझा।

"तुम्हें निराश नहीं होना चाहिये।" उसने कहा "सम्राट्के पास जो अर्जी जा रही है उसमें सफलता मिलनेकी मुझे आशा है—"

"मैं तो उसका विचार ही नहीं कर रही हूँ।" मस्लोवाने कहा और अपनी डबडबाई हुई तिरछी आँखोंसे, दयनीय दृष्टिसे, नेख्लीडूको देखा।

"फिर क्या सोच रही हो?"

"आप अस्पताल गये होंगे और वहाँ सम्भवतः लोगोंने आपसे मेरे बारेमें यह बताया होगा कि—।"

"उससे क्या होता है! तुम जानो, तुम्हारा काम जाने!" नेख्लीडू ने शुष्क ढंगसे कहा। उसके माथेपर बल पड़ गये।

दलित अभिमानकी निर्दयतापूर्ण भावना, जो ठंढी हो गयी थी, नयी शक्तिके साथ अस्पतालका नाम सुनते ही उभर उठी।

"मैं हैसियतदार आदमी, जिसके साथ ऊँचेसे ऊँचे खानदानकी लडकियाँ शादी करनेमें इज्जत समझती हैं, इस औरतके साथ शादी करनेके लिए तैयार था और इसने प्रतीक्षा भी नहीं की, छोटे डाक्टरसे ताल्लुक पैदा करना शुरू कर दिया।" नेख्लीडूने अपने मनमें कहा और नफरतसे मस्लोवाकी तरफ देखा।

"खैर, इस अर्जीपर हस्ताक्षर कर दो। नेख्लीडूने कहा और अपनी जेबसे एक बड़ा लिफाफा निकाला। उसने अर्जी मेजपर रख दी। मस्लोवाने रूमालके कोनेसे अपनी आँखोंके आँसू पोंछकर नेख्लीडूसे पूछा "कहाँ क्या लिख दूँ ?"

उसने जगह बता दी। मस्लोवा बैठ गयी। उसने अपने बायें हाथसे दाहिने हाथकी आस्तीनके कफको दुरुस्त किया। नेख्लीडू मस्लोवाके पीछेकी तरफ खड़ा था और चुप-चाप उसकी पीठको देख रहा था जो आवेश-निग्रहके कारण थरथरा रही थी। नेख्लीडूके हृदयमें अच्छी और बुरी भावनाओंका संग्राम छिड़ गया। एक ओर क्षत अभिमान था और दूसरी ओर इस स्त्रीके प्रति, जो व्यथित थी, दयाकी भावना थी। दूसरी भावनाकी विजय हुई।

नेख्लीडूको यह याद नहीं पड़ा कि कौन-सी भावना पहले पैदा हुई। दिलमें पहले मस्लोवाके प्रति दया पैदा हुई या पहले उसे अपने पाप याद आये—अपने वे घृणित काम जिस प्रकारके कामके लिए आज वह मस्लोवाका तिरस्कार कर रहा था। नेख्लीडूके दिलमें दया भी पैदा हुई और वह अपनेको पापी भी अनुभव करने लगा।

अर्जीपर हस्ताक्षर करनेके बाद और अपनी उँगलियोंको, जिनमें रोशनाई लग गयी थी, अपने पेटीकोटसे पोंछकर मस्लोवा उठकर खड़ी हो गयी और नेख्लीडूको देखने लगी।

"चाहे जो हो, इस अर्जीका नतीजा चाहे जो निकले, मेरा निश्चय पक्का है।" नेख्लीडूने कहा। बात यह है कि नेख्लीडूने मस्लोवाको क्षमा कर दिया था। इसलिए उसके हृदयमें मस्लोवाके प्रति दया और प्रेम विशेष रूपसे बढ़ गया था। अब उसने मस्लोवाको कुछ ढाढ़स बँधाना चाहा—"मैंने जो कुछ कहा है वह करूँगा, तुम्हें जहाँ कहीं ले जायँ मैं जाऊँगा।"

"क्या फायदा ?" मस्लोवाने जल्दीसे बात काटकर कहा, यद्यपि उसका चेहरा दमक उठा था।

"बेहतर यह है कि मुझे यह बताओ कि तुम्हें रास्तेमें किस किस चीजकी जरूरत पड़ेगी।"

"मुझे तो कोई विशेष वस्तु नहीं याद आती। धन्यवाद!"

इन्स्पेक्टर इतनेमें इन लोगोंके पास आया। उसके कुछ कहनेसे पहले ही नेख्लीडूने मस्लोवासे विदा ली। दिलमें सारे संसारके प्रति आनंद और शान्तिकी भावनासे परिपूर्ण होकर वह चल दिया। मस्लोवाका कोई भी काम उसके प्रति नेख्लीडूके प्रेममें कोई परिवर्तन पैदा नहीं कर सकता। इस निश्चयने उसके हृदयको आनन्दसे भर दिया और उसे इतना ऊँचा उठा दिया जितना वह कभी नहीं उठा था। 'मस्लोवाको छोटे डाक्टरसे संबंध पैदा करने दो। यह तो उसका काम है। मैं मस्लोवाके साथ कुछ स्वार्थवश प्रेम नहीं करता; मैं तो उसीके लिए और ईश्वरके लिए उससे प्रेम करता हूँ।'

जिस झगड़ेके लिए मस्लोवा अस्पतालसे निकाली गयी और जिसके बारेमें नेख्लीडूको यह विश्वास हो गया था कि मस्लोवाने वास्तवमें अपराध किया है, निम्नलिखित था—

मस्लोवाको बड़ी नर्सने अस्पतालसे, जो कि दालानके अंतमें था, चाय लेने भेजा। वहाँ छोटे डाक्टर साहब अकेले बैठे थे। इनका कद लंबा था और इनके चेहरेपर मुँहासे थे। ये बहुत दिनोंसे मस्लोवाको छेड़-छेड़कर परेशान कर रहे थे। इनसे बचनेकी कोशिशमें मस्लोवाने इनको इतना जोरका धक्का दिया कि इनका सर अलमारीसे टकरा गया जिसमेंसे दो बोतलें गिरीं और टूट गयीं।

इसी समय उधरसे बड़े डाक्टर जा रहे थे। उन्होंने शीशियोंके टूटनेकी आवाज सुनी और देखा कि मस्लोवा दौड़ती हुई बाहर निकली। उसका चेहरा बहुत तमतमाया हुआ था।

बड़े डाक्टरने गुस्सेमें पुकारकर कहा "ऐं! ऐं! भली मानस, अगर तुमने यहाँ भी शुरू किया तो मैं तुम्हें रफूचक्कर कर दूँगा......क्या बात

है ?" उसने छोटे डाक्टरसे पूछा और अपनी ऐनकके ऊपरसे कठोरताके साथ उसकी ओर देखा।

छोटा डाक्टर मुस्कराया और बताने लगा कि "मेरी कोई गलती नहीं।" बड़े डाक्टरने उसकी कोई बात नहीं सुनी। सर उठाकर उसने ऐनकसे देखा और वार्डमें चला गया और उसी दिन इन्स्पेक्टरसे कह दिया—"मस्लोवाकी जगहपर कोई दूसरी सहायक नर्स भेजी जाय जो अधिक अच्छी हो।"

यही थी मस्लोवाकी चुहलबाजी। छोटे डाक्टरके साथ प्रेमलीलाके मामलेमें निकाले जानेकी वजहसे मस्लोवाको बहुत क्लेश था, क्योंकि उसे बहुत दिनोंसे पुरुषोंके साथ संसर्ग घृणित मालूम होता था। नेख्लीडूसे मिलनेके बादसे तो यह और भी घृणित हो गया, जब वह सोचती कि मेरे पुराने और नये जीवनसे अंदाजा लगाकर हरएक आदमी—मुँहासे-वाला छोटा डाक्टर भी—अपनेको मुझसे छेड़खानी करनेका अधिकारी समझता था और अगर मैं इन्कार करती थी तो लोगोंको ताज्जुब होता था। इससे उसे बहुत क्लेश होता था और अपने ऊपर दया आती थी तथा आँखोंमें आँसू भर जाते थे। जब वह नेख्लीडू से इस दफा मिलने गयी थी तो चाहती थी कि इस निर्मूल अपराधकी सफाई दे जिसको नेख्लीडूने जरूर सुना होगा। लेकिन जब उसने सफाई देनी शुरू की तो देखा कि नेख्लीडू उसकी बातपर विश्वास नहीं कर रहा है और उसकी सफाईसे सन्देह और भी दृढ़ हो जायेगा। इसलिए उसकी आँखोंमें आँसू भर आये थे और वह चुप हो गयी थी।

अभीतक मस्लोवाका यह खयाल था और यही वह अपनेको विश्वास दिलाना चाहती थी कि मैंने नेख्लीडूको अभीतक क्षमा नहीं किया और उससे नफरत करती हूँ। यही बात उसने अपनी दूसरी मुलाकातमें नेख्लीडूसे कही भी थी। लेकिन वास्तवमें मस्लोवाने नेख्लीडूसे फिर प्रेम करना शुरू कर दिया था और इतना प्रेम करती थी कि जो कुछ वह चाहता था, अनजानमें करने लगती थी। उसने शराब पीना छोड़ दिया

था, सिगरेट छोड़ दिया था, चुहलबाजी छोड़ दी थी और अस्पतालमें चली गयी थी; क्योंकि वह जानती थी कि नेख्लीडूको यही पसन्द है। नेख्लीडू जब-जब उससे विवाहका प्रस्ताव करता था, और वह निश्चय-पूर्वक इस प्रस्तावको मंजूर करने और विवाह करनेसे अगर इन्कार करती थी तो उसकी वजह यह थी कि उन अभिमानपूर्ण शब्दोंको जिन्हें वह एक दफा कह चुकी थी, बार-बार कहनेमें उसे आनन्द आता था। इसके अलावा एक और कारण भी था; वह जानती थी कि अगर नेख्लीडूने मेरे साथ शादी कर ली तो नेख्लीडूको बड़ी विपत्तिमें पड़ जाना पड़ेगा इसलिए उसने नेख्लीडूको इस त्यागकी इजाजत कभी न देनेका पक्का निश्चय कर लिया था। फिर भी जब उसे यह विचार आता था कि नेख्लीडू मुझसे नफरत करने लगा है और यह समझता है कि मैं अभीतक वही हूँ जो पहले थी और मेरे अन्दर जो परिवर्तन हो गया है उसे वह नहीं देख रहा है, तो उसे बहुत क्लेश होता था। अपीलके खारिज हो जानेकी खबरसे मस्लोवाको इतनी व्यथा नहीं हुई जितनी इस खयालसे कि नेख्लीडू मुझे 'अस्पतालमें अपराध करनेका दोषी' समझ रहा है।

तेरहवाँ अध्याय

कैदियोंके जिस जत्थेमें मस्लोवा भी जानेवाली थी वह पाँच जुलाईको रवाना होनेवाला था इसलिए नेख्लीडूने भी उसी दिन चलनेकी तैयारी की।

इसके एक दिन पहले नेख्लीडूकी बहन और बहनोई उससे मिलने के लिए मास्को आये।

नेख्लीडूकी बहन नटाली आइवनोव्ना रोगोजिन्स्काया अपने भाई-से दस बरस बड़ी थी। नेख्लीडू एक हद तक इसीके प्रभावमें पला था। जब नेख्लीडू लड़का था, उसकी बहन उसे बहुत चाहती थी और बादको अपनी शादीके पहले, उसकी अपने भाईसे बहुत घनिष्ठता हो गयी थी। दोनों एक दूसरेको अपने बराबर समझते थे, यद्यपि बहन पचीस वर्षकी थी और नेख्लीडू पंद्रह वर्षका। उस समय नटाली नेख्लीडूके मित्र निखोलेंका इर्टीनीवसे, जो अब मर गया, प्रेम करती थी। ये दोनों निखोलेंकासे प्रेम करते थे और उसमें और अपनेमें जो कुछ भलाई थी, और जिसकी वजहसे सारे मनुष्य एक दूसरेसे मिले हुए हैं वह इस प्रेमकी बुनियाद थी।

नेख्लीडूके बहन-बहनोई मास्को अकेले आये थे। अपने दो बच्चों-लड़की और लड़के—को उन्होंने घरपर छोड़ दिया था और यहाँपर बढ़ियासे बढ़िया होटलमें अच्छेसे अच्छे कमरेमें ठहरे थे। नटाली आते ही फौरन अपनी माँके पुराने मकानको गयी। वहाँपर एग्राफिना पेट्रोभ्ना-से उसे यह मालूम हुआ कि भाईने यह मकान छोड़ दिया है और वह बाहर एक कमरा लेकर रह रहा है। नटाली अपनी गाड़ीपर सवार होकर वहाँ पहुँची। गन्दा नौकर अँधेरे दालानमें मिला जिसमें एक चिराग जल रहा था। उसने बताया कि राजकुमार कहीं बाहर गये हैं।

नटालीने नौकरसे कहा कि 'मुझे राजकुमारके कमरे तक ले चलो क्योंकि मैं उनके लिए एक चिट्ठी लिखना चाहती हूँ'। नौकरने उसे उस कमरे तक पहुँचा दिया।

नटालीने मेजपर बैठकर एक चिट्ठी लिखी जिसमें नेख्लीडूको उसी दिन मिलनेके लिए बुलाया और वहाँकी हर एक चीजको आश्चर्यसे देखते और सर हिलाते हुए वह होटल लौट आयी।

× × × ×

जब नेख्लीडू शामको घर वापस आया और अपनी बहनका पत्र देखा तो उससे मिलनेके लिए चल पड़ा। माताकी मृत्युके बाद इन दोनोंमें भेंट नहीं हुई थी। नटाली अकेली थी। उसका पति दूसरे कमरेमें आराम कर रहा था। वह चुस्त काले रेशमी कपड़े पहने हुए थी और सामने एक लाल रंगकी 'बो' लगाये हुए थी। उसके काले बाल नवीनतम फैशनके अनुसार सुसज्जित थे ताकि वह अपने पतिको जवान दिखाई दे, जो उम्रमें इसके बराबर ही था। नटालीकी कोशिश स्पष्ट थी।

भाईको देखकर नटाली एकदम खड़ी हो गयी और इसकी तरफ बढ़ी। इसकी रेशमी पोशाक मरमराने लगी। इन्होंने एक दूसरेको चूमा और मुस्कराते हुए एक दूसरेको देखने लगे।

"तुम तो हृष्टपुष्ट और नौजवान हो गयी हो।" नेख्लीडूने कहा और नटालीके होंठ खुशीसे दब गये।

"और तुम दुबले हो गये हो।"

"तुम्हारे पति कैसे हैं?" नेख्लीडूने पूछा।

"वे आराम कर रहे हैं। उन्हें कल रात नींद नहीं आयी।"

बातें बहुत सी करनी थीं, वह शब्दों द्वारा प्रकट नहीं की गयीं, लेकिन इनकी आकृतिने सब बातें प्रकट कर दीं जो शब्दोंमें नहीं प्रकट हो सकती थीं।

"हाँ मुझे मालूम हुआ था। मैं वहाँ इसलिए चला गया कि यह मकान मेरे लिए बहुत बड़ा था। यहाँ मैं अकेला था और तबियत नहीं

लगती थी। उस मकानकी कोई चीज मुझे नहीं चाहिये इसलिए बेहतर यह है कि सब चीजें—कुर्सी, मेज और दूसरी चीजें—तुम ले जाओ।' !

"हाँ, एग्राफिना पेट्रोभ्नाने मुझसे बताया था, मैं वहाँ गयी थी। इसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद लेकिन—।"

इसी क्षण होटलका खानसामा चाँदीकी चायदानीमें चाय लाया। खानसामाने मेज दुरुस्त करना शुरू किया और ये लोग चुपचाप बैठे रहे। इसके बाद नटालीने मेजके पास जाकर चाय बनाना शुरू किया। इस समय भी नटाली चुपचाप रही और नेख्लीडूने भी कुछ नहीं कहा।

अन्तमें नटाली दृढ़तापूर्वक बोली—"सुनो डिमिट्री, मुझे तुम्हारा सब हाल मालूम है।" और उसने नेख्लीडूकी तरफ देखा।

"इससे क्या होता है? अगर मालूम है तो मुझे बड़ी खुशी है।"

"तुम इस बातकी आशा कैसे रखते हो कि उस जीवनके बाद, जो वह व्यतीत कर चुकी है, तुम उसे सुधार लोगे?" नटालीने पूछा।

नेख्लीडू एक छोटी सी मेजपर बिल्कुल सीधा बैठा था और नटालीकी बात सावधानीसे सुन रहा था। उसकी बात समझने और उचित उत्तर देनेकी कोशिश कर रहा था। इस मनोदशामें उसे मस्लोवाके साथ अपनी पिछली मुलाकातका दृश्य याद आ गया जिससे उसकी आत्मा शान्तिमय आनन्द और अखिल संसारके लिए सद्भावनासे परिपूर्ण हो गयी।

"मैं उसे नहीं बल्कि अपनेको सुधारना चाहता हूँ।" नेख्लीडूने उत्तर दिया।

नटालीने लम्बी साँस ली।

"इस कामके लिए शादीके अलावा भी दूसरे साधन हैं।"

"लेकिन मैं सोचता हूँ कि सबसे उत्तम साधन यही है। इसके अलावा इसकी वजहसे मेरा ऐसे संसारमें प्रवेश होता है जहाँ मैं हितकर हो सकता हूँ।"

"मुझे यह विश्वास नहीं आता कि तुम सुखसे रह सकोगे।" नटालीने कहा।

"मेरा लक्ष्य सुख तो नहीं है न।"

"ठीक है, लेकिन अगर उस स्त्रीके हृदय है तो वह सुखसे रहना तो दूर उसकी इच्छा भी नहीं कर सकती।"

"वह इच्छा नहीं करती।"

"मैं समझी, लेकिन जीवन......।"

"हाँ, जीवन क्या ?"

"जीवन कुछ दूसरी ही चीज माँगता है।"

"जीवन कुछ नहीं माँगता। जीवनकी माँग यही है कि हम लोग सही काम करें।" नेख्लीडूने कहा और अपनी बहनके चेहरेको देखा जो अभी तक सुन्दर था, लेकिन मुँह और आँखोंके चारों तरफ झुर्रियाँ पड़ गयी थीं।

"मैं तुम्हारी बात नहीं समझी।" नटालीने कहा और लम्बी साँस ली।

"देखो बेचारी कितनी बदल गयी है।" नेख्लीडूने अपने मनमें सोचा और उसे नटालीका वह रूप याद आ गया जो विवाहके पहले था। उसके प्रति नेख्लीडूके हृदयमें करुणाके भाव पैदा हुए जिनमें बाल्यावस्थाकी असंख्य स्मृतियाँ मिश्रित थीं। इतनेमें रोगोजिंस्की अपना सर पीछे फेंके, सीना उभारे, नित्य-नियमानुसार, हल्के कदम रखते, ऐनक लगाये, गञ्जी खोपड़ी, काली दाढ़ी चमकाते हुए कमरेमें दाखिल हुआ।

"कैसा मिजाज है! कैसे हो ?" उसने अपने शब्दोंपर अस्वाभाविक जोर देते हुए कहा।

इन लोगोंने हाथ मिलाये और रोगोजिंस्की आरामकुर्सीपर चुपकेसे बैठ गया।

"मैंने आप लोगोंकी बातचीतमें कोई विघ्न तो नहीं डाला ?"

"नहीं, मैं जो कुछ कहता या करता हूँ, किसीसे छिपाता नहीं।"

"अच्छा, बताओ तुम्हारे बाल-बच्चे कैसे हैं।" नेख्लीडूने अपनी बहनसे पूछा।

बहनने कहा—"सब बच्चे अपनी दादीके पास हैं। हमारे बच्चे एक रोज यह खेल खेल रहे थे मानो वे सफरपर जा रहे हैं और यह खेल वैसा ही था जैसा तुम बचपनमें खेला करते थे तीन गुड्डोंके साथ। इनमें एक हबशी होता था और दूसरी गुड़िया होती थी जिसे तुम फ्रांसीसी महिला कहा करते थे।"

"तुम्हें वे सब बातें याद हैं!" नेख्लीडूने मुस्कराते हुए कहा।

"हाँ, अब ताज्जुबकी बात यह है कि वे वैसे ही खेलते हैं जैसे तुम खेला करते थे।"

कैदियोंके जिस जत्थेके साथ मस्लोवा जानेको थी वह मास्कोसे रेल-द्वारा तीन बजे जानेवाला था। इससे जत्थेकी रवानगी देखनेके लिए और कैदियोंके साथ स्टेशन जानेके लिए नेख्लीडूने यह सोचा कि मुझे बारह बजे जेलखाने पहुँच जाना चाहिये।

जुलाईका महीना था और बड़ी सख्त गर्मी थी। दीवारोंसे और लोहेकी छतोंसे, जिन्हें गर्म रात ठण्डा नहीं कर सकी थी, निश्चल वायुमें गर्मी व्याप्त हो रही थी। कभी कभी हल्की हवा चल जाती थी और इस हवाके साथ गन्दी और गर्म हवाका झोंका आता था जिसमें गर्द और तेलकी बदबू होती थी।

जब नेख्लीडू जेल पहुँचा तबतक जत्था अन्दरसे नहीं निकला था। कैदियोंको देने और लेनेका श्रमपूर्ण काम, जो चार बजे सुबह शुरू हुआ था, अभीतक चल रहा था। इस जत्थेमें ६२३ पुरुष और ६४ स्त्रियाँ थीं। इनको गिनना था, रजिस्टरकी फिहरिस्तके मुताबिक इनको लेना था। बीमार और कमजोरोंको अलग करना था और फिर सबको ले जानेवालोंके सुपुर्द करना था। नया इन्स्पेक्टर अपने दो मातहतोंके साथ, डाक्टर और छोटे डाक्टर, जत्थेको ले जानेवाला अफसर और

क्लर्क जेलके हातेमें दीवारकी छाया तले मेज लगाये बैठे थे, जिसपर कागज और लिखनेका सामान फैला हुआ था। ये लोग कैदियोंको एक एक करके बुलाते, उनसे जिरह के प्रश्न करते और कुछ लिखते जाते थे।

यह जुलूस इतना लम्बा था कि जब अगला हिस्सा बिल्कुल गायब हो गया तब कहीं असबाब लदी हुई गाड़ियों और कमजोर कैदियोंको चलनेका मौका मिला। जब आखिरी गाड़ी चल दी, नेख्लीडूफ अपनी गाड़ीमें, जो उसका इन्तजार कर रही थी, बैठ गया। उसने कोचवानसे कहा "तेजीसे बढ़ाकर अगले कैदियोंके पासतक पहुँच जाओ।" जिससे देख सके कि इस जत्थेमें कोई ऐसा भी कैदी है जिसे वह पहचानता हो और मस्लोवाका भी पता चला ले और उससे पूछे कि जो चीजें मैंने उसके पास भेजी थीं वे मिलीं या नहीं।

बहुत गर्मी थी, हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी। हजारों पैरोंसे उड़ी हुई धूल, बादलकी तरह, इस जत्थेके ऊपर, जो सड़कके बीचमें चल रहा था, छायी हुई थी। कैदी लोग तेजीसे चल रहे थे इसलिए इस धीरे चलनेवाली गाड़ीको अगले हिस्सेतक पहुँचनेमें कुछ देर लगी। रास्तेमें नेख्लीडूको इन विचित्र और बीभत्स दिख रहे प्राणियोंकी पंक्तियों-की पंक्तियाँ मिलीं लेकिन वह उनमेंसे किसीको पहचानता न था।

ये लोग आगे बढ़ रहे थे। एक ही तरहके कपड़े पहने हजारों पैर एकदम जमीनपर पड़ते थे। ये लोग अपने छूटे हुए हाथको हिला रहे थे मानों अपनी हिम्मत बनाये रखनेकी कोशिश कर रहे हों। इनकी संख्या इतनी अधिक थी कि ये एक ही समान दीखते थे और ऐसी विचित्र तथा असाधारण स्थितिमें थे कि ये लोग नेख्लीडूको आदमी नहीं, बल्कि कोई भयंकर और विचित्र प्राणी मालूम हुए।

औरतोंके झुंडतक पहुँचकर नेख्लीडूने फौरन ही मस्लोवाको पहचान लिया। वह दूसरी कतारमें थी। इस कतारमें पहली औरत छोटे पैरों और काली आँखोंवाली एक घोर कुरूप स्त्री थी जिसने अपना चोंगा

उठाकर कमरके ऊपर बाँध लिया था। यह थी होरोशावका। इसके बाद एक गर्भवती स्त्री थी जो मुश्किलसे चल सकती थी। तीसरी मस्लोवा थी। यह अपना बोरा कन्धेपर लादे हुए और अपने सामने देखती हुई चली जा रही थी। चेहरा शान्त और दृढ़ मालूम होता था। इस कतार-में चौथी स्त्री एक सुन्दर नवयुवती थी। अपना छोटा चोगा पहने, सरमें किसान स्त्रियोंकी तरह रूमाल बाँधे, यह तेजीसे आगे बढ़ रही थी। थ्यूडूसिया।

नेख्लीडूव गाड़ीसे उतर गया और औरतोंकी तरफ बढ़ा। उसका इरादा मस्लोवासे यह पूछनेका था कि वे सब चीजें मिलीं कि नहीं जिन्हें इसने भेजा था और यह कि तुम्हारी तबीयत कैसी है। लेकिन सार्जेन्ट, जो इसी तरफ चल रहा था, नेख्लीडूवको बढ़ते हुए देखकर फौरन उसी तरफ लपका।

"यह न कीजिये। कैदियोंके जत्थेसे बातचीत करना कायदेके ख़िलाफ है।" सार्जेन्टने आगे बढ़ते हुए चिल्लाकर कहा।

लेकिन जब सार्जेन्टने नेख्लीडूवको पहचाना (जेलमें नेख्लीडूवको सभी पहचानते थे) तो उसे सलाम किया और सामने ठहरकर कहा, "अभी नहीं हुजूर, रेलवे स्टेशनतक इन्तजार कर लीजिये। इस जगह बातचीत करनेकी इजाजत नहीं है...।"

नेख्लीडूव किनारेकी पटरीपर चला गया। उसने गाड़ीवालेसे कहा कि पीछे पीछे गाड़ी लाओ और स्वयं पैदल चलने लगा जिससे यह दल उसे दिखता रहे। जहाँ जहाँ जत्था जाता था, लोगोंका ध्यान इसकी ओर आकृष्ट हो जाता था और लोग इसे देखकर दया और भयंकरता प्रकट करते थे।

नेख्लीडूव कैदियोंके कदमके बराबर कदम बढ़ाता रहा। हल्के कपड़े पहने रहनेपर भी इसको सख्त गर्मी लग रही थी। ऊमसमें, गरम और रुकी हुई हवामें, साँस लेना इसके लिए मुश्किल हो रहा था।

चौथाई मील चलनेके बाद नेख्लीदू फिर गाड़ीमें बैठ गया। यहाँ इसको और भी गर्मी मालूम हुई।

नेख्लीदूने अपने कोचवानसे पूछा—"यहाँ कुछ पीनेको मिलेगा ?" उसको कुछ ठंढी चीज पीनेकी बहुत इच्छा हो रही थी।

"पास ही एक अच्छा होटल है।" कोचवानने उत्तर दिया और सड़कके एक कोनेमें मुड़कर वह गाड़ीको एक दूकानके सामने ले गया जिसपर बहुत बड़ा साइनबोर्ड लगा हुआ था। मोटा-ताजा दुकानदार रूसी कमीज पहने खिड़कीके पीछे खड़ा था और खानसामा लोग अपनी वर्दी पहने हुए, जो कभी सफेद थी, मेज लगाये कुर्सियोंपर बैठे थे (दुकानपर कोई गाहक नहीं था)। इन लोगोंने आश्चर्यसे इस असाधारण ग्राहककी तरफ देखा। वे उठकर खड़े हो गये। नेख्लीदूने उतरकर एक बोतल सिल्जर वाटर माँगा और खिड़कीसे कुछ दूर हटकर एक छोटी मेजके पास, जिसपर एक गंदा कपड़ा बिछा हुआ था, बैठ गया। दूसरी मेजपर दो और आदमी चायका सामान और सफेद बोतल रखे बैठे थे। वे अपने माथेका पसीना पोंछते और मैत्रीभावसे कुछ हिसाब लगा रहे थे। उनमेंसे एक कुछ गहरे रंगका और दूसरा गंजा था और रोगोजिंस्कीकी तरह इसकी खोपड़ीके पीछे बालोंकी हल्की गोट थी। इस दृश्यको देखकर नेख्लीदूको अपने बहनोईके साथ कलकी बातचीत फिर याद आ गयी। उसको खयाल आया कि मैं नटालीसे मिलना चाहता था लेकिन मिल न सका।

गाड़ीके छूटनेमें इतना कम वक्त है कि नटालीसे मिलनेका अवसर न मिलेगा, नेख्लीदूने मनमें कहा। बेहतर होगा कि मैं उसे पत्र लिख दूँ। उसने कागज, लिफाफा और टिकट माँगा। उफानदार ठंढा जल पीते पीते वह सोचने लगा कि पत्रमें क्या लिखूँ। उसके विचार तितर-बितर हो रहे थे और वह पत्रका मजमून न बना सका।

"मेरी प्यारी नटाली ! तुम्हारे पतिसे कलकी बातचीतके कारण मेरे हृदयमें जो खिन्नता पैदा हुई है उसे लेकर मैं नहीं जा सकता।" उसने

शुरू किया..."अब क्या लिखूँ ? कलकी बातके लिए उससे क्षमा माँगूँ लेकिन मैंने तो वही सब बातें कही थीं जो मेरे दिलमें थीं। वह समझेगा कि मैं अपनी बात वापस लेता हूँ। इसके अलावा उसे हमारे निजी मामलोंमें हस्तक्षेप करनेका कोई अधिकार भी नहीं था...नहीं, मैं यह नहीं लिख सकता"...और फिर उसके दिलमें उस आदमीके प्रति, जो उससे बिल्कुल भिन्न था, घृणा पैदा होने लगी। उसने अधलिखे पत्रको तह करके जेबमें रख लिया, पैसे दिये, बाहर निकला और जत्थेको पकड़नेके लिए गाड़ीमें बैठकर रवाना हो गया।

अब गर्मी और भी बढ़ गयी थी। पत्थरों और दीवारोंसे गरम हवा भभक रही थी और सड़क पैरोंको झुलसा रही थी। नेख्लीडूने जब अपनी गाड़ीका मडगार्ड छुआ तो हाथ जलने सा लगा।

घोड़ा धीरे धीरे आगे बढ़ रहा था और टेढ़ी-मेढ़ी सड़कपर अपनी टापोंसे फटफटाता हुआ बढ़ रहा था। कोचवान ऊँघता जाता और नेख्लीडू उदासीन भावसे बैठा अपने आगे देख रहा था। उसके दिमागमें कोई भी विचार नहीं था।

चौदहवाँ अध्याय

नेख्लीडू जब स्टेशनपर पहुँचा, सारे कैदी रेलके डब्बोंमें—जिनकी खिड़कियोंमें छड़ें लगी हुई थीं—बैठ चुके थे। कुछ लोग जो इन्हें बिदा करने आये थे, प्लेटफार्मपर खड़े थे, लेकिन गाड़ीके पास नहीं जाने पाते थे।

कैदियोंको लानेवाली गारदको आज बहुत परेशानी हुई थी। जेल-खानेसे स्टेशनतक आनेमें उन दो कैदियोंके अलावा, जिन्हें नेख्लीडूने देखा था, तीन और लू लग जानेसे बेहोश होकर मर गये थे। एक तो नजदीकवाले थानेमें, पहले दोकी तरह, भेजा जा सका; बाकी दो रेलवे-स्टेशनपर ही मर गये। गारदके लोग इसलिए परेशान नहीं थे कि पाँच आदमी, जो कि जिन्दा रह सकते थे, इनकी सुपुर्दगीमें आनेपर मर गये। उन्हें परेशानी यह थी कि इस संबंधमें कानूनने जो कुछ कार्यवाही नियत कर रखी है, करनेसे न रह जाय। नियत स्थानोंपर लाशको पहुँचाना, इनके कागज और इनका माल-असबाब जमा करना और निजनी जानेवाली फिहरिस्तसे उस मालको खारिज करना—ये सब बातें बड़ी परेशानीकी थीं, खासकर आज ऐसे गरम दिनमें।

इस काममें गारदके आदमी बहुत देरतक फँसे रहे और जबतक यह काम खतम नहीं हो गया, नेख्लीडू और दूसरे लोग, जो गाड़ीके पास जाकर कैदियोंसे मिलना चाहते थे, नहीं मिल सके। नेख्लीडूने गारदके सार्जेन्टके हाथमें छोटीसी रकम रख दी और उसे फौरन ही गाड़ीतक जानेकी इजाजत मिल गयी। सार्जेन्टने नेख्लीडूको जाने तो दिया मगर कह दिया कि जल्दीसे बात-चीत खतम कर ले, कोई अफसर उसे देख न ले। कुल अठारह डब्बे थे। एक तो अफसरोंके लिए था और सत्रह जो कैदियोंके लिए थे, खचाखच भरे थे। नेख्लीडू जब उन

डब्बोंके पाससे होकर गुजरा, इन डब्बोंमें जो कुछ हो रहा था सुना। सब डब्बोंमें बेड़ियाँ खनक रही थीं। जोरदार और समझमें न आनेवाली भाषाके साथ मिलकर भनभनाहट सर्वत्र सुनाई पड़ती थी। लेकिन ये लोग अपने मरे हुए साथी कैदियोंके बारेमें बात नहीं कर रहे थे, बल्कि पानी, बोरा और बैठनेकी जगहपर ही सब चिल्लाहट मची हुई थी।

एक गाड़ीमें नेख्लीडूने झाँककर देखा। गारदके दो सिपाही कैदियों-के हाथसे हथकड़ियाँ खोल रहे थे। कैदी अपना हाथ फैला देते थे। एक सिपाही कुंजीसे हथकड़ी खोलता और निकाल लेता था, दूसरा इन्हें जमा करता जाता था।

मर्दोंकी तमाम गाड़ियोंसे गुजरकर नेख्लीडू औरतोंकी गाड़ीतक पहुँचा। इन गाड़ियोंमेंसे दूसरी गाड़ीमें उसने एक औरतकी आवाज सुनी—"ओ, ओ, ओ, ओ, भगवान्! ओ, ओ, ओ, भगवान्!"

नेख्लीडू इस गाड़ीसे बढ़कर तीसरी गाड़ीकी खिड़कीतक पहुँचा जिसे सिपाहीने उसे बताया था। खिड़कीके पास जब यह अपना चेहरा ले गया तो मालूम हुआ कि खिड़कीसे, आदमीके पसीनेकी बदबूसे भरी हुई, गर्म हवा निकल रही है। उसने साफ साफ सुना कि एक औरत बहुत तीक्ष्ण आवाजसे चिल्ला रही है।

लाल, पसीनेसे सराबोर, जोर जोरसे बातें करनेवाली, जेलके मोटे और सफेद सलूके पहने हुई स्त्रियोंसे तमाम जगहें भर गयी थीं। खिड़की-पर नेख्लीडूका चेहरा देख ये लोग आकर्षित हुईं। जो सबसे नजदीक थी उसने बोलना बन्द कर दिया और इसकी ओर झुकी। मस्लोवा सफेद सलूका पहने और सर खोले दूसरी तरफकी खिड़कीके पास बैठी थी और नेख्लीडूके पास ही सुन्दर, मुस्कराती हुई थ्यूडूसिया बैठी थी। नेख्लीडूको पहचानकर उसने मस्लोवाको चुटकी काटी और खिड़कीकी तरफ इशारा किया।

मस्लोवा जल्दीसे उठी। उसने अपने काले बालोंपर रूमाल डाला

और अपने गर्म लाल चेहरेपर मुस्कराहटके साथ खिड़कीके पास आ वह एक छड़ पकड़कर खड़ी हो गयी।

"कहिये, बहुत गर्मी है!" उसने खुशीसे मुस्कराते हुए कहा।

"तुम्हें सब चीजें मिल गयी थीं?"

"जी हाँ, धन्यवाद!"

"किसी और चीजकी जरूरत तो नहीं है?" नेख्लीडूने कहा। गर्म गाड़ीसे तन्दूरकी तरह हवा निकल रही थी।

"और किसी चीजकी जरूरत नहीं है; धन्यवाद।"

"कुछ पीनेको मिल जाता तो अच्छा था।" थ्यूडूसियाने कहा।

"हाँ, कुछ पीनेको मिल जाता तो अच्छा होता।" मस्लोवाने भी कहा।

"क्यों, तुम्हारे पास पानी नहीं है क्या?"

"कुछ पानी दिया था लेकिन सब खतम हो गया।"

"मैं अभी गारदके किसी आदमीसे कहे देता हूँ। अब मुझसे निजनी तक मुलाकात न होगी।"

"क्या तुम भी चल रहे हो?" मस्लोवाने पूछा। मानो उसको मालूम न रहा हो और खुशीसे नेख्लीडूकी ओर देखा।

"हाँ, मैं इसके बादवाली गाड़ीसे आ रहा हूँ।"

मस्लोवा कुछ नहीं बोली। उसने सिर्फ लम्बी साँस ली।

"क्या यह बात सही है कि बारह कैदी मार डाले गये?" एक कठोर आकृतिकी बुड्ढी कैदीने, जिसकी आवाज पुरुषकी तरह भारी थी, कहा।

यह कोरोब्लेवा थी।

"मैंने बारह तो नहीं सुना, लेकिन दो को देखा है।" नेख्लीडूने कहा।

"लोग कहते हैं कि बारह मार डाले गये। क्या इन लोगोंको कुछ न होगा? सोचिये तो इन शैतानोंकी हरकतको।"

"औरतोंमें कोई बीमार नहीं पड़ी ?" नेख्लीडूने पूछा।

"औरतें मजबूत होती हैं।" दूसरी कैदी बोल उठी जो छोटे कदकी औरत थी और हँसी। "एक औरत ऐसी जरूर है जिसने इसी समय बच्चा पैदा करनेका निश्चय किया है, वह देखो।" उस औरतने कहा और दूसरी गाड़ीकी तरफ इशारा किया जहाँसे कराहनेकी आवाज आ रही थी।

"तुमने पूछा था कि मुझे किसी चीजकी जरूरत है ?" अपने होठसे खुशीकी मुस्कराहट दबानेकी कोशिश करते हुए मस्लोवाने कहा। "क्या यह नहीं हो सकता कि यह औरत यहीं छोड़ दी जाय ? बेचारी बड़ी तकलीफमें है। अधिकारियोंसे कुछ कहिये-सुनिये।"

"अच्छी बात है, मैं जाता हूँ।"

"हाँ, एक बात और सुनिये। इनके पति क्या इनसे नहीं मिल सकते—टारस।" मस्लोवाने कहा और अपनी आँखोंसे मुस्कराती हुई थ्यूडूसियाकी तरफ इशारा किया। "वे भी तो तुम्हारे साथ चल रहे हैं न ?"

"महाशय, आप बात न कीजिये।" गारदके एक सर्जेन्टने कहा।

यह वह सर्जेन्ट नहीं था जिसने नेख्लीडूको आने दिया था। नेख्लीडू डब्बेसे हटकर किसी अफसरकी तलाशमें चला गया जिससे वह टारसके बारेमें और प्रसव-वेदनासे पीड़ित इस स्त्रीके बारेमें बातचीत कर ले। उसे न तो कोई अफसर मिला और न गारदके सिपाहीसे बहुत देरतक कोई उत्तर मिल सका। ये सब लोग दौड़-धूपमें लगे हुए थे। कोई कैदीको यहाँसे वहाँ ले जा रहा था, कोई अपने लिए सामानका इन्तजाम कर रहा था, कोई अपना असबाब अपनी गाड़ीमें रख रहा था, कोई एक महिलाकी सेवामें था जो गारदके अफसरके साथ जा रही थी और इसलिए इन लोगोंने नेख्लीडूके प्रश्नोंका अनिच्छापूर्वक उत्तर दिया।

नेख्लीडूको गारदका अफसर उस समय मिला जब गाड़ीकी दूसरी घंटी बज चुकी थी।

यह छोटे हाथोंवाला अफसर हाथोंसे अपनी मूँछें दुरुस्त कर रहा था और एक सिपाहीको कंधे झटकाते हुए किसी बातपर डाँट रहा था।

"आप क्या चाहते हैं?" उसने नेख्लीडूसे पूछा।

"आप लोगोंके साथ एक औरत जा रही है जिसके बच्चा पैदा हो रहा है। मैंने सोचा कि—।"

"बच्चा होने दीजिये, बादको देखा जायगा।" और तेजीसे अपने छोटे हाथ झुकाते हुए वह अपनी गाड़ीकी तरफ चल दिया।

इसी समय गार्ड सीटी हाथमें लिये उधरसे गुजरा और प्लेटफार्मके लोगों तथा औरतोंकी गाड़ीसे रोनेकी आवाज और प्रार्थनाके शब्द सुनाई देने लगे।

नेख्लीडू टारसके पास प्लेटफार्मपर खड़ा था और देख रहा था कि डब्बे, जिनकी छड़लगी खिड़कियोंमें घुटी हुई खोपड़ियाँ दीख रही थीं, किस प्रकार एक एक कर उसके सामनेसे निकले चले जाते थे। इन डब्बोंके बाद औरतोंका पहला डब्बा आया, जिसकी खिड़कीमेंसे औरतों-के सर कोई रूमालसे ढके और कोई नंगे दिखाई देते थे। इसके बाद दूसरा डब्बा आया जिसमेंसे अभीतक कराहनेकी आवाज सुनाई पड़ती थी। इसके बाद वह गाड़ी आयी जिसमें मस्लोवा थी। वह खिड़कीके पास दूसरोंके साथ खड़ी थी और नेख्लीडूको करुणापूर्ण दृष्टिसे देख रही थी।

———

पन्द्रहवाँ अध्याय

जिस गाड़ीसे नेख्लीडू जानेवाला था उसके छूटनेमें अब भी दो घंटे की देर थी। उसने यह सोचा था कि मैं इस दर्मियान अपनी बहनसे फिर मिल आऊँगा लेकिन सुबहके दृश्योंके बाद वह इतना उत्तेजित हो गया और थक गया था कि अव्वल दर्जेके 'रेफ्रेशमेंट रूम' (जलपानगृह) में एक गद्दीदार कुर्सीपर बैठे बैठे उसकी आँखें झपकने लगीं। उसने जो तनिक अपना बदन सीधा किया तो फौरन अपने हाथपर सर रखकर सो गया।

एक खानसामाने, जो हाथमें तौलिया लिये और कोट पहने था, उसे जगाया।

"हुजूर! आप ही राजकुमार नेख्लीडू हैं? आपको एक महिला ढूँढ़ रही हैं।"

नेख्लीडूने जागकर बैठ जानेपर धीरे धीरे अपने विचार एकत्र किये तो उसने देखा कि इस कमरेके सभी आदमी किसी चीजको, जो दर्वाजे-पर है, बड़े कौतूहलके साथ देख रहे हैं।

नटाली रेफ्रेशमेंट रूममें ऐग्राफिना पेट्रोव्नाके साथ आयी और दोनोंने चारों तरफ घूमकर देखा।

"तुम्हारे आनेसे बहुत खुशी हुई।"

"मैं यहाँ बड़ी देरसे आयी हूँ।" उसने कहा "ऐग्राफिना पेट्रोव्ना मेरे साथ है।" और इसने एग्राफिना पेट्रोव्नाकी तरफ इशारा किया जो मोमजामेका कपड़ा पहने, सरपर टोपी लगाये, थोड़ी दूरपर खड़ी थी। वह मृदु गंभीरता और हलकीसी घबराहटके साथ झुकी। यह इन लोगों-की बात-चीतमें दखल देना नहीं चाहती थी।

"हम लोगोंने तुम्हारी तलाश सब जगह की।"

"और मैं यहाँ सो गया था। मैं कितना खुश हूँ कि तुम आ गयीं।" नेख्लीडूने फिर कहा "मैंने तो तुम्हें एक पत्र लिखना शुरू किया था।"

"सचमुच!" उसने घबराहटके साथ कहा "किस संबंधमें?"

"कल तुम्हारे यहाँसे आनेके बाद मुझे वापस जाकर माँफी माँगनेकी प्रेरणा हुई। लेकिन मैं यह नहीं समझ सका कि तुम्हारे पतिके ऊपर इसका क्या असर पड़ेगा।" नेख्लीडूने कहा "मैंने उनसे जल्दबाजीमें बातें कीं जिससे उनको दुःख हुआ।"

"मैं जानती थी, मुझे निश्चय था कि तुम उनका दिल हर्गिज दुखाना नहीं चाहते थे।" बहनने कहा "तुम जानते हो—" उसकी आँखोंमें आँसू भर आये और उसने नेख्लीडूका हाथ पकड़ लिया।

"धन्यवाद, धन्यवाद और मैंने आज क्या देखा।" नेख्लीडू एकदम कह उठा और उसके सामने मरे हुए दूसरे कैदीका चित्र आ गया।

"दो कैदी आज मार डाले गये।"

"मार डाले गये! कैसे?"

"हाँ मार डाले गये। उनको इस गर्मीमें बाहर लाया गया। वे दोनों लू लगनेसे मर गये।"

"अच्छा! क्या आज अभी?"

"हाँ, अभी। मैंने उनकी लाशें देखी हैं।"

"लेकिन मार क्यों डाले गये? उनको किसने मारा?" नटालीने पूछा।

"जिन लोगोंने इन कैदियोंको बाहर निकलनेपर मजबूर किया उन्होंने इन्हें मारा।" नेख्लीडूने चिढ़कर कहा; क्योंकि उसने देखा कि नटाली भी इस बातको अपने पतिके ही दृष्टिकोणसे देख रही है।

"हे भगवान्!" ऐग्राफिना पेट्रोभ्नाने कहा जो अब इन लोगोंके पास आ गयी थी।

"जी हाँ, हम लोगोंको जरा भी नहीं मालूम कि इन अभागोंके साथ कैसा व्यवहार किया जा रहा है। लेकिन लोगोंको इसका पता होना चाहिये।" नेख्लीडूने कहा।

"लेकिन अब तुम क्या करने जा रहे हो?" नटालीने पूछा।

"मैं क्या कर सकता हूँ? मैं नहीं जानता लेकिन मुझे ऐसा लगता

है कि मुझे कुछ करना चाहिये और जो कुछ मुझसे हो सकेगा, मैं करूँगा।"

"यह मेरा साथी है।" नेख्लीडूने अपनी बहनसे कहा और टारसकी तरफ इशारा किया जिसकी कहानी वह उसे पहले बता चुका था।

"क्या तीसरे दर्जेमें जा रहे हो?" नटालीने पूछा, क्योंकि नेख्लीडू, टारस और असबाब लिये हुए कुली एक तीसरे दर्जेकी गाड़ीके सामने जाकर रुक गये और टारस और कुली तीसरे दर्जेकी गाड़ीमें घुस गये।

"हाँ, मुझे तीसरा दर्जा पसन्द है। मैं टारसके साथ जा रहा हूँ।" उसने कहा "एक बात और सुन लो। अभीतक मैंने कुसमिंस्कीकी जमींदारी किसानोंको नहीं दी है इसलिए मेरी मृत्युके बाद जायदाद तुम्हारे बच्चोंको मिलेगी।"

"डिमिट्री, क्या कहते हो?"

"अगर मैं इस जमींदारीको भी दे डालूँगा तो मैं सिर्फ इतना कह सकता हूँ कि बाकी जितनी चीजें हैं वे सब उनकी होंगी। अभीतक तो ऐसा मालूम होता है कि मैं विवाह न करूँगा। और अगर मैंने विवाह किया तो मेरे बच्चे न होंगे इसलिए—"।

"डिमिट्री, इस तरहकी बातें न करो।" नटालीने कहा, लेकिन नेख्लीडूने यह देखा कि उसकी बात सुनकर नटाली खुश हुई।

नेख्लीडू धधकती हुई बदबूदार गाड़ीमें घुसा, लेकिन फौरन ही बाहर निकलकर प्लेटफार्मपर खड़ा हो गया।

वह यह भी नहीं कह सकी कि मुझे चिट्ठी लिखना, जायदादकी बातचीतने एक क्षणमें भाई-बहनके दर्मियानका प्रेमभाव, जिससे अभीतक इनका हृदय परिपूर्ण था, नष्ट कर दिया था। ये दोनों एक दूसरेसे खिंच-से गये थे इसलिए जब गाड़ी चल दी, नटालीको प्रसन्नता हुई। उसने उदास और प्रेमपूर्ण भावसे सर हिलाते हुए सिर्फ इतना कहा—'डिमिट्री, नमस्कार।'

सोलहवाँ अध्याय

तीसरे दर्जेके लम्बे डब्बेमें, जो सारे दिन धूपमें तपा था, इतनी ज्यादा गर्मी थी कि नेख्लीडू अन्दर न बैठ सका बल्कि उस छोटेसे तख्तेपर, जो रूसी गाड़ियोंमें होता है, आकर खड़ा हो गया। यहाँ भी ताजी हवा नहीं आती थी। नेख्लीडूको उस समय स्वतन्त्रतासे साँस लेनेका मौका मिला जब गाड़ी इमारतोंको पार कर गयी और तख्तेपर हवाके झोंके आने लगे।

नेख्लीडू अपने विचारोंमें इतना मग्न था कि उसको मौसिमकी तब्दीलीका पता न चला। सूरजके ऊपर एक फटा हुआ तथा नीचा बादल छा गया था और हल्के सफेद रंगका घना बादल तेजीसे पश्चिम-की तरफसे आ रहा था। दूर जंगलमें और खेतोंमें मूसलाधार पानी गिर रहा था। बादलोंसे तरी निकलकर हवामें मिल रही थी, और कभी कभी बिजलीकी चमकसे बादल फट जाते थे। इनकी गरज, गाड़ीकी खड़खड़ाहटसे मिलकर, एक साथ सुनाई देती थीं। बादल अधिकाधिक निकट आने लगे और पानीकी बूँदें हवाके वेगसे तिरछी होकर तख्तेपर और नेख्लीडूके कोटपर गिरने लगीं। नेख्लीडू गाड़ीके तख्तेसे दूसरी ओर हट गया।

बाग, जंगल, पीली राईके खेत, हरे जौ, आलूकी गहरी हरी फूली हुई क्यारियाँ, इसकी आँखोंके सामनेसे निकलती जाती थीं और ताजी तर हवामें अन्नकी तथा इतने दिनोंसे पानीके लिए प्यासी पृथ्वीकी खुशबू आ रही थी। हर एक चीज चमक उठी थी। जो हरा था वह अधिक हरा हो गया था, जो पीला था वह अधिक पीला दिखाई देता था और जो काला था वह अधिक काला।

"और बरसो, और बरसो।" नेख्लीडूने बाग और खेतोंको, जिनमें

इस कल्याणकर वर्षासे नयी जान आ गयी थी, देख प्रसन्न होकर कहा। यह जोरदार वर्षा देरतक नहीं रही। कुछ बादल बरस गये और कुछ उड़ गये। थोड़ी देरमें तर पृथ्वीके ऊपर अन्तिम बढ़िया बूँदें सीधी गिरती हुई दिखाई देने लगीं। सूरज फिर निकल आया और हर एक चीज चमकने लगी और पूरबमें—क्षितिजके जरा ऊपर—चमकदार इन्द्रधनुष निकल आया। यह एक कोने पर टूटा हुआ था लेकिन इसका बैगनी रंग बहुत ही स्पष्ट था।

"हाँ, मैं क्या सोच रहा था?" नेख्लीडूने अपने दिलसे प्रश्न किया जब कि ये तमाम प्राकृतिक परिवर्तन समाप्त हो चुके और गाड़ी कटे हुए पहाड़के अन्दर घुसी और इसके दोनों तरफ ढालू चट्टानें दिखाई देने लगीं।

× × × ×

जिस गाड़ीमें नेख्लीडू बैठा था वह आधी भरी थी। इसमें नौकर, मजदूर, कारखानेमें काम करनेवाले, कसाई, यहूदी, दुकानदार, मजदूरोंकी औरतें, एक सिपाही, दो स्त्रियाँ (जिनमें एक युवती और एक बुड्ढी थी, जो अपने नंगे हाथमें बाजूबन्द पहने थी) और कठोर आकृतिका एक मनुष्य, जो अपनी काली टोपीमें फीतेकी एक गाँठ लगाये था, बैठे थे। अब अपनी अपनी जगहपर बैठनेकी दौड़-धूप खतम हो चुकी थी। सब लोग चुपचाप बैठे हुए थे। कोई मूँगफली तोड़ तोड़कर खा रहा था और कोई सिगरेट पी रहा था। कोई बातचीत कर रहा था।

टारस रास्तेके दाहिनी तरफ बैठा था और बहुत खुश था। उसने नेख्लीडूके लिए एक जगह छोड़ रखी थी और एक हृष्टपुष्ट आदमीसे, जो सूती कपड़ेका कोट पहने हुए उसके सामने बैठा था, बहुत जोशसे बातें कर रहा था। यह आदमी, जैसा नेख्लीडूको बादमें मालूम हुआ, माली था जो एक नयी जगह जा रहा था।

नेख्लीडूने टारसके मामलेका ब्यौरा इसके पहले कभी नहीं सुना

था। इसलिए वह भी बड़ी दिलचस्पीसे सुनने लगा। जिस समय नेख्लीड्ग यहाँ आकर बैठा था, टारसकी कहानी वहाँतक पहुँची थी जब जहर दिया जा चुका था, और कुटुम्बके लोगोंको मालूम हो चुका था कि जहर थ्यूड्रसियाने दिया है।

"मैं अपनी परेशानियोंकी बातें कर रहा हूँ।" टारसने नेख्लीड्गसे बड़े दोस्ताना ढंगसे कहा, "मुझे ये सहृदय आदमी मिल गये। हम लोग बातें करने लगे और मैं इनसे सब बता रहा हूँ।"

"अच्छी बात है।" नेख्लीड्गने कहा।

"मित्रवर! इस तरह सब हाल खुल गया। अम्माँने रोटी ले ली और बोलीं कि मैं थाने जाती हूँ। मेरे बापने, जो बुड्ढे हैं, कहा—'ठहर, अभी मत जा। देख यह छोटी सी औरत बिल्कुल बच्ची है और यह नहीं समझती कि क्या कर रही है। हमें दया दिखानी चाहिये। इसको फिर समझ आ जायेगी।' लेकिन अम्माँने एक न सुनी। वे बोलीं कि अगर इसको हमने अपने घरमें रखा तो यह हम सबको कीड़ोंकी तरह मार डालेगी। अन्तमें, मित्रवर, यह हुआ कि अम्माँने जाकर थानेमें रिपोर्ट कर दी। पुलिसवाले फौरन टूट पड़े। बोले, 'गवाही बुलाओ'।"

"और तुम?" मालीने पूछा।

"और मैं! मैं तो भाई साहब, पेटकी पीड़ासे तड़प रहा था, और कै कर रहा था। सारी अँतड़ियाँ मुँहको आ गयी थीं। मेरे मुँहसे बात-तक नहीं निकलती थी। बप्पा उठे, घोड़ी कसी, थ्यूड्रसियाको गाड़ीपर बिठाया, थाने गये और वहाँसे मजिस्ट्रेटके यहाँ चले गये। थ्यूड्रसियाने जो जो किया था, शुरूसे आखिरतक मजिस्ट्रेटको बता दिया। संखिया उसे कहाँ मिली, आटेमें संखिया उसने कैसे मिलायी, सब कुछ बता दिया। मजिस्ट्रेटने उससे पूछा कि तूने यह सब क्यों किया। वह बोली 'मैंने इसलिए किया कि मेरा पति मुझे अच्छा नहीं लगता और कहा कि ऐसे जीनेसे तो साइबेरियामें रहना अच्छा है। वही मैं हूँ।" टारसने मुसकराकर कहा।

इस तरह इसने सब कुछ कह दिया। "फिर उसे जेलकी सजा हो गयी और बप्पा अकेले घर वापस आये। फसल कटनेके दिन आ रहे थे। घरमें अम्माँ ही अकेली औरत थीं, और उनमें अब वह पौरुष रहा नहीं था। हम लोग सोचने लगे कि अब क्या किया जाय। सोचा कि अगर जमानतपर छुड़ा लिया जाय तो? बप्पाने कहा, अच्छा जाता हूँ। वे उठे और एक अफसरके पास गये। वह बोला—नहीं, जाओ! तुम्हारा काम नहीं हो सकता। फिर दूसरेके पास गये और मैं कहता हूँ कि पाँच अफसरोंसे हम लोग मिले, मगर कहीं कुछ न हुआ। हम सोचने लगे कि अब छोड़ो इस बखेड़ेको, इसमें सिद्धि न होगी। इतनेमें एक मुंशी मिल गया। ऐसा होशियार मुश्किलसे मिलेगा। उसने कहा कि पाँच रूबल हमको दो तो हम उसे छुड़ा लायेंगे। कहते सुनते तीनपर राजी हुआ। मित्रवर! इसके बाद जानते हो हम लोगोंने क्या किया? मैं गया और इसी (मेरी स्त्री) ने जो कपड़ा बुना था, जाकर गिरवी रख आया और मुंशीको तीन रूबल दे दिये। मुंशीने एक कागजपर कुछ लिखा जिससे वह छूट गयी। मैं उस समयतक अच्छा हो चुका था। मैं खुद ही उसे लेने गया।"

तो मित्रवर! मैं शहर गया। घोड़ी बाँधी, कागज लिया और जेलखाने पहुँचा। वहाँ एक बाबू साहब बोले 'क्या चाहता है?' मैंने कहा 'चाहता यही हूँ कि मेरी स्त्रीको तुम लोगोंने यहाँ जेलमें बंद कर रखा है, उसे हमें दे दो।' उसने पूछा 'कोई कागज लाये हो?' मैंने वही कागज दे दिया। उसने कागज देखा और कहा ठहरो। मैं वहीं बेंचपर बैठ गया। दोपहरी हो गयी थी। इतनेमें एक अफसर आया। उसने कहा 'बेवकुफ तुम्हारा नाम है?' मैंने कहा 'हाँ।' वह बोला 'अच्छा; ले जाओ।' जेलके दर्वाजे खुल गये और कपड़े पहने हुए उसे वे बाहर ले आये। मैंने कहा 'आओ, चलो।' 'तुम पैदल आये हो?' 'नहीं, मैं घोड़ेपर आया हूँ।' मैं फिर सरायवालेके पास गया और उसे घोड़ीकी बँधाई दी, घोड़ी कसी, और जितनी घास बची थी उसके ऊपर

लादी और उसके बैठनेके लिए उसपर बोरा बिछा दिया। वह बैठ गयी और शाल ओढ़ लिया। अब हम दोनों चल दिये। वह भी कुछ न बोली, और मैं भी कुछ न बोला। जब हम घरके नजदीक पहुँचे तब वह बोली—'अम्माँ कैसी हैं ? जिंदा हैं'न ?' 'हाँ, अम्माँ जिंदा हैं।' 'और बप्पा जिंदा हैं' न ?' 'हाँ, वे भी जिंदा हैं।' 'टारस ! मुझे मेरी मूर्खताके लिए माफ करना' वह कहने लगी। मैं नहीं कह सकता मेरे मुँहमें कहाँसे बात आ गयी। मैंने कहा—'बातोंसे थोड़े बात बनती है। मैंने तो तुम्हें बहुत दिन पहले ही माफ कर दिया।' वह चुप हो गयी। हम लोग जब घर पहुँचे तो पहुँचते ही यह अम्माँके पैरोंपर गिर पड़ी। अम्माँने कहा 'भगवान् तुम्हें क्षमा करें' बप्पाने कहा 'जो होना था सो हो गया, मजेमें रहो और अब यह बात-चीत करनेका अवसर नहीं है। स्कोरोडीवा वाला खेत काटना है।' बप्पाने कहा। 'भगवानकी मर्जीसे राईकी फसल इतनी अच्छी है कि हँसिया लगानेकी जगह नहीं। इतनी गझिन है कि लाँक एक दूसरेमें फँस गयी है और बालियोंके बोझसे गिर पड़ी है। तुम और टारस कल सुबह चले जाना और उसको काट लेना।' भाई साहब ! उसी दिनसे इसने काम शुरू किया और ऐसा किया कि सब लोग दाँत तले उँगली दबाने लगे। इसके बाद हम लोगोंने लगान-पर तीन बीघा जमीन और ले ली और भगवान्‌ने दया कर दी। राई और जौकी ऐसी बढ़िया फसल हुई कि क्या बताऊँ। मैं काटता, यह पूले बाँधती। कभी हम दोनों काटते। मैं काम खूब कर लेता हूँ। कामसे कभी नहीं डरता लेकिन यह तो हर एक कामको बहुत बढ़िया करती है। बड़ी तेज औरत है, जवान है, और बहुत सजीव है, और काममें, उसकी इतनी तबीयत लगती थी कि हमको रोकना पड़ता था। हम घर आते थे तो हमारी उँगलियाँ फूल जाती थीं। हाथोंमें दर्द होने लगता था लेकिन यह आराम नहीं करती थी। सीधे खलिहानमें दौड़ जाती और दूसरे दिन पूले बाँधनेके लिए रस्सी बटकर ले आती। ऐसी बदल गयी थी यह।"

"और तुम्हें भी कुछ ज्यादा चाहने लगी थी ?" मालीने पूछा।

"हाँ, बहुत चाहने लगी थी। मुझे इतना चाहती थी मानो हम दोनोंकी एक जान हो। कोई बात मेरे मनमें आयी कि वह समझ गयी। अम्माँ नाराज रहती थीं, लेकिन कहती थीं कि थ्यूड्रसिया बिल्कुल बदल गयी। यह तो दूसरी ही औरत हो गयी। हम लोग दो गाड़ियाँ लिये हुए पूले लादने जा रहे थे। पहली गाड़ीमें हम दोनों बैठे थे। मैंने कहा—थ्यूड्रसिया, यह बताओ कि तुम्हें जहर देनेका खयाल कैसे आया था। वह बोली—'बताऊँ, कैसे आया था। इस तरह आया था कि मैं तुम्हारे साथ रहना ही नहीं चाहती थी। मैं चाहती थी कि मर जाऊँ तो अच्छा, मगर तुम्हारे साथ न रहूँ।' 'और अब ?' मैंने पूछा 'अब तो तुम मेरे दिलमें हो।' टारस यह कहकर रुक गया, प्रसन्नतासे मुस्कराया और आश्चर्यसे उसने सर हिलाया। हम लोग फसल लेकर घर भी न पहुँच पाये थे, मैं चारा भिगोने गया था और मैं जब घर लौटा—" टारस थोड़ी देरके लिए रुक गया। "तो क्या देखता हूँ कि एक सम्मन आ गया। मालूम हुआ कि मुकदमा होगा और इसे जाना पड़ेगा। हम लोग बिल्कुल भूल गये थे कि अभी इसपर मुकदमा होनेवाला है।"

"यह सब शैताननने किया होगा, वरना दूसरा कौन किसीकी आत्माको नष्ट करनेका विचार कर सकता है। ऐसा एक आदमी हमारे यहाँ भी था—" और माली एक दूसरी कहानी शुरू करना चाहता था कि गाड़ी धीमी पड़ गयी।

"मालूम होता है, स्टेशन आ गया।" उसने कहा "मैं जाकर जरा पानी पी आऊँ।"

बात-चीत रुक गयी। मालीके पीछे-पीछे नेख्लीडू भी गाड़ीसे स्टेशनके भीगे हुए प्लेटफार्मपर उतर पड़ा।

भाग ३

पहला अध्याय

कैदियोंके जिस जत्थेमें मस्लोवा थी यह तीन हजार मीलकी यात्रा कर चुका था। मस्लोवा और दूसरे कैदी, जिनको फौजदारीके जुर्ममें सजा मिली थी, रेल और स्टीमरसे सफर करके पर्मके कस्बेतक पहुँचे थे। नेख्लीडूने वीरा दुखोवाकी सलाहसे मस्लोवाके लिए, राजनीतिक कैदियों-के साथ यात्रा करनेकी अनुमति ले ली।

शारीरिक और नैतिक दोनों दृष्टियोंसे मस्लोवाके लिए पर्मतककी यात्रा बहुत कष्टप्रद रही। शारीरिक दृष्टिसे इस कारण कि भारी भीड़, गन्दगी और घृणित जूँओं तथा चीलरोंने उसे आराम न लेने दिया। नैतिक दृष्टिसे इस कारण कि उन्हींके समान घृणित आदमियोंने भी उसे शान्ति न लेने दी। खटमल और जूँओंकी तरह आदमी यद्यपि हर एक जगह, जहाँ गाड़ी बदलती थी, बदल जाते थे फिर भी नये आनेवाले सब आदमी एक ही तरहके शैतान निकलते थे। ये उसके चारों तरफ इकट्ठा हो जाते आर उसे शान्ति नहीं मिलती। औरत कैदी, मर्द कैदी, जेलरों और गारदके सिपाहियोंमें व्यभिचारकी प्रवृत्ति इतनी दृढ़ हो गयी थी कि अगर कोई औरत-कैदी अपने स्त्रीत्वसे दूसरोंको फायदा पहुँचानेके लिए तैयार न होती तो उसके लिए बराबर सावधानीसे रहना अत्यन्त आवश्यक था। लगातार भय और संघर्षकी मनोदशामें रहना बहुत कष्टकर था। फिर मस्लोवाके ऊपर तो विशेष रूपसे आक्रमण होता था; क्योंकि उसकी शकल-सूरत आकर्षक थी और उसके अतीतको सभी जानते थे। उसने समस्त आदमियोंकी अभिलाषाओंका सामना बड़ी दृढ़तासे किया था, इससे सब लोग उससे नाखुश थे और उनके मनमें

इसके प्रति एक दूसरी, अर्थात् द्वेषकी, भावना उत्पन्न हो गयी थी। लेकिन उसकी स्थिति थ्यूड्डसिया तथा टारसके साथ घनिष्ठता रखनेके कारण अधिक सरल हो गयी थी। टारसने जब सुना कि लोग उसकी स्त्रीसे छेड़छाड़ करते हैं तब उसकी रक्षा करनेके लिए उसने निजनी नवगोरदमें स्वेच्छासे अपनी गिरफ्तारी करा ली थी और अब वह एक कैदी बनकर जत्थेके साथ सफर कर रहा था।

मस्लोवाको जबसे राजनीतिक कैदियोंमें शामिल होनेकी अनुमति मिल गयी थी तबसे उसकी स्थिति अधिक सहनीय हो रही थी। इसके सिवा राजनीतिक कैदियोंको रहनेके लिए अच्छी जगह और बढ़िया भोजन मिलता था। इनके साथ उतनी क्रूरताका व्यवहार भी नहीं होता था। मस्लोवाकी स्थिति इसलिए और भी अच्छी हो गयी कि लोग अब इससे छेड़-छाड़ नहीं करते थे और यह अपने अतीतका, जिसे यह बिलकुल भूल जाना चाहती थी,स्मरण किये बिना जीवन व्यतीत कर सकती थी। लेकिन इस परिवर्तनका सबसे बड़ा फायदा यह था कि उससे कुछ ऐसे आदमियोंका परिचय हो गया जिन्होंने इसके चरित्रके ऊपर निश्चित और अत्यन्त लाभदायक प्रभाव डाला।

जहाँ बदली होती थी वहाँ तो मस्लोवा राजनीतिक कैदियोंके साथ रख दी जाती थी, लेकिन हृष्टपुष्ट और स्वस्थ होनेके कारण इसे साधारण कैदियोंके साथ पैदल चलना पड़ता था। इस तरहसे यह टोमस्कसे पैदल चलकर आयी थी। दो राजनीतिक कैदी और जत्थेके साथ पैदल चले थे। एक तो मेरी पावलोभ्ना शतीनिना थी जो सुन्दर और भूरे रंगकी आँखोंवाली लड़की थी। इसकी ओर नेख्लीडूका ध्यान तभी आकर्षित हुआ था जब वह दुखोवासे जेलमें मिलने गया था। दूसरा कैदी साइमनसन था। इस उलझे हुए बालोंवाले, गहरे रंगके तथा बैठी हुई आँखोंवाले नौजवानको भी नेख्लीडूने उसी समय देखा था और यह अब याकुत्स्क जिलेमें निर्वासित होनेके लिए जा रहा था। मेरी पावलोभ्ना इसलिए पैदल चल रही थी कि इसने अपनी गाड़ीकी जगह एक स्त्री-कैदी

को, जो गर्भवती थी, दे दी थी। और साइमनसन इसलिए पैदल चल रहा था कि वह अपनी हैसियतसे कोई फायदा नहीं उठाना चाहता था। ये तीनों और कैदियोंके साथ बहुत सवेरे, बाकी राजनीतिक कैदियोंसे पहले, चल देते थे। राजनीतिक कैदी गाड़ियोंपर इसके बाद चलते थे। एक खास बड़े शहरमें पहुँचनेके पहले, जहाँ नयी गारदने आकर इन कैदियों-को अपनी सुपुर्दगीमें लिया था, इसी प्रबन्धसे ये लोग पैदल चले थे।

सितम्बरका प्रातःकाल था। पानी बरस रहा था। ठंढी हवाका झोंका रह रहकर चलता था। कभी पानी और कभी बरफकी वर्षा होती थी। कैदियोंका पूरा जत्था (चार सौ मर्द और पचास स्त्रियाँ) इस पड़ावके दालानमें इकट्ठा हो चुका था। कुछ तो गारदके अफसरके चारों तरफ बैठे थे जो विशेष रूपसे नियत किये गये कैदियोंको दूसरोंमें बाँटनेके लिए दो दिनके खाने-पीनेके लिए पैसे दे रहा था। कुछ खोंचेवालियोंसे, जिन्हें इस अहातेमें आनेकी इजाजत दी गयी थी, खाने-पीनेका सामान खरीद रहे थे। कैदियोंके रुपया-पैसा गिननेकी आवाज, सौदा खरीदनेमें उनका झगड़ा और खोंचावालोंकी चिल्लाहट बराबर सुनाई देती थी।

कटूशा और मेरी पावलोभ्ना दोनों बड़े बूट, छोटे बालोंके चोगे पहने हुए और अपने सरमें शाल लपेटे, इस मकानसे निकलकर बाहर अहातेमें आयीं। वहाँपर खोंचेवालियाँ अहातेकी उत्तरी दीवारसे अपनेको हवासे बचाये हुए अपने सामान बेचनेकी कोशिश कर रहीं थीं। कोई गर्म गोश्तकी टिकिया बेचती थी, कोई मछली, कोई दलिया, कोई कलेजी, कोई अंडा, कोई दूध और कोई सुअरका भूना हुआ गोश्त।

साइमनसन रबरका सलूका और रबरका ही जूता पहने हुए इसी अहातेमें जत्थेके चलनेकी प्रतीक्षा कर रहा था। यह निरामिषभोजी था, इससे मारे हुए जानवरोंका चमड़ा इस्तेमाल नहीं करता था। यह अगली ड्योढ़ीमें खड़ा अपनी नोटबुकमें एक विचार लिख रहा था जो इसके दिमागमें आया था। वह विचार यह था कि अगर बैक्टीरिया कीटाणु आदमीके नाखूनकी परीक्षा करे तो वह यही कहेगा कि नख जीवित

शरीरका हिस्सा नहीं है, ऐसे ही जब हम इस पृथ्वीका ऊपरी परत देखते हैं तो कह देते हैं कि यह जीवित देहका हिस्सा नहीं है, लेकिन यह बात गलत है।

अण्डे, रोटी, मछली इत्यादि खरीदनेके बाद मस्लोवा इन्हें अपने थैलेमें रखने लगी और मेरी पावलोम्ना दाम देने लगी। इतनेमें कैदियों-की एक हरकत-सी हुई। सब चुप हो गये और अपनी अपनी जगहपर बैठ गये। अफसर बाहर आया और चलनेका अन्तिम हुक्म दे दे दिया।

नियमानुसार बातें हुईं। कैदियोंकी गिनती हुई। बेड़ियोंका मुआ-इना हुआ। जो लोग दो-दो साथ साथ चलनेवाले थे उनके हाथोंमें हथ-कड़ियाँ भर दी गयीं। लेकिन इतनेमें एकाएक अफसरकी क्रोधपूर्ण और हाकिमों जैसी आवाज, कुछ चिल्लाते हुए, सुनाई दी। धमाकेकी और किसी बच्चेके रोनेकी भी आवाज आयी। थोड़ी देरके लिए खामोशी रही और फिर भीड़का कोलाहल शुरू हुआ। मस्लोवा और मेरी पाव-लोम्ना उस ओर बढ़ीं जहाँसे यह आवाज आ रही थी।

———

दूसरा अध्याय

जब मेरी पावलोव्ना और कटूशा उस जगहपर पहुँचीं तो उन्होंने निम्नलिखित दृश्य देखा; बड़ी-बड़ी मूँछोंवाला मोटा ताजा अफसर त्योरियाँ बदलता और गालियाँ देता हुआ खड़ा था। वह अपने दाहिने हाथकी हथेली मल रहा था जिसमें, कैदीके मुँहमें तमाचा मारनेके कारण, चोट लग गयी थी। उसके सामने एक लंबा, दुबला-पतला कैदी, आधी खोपड़ी घुटाये, बहुत छोटा चोगा पहने, लहूलुहान चेहरेसे खून पोंछता हुआ और एक हाथ शालमें लपेटी एक चिल्लाती हुई छोटी लड़कीको पकड़े खड़ा था।

"अभी बताता हूँ (गंदी गालियाँ) अभी ठीक किये देता हूँ (गंदी गालियाँ) तुझे इसे औरतोंको देना पड़ेगा।" अफसरने चिल्लाकर कहा "जा, जाकर दे आ।"

यह कैदी अपने गाँवकी पंचायत द्वारा निर्वासित हुआ था और अपनी इस छोटीसी लड़कीको टोमस्कसे बराबर अपनी गोदमें लाया था जहाँपर इसकी स्त्री टाइफाइड बुखारसे बीमार होकर मर गयी थी। अफसरने अब यह हुक्म दिया था कि इसके बेड़ी लगा दी जाय। निर्वासित आदमी कह रहा था कि अगर मुझे हथकड़ी लगा दी जायगी तो मैं बच्चीको कैसे ले जाऊँगा। यह बात अफसरको, जो पहले से ही बिगड़ा बैठा था, बुरी लगी और उसने कैदीको, हुक्म न माननेके अपराधमें, पीटना शुरू किया था।

गारदका सिपाही चोट खाये हुए कैदीके पास खड़ा था। इसके पास ही काली दाढ़ीका एक कैदी भी, जिसके एक हाथमें हथकड़ी लग गयी थी, खड़ा था और भयभीत हो अपनी भौंहोंके नीचेसे कभी अफसरको देखता और कभी चोट खाये हुए, छोटी लड़कीको लिये हुए, कैदीको।

अफसरने सिपाहीको हुक्म दिया—लड़की छीन लो। कैदियोंमें कोलाहल बढ़ गया।

"टोमस्कसे अभीतक नहीं लगी।" पीछेसे एक आवाज आयी। "बच्चा है, पिल्ला नहीं।" दूसरी आवाज सुनाई दी।

"इससे लड़कीसे क्या मतलब? यह तो कानूनके खिलाफ है।" किसी दूसरेने कहा।

"कौन है?" अफसर चिल्लाया, मानो उसे किसीने डंक मार दिया हो और वह भीड़की तरफ बढ़ा। "कानून नहीं है? कानूनकी बात मैं तुमको समझाऊँगा। कौन बोला था तुम—तुम?"

"सभी कह रहे है—।" एक छोटे कदके चौड़े चेहरेके कैदीने कहा।

इस कैदीकी बात खतम भी न होने पायी थी कि अफसरने दोनों हाथोंसे इसे तमाचे मारने शुरू किये। "बलवा है? मैं बता दूँगा कि बलवा क्या है। कुत्तोंकी तरह गोलीसे मरवा दूँगा और गवर्नमेंट बहुत खुश होगी। लड़कीको छीन लो।"

भीड़ खामोश रही। गारदके एक सिपाहीने लड़की छीन ली, जो बहुत चिल्ला रही थी। दूसरे सिपाहीने कैदीके हाथमें, जिसे अब वह नम्रतासे बढ़ाये हुए था, हथकड़ी लगा दी।

"इसे औरतोंमें जाकर दे आओ।" अफसरने चिल्लाकर कहा। वह अपनी तलवारकी पेटी दुरुस्त करने लगा।

छोटी लड़की, जिसका चेहरा बिल्कुल लाल हो गया था, शालमेंसे अपने हाथ निकालनेकी कोशिश कर रही थी और जोरसे चीख रही थी। मेरी पावलोभ्ना भीड़से बाहर निकलकर अफसरके पास गयी।

"इस छोटी सी लड़कीको क्या मुझे ले चलनेकी इजाजत दीजिएगा?" उसने कहा।

"तुम कौन हो?" अफसरने पूछा।

"एक राजनीतिक कैदी।"

मेरी पावलोभ्नाके सुन्दर चेहरे और उसकी सुन्दर बड़ी-बड़ी आँख

ने (इस अफसरने मेरी पावलोभ्नाका चेहरा कैदियोंको सुपुर्दगीमें लेते समय ही देखा था) अफसरके ऊपर असर डाला। उसने सर उठाकर देखा और चुप रहा, मानो कुछ सोच रहा हो। इसके बाद उसने कहा "हाँ, अगर तुम ले चलना चाहती हो तो ले चलो; मुझे कोई आपत्ति नहीं। दया दिखाना बड़ा सरल काम है, लेकिन अगर यह भाग जाता तो कौन जवाब देता।"

"बच्चीको गोदमें लिये हुए कैसे भाग सकता था" मेरी पावलोभ्ना-ने कहा।

"मेरे पास तुमसे बातें करनेके लिए समय नहीं है। तुम लड़की लेना चाहती हो तो ले सकती हो।"

"दे दूँ ?" सिपाहीने पूछा।

"हाँ, दे दो।"

"आओ, आओ।" मेरी पावलोभ्नाने लड़कीको देखकर कहना शुरू किया। वह उसे गोदमें बुलाना चाहती थी।

लेकिन सिपाहीकी गोदमें गिरफ्तार लड़की बारबार अपने पिताकी तरफ अकड़ अकड़कर जानेकी कोशिश करती थी और चिल्लाती थी। वह मेरी पावलोभ्नाके पास आना नहीं चाहती थी।

"अच्छा ठहरो, मेरी पावलोभ्ना !" मस्लोवाने कहा और अपने थैले-से मिठाईका छोटा-सा टुकड़ा निकाला "मेरे पास आ जायेगी।"

यह छोटी लड़की मस्लोवाको पहचानती थी। जब उसने मस्लोवा-को और मिठाईके टुकड़ेको देखा तो वह मस्लोवाकी गोदमें चली आयी।

अब सब शान्त हो गया, फाटक खुल गया। जत्था बाहर निकला और कतार लगाकर खड़ा हो गया। गारदके सिपाहियोंने कैदियोंको गिन लिया, सामानके बोरे गाड़ियोंमें रख दिये गये और कमजोर कैदी इनके ऊपर बिठा दिये गये। मस्लोवा छोटी-सी लड़कीको गोदमें लेकर औरतोंमें, थ्यूडूसियाके पास, बैठ गयी। साइमनसन, जो बराबर यह सब कार्रवाइयाँ देख रहा था, लंबे कदम बढ़ाता अफसरके पास पहुँचा

जो हुक्म दे चुकनेके बाद अपनी गाड़ीमें बैठनेकी तैयारी कर रहा था और बोला—"आपने बुरा किया।"

"अपनी जगह जाओ। तुमसे कुछ मतलब नही।"

"मुझसे मतलब है, सिर्फ इतना कि मैं आपसे बता दूँ कि आपने बुरा किया।" साइमनसनने कहा और अपनी भौहोंके नीचेसे अफसरके चेहरेको गौरसे देखा।

"रेडी मार्च।" अफसरने पुकारकर कहा और साइमनसनकी बातकी तनिक भी पर्वाह नहीं थी। कोचवानके कंधेके सहारे वह अपनी गाड़ीमें बैठ गया और जत्था कीचड़से भरी हुई सड़कपर, जिसके दोनों ओर खन्दक थी और जो घने जंगलसे होकर गुजरती थी, फैलता हुआ बढ़ने लगा।

तीसरा अध्याय

कठोर परिस्थितिके होते हुए भी कटूशाको, अपने पिछले छः बरसके पतित और व्यसनपूर्ण जीवनके बाद तथा जेलमें साधारण कैदियोंके साथ कई महीने जीवन व्यतीत करनेके पश्चात्, राजनीतिक कैदियोंमें रहना बहुत अच्छा लगा। उसे प्रतिदिन पंद्रहसे बीस मीलतक चलना पड़ता था, अच्छा भोजन मिलता था और दो दिन चलनेके बाद एक दिन आराम मिलता था। इससे कटूशा शरीरसे भी हृष्टपुष्ट हो गयी थी और अपने नये साथियोंकी संगतिसे उसके जीवनमें ऐसी दिलचस्पियाँ पैदा हो गयीं जिनकी कल्पना वह स्वप्नमें भी नहीं करती थी। वह कहती थी कि ऐसे अद्‌भुत आदमियोंकी, जिनके साथ अब यह थी, मैंने न केवल नहीं देखा है वरन् इनकी कल्पना भी नहीं की थी।

जब मुझे सजा हुई थी तब मैं रोने लगी थी लेकिन अब मैं ईश्वरको धन्यवाद दे रही हूँ कि मुझे ऐसी बातें मालूम हो रही हैं जो मुझे आजीवन मालूम नहीं हो सकती थीं।

मस्लोवा आसानीसे इन राजनीतिक कैदियोंके अभिप्रायको समझ सकती थी। और चूँकि वह भी जनतामें से एक थी, इससे इन लोगोंके साथ उसकी सहानुभूति भी थी। वह यह समझती थी कि ये लोग गरीब लोगोंके लिए काम करते हैं और ऊँचे वर्गके लोगोंके खिलाफ हैं। यद्यपि ये लोग खुद ऊँचे वर्गके हैं, फिर भी इन लोगोंने अपना अधिकार, अपनी स्वतंत्रता और अपना जीवन गरीबोंके लिए उत्सर्ग कर दिया है। इसी कारण मस्लोवा इन लोगोंकी और भी प्रतिष्ठा और सम्मान करती थी।

वह अपने नये सब साथियोंसे, खासकर मेरी पावलोभासे, बहुत खुश रहती थी। इससे यह केवल प्रसन्न ही नहीं रहती थी बल्कि यह

एक विशेष आदर और भक्तिके साथ प्रेम करती थी। उसको आश्चर्यजनक यह बात मालूम हुई कि यह सुन्दर लड़की, जो तीन भाषाएँ बोल सकती थी, एक अमीर सेनापतिकी लड़की थी। यह सीधी-सादी मजदूर लड़कीकी तरह अपना जीवन व्यतीत करती थी और इसका अमीर भाई जो कुछ भेजता था उसे बाँट देती थी। सीधे-सादे गरीबोंके कपड़े पहनती थी, शृंगारका कोई खयाल नहीं करती थी। यह गुण—अर्थात् नाज और रँगीलेपनका सम्पूर्ण अभाव—मस्लोवाके लिए आश्चर्यजनक और विशेष चित्ताकर्षक था।

मस्लोवाको यह साफ साफ दिखता था कि मेरी पावलोभ्ना अपनी सुन्दरताको जानती है और जानकर खुश भी होती है। फिर भी उसकी सुन्दरताकी वजहसे पुरुषोंपर जो असर पड़ता था उससे वह खुश नहीं थी। इसकी वजहसे उसे डर भी लगता था। प्रेममें फँसनेसे वह अत्यंत घृणा करती थी और बहुत डरती थी। इसके पुरुष साथी इसकी इस बातको जानते थे, इसलिए इसपर कभी मोहित नहीं होते थे, और अगर हो भी जाते तो कमसे कम छिपाते रहते थे और इसके साथ ऐसा व्यवहार करते थे मानो यह पुरुष हो। लेकिन दूसरे लोगोंके साथ व्यवहार करनेमें, जो अक्सर इसे छेड़ते थे; इसकी शारीरिक शक्ति, जिसका इसको अभिमान था, सहायता करती थी।

"एक बार ऐसा हुआ" इसने कटूशासे हँसते हँसते बताया "कि सड़कपर एक आदमी मेरे पीछे पीछे हो लिया और मेरा पीछा छोड़नेको किसी तरह तैयार न हुआ। अन्तमें मैंने उसे ऐसी डाँट बतायी कि वह घबरा गया और डरकर भाग गया।"

"मैं क्रान्तिकारी इसलिए हो गयी कि मुझे बचपनसे ही बड़े आदमियोंकी जिन्दगी नापसन्द थी और मैं साधारण लोगोंके जीवनको पसन्द करती थी। मुझे बराबर बुरा भला कहा जाता था कि मैं नौकरानियोंमें, रसोईघरमें और अस्तबल इत्यादिमें ज्यादा क्यों आती-जाती हूँ और बैठकमें क्यों नहीं बैठती। लेकिन कोचवानों और खानसामोंसे बातचीत

करनेमें मेरा अधिक मनोरंजन होता था और भद्र पुरुषों और महिलाओंसे बातचीत मुझे बहुत नीरस लगती थी। जब मैं समझने-बूझने लायक हुई, मैंने देखा कि जो जीवन हम लोग व्यतीत कर रहे थे बिल्कुल गलत था। मेरे माँ नहीं थी और मुझे अपने पितासे अधिक प्रेम नहीं था इसलिए मैंने घर छोड़ दिया और उन्नीस वर्षकी अवस्थामें अपनी एक संगिनीके साथ कारखानेमें मजदूरी करने चली गयी।"

कारखाना छोड़नेके बाद मेरी पावलोम्ना एक गाँव चली आयी। फिर शहर वापस गयी और एक कमरेमें रहती थी जिसमें एक गुप्त छापाखाना भी था। यहीं यह पकड़ी गयी और इसे कठोर परिश्रमकी सजा मिली। इसके बारेमें उसने कटूशाको कुछ नहीं बताया लेकिन दूसरोंसे कटूशाने सुना कि मेरी पावलोम्नाको सजा इस तरह मिली कि जब कमेटीकी तलाशी हो रही थी, तो किसी क्रान्तिकारीने अँधेरेमें पिस्तौल चलायी। मेरी पावलोम्नाने इस गोली चलानेकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली।

कटूशा ज्यों ज्यों मेरी पावलोम्नाको पहचानती जाती थी, वह देखती थी कि मेरी पावलोम्ना किसी भी स्थितिमें क्यों न हो कभी भी अपने बारेमें नहीं सोचती थी, बल्कि बराबर दूसरोंकी सेवा करनेके लिए तैयार रहती थी। छोटी चीज हो या बड़ी, सबमें दूसरोंकी सहायता करना चाहती थी। उसका एक वर्तमान साथी नवोड्वोरो इसके बारेमें कहा करता था कि मेरी पावलोम्ना तो लोक-सेवाके खेलमें मग्न है और यह बात सही भी थी। उसके जीवनकी सारी दिलचस्पी ही यह थी कि दूसरोंकी सेवा करनेका अवसर तलाश करे जैसे शिकारी शिकार तलाश करता है, और यह शिकार या खेल उसके जीवनका व्यापार तथा स्वभाव हो गया था। और यह सेवा मेरी पावलोम्ना इतने स्वाभाविक ढंगसे करती थी कि जो लोग इसको जानते थे वे इसके प्रति कृतज्ञता नहीं प्रकट करते थे, बल्कि उस सेवाकी तो वे उससे आशा ही रखते थे।

मस्लोवा जब पहले-पहल इन लोगोंमें आयी, मेरी पावलोम्नाको घृणा

हुई। कट्रूशाने यह बात ताड़ ली और मेरी भी समझ गयी कि कट्रूशाने हमारी घृणाको भाँप लिया इसलिए अपने मनको वशमें करके मेरी कट्रूशाके प्रति विशेष रूपसे दयालु हो गयी। ऐसे असाधारण व्यक्तिकी सहानुभूति और दयाको पाकर मस्लोवाके दिलपर इतना असर पड़ा कि उसने अपना दिल खोलकर मेरी पावलोभ्नाके सामने रख दिया और वह अनजाने उसके विचारोंको स्वीकार करने तथा हर एक चीजमें उसका अनुकरण करने लगी। कट्रूशाके अगाध प्रेमसे मेरी पावलोभ्नाका हृदय पसीज गया और उसने भी उसके प्रति सच्चा प्रेम दिखाना चाहा। ये दोनों एक समान ही कामवासनासे घृणा करती थीं। एककी घृणा तो उसके वीभत्स अनुभवोंपर निर्भर थी, दूसरीको कोई अनुभव नहीं था लेकिन मानसिक ढंगसे वह इसे घृणित, मनुष्यकी शानके खिलाफ, तथा कल्पनातीत वस्तु प्रतीत होती थी।

चौथा अध्याय

मस्लोवाके ऊपर मेरी पावलोआका बहुत प्रभाव था। इस प्रभावका कारण यह था कि मस्लोवा मेरी पावलोआसे प्रेम करती थी। मस्लोवाके ऊपर दूसरा प्रभाव साइमनसनका था। इसका कारण यह था कि साइमनसन मस्लोवासे प्रेम करता था।

दुनियाके लोग कुछ हदतक अपने मतके अनुसार, कुछ हदतक दूसरोंके मतानुसार रहते और काम-काज करते हैं। कौन कितना काम अपने मनके अनुसार करता है, कितना दूसरेकी मतिके अनुसार—इसीमें अन्तर हो जाता है। कुछ लोगोंके लिए विचार करना एक प्रकारका मानसिक खेल है। ये लोग अपनी बुद्धिको पनचक्कीके पहियेकी तरह समझते हैं जिसमें पट्टा न लगा हो। दूसरे लोगोंके विचारसे ऐसे लोग रस्मरवाज देखकर तथा कानूनके अनुसार कामकाज करते हैं। कुछ लोग अपने ही विचारोंको अपने कार्योंका मुख्य प्रेरक मानते हैं, अपनी बुद्धिकी आज्ञाको सुनते और उसके अनुसार चलते हैं। और दूसरोंकी राय ये तभी स्वीकार करते हैं जब अच्छी तरह परीक्षा कर लेते और नाप-तौल लेते हैं। साइमनसन इसी किस्मका आदमी था। वह हर एक चीजको अपनी बुद्धिसे परखता और समझता था और जो कुछ निश्चय करता था उसकी पाबन्दी करता था।

विद्यार्थीकी हैसियतमें, अर्थात् जब वह छोटा-सा था, वह इस नतीजे-पर पहुँचा कि पिताजीकी तनख्वाह, जिसे वे एक सरकारी दफ्तरमें खजा-नचीका काम करके पाते हैं, ईमानदारीकी तनख्वाह नहीं है। इसलिए उसने अपने पितासे कहा कि यह तनख्वाह आप लोगोंमें बाँट दीजिये। उसके पिताने यह सलाह तो सुनी नहीं बल्कि उसे डाँटा। इसपर वह घर छोड़कर चला गया। वह पिताकी आमदनीसे कुछ भी लेना नहीं

चाहता था। वह इस नतीजेपर भी पहुँचा कि जितनी वर्तमान बुराइयाँ हैं उनकी जड़में जनताका अज्ञान है इसलिए यूनिवर्सिटी पास करनेके बाद वह लोकदलमें शामिल हो गया और देहाती स्कूलमें पढ़ाने लगा। अपने विद्यार्थियों और किसानोंको यह खुल्लम-खुल्ला निडर होकर जो न्यायपूर्ण होता उसे न्यायपूर्ण कहता और जो अन्यायपूर्ण होता उसे अन्यायपूर्ण।

वह गिरफ्तार कर लिया गया और उसपर मुकदमा चलाया गया। मुकदमेके मध्यमें वह इस नतीजेपर पहुँचा कि मुझे दण्ड देनेका मजिस्ट्रेट लोगोंको कोई अधिकार नहीं है। उसने मजिस्ट्रेटोंसे यह बात बता दी और जब मजिस्ट्रेटोंने उसकी बातकी कोई पर्वाह न की और उन्होंने मुकदमेकी कारवाई जारी रखी, तो साइमनसनने अदालतके प्रश्नोंका उत्तर देना बन्द कर दिया और अदालतकी तरफसे अगर कोई प्रश्न होता तो वह दृढ़तापूर्वक चुपचाप बैठा रहता।

इसे आर्केंजिल प्रान्तमें निर्वासित कर दिया गया। यहाँ इसने एक नया संप्रदाय बनाया, जिसके सिद्धान्तोंके अनुसार वह अपनी सारी प्रवृत्ति चलाता था। इस सम्प्रदायका सिद्धान्त यह था कि दुनियामें जितनी चीजें हैं, सजीव हैं, कोई चीज मुर्दा नहीं और जिन चीजोंको हम निर्जीव समझते हैं वे वास्तवमें एक विशाल सजीव संगठित शरीरके अंग हैं जिसको हम नहीं समझ सकते। आदमीका कर्तव्य यह है कि इस विशाल शरीरके अंगकी हैसियतको, इस विशाल शरीरको तथा इसके हर एक अंगको सजीव बनाये रखे और इसलिए वह जान मारना पाप समझता था। युद्ध, फाँसी और हरएक किस्मकी हत्याके, चाहे वह आदमीकी हो या जानवरोंकी, वह खिलाफ था। विवाहके संबंधमें भी उसका अपना विचार था। वह समझता था कि संतानोत्पत्ति मनुष्यकी एक घटिया प्रवृत्ति है। वर्तमान जीवित प्राणियोंकी सेवाको वह इससे श्रेष्ठतर प्रवृत्ति मानता था। अपने इस सिद्धांतके समर्थनमें उसको यह बात मिल गयी कि मनुष्यके रक्तमें सफेद रंगके ऐसे जीवाणु पाये जाते हैं जो

मनुष्यकी स्वास्थ्य-रक्षाके लिए रोगके कीटाणुओंको नष्ट करते रहते हैं। उसके मतानुसार ब्रह्मचारी इन्हीं सफेद कीटाणुओंके समान हैं, जिनका कर्तव्य है शरीरके दुर्बल और रुग्ण अंगकी रक्षा करना। जिस क्षणसे वह इस नतीजेपर पहुँचा था, उसने अपना जीवन इसी सिद्धान्तके अनुसार बना लिया था यद्यपि जवानीमें वह बिगड़ गया था। वह अपनेको और मेरी पावलोभ्नाको मनुष्यरूपी रक्तका सफेद कीटाणु समझता था।

कटूशाके प्रति साइमनसनका प्रेम इस सिद्धान्तकी मर्यादाका उल्लंघन नहीं करता था। क्योंकि उसका प्रेम इसके प्रति निष्काम था और उसके मतानुसार ऐसा प्रेम उसकी प्रवृत्तियोंको, जिन्हें वह मनुष्य-समाजमें रक्तके सफेद कीटाणुओंके समान करना चाहता था, विघ्नकारी होनेके बजाय उत्तेजक हो सकता है।

साइमनसन अपने नैतिक प्रश्नोंको ही नहीं बल्कि अपने व्यावहारिक प्रश्नोंको भी अपने ही ढंगसे तय करता था। उसने अपने सारे व्यावहारिक कामोंके सम्बन्धमें अपने नियम बना रखे थे। कितने घंटे काम करना चाहिये, कितने घंटे आराम करना चाहिये, कौन सी चीज खानी चाहिये, कौन सा कपड़ा पहनना चाहिये, किस चीजका चूल्हा जलाना चाहिये और किस चीजका चिराग जलाना चाहिये—इन सब बातोंके उसने नियम बना रखे थे।

यह सब होते हुए भी साइमनसन शर्मीला और झेंपनेवाले स्वभावका आदमी था। लेकिन वह किसी बातका इरादा कर लेता था तो उससे डिगता नहीं था। कोई चीज उसे अपने निश्चयसे हिला नहीं सकती थी।

और इस आदमीका, अपने प्रेमके नाते, मस्लोवाके ऊपर खासा प्रभाव था। स्त्रीकी नैसर्गिक बुद्धिसे मस्लोवाने बहुत जल्द यह जान लिया कि साइमनसन उसे प्रेम करता है और इस बातका अनुभव करके कि साइमनसन ऐसे आदमीमें वह प्रेमका अंकुर जाग्रत कर सकती है, स्वयं अपनी नजरोंमें उसकी इज्जत बढ़ गयी। नेख्लीडू तो अपनी उदार-हृदयताके कारण तथा अतीतकी घटनाओंको देखकर उससे विवाह

करना चाहता था लेकिन साइमनसन उसके वर्तमानको देखकर उससे प्रेम करता था। वह यह भी समझती थी साइमनसन मुझे एक विशेष उच्च नैतिक गुणोंसे संपन्न असाधारण स्त्री मानता है। यह तो वह नहीं समझ सकती थी कि वे विशेष गुण कौन-कौन हैं जिनको देखकर साइमनसन उसके ऊपर मुग्ध हो रहा है, लेकिन इस विचारसे कि कहीं साइमनसनको मुझसे निराशा न पैदा हो जाय, मस्लोवा अपनेमें अपनी सारी शक्ति लगाकर समस्त श्रेष्ठतम गुणोंको जिनकी वह कल्पना कर सकती थी, जाग्रत करनेकी कोशिश करती थी और जितनी अच्छी बन सकती थी, बननेका प्रयत्न करती रहती थी।

यह बात तभीसे शुरू हो गयी थी जब ये दोनों जेलमें ही थे। एक दिन मुलाकातके समय मस्लोवाने देखा था कि साइमनसन अपनी उभरी हुई भौंहोंके नीचे मृदुल गहरी नीली आँखोंसे उसकी तरफ एकटक देख रहा है। उसी समय मस्लोवाने यह भी देख लिया था कि यह विचित्र आदमी मालूम होता है और उसकी ओर विचित्र ढंगसे देख भी रहा है। मस्लोवाको इसकी आकृतिमें बिखरे हुए बालों और बल खायी हुई भावोंसे पैदा होनेवाली कठोरता तथा बच्चों-ऐसी दयालुता और निष्कलंकताका सम्मिश्रण दिखाई दिया था। इसके बाद मस्लोवाने इसे टोमस्कमें देखा जहाँ यह राजनीतिक कैदियोंके साथ सम्मिलित की गयी थी। और यद्यपि दोनोंमें एक बात भी नहीं हुई फिर भी दृष्टि-विनिमय होते ही इनको पुरानी भेंट याद आ गयी और दोनोंने यह स्वीकार कर लिया कि हम एक दूसरेके लिए महत्त्व रखते हैं। इसके बाद भी इन लोगोंमें कोई गंभीरतापूर्वक बातचीत नहीं हुई। लेकिन मस्लोवा यह देखती थी कि साइमनसन जब कभी इसकी मौजूदगीमें कुछ कहता तो उसके वाक्य इसीके लिए होते थे। वह इसीके निमित्त बातचीत करता और अपने विचारोंको इसके सामने साफ-साफ प्रकट करना चाहता था। जबसे साइमनसनने साधारण कैदियोंके साथ पैदल चलना शुरू किया तबसे ये दोनों एक दूसरेके विशेष निकट आ गये।

पाँचवाँ अध्याय

जत्थेके पर्म नगरसे चलनेके पहले नेखलीडूको दो बार कटूशासे मिलनेका मौका मिला। एक बार निजनी नवगोरदमें—जहाँ कैदियोंको एक बड़ी नावपर, जिसके चारों ओर तारकी जाली लगा दी गयी थी, चिड़ियोंकी तरह भर दिया गया था—नावके चलनेके पहले वह कटूशासे मिला था। दूसरी बार जेलखानेके दफ्तरमें पर्ममें मिला था। इन दोनों मौकोंपर उसने देखा था कि कटूशाका रुख कुछ गम्भीर और कठोर है। नेखलीडूके इन प्रश्नोंका कि "आरामसे हो? कुछ चाहिये तो नहीं?" कटूशाने झेंपते हुए टालमटोलका उत्तर दिया था। नेखलीडूको ऐसा मालूम हुआ कि मस्लोवा मेरे प्रति कुछ विरोधकी भावना दिखा रही है, जैसी पहले कई बार दिखा चुकी है। उसकी उदास मनोदशा— जो कि उस समय पुरुषोंकी छेड़छाड़के कारण पैदा हो गयी थी—नेखलीडूको बहुत कष्ट दे रही थी। उसे यह डर था कि कहीं ऐसा न हो कि इस कठोर और पतित परिस्थितिमें पड़कर, जो इस यात्राके बीच उसके सामने पैदा हो गयी है, मस्लोवा फिर उसी निराशा और आत्मग्लानिके दलदलमें फँस जाय जिसमें पड़कर इसके पहले वह चिड़चिड़ी हो गयी थी और अपने पतनको भूल जानेके लिए उसने शराब और तम्बाकू पीना शुरू कर दिया था। लेकिन यात्राके इस भागमें नेखलीडू उसकी कोई सहायता नहीं कर सकता था; क्योंकि उससे मुलाकात ही नहीं होती थी। लेकिन जब मस्लोवा राजनीतिक कैदियोंके साथ कर दी गयी तब नेखलीडूने देखा कि जिस वजहसे वह डर रहा था, बिल्कुल नहीं पायी जाती थी। वह जब जब मस्लोवासे मिलता था, देखता था कि वह आन्तरिक उन्नति—जो नेखलीडू चाहता था कि मस्लोवाके हृदयमें पैदा हो—दिनपर दिन अधिकाधिक स्पष्ट होती जाती

थी। पहली बार जब नेख्लीडू मस्लोवासे टोमस्कमें मिला, उसकी वही दशा थी जो मास्कोसे चलते समय थी। नेख्लीडूसे मिलकर न तो उसने त्यौरियाँ चढ़ायीं और न वह हकबकायी बल्कि बड़ी हँसी-खुशीसे उससे मिली और उसको अधिक सहायता करनेके कारण धन्यवाद दिया, विशेषकर इसलिए कि उसने उसे ऐसे आदमियोंमें पहुँचा दिया जिनमें वह आजकल रह रही थी।

जत्थेके साथ दो महीने पैदल चलनेके बाद मस्लोवाके हृदयका परिवर्तन उसकी आकृतिसे भी प्रकट होने लगा। धूपसे उसका रंग गहरा हो गया था; वह दुबली पड़ गयी थी तथा कुछ प्रौढ़ मालूम पड़ने लगी थी। उसकी कनपटीपर तथा मुँहके चारों तरफ कुछ झुर्रियाँ आ गयी थीं। माथेपर अब वह केशोंका चन्द्राकार नहीं था। उसने अपने सरके बालोंको रूमालसे अच्छी तरह बाँध रखा था। बालोंके बाँधनेके ढंगमें तथा इसकी पोशाक और चाल-ढालमें हाव-भाव या चंचलताका कोई चिह्न नहीं था। और यह परिवर्तन मस्लोवामें बराबर जारी था जो नेख्लीडूके लिए अत्यन्त आनन्ददायक था।

नेख्लीडूकी भावना मस्लोवाके प्रति अब ऐसी हो गयी थी जैसी पहले कभी नहीं थी। यह भावना उस प्रकारकी नहीं थी जैसी उस समय पैदा हुई थी जब पहले पहल उसने कटूशासे प्रेम किया था और निःसन्देह वह उस प्रकारकी भावना कदापि नहीं थी जो उस प्रेमके बाद सकाम प्रेमके रूपमें प्रकट हुई थी। इस समयकी भावना उस प्रकारकी भी भावना नहीं थी जो मुकदमेके बाद नेख्लीडूके दिलमें पैदा हुई थी जब उसने मस्लोवाके साथ विवाह करनेका विचार किया था और उसको इस कारण सन्तोष हुआ था कि मैंने अपने कर्तव्यका पालन किया। यह सन्तोष आत्मश्लाघासे अमिश्रित नहीं था। नेख्लीडूके हृदयमें मस्लोवाके प्रति पैदा होनेवाली वर्तमान भावना दया और करुणाकी थी। यह भावना उसके दिलमें उस समय पैदा हुई थी जब वह उससे पहले पहल मिला था। दूसरी बार तब पैदा हुई थी जब छोटे डाक्टरसे

अस्पतालमें सम्बन्ध जोड़नेवाली बात सुनकर घृणाको वशमें करनेके बाद उसने मस्लोवाको क्षमा कर दिया था (नेख्लीडूने उस समय मस्लोवाके साथ जो अन्याय किया था, अब उसे मालूम हो गया था) उसी प्रकारकी भावना आज नेख्लीडूके दिलमें पैदा हुई—अन्तर केवल इतना था कि पहले यह भावना क्षणिक थी, अब स्थायी रूपसे उदित हुई। उसके सारे विचारों और कामोंमें दया और करुणा तथा अहिंसाकी यह भावना बराबर मौजूद रहती थी और यह भावना सिर्फ मस्लोवाके ही प्रति नहीं थी बल्कि सारे संसारके प्रति थी। इस भावनाने मानो प्रेमकी धाराका मुँह खोल दिया था जो उसके हृदयमें अभीतक बन्द थी। अब यह प्रेम जोरोंसे बह रहा था और जिस किसीसे मिलता था, वह प्रकट हो जाता था।

इस सफरमें नेख्लीडूकी अहिंसाकी यह भावना इतनी उत्तेजित थी कि वह हरएक आदमीके—क्या कोचवान, क्या गारदके सिपाही, क्या जेलके इन्स्पेक्टर, क्या गवर्नर जिस किसीसे उसे व्यवहार करना पड़ता था, सबके—दिलको सन्तोष देनेकी तथा उनसे प्रेमके साथ व्यवहार करनेकी पूरी पूरी कोशिश कर रहा था।

अब मस्लोवा राजनीतिक कैदियोंमें आकर रहने लगी तो स्वभावतः उसका परिचय अनेक राजनीतिक कैदियोंसे भी हो गया। परिचयका पहला अवसर एकाटरिनबर्गमें मिला। यहाँ इन लोगोंको पर्याप्त स्वाधीनता थी और ये सब एक ही कोठरीमें रखे गये थे। दूसरा मौका सड़कपर मिला जब मस्लोवा चार आदमियों और चार स्त्रियोंके साथ पैदल चल रही थी। राजनीतिक निर्वासितोंके सम्पर्कमें आनेके बाद नेख्लीडूने उनके बारेमें अपना विचार बिल्कुल बदल दिया।

रूसमें क्रान्तिकारी आन्दोलनके आरम्भसे ही, विशेषकर पहली मार्चसे, जब कि द्वितीय अलेक्जेण्डरकी हत्या हुई थी, नेख्लीडू क्रान्तिकारियोंको घृणासे देखता था। इनकी निर्दयता और छिपकर तथा गुप्त रूपसे गवर्नरके खिलाफ संग्राम करनेकी प्रथासे यह बहुत असन्तुष्ट था।

हत्या करनेमें ये लोग जो निर्दयता दिखाते थे उसे यह बहुत बुरा समझता था। जो शान और आत्मगौरव क्रान्तिकारियोंमें पाया जाता था वह इसे और भी अरुचिकर था। लेकिन नेख्लीडूकी इनसे घनिष्ठता हो गयी और उसे यह मालूम हुआ कि गवर्मेंटने इनको कितना कष्ट पहुँचाया है। उसने यह राय बना ली कि क्रान्तिकारियोंके लिए कोई दूसरा रास्ता था ही नहीं।

साधारण कैदियोंपर जो अत्याचार होते थे वे भयंकर और निरर्थक हुआ करते थे। लेकिन सजा देनेके पहले और उसके बाद इनके प्रति जो व्यवहार होता था उसमें कमसे कम न्यायका प्रदर्शन तो जरूर होता था। परन्तु राजनीतिक कैदियोंके सिलसिलेमें न्यायका प्रदर्शन भी नहीं किया जाता था, जैसा कि नेख्लीडूने शुस्तोवा और अपने दूसरे परिचितोंके मुकदमेमें देखा। इन लोगोंके साथ वही वर्ताव किया जाता था जो जालमें फँसी हुई मछलीके साथ किया जाता है। जालमें जो कुछ आता है वह पहले किनारेपर निकाल लिया जाता है। इसके बाद बड़ी बड़ी मछलियाँ एक तरफ कर दी जाती हैं और छोटी मछलियोंको वहीं किनारेपर मरनेके लिए छोड़ दिया जाता है। सैकड़ों निरपराधोंको, जो कि किसी तरहसे खतरनाक नहीं हो सकते थे, पकड़ कर गवर्मेंटने बरसोंतक जेलमें बन्द रखा जहाँ वे क्षयसे पीड़ित हो गये या पागल हो गये या इन्होंने आत्महत्या कर ली। इनको जेलमें केवल इसलिए रखा गया कि सरकारी अफसरोंको इन्हें छोड़नेके लिए कोई प्रेरणा नहीं थी। वे समझते थे कि अगर इनको जेलमें बन्द रखा जायेगा तो किसी तहकीकातमें मुमकिन है इनसे कोई इत्तिला या खबर या नयी बात मालूम हो सके। इन आदमियोंकी किस्मत, जो अक्सर गवर्मेंटकी भी दृष्टिमें निरापराध होते थे, पुलिस-अफसर या जासूस या सरकारी वकील या मजिस्ट्रेट या गवर्नर या मिनिस्टरकी सनक अथवा मर्जी या छुट्टीपर निर्भर रहा करती थी। इन अफसरोंमें से किसीकी तबीयत घबरायी या उसने अपनेको प्रसिद्ध करना चाहा, चटपट कुछ आदमियोंको गिरफ्तार कर

लिया, उनको जेलमें भेज दिया या जैसा उसका या उसके अफसरका जी चाहा, कैद कर दिया या छोड़ दिया। और यह बड़ा अफसर इसी प्रकारके किसी अभिप्रायसे प्रेरित हो या किसी मन्त्री (मिनिस्टर) के प्रभावके कारण इन आदमियोंको संसारके दूसरे छोरमें निर्वासित कर देता है, या उनको अकेला बन्द कर देता है, साइबेरिया भेज देता है, कठोर परिश्रम कराता है, फाँसी दे डालता है या किसी स्त्रीके कहनेसे छोड़ देता है।

इनके साथ वही बर्ताव किया गया जो लड़ाईमें शत्रुके साथ किया जाता है। इसलिए इन्होंने भी स्वभावतः उन्हीं साधनोंका उपयोग किया। जिस प्रकार सैनिक लोग ऐसे लोकमतके वातावरणमें रहते हैं जिसमें न केवल उनके कर्मोंका अपराध उनसे छिप जाता हो बल्कि उनके ये कर्म वीरतापूर्ण और कीर्तिकर बताये जाते हैं इसी प्रकार राजनीतिक अपराधी लोकमतके ऐसे वातावरणसे बराबर घिर रहते हैं जिसमें खतरेसे निडर होकर अपनी जान, अपनी स्वतन्त्रता और अपनी समस्त प्रिय चीजोंको हथेलीपर लेकर अगर इन्होंने कोई निर्दयतापूर्ण काम कर डाला तो वह इनको दूषित नहीं बल्कि कीर्तिकर मालूम होने लगता है। नेखली-दूको यह बात इस आश्चर्यजनक प्रश्नकी कुञ्जी मालूम हुई कि आखिर बात क्या है कि कोमलसे कोमल चरित्रके आदमी, जो किसी प्राणीके कष्टको देख तक नहीं सकते—कष्ट पहुँचानेकी कौन कहे—स्थिर चित्तसे आदमीका गला काटनेके लिए तैयार हो जाते हैं। लगभग सभी क्रान्ति-कारी विशेष अवसरोंपर हत्या करनेको न्यायपूर्ण और नियमानुकूल समझते हैं। आत्मरक्षाके लिए, उच्च ध्येयोंकी प्राप्तिके लिए, और सार्व-जनिक हितके लिए, इसको उचित समझते हैं। क्रान्तिकारी लोग अपने ध्येयको और इसलिए अपनेको इस कारण महत्त्व देते थे कि गवर्मेंट इनकी प्रवृत्तियोंको महत्त्व देती थी और इनको कड़ी सजा देती थी। इनको अपने विषयमें बहुत ऊँची राय इसलिए बना लेनी पड़ती थी कि इनको जो कष्ट दिये जाते थे उन्हें ये सह सकें।

जब नेख्लीडू इनको अच्छी तरह समझ गया तो उसे पूरा विश्वास हो गया कि ये लोग न तो पक्के बदमाश होते हैं जैसा कुछ लोग समझते हैं, और न महापुरुष जैसा कि दूसरोंका खयाल है। बल्कि ये लोग साधारण मनुष्य होते हैं जिनमें अच्छे, बुरे और मध्यम श्रेणीके आदमी भी होते हैं।

इनमेंसे कुछ लोग क्रान्तिकारी दलमें इसलिए शामिल हुए थे कि वे वर्तमान बुराइयोंके खिलाफ युद्ध करना सच्चे दिलसे अपना कर्तव्य समझते थे लेकिन उनमेंसे कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने यह प्रवृत्ति स्वार्थपूर्ण कीर्ति और प्रतिष्ठाकी इच्छासे ग्रहण की थी। अधिकांश लोग क्रान्तिकारी दलमें खतरेकी प्याससे प्रेरित होकर आते हैं। अपनी जिन्दगीसे खेलनेका आनंद और जोखिममें पड़नेकी लालसा इनको इस ओर खींच ले जाती है। नेख्लीडूको अपने सैनिक अनुभवसे स्वयं मालूम था कि ये भावनाएँ अत्यन्त साधारण आदमियोंमें, जब वे नौजवान और उत्साहसे परिपूर्ण होते हैं, यथेष्ट पायी जाती हैं। लेकिन साधारण पुरुषोंसे इनमें एक बात अच्छी होती है। वह यह कि इनके नैतिक सिद्धान्त ऊँचे होते हैं। ये लोग यह मानते हैं कि न केवल कठोर जीवन, सत्य, निःस्वार्थता और आत्म-निग्रह इनका कर्तव्य है बल्कि लोकहितके लिए हर एक चीजका—अपने प्राण तकका—बलिदान करनेके लिए तैयार रहना ये अपना कर्तव्य मानते हैं। इसलिए इनमेंसे कुछ तो अपने नैतिक जीवनमें इतने ऊँचे होते थे कि अक्सर लोग इतनी ऊँचाईपर नहीं पहुँचते, लेकिन बहुतसे ऐसे भी थे जो दंभी और झूठे तथा अहंकारी और अभिमानी होते थे। इसलिए नेख्लीडूने अपने नये परिचितोंमें कुछ लोगोंकी प्रतिष्ठा करना शुरू किया और उनसे वह हार्दिक प्रेम भी करने लगा। लेकिन दूसरोंके प्रति उसकी भावना उदासीनतायुक्त, किन्तु अधिक असहानुभूति-व्यंजक थी।

छठाँ अध्याय

नेख्लीडू क्रिलसवसे विशेष प्रेम करने लगा। इस नौजवानको कठोर परिश्रमकी सजा हुई थी। इसे क्षयका रोग था, लेकिन यह उसी दलमें था जिसमें कटूशा थी। नेख्लीडूका परिचय इससे एकाटरिनबर्गमें हुआ था और इसके बाद उसने सड़कपर इससे कई बार बातचीत की थी। गर्मीके दिनोंमें एक बार तो नेख्लीडूने एक पड़ावपर इसके साथ सारा दिन बिताया। क्रिलसवने इसको अपना सारा जीवन-वृत्तान्त सुनाया था। उसने अपने क्रान्तिकारी बननेका किस्सा भी बताया था। गिरफ्तारीतककी इसकी कहानी बहुत जल्द समाप्त हो गयी। जब यह बच्चा ही था तभी इसका पिता, जो दक्षिणी रूसका एक धनी जमींदार था, मर गया। यह इसका इकलौता लड़का था। इसकी माँने इसको पाला-पोसा था। स्कूल और कालिज दोनोंमें यह आसानीसे पास हो गया। गणितमें यह उस साल प्रथम आया था। यूनिवर्सिटीने इसे विदेशमें जाकर अध्ययन करनेके लिए वजीफा देना चाहा, लेकिन यह जल्द निश्चय न कर सका। यह एक लड़कीसे प्रेम करता था और विवाहका विचार कर रहा था। ग्रामीण शासनमें भी यह कुछ करना चाहता था। यह बहुत सी बातें करना चाहता था इसलिए निश्चय न कर सका कि कौन सा रास्ता पकड़े। इसी अवसर पर यूनिवर्सिटीके कुछ विद्यार्थियोंने, एक सार्वजनिक कामके लिए, इससे चन्दा माँगा। यह जानता था कि यह सार्वजनिक काम क्रान्तिकारी काम है जिसमें उसको उस समय तनिक भी दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन मित्रता और अभिमानमें आकर इसने चन्दा दे दिया जिसमें लोग यह न समझें कि वह डर गया। चन्दा लेनेवाले पकड़ गये। उनके पास एक कागज मिला जिससे सिद्ध हुआ कि क्रिलसवने चन्दा दिया है। यह गिरफ्तार किया जाकर पहले थानेमें लाया गया और बादको जेल भेज दिया गया।

"इस जेलमें ज्यादा सख्ती नहीं थी।" क्रिलसवने कहना शुरू किया (यह ऊँचे पलँगपर अपनी कुहनी अपने घुटनेपर रखे, सीना झुकाये हुए, नेख्लोडूको अपनी सुन्दर आँखोंसे, जो बुखारके कारण चमक रही थीं, देख रहा था) । हम लोगोंको आपसमें बातचीत करनेका भी मौका मिल जाता था और दूसरे तरीकेसे भी । जैसे दीवाल खटखटाकर हम बात कर लेते थे । दालानोंमें फिरते रहते थे । खाने-पीनेका सामान और तम्बाकू वगैरह सबकी एकमें रहा करती थी । शामको हम लोग मिलकर गाते भी थे । मेरी आवाज उस समय बड़ी अच्छी थी । केवल माताजीके कारण—जिनको बड़ा दुःख हुआ—मैं इन सब सुविधाओंमें भी दुखी रहता था । यहाँ मेरा परिचय पेट्रफसे हुआ जिसका नाम आपने सुना होगा । इसने कुछ दिनके बाद किलेमें, शीशेके एक टुकड़ेसे, अपनी जान दे दी । यहीं औरोंसे भी परिचय हुआ । लेकिन उस समयतक मैं क्रान्तिकारी नहीं बना था । मेरी कोठरीके पास दो पड़ोसी और थे । इनसे भी मेरा परिचय हो गया । ये दोनों एक ही मामलेमें पकड़े गये थे । गिरफ्तारीमें इनके पास पोलिश घोषणा निकली थी । इनके ऊपर इस बातके लिए मुकदमा चला था कि रेलवे स्टेशन आते हुए इन्होंने गारदकी सुपुर्दगीसे भागनेकी कोशिश की थी । इनमेंसे एक पोल था जिसका नाम लोजिस्की था और दूसरा रोजोवस्की नामका यहूदी था । यह रोजोवस्की बिल्कुल लड़का था । वह कहता तो यह था कि मैं सत्रह वर्षका हूँ पर देखनेसे पन्द्रह वर्षका ही मालूम होता था । दुबला-पतला, फुर्तीला, चमकदार आँखें, जैसी यहूदियोंकी होती हैं, और बड़े मधुर कण्ठका था । अभी इसकी आवाज फूटी नहीं थी, फिर भी यह बहुत अच्छा गाता था । मेरी आँखोंके सामने ये दोनों, मुकदमेके लिए, अदालतमें पहुँचाये गये । सुबहको ये लोग गये, शामको लौट आये और आकर बोले कि हम दोनोंको फाँसीकी सजा हो गयी । किसीको इस बातकी कल्पनातक नहीं थी । इनके मुकदमेमें कोई महत्त्व भी नहीं था । इनपर केवल इतना जुर्म था कि ये गारदकी सुपुर्दगीसे भागे थे । इन्होंने

किसीको घायल भी नहीं किया था और फिर रोजोवस्की जैसे बच्चेको फाँसीपर लटकाना कितना अस्वाभाविक था। हम सभी लोगोंका, जो जेलमें थे, यह खयाल हो गया कि यह सजा सिर्फ डरानेके लिए दी गयी है, बड़ी अदालत इस फैसलेकासमर्थन न करेगी। पहले तो हम लोग कुछ उत्तेजित हुए, लेकिन बादको अपने हृदयोंको शान्त किया और जीवन पूर्ववत् बीतने लगा। फिर क्या हुआ कि एक दिन शामको एक चौकी-दार मेरे दर्वाजेपर आया और मुझसे बहुत ही गुप्त रूपसे कहने लगा कि बढ़ई आया है और फाँसीके तख्ते तैयार कर रहा है। पहले तो मैं नहीं समझा 'कैसे तख्ते ? फाँसीके ?' लेकिन बुड्ढा चौकीदार इतना घबराया हुआ था जिससे मैं समझ गया कि ये फाँसीके तख्ते हमारे इन दोनों आदमियोंके लिए बन रहे हैं। मैंने सोचा कि दीवाल खटखटाकर अपने साथियोंको यह खबर सुना दूँ लेकिन मुझे यह डर था कि ये दोनों भी न सुन लें। और साथी भी सब चुप थे। असलमें यह बात सबको मालूम थी। दालानमें और कोठरीमें उस शामको मुर्दनी छायी हुई थी। उस सन्ध्याको हम लोगोंने न तो दीवार खटखटायी और न गाया। दस बजे चौकीदार फिर आया। उसने बताया कि मास्कोसे जल्लाद आ गया। यह कहकर वह चला गया। मैंने उसको पुकारना चाहा लेकिन मैंने फौरन सुना कि रोजोवस्की मुझे पुकार रहा है—'क्या मामला है ? तुम उसे क्यों बुला रहे हो ?' मैंने उत्तर दिया कि 'तम्बाकू मँगानेके लिए पुकार रहा हूँ।' लेकिन वह ताड़ गया। मुझसे पूछने लगा कि आज रातको गाना क्यों नहीं हुआ ? दीवारोंको खटखटाकर बातचीत क्यों नहीं हुई ? मुझे याद नहीं कि मैंने क्या जवाब दिया, लेकिन मैं पीछे हट आया जिसमें उससे बात न करनी पड़े। बड़ी भयंकर रात थी। मैं रातभर जागता रहा और कहीं भी कोई खटपट होती तो मैं जरूर सुनता। एकाएक सबेरा होते होते मैंने सुना कि मानो दर्वाजे खुल रहे हैं और कोई टहल रहा है। बहुतसे आदमियोंके टहलनेकी आवाज सुनाई दी। मैं अपने दर्वाजेके सूराखमें जाकर देखने लगा। दालानमें

एक लैम्प जल रहा था। पहले इन्स्पेक्टर साहब आये। ये बड़े मोटे-ताजे, दृढ़ और आत्मविश्वासी प्रकृतिके आदमी थे, लेकिन इस समय इनका चेहरा पीला पड़ गया था। बिल्कुल उदास और भयभीत मालूम होते थे। इसके बाद इनका नायब आया। ये भी उदास थे लेकिन इनके चेहरेसे दृढ़ता प्रकट होती थी। सबसे पीछे चौकीदार था। ये सब हमारे दर्वाजेसे होकर दूसरे दर्वाजेपर जाकर खड़े हो गये और नायबने एक विचित्र आवाजमें पुकारा—'लोजिंस्की उठो और साफ कपड़े पहन लो।' इसके बाद मैंने सुना दर्वाजा चरमराया। ये लोग कोठरीमें घुसे। इसके बाद मैंने लोजिंस्कीके कदमकी खटपट सुनी। वह दालानके उस तरफ जा रहा था। मुझे सिर्फ इन्स्पेक्टर ही दिखाई दिया। वह बिल्कुल पीला हो रहा था। कभी अपने कोटके बटन बन्द करता और कभी खोलता था। वह अपना कन्धा बराबर उठाता और बैठाता था। हाँ, इसके बाद यह हुआ कि इन्स्पेक्टर साहब उस जगहसे टल गये मानो डरकर टले हों। असलमें लोजिंस्की उनके पाससे होता हुआ मेरे दर्वाजेकी तरफ आ गया। यह एक सुन्दर युवक था, और आप जानते हैं कि अच्छे खानदानके पोलिश जैसे होते हैं, इसके कन्धे चौड़े, इसके सरपर सुन्दर घूँघरवाले बाल थे जो टोपीकी तरह मालूम होते थे। सुन्दर नीली आँखें थीं। कितना स्वस्थ फूलकी तरह खिला हुआ! मेरे दर्वाजेके सामने खड़ा हो गया और मैं इसके चेहरेको अन्दरसे अच्छी तरह देख सकता था। यह चेहरा भयंकर, मुर्झाया हुआ, सूखा और बिल्कुल स्याह हो गया था। 'क्रिलसव!' उसने पुकारकर कहा 'तुम्हारे पास कोई सिगरेट है?' मैं उसको सिगरेट देना चाहता था पर नायबने जल्दीसे अपना सिगरेट-केस निकालकर उसे दे दिया। उसने एक सिगरेट ले लिया। नायबने दियासलाई जलायी, उसने सिगरेट जलाया और पीने लगा। वह कुछ सोचता हुआ प्रतीत होता था। इसके बाद ऐसा मालूम हुआ मानों उसे कोई बात याद आ गयी हो। वह बोलने लगा—'बड़ा जुल्म है, बड़ा अन्याय है, मैंने कोई अपराध नहीं

किया । मैं—।' मैंने देखा कि उसके सफेद कण्ठमें कुछ कँपकँपी-सी पैदा हो गयी और मेरी आँखें उसीपर एकटक लगी रह गयीं, लेकिन वह चुप हो गया । उसी समय मैंने रोजोवस्कीको ऊँची यहूदी आवाजमें चिल्लाते हुए सुना । लोजिंस्कीने सिगरेट फेंक दिया और दर्वाजेके सामनेसे हट गया और अब रोजोवस्की मेरे दर्वाजेके सामने आ गया । इसके बच्चे ऐसे चेहरेकी निर्मल काली आँखें लाल और भीगी हुई थीं । इसने भी सफेद कपड़ा पहन लिया था । इसका पायजामा जरा बड़ा था जिसे यह बार बार उसकाता रहता था और काँप रहा था । यह अपना दयनीय चेहरा मेरे दर्वाजेके सूराखके पास लाया और पूछने लगा—'किलसव ! क्या यह सच बात है कि डाक्टरने हमारे लिए खाँसीकी दवा लिखी है ? मेरी तबीयत अच्छी नहीं है । मैं एक-दो खुराक और दवा खाना चाहता हूँ ।' और वह हक्का-बक्का होकर कभी मुझे कभी इन्स्पेक्टरको देखने लगा । फिर नायबने एकदम अपनी आकृति कठोर बना ली और जोरसे चिल्लाकर कहा—'क्या मजाक है ? चलो ।' रोजोवस्की यह बात समझनेमें असमर्थ था कि उसके सामने क्या है । वह तेजीसे दालानमें बढ़ने लगा । इसके बाद वह ठिठका और तब मैंने उसकी तीक्ष्ण आवाज और उसकी रुलाई सुनी । पैरकी धबधबाहट और भनभनाहट सुनाई दी । वह सिसक रहा था और चीख रहा था । आवाज़ धीरे धीरे धीमी पड़ने लगी । अन्तमें दर्वाजा खड़खड़ाकर बन्द हो गया और सब शान्ति हो गयी...ये लोग फाँसीपर लटका दिये गये। रस्सीसे दोनोंका गला घोंट दिया गया । दूसरे चौकीदारने फाँसी होते देखी थी । उसने मुझसे बताया कि लोजिंस्की तो चुपचाप फाँसीके तख्तेपर चला गया लेकिन रोजोवस्कीने बहुत देरतक खींचातानी की इसलिए ये लोग टिकठीतक इसे खींचकर ले गये और जबर्दस्ती पकड़कर इसका गला फन्देमें डाला । यह चौकीदार कुछ बेवकूफ-सा था । यह कहने लगा 'हुजूर ! लोग मुझसे कहते थे कि फाँसी बड़ी भयंकर होती है, लेकिन यह जरा भी भयंकर न थी । जब ये दोनों लटकाये गये तो बस दो बार इन लोगोंने अपना कन्धा इस तरहसे

झटका—चौकीदारने अपने कन्धेको उसी तरहसे झटका देकर दिखा दिया—इसके बाद जल्लादने रस्सी तनिक और खींची जिसमें फन्दा जरा और कस जाय। वे दोनों झूल गये और फिर न हिले न डुले'।"

और क्रिलसवने चौकीदारके शब्द फिर दुहराये "बिल्कुल भयंकर नहीं थी।" और मुस्कराना चाहा लेकिन इसके बजाय उसको सिसकियाँ आने लगीं। बहुत देरतक यह कहानी सुनानेके बाद क्रिलसव चुप रहा। वह लम्बी लम्बी साँस लेता और सिसकियोंको, जो उसके गलेको अवरुद्ध कर रही थीं, दबानेकी कोशिश कर रहा था।

"उस समयसे मैं क्रान्तिकारी हो गया।" उसने कहा और वह जब कुछ और शान्त हुआ तो उसने अपना किस्सा कुछ शब्दोंमें समाप्त कर दिया।

यह नरोडोवोल्सवका रहनेवाला था और 'भयंकर दल' का मुखिया था जिसका उद्देश्य यह था कि गवर्मेंटको इतना भयभीत किया जाय कि वह आप ही आप इस्तीफा दे दे। इस उद्देश्यके संबंधमें वह पीटर्सबर्ग, कीफ और ओडेसा गया और विदेशोंकी भी खाक छानी। सब जगह यह सफल हुआ लेकिन एक आदमीने, जिसपर इसे पूरा भरोसा था, इसके साथ विश्वासघात किया। यह गिरफ्तार हो गया। इसपर मुकदमा चला और जेलमें दो बरस रहनेके बाद इसे फाँसीकी सजा मिली। लेकिन बादको यह सजा घटाकर आजीवन कठोर परिश्रमकी सजा कर दी गयी।

जेलमें इसे क्षयरोग हो गया। इसकी इस समयकी हालतको देखते हुए मालूम होता था कि कुछ महीनोंसे ज्यादा मुश्किलसे जीवित रह सकता था। यह बात वह जानता था लेकिन उसे इसका पश्चात्ताप नहीं था। वह कहता था कि अगर मुझे दूसरा शरीर मिलेगा तो उस शरीरको भी मैं इसी तरह उन परिस्थितियोंके नष्ट करनेके काममें लाऊँगा जिनमें वे चीजें असम्भव हैं जिन्हें उसने देखा है।

इस आदमीकी कहानीसे तथा उसके साथ घनिष्ठता हो जानेसे नेख्लीडूकी समझमें बहुत सी बातें आ गयीं जिन्हें वह पहले नहीं समझता था।

सातवाँ अध्याय

जिस दिन गारदके अफसरसे बच्चेके बारेमें पड़ावपर कैदियोंसे झगड़ा हो गया था उस दिन नेख्लीडूने गाँवकी सरायमें रात बितायी थी और देरको उठा और थोड़ी देरतक चिट्ठी लिखता रहा ताकि आगेके कस्बेमें पहुँचकर डाकमें डाल सके। इसलिए वह सरायसे देरको निकला और कैदियोंके जत्थेको सड़कपर नहीं पकड़ सका, जैसा वह पहले किया करता था। जहाँ कैदियोंका दूसरा पड़ाव पड़नेवाला था, उस गाँवमें पहुँचते पहुँचते शाम हो गयी।

सरायमें पहले नेख्लीडूने अपनेको सुखाया। इसके बाद उसने एक साफ कमरेमें, जो अनेक तस्वीरों और ईसाकी मूर्तियोंसे सुसज्जित था, चाय पी। यह सराय एक प्रौढ़ स्त्री चलाती थी। इस स्त्रीकी सफेद गर्दन असाधारण रूपसे मोटी थी। चाय पी लेनेके बाद नेख्लीडू कटूशासे मुलाकातकी अनुमति लेनेके लिए अफसरके पास दौड़ा हुआ गया। पिछले छ पड़ावोंपर किसी भी अफसरने उसे इसकी अनुमति नहीं दी थी। यद्यपि अफसरोंकी बराबर बदली होती रहती थी फिर भी कोई नेख्लीडूको पड़ावमें जानेकी अनुमति नहीं देता था। इसलिए कटूशासे उससे भेंट एक हफ्तेसे ज्यादासे नहीं हुई थी। इतनी सख्ती इसलिए थी कि जेलका एक बड़ा अफसर इधरसे जानेवाला था। अब वह अफसर जत्थेको बिना देखे हुए इधरसे जा चुका था, इसलिए नेख्लीडूको आशा थी कि यह अफसर, जो इस सुबहसे जत्थेके साथ हो गया था, इसको कैदीसे मुलाकातकी इजाजत दे देगा जैसा कि और अफसर दिया करते थे।

सरायवालीने नेख्लीडूको पड़ावतक जानेके लिए, जो गाँवके दूसरे कोनेपर पड़ा हुआ था, गाड़ी पेश की। लेकिन नेख्लीडूने पैदल जाना

अच्छा समझा। एक भीमकाय मजदूर, जिसके पैरमें बहुत बड़ा जूता था जिसपर ताजी वार्निश हुई थी और जिसमेंसे वार्निशकी बू अब तक आ रही थी, रास्ता दिखानेके लिए तैयार हो गया।

आसमान कुहरेसे आच्छादित था। अन्धकार इतना था कि जब यह आदमी नेख्लीडूसे तीन कदम भी आगे होता था तो दिखाई नहीं देता था। किसी खिड़कीसे जब इसके ऊपर रोशनी पड़ती थी तब यह दिखाई देता था। लेकिन इसके भारी जूतोंकी छपछप, जो गहरे चिपकनेवाले कीचड़में पड़नेके कारण पैदा होती थी, सुनाई देती थी। गिर्जाघरके सामनेके मैदानसे होकर और उस लम्बी सड़कसे गुजरकर, जिसके दोनों तरफकी खिड़कियोंकी कतारसे रोशनी आ रही थी, नेख्लीडू अपने रास्ता बतानेवालेके पीछे-पीछे गाँवके उस कोनेतक पहुँचा जहाँपर बहुत अँधेरा था। लेकिन पड़ावके सामने रखी हुई लालटेनोंसे प्रकाशकी किरण कुहरेमेंसे निकली हुई दिखाई देती थी। ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा, यह लाल रोशनी ज्यादा होती गयी। अन्तमें सन्तरीकी चलती-फिरती शकल दिखाई देने लगी। एक तख्ता, जिसपर सफेद और काली धारियाँ बनी थीं, और सन्तरीका अड्डा भी नजर आने लगा।

सन्तरीने साधारणतः पुकारा "कौन है?" और यह देखकर कि अपरिचित लोग आ रहे हैं उसने इतनी सख्ती दिखायी कि इन लोगोंको दूर खड़ा रहनेकी इजाजत भी नहीं दी। लेकिन नेख्लीडूके पथप्रदर्शकने उसकी इस सख्तीसे साहस नहीं छोड़ा।

"क्यों मियाँ, इतनी सख्ती क्यों करते हो! जाओ और अपने अफसरको जगाओ। हम लोग यहाँ इन्तजार कर रहे हैं।"

सन्तरीने कुछ उत्तर नहीं दिया, लेकिन वह दर्वाजेके अन्दर कुछ चिल्लाकर इस विशालस्कन्ध मजदूरको, जो लालटेनकी रोशनीमें लकड़ीकी एक चैलीसे नेख्लीडूके जूतोंकी कीचड़ पोंछ रहा था, देखने लगा। पड़ावके अन्दरसे स्त्रियों और पुरुषोंकी आवाजकी भनभनाहट सुनाई देती थी। करीब तीन मिनट बाद कुछ खड़खड़ाया, फाटक खुला

और एक सार्जेन्ट अपना ओवरकोट कन्धेपर डाले अँधेरेसे लालटेनकी रोशनीमें आकर खड़ा हो गया।

सार्जेन्ट इतना सख्त नहीं था जितना सन्तरी, लेकिन वह था बड़ा कौतूहलपूर्ण। उसने इस बातके जाननेका आग्रह किया कि नेख्लीडू अफसरसे क्यों मिलना चाहता है। वह है कौन? वह यह समझ रहा था कि दो-चार पैसे मिलनेकी सम्भावना है, और इस सम्भावनाको वह हाथसे जाने नहीं देना चाहता था। नेख्लीडूने कहा कि "मैं एक विशेष कामसे आया हूँ और अगर काम हो जाय तो मैं इनाम देनेको तैयार हूँ। तुम मेरी चिट्ठी अफसरतक पहुँचा दो।" सार्जेन्ट राजी हो गया। उसने चिट्ठी हाथमें ली, सर हिलाया और चल दिया। थोड़ी देरके बाद दर्वाजा फिर खुला और टोकरी, बक्स, बोरा और घड़े लिये तथा अपनी विचित्र साइबेरियन भाषामें जोर जोरसे बातें करती हुई औरतें फाटकसे बाहर निकलीं। इनमेंसे कोई भी किसानी पोशाकमें नहीं थी। सब शहरकी पोशाक पहने हुए थीं—अर्थात् सलूके और 'फर'की गोटके चोगे। इनके लहँगे ऊपर सरके हुए थे और इनके सरोंमें शाल लिपटी थी। लालटेनकी रोशनीमें इन लोगोंने नेख्लीडू और उसके पथप्रदर्शकको अचरजके साथ देखा। एक औरतने इस विशालस्कन्ध आदमीको देखकर प्रसन्नता भी प्रकट की और प्रेमके साथ अपनी भाषामें साइबेरियाकी गालियोंसे इसका स्वागत किया।

"अरे दानव! तू यहाँ क्या कर रहा है? शैतान तुझे खा जाय।" उसने कहा।

"मैं तो इस मुसाफिरको रास्ता दिखाने यहा लाया हूँ।" नौजवान आदमीने कहा "और तुम यहाँ क्या लायी थीं?"

"यही दूध-दहीकी चीजें। कल सुबह और लाऊँगी।"

"यहाँके लोगोंने तुमको रातके लिए क्यों नहीं रोक लिया?" नौ-नौजवानने पूछा।

"बदमाश कहींका। तेरा बुरा हो।" औरतने जोरसे कहा और हँसने लगी। "अच्छा, गाँवतक हमें पहुँचा दो।"

पथप्रदर्शकने उत्तरमें कुछ कहा जिसको सुनकर औरतें ही नहीं बल्कि संतरी भी हँस पड़ा। फिर नेख्लीडूकी तरफ झुककर उसने कहा—"आप अकेले वापस जा सकेंगे न? रास्ता तो न भूल जाइयेगा?"

"मुझे रास्ता मिल जायेगा।"

"गिर्जाघरसे निकलनेपर दोमंजिले मकानके बाद दूसरा मकान है। और यह मेरी लाठी ले लीजिये।" उसने कहा और नेख्लीडूको अपना डंडा दे दिया जो इस आदमीसे भी ऊँचा था। फिर कीचड़में अपने बड़े जूतोंको फचफचाता हुआ वह इन स्त्रियोंके साथ अँधेरेमें गायब हो गया।

इसकी आवाज, स्त्रियोंकी आवाजसे मिश्रित होकर, कुहरेमें से होती हुई नेख्लीडूके कानोंतक आ रही थी। इतनेमें दर्वाजा फिर खड़खड़ाया। सार्जेंट बाहर निकला और नेख्लीडूसे कहा कि अफसरसे मिलनेके लिए चलिये।

आठवाँ अध्याय

यह पड़ाव साइबेरियाकी सड़कके इस तरहके सब पड़ावोंकी तरह चारों ओरसे कठघरेसे घिरा हुआ था, जिसके बाद हाता था और अहातेमें तीन एकमंजिले मकान थे। सबसे बड़ा मकान, जिसकी खिड़कियोंमें छड़ें लगी हुई थीं, कैदियोंके लिए था, दूसरा गारदके सिपाहियोंके लिए, और तीसरा छोटा मकान दफ्तरके लिए था और उसमें अफसर भी रहते थे। इन तीनों मकानोंकी खिड़कियोंमें रोशनी थी और इन रोशनियोंको देखनेसे यह मालूम होता था कि जहाँ रोशनियाँ हैं वहाँ कुछ गर्मी भी होगी, जो कि गलत बात थी। इन तीनों मकानोंकी ड्योढ़ियोंमें लालटेनें जल रही थीं और अहातेमें भी चार-पाँच बत्तियाँ रही होंगी। हातेमें एक तख्ता पड़ा हुआ था जिसपरसे सारजेन्ट नेख्लीडूको छोटे मकानकी ड्योढ़ीपर ले गया। ड्योढ़ीके जीनेपर तीन सीढ़ियाँ चढ़नेके बाद इसने नेख्लीडूको अपने आगे करके अगले कमरेमें बिठा दिया। उसमें एक छोटी-सी लालटेन जल रही थी जो धुएँसे काली हो गयी थी। चूल्हेके पास एक सिपाही मोटे कपड़ेकी कमीज, टाई और काला पायजामा, तथा एक पैरमें बड़ा जूता पहने समावरमें कोयला फूँक रहा था, और दूसरे जूतेसे पंखेका काम ले रहा था। जब सिपाहीने नेख्लीडूको देखा, समावर छोड़ दिया और नेख्लीडूको चमड़ेवाला कोट उतारनेमें मदद दी। फिर वह भीतरके कमरेमें चला गया।

"हुजूर, वे आ गये।"

"अच्छी बात है; बुलाओ।" एक क्रोधपूर्ण आवाजने कहा।

सिपाहीने नेख्लीडूसे दर्वाजेसे जानेको कहा और खुद समावरमें लग गया।

दूसरे कमरेमें, जिसमें लटकनेवाले लैंपसे रोशनी हो रही थी,

अफसर महोदय आस्ट्रियन जैकेट पहने, जो इनके चौड़े सीने और कंधेमें चुस्त बैठती थी, लाल-लाल चेहरा और बड़ी मूँछें लिये, एक मेजके पास बैठे थे जिसपर दो बोतलें रखी थीं और कुछ बचा-खुचा खाना पड़ा था। कमरेमें तम्बाकूकी बड़ी कड़ी बू आ रही थी। इस गर्म कमरेमें सस्ते किस्मके इत्रकी भी महक पायी जाती थी। नेख्लीडूको देखकर अफसर महोदय उठे और उन्होंने व्यंग्यपूर्ण सन्देहात्मक दृष्टिसे उसे देखा।

"आप क्या चाहते हैं?" अफसरने पूछा और उत्तरकी प्रतीक्षा न करके उसने खुले हुए दर्वाजेमें चिल्लाकर कहा—"बर्नव समावर लाओ। क्या कर रहे हो?"

"अभी आया।"

"अभीका बच्चा।" अफसरने चिल्लाकर कहा और उसकी आँखें चमक उठीं।

"हुजूर आया, हाजिर हुआ।" जोरसे कहकर सिपाही समावर ले आया।

नेख्लीडू तबतक प्रतीक्षा करता रहा जबतक सिपाहीने समावरको मेजपर नहीं रख दिया। इसके बाद यह अफसर अपनी निर्दयतापूर्ण छोटी आँखोंसे इस सिपाहीको तबतक कठोर दृष्टिसे देखता रहा जबतक यह कमरेसे बाहर नहीं निकल गया। जान पड़ता था, वह अपनी आँखों-से उसके शरीरमें उस जगहकी तलाश कर रहा है जहाँ उसपर आघात कर सके! जब सिपाही कमरेसे बाहर चला गया, अफसर महोदयने चाय बनायी और अपने सफरी थैलेमेंसे शराब पीनेका एक चौखूँटा गिलास और कुछ अलबर्ट बिस्कुट निकाले। इन सब चीजोंको मेजपर रखनेके बाद उसने फिर नेख्लीडूकी तरफ देखा।

"बताइये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।"

"मैं एक कैदीसे मिलनेकी अनुमति चाहता हूँ।" नेख्लीडूने खड़े-खड़े कहा।

"राजनीतिक कैदीसे ? इसकी तो कानून इजाजत नहीं देता।" अफसरने कहा।

"जिस स्त्रीसे मैं मिलना चाहता हूँ" नेख्लीडूने कहा "वह राजनीतिक कैदी नहीं है।"

"आप बैठिये तो सही।" अफसरने कहा। नेख्लीडू बैठ गया।

"वह राजनीतिक कैदी नहीं है, लेकिन मेरी प्रार्थनापर उच्च अधिकारियोंने उसे राजनीतिक कैदियोंके साथ रहनेकी अनुमति दे दी है।"

"हाँ हाँ, मैं समझ गया।" अफसरने बात काटते हुए कहा "वह एक छोटी-सी साँवली-सी है न ? हाँ, यह तो हो सकता है। आप सिगरेट लीजिये।"

उसने सिगरेटका बक्स नेख्लीडूकी तरफ खिसका दिया और बड़ी सावधानीसे दो प्याले चाय बनायी। एक प्याला नेख्लीडूको देकर बोला—"इजाजत है न ?"

"धन्यवाद। लेकिन मैं अभी मिल लेना चाहता था—।"

"रात बड़ी लंबी होती है। काफी वक्त है। मैं हुक्म दे दूँगा, वह आपके पास बाहर भेज दी जायेगी।"

"लेकिन क्या मैं वहीं नहीं मिल सकता जहाँ वह है ? बाहर बुलानेकी क्या जरूरत ?" नेख्लीडूने कहा।

"राजनीतिक कैदियोंमें जाकर ? यह तो कानूनके खिलाफ होगा।"

"मुझे कई बार वहीं मिलनेकी इजाजत मिल चुकी है। अगर इस बातकी आशंका हो कि मैं उन लोगोंको कोई चीज दे दूँगा तो उसके द्वारा भी, जब वह बाहर आवेगी, वही चीज भेज सकता हूँ।"

"नहीं नहीं, उसकी तलाशी ली जायेगी।" अफसरने कहा और अरुचिकर ढंगसे हँसा।

"तो आप मेरी तलाशी ले सकते हैं।"

"अच्छी बात है; बगैर इसके काम चल जायेगा।" अफसरने कहा

और शराबका गिलास नेख्लीडूकी चायकी प्यालीकी तरफ बढ़ाकर कहा "जरा सा लीजिये!" "नहीं?—जैसी आपकी मर्जी। साइबेरियामें रहकर अगर कहीं पढ़े-लिखे आदमीसे भेंट हो जाती है तो बड़ी खुशी होती है। हम लोगोंका काम बहुत बुरा है, आप जानते हैं, और अगर कोई अच्छे समाजका अभ्यस्त होता है तो उसके लिए तो बड़ी मुश्किल होती है। लोगोंका यह खयाल होता है कि हम गारदके अफसर लोग बड़े अकुशल और बिना पढ़े-लिखे आदमी होते हैं। लेकिन कोई यह नहीं जानता कि यह भी हो सकता है कि हम लोगोंमें से कुछ विशेष स्थितिमें पले हुए आदमी हों।"

इस अफसरके लाल चेहरेने, इसके इत्रने, इसकी अँगूठियोंने और विशेषकर इसकी अरुचिकर हँसीने नेख्लीडूके हृदयमें घृणा उत्पन्न कर दी थी। लेकिन आज वह उस गम्भीर और संयत मनोदशामें था, जो उसे किसी आदमीके प्रति घृणा या तिरस्कारसे बातचीत करनेकी अनुमति नहीं देती थी, बल्कि उसको इस बातकी आवश्यकता अनुभव करा रही थी कि हरएक आदमीसे खुले दिलसे बोलना चाहिये। यही मनोदशा उसकी सारी यात्रामें रही। अफसरकी बात सुनकर और उसकी मनोदशा समझ नेख्लीडूने गम्भीरतासे कहा—"मेरा खयाल है कि आपकी परिस्थितिमें रहते हुए भी दुखी आदमियोंकी सहायता करके कुछ आनन्द प्राप्त किया जा सकता है।"

"इनको कष्ट ही क्या है? आप जानते ही नहीं कि ये लोग किस तरहके हैं।"

"ये लोग किसी विशेष प्रकारके आदमी नहीं।" नेख्लीडूने कहा "जैसे और लोग होते हैं वैसे ही ये भी हैं। कुछ ऐसे लोग भी हैं जो निरपराध हों।"

"ठीक है, सब तरहके लोग होते हैं और स्वभावतः उनपर दया आती है। हममें कुछ लोग हैं जो जरा भी रियायत नहीं करते, लेकिन मैं? मुझसे जहाँतक हो सकता है, इनके कष्टोंको हलका करता हूँ। मैं

स्वयं कष्ट सह लेता हूँ, इनको तकलीफ नहीं पहुँचने देता। कुछ लोग बात बातमें कानूनकी पाबन्दी करते हैं और गोली मारनेतकको तैयार हो जाते हैं, लेकिन मैं दया करता हूँ ......।—एक प्याली चाय और लीजिये।" उसने कहा और दूसरी प्यालीमें नेख्लीडूके लिए चाय बनाकर दे दी। "यह है कौन स्त्री जिससे आप मिलना चाहते हैं? अफसरने पूछा।

"एक अभागिन स्त्री है जो चकलेमें पहुँच गयी थी। वहाँ उसपर जहर खिलानेका झूठा मुकदमा चलाया गया था। लेकिन है वह बड़ी नेक।" नेख्लीडूने कहा।

अफसरने अपना सर हिलाया।

"जी हाँ, ऐसा होता है। मुझे मालूम है। कजनमें एमा नामकी एक स्त्री रहती थी। जन्मसे तो वह हंगेरियन थी, लेकिन उसकी आँखें ईरानियोंकी सी थीं।" अफसरने अपनी कहानी शुरू की और एमाको याद कर वह अपनी मुस्कराहट न रोक सका। "इस स्त्रीमें ऐसी शिष्टता और हावभाव था कि वह रानी हो सकती थी—" नेख्लीडूने अफसरकी बात काट दी और बातचीतके पुराने विषयपर जाना चाहा।

"मैं समझता हूँ कि जो लोग आपकी सुपुर्दगीमें हैं उनके कष्टोंको आप हल्का कर सकते हैं और इस प्रकार हल्का करनेमें आपको बड़ा आनन्द आयेगा।" नेख्लीडूने कहा और हर एक शब्दको इस प्रकार उच्चारण करनेकी कोशिश की मानो वह किसी बच्चेसे या परदेशीसे बात कर रहा हो।

अफसरने अपनी चमकती आँखोंसे नेख्लीडूकी ओर बेताबीसे देखा। वह इस बातका इन्तजार कर रहा था कि नेख्लीडू रुके और यह ईरानी आँखोंवाली अपनी हंगेरियनकी कहानी शुरू करे।

"आप ठीक कहते हैं।" उसने कहा "मुझे जरूर दया आती है, लेकिन मैं आपसे एमाका किस्सा बता रहा था। तो समझिये उसने यह किया—"

"इसमें मेरी दिलचस्पी नहीं है।" नेख्लीडूने कहा "मैं आपसे साफ

साफ बता दूँ कि मैं खुद एक समय बिल्कुल दूसरी तरहसे रहता था। अब मैं स्त्रियोंके साथ इस प्रकारके सम्बन्धको घृणाकी नजरसे देखता हूँ।

अफसरने नेख्लीडूकी तरफ भयभीत दृष्टिसे देखा।

"एक प्याली चाय और लीजिये।" उसने कहा।

"जी नहीं! धन्यवाद।"

"वर्नव!" अफसरने पुकारकर कहा "देखो इन महाशयको वाकोलवके पास ले जाकर कहो कि इनको राजनीतिक कमरेमें जाने दें। मुआइनेके वक्ततक ये वहाँ रहेंगे।"

नवाँ अध्याय

अर्दलीके साथ नेख्लीडू हातेमें आया जिसमें लैम्पोंकी लाल रोशनीसे धुँधला प्रकाश पड़ रहा था।

"कहाँ जा रहे हो ?" गारदके सिपाहीने अर्दलीसे पूछा।

"नम्बर पाँचमें।"

"इधरसे नहीं जा सकते। ताला बन्द है। दूसरी तरफसे घूमकर जाना होगा।"

"क्यों ?"

"बाबू साइब गाँव चले गये हैं और कुंजी अपने साथ ले गये हैं।"

"अच्छी बात है, इधरसे आइये।"

"सिपाही तख्तोंपर होता हुआ दूसरे फाटकपर पहुँचा। अहातेमें नेख्लीडूको आवाजोंकी भनभनाहट और अंदरकी हलचल सुनाई देती थी, जैसी शहदकी मक्खियोंके छत्तेमें, छत्तेपर मक्खियोंके बैठते समय होती है। लेकिन जब यह नजदीक आया और दर्वाजा खुला तो भन-भनाहट बढ़कर चिल्लाहट हो गयी। लोगोंकी हँसी, उनकी गालियाँ इत्यादि सुनाई देने लगीं। बेड़ियोंकी झनकार भी उसके कानमें आयी और चिरपरिचित गंदी हवाकी गंध उसकी नाकतक पहुँची।

आवाजोंकी यह भनभनाहट, यह बदबू और बेड़ियोंकी झनकार मिलकर नेख्लीडूके हृदयमें एक यातनापूर्ण भावना पैदा कर देती थी। इससे उसको एक नैतिक मतली पैदा हो जाती थी और यह नैतिक मतली शारीरिक मतली पैदा कर देती थी। इसके बाद ये दोनों भावनाएँ एक दूसरीसे सम्मिश्रित होकर एक-दूसरीको उत्तेजित करती रहती थीं।

नेख्लीडूने घुसते ही पहली चीज यह देखी कि एक बड़े बदबूदार टबके किनारे एक स्त्री बैठी है और उसके सामने, अपने घुटे हुए सरपर

रोटीनुमा टोपी रखे एक आदमी है । ये लोग कुछ बातचीत कर रहे थे। लेकिन आदमीने नेख्लीडूको देखकर आँख मारी और कहने लगा "समुद्र की धाराको जार भी नहीं रोक सकता ।"

औरतने अपने चोगेका परदा कुछ नीचे खींच लिया । वह झेंप-सी गयी।

इस फाटकसे एक पतली दालान निकली थी जिसमें कई दर्वाजे खुलते थे। पहला कमरा तो कुटुम्बके रहनेके लिए था और दूसरा मर्दोंके लिए। किनारेके दो कमरे राजनीतिक कैदियोंके लिए अलग कर दिये गये थे।

यह इमारत, जो डेढ़ सौ कैदियोंके लिए थी, बहुत भरी हुई थी; क्योंकि इसमें साढ़े चार सौ कैदी ठूँस दिये गये थे। इससे अब कैदियोंको कमरोंमें जगह न मिल सकी और ये लोग रास्तोंमें पड़े थे। कुछ तो बैठे थे, कुछ फर्श पर लेटे थे, कुछ खाली चायदानी लिये हुए जा रहे थे और कुछ चायदानीमें गरम पानी भरे हुए लिये आ रहे थे। टारस चाय-दानीमें गरम पानी लिये हुए वापस आ रहा था। नेख्लीडूको देखकर इसने बड़े प्रेमसे सलाम किया। टारसके मृदुल चेहरेपर, आँखके नीचे और नाकके ऊपर, चोटके निशान थे।

"तुम्हें यह क्या हुआ ?" नेख्लीडूने पूछा।

"कुछ हो गया।" टारसने मुस्कराते हुए कहा।

"जी हाँ, ये लोग बराबर लड़ाई-झगड़ा करते रहते हैं।" गारदके सिपाहीने कहा।

"उस स्त्रीके कारण यह सब झगड़ा हुआ।" कैदीने कहा जो टारस-के पीछे पीछे आ रहा था "इसका अंधे फेडकासे झगड़ा हो गया।"

"थ्यूडूसिया कैसी है ?"

"बहुत अच्छी है। उसीकी चायके लिए पानी लिये जा रहा हूँ।" टारसने उत्तर दिया और कुटुम्बके कमरेमें चला गया।

नेख्लीडूने दर्वाजेसे इस कमरेके अन्दर देखा। इस कमरेमें पुरुष

और स्त्रियाँ भरी हुई थीं। कुछ लोग तख्तोंके ऊपर और कुछ नीचे बैठे थे। भीगे हुए कपड़ोंकी भापसे, जो सूख रहे थे, यह कमरा भरा हुआ था और स्त्रियोंकी आवाजकी "चाँव-चाँव" बराबर जारी थी। दूसरा दर्वाजा मर्दोंके कमरेका था। इसमें भी काफी भीड़ थी। दर्वाजेमें और बाहरके रास्तेमें आदमी रास्ता रोके बैठे थे और भीगे कपड़े पहने हुए भीड़ लगाये शोर मचाते या तो कुछ कर रहे थे या किसी बातपर झगड़ रहे थे। गारदके सार्जेन्टने समझाया कि वह कैदी, जो खाने-पीनेका सामान खरीदनेके लिए नियत किया गया था, खानेके पैसेसे एक जुवारी-को दाम दे रहा है। इसने कुछ जीता था और कुछ कैदियोंको उधार दिया था और उसके बदलेमें ताश ले रहा है। जब इन लोगोंने गारदके सिपाही और एक भले आदमीको देखा, तो जो लोग सबसे नजदीक थे वे चुप हो गये और इन लोगोंको द्वेषकी दृष्टिसे देखने लगे। इन लोगोंमें नेख्लीडूने फेडरवको देखा, जिसको वह पहचानता था और जो अपने साथ ऐसे लड़केको बराबर रखता था जिसका चेहरा भभरियाया हुआ तथा शकल भद्दी थी। उसकी नजर एक घृणित नासिका-हीन और मुहाँसे-वाले आवारे पर भी पड़ी जो कैदियोंमें इसलिए बदनाम था कि तराईमें भागते हुए इसने एक साथीको मार डाला था और उसका मांस खा गया था। यह बदमाश रास्तेमें अपने भीगे चोगेको एक कंधेपर डाले नेख्लीडूको निर्भीकतासे देखता हुआ खड़ा रहा। नेख्लीडू इसके पाससे निकल गया।

नेख्लीडूको यद्यपि इस प्रकारके दृश्य देखनेका अभ्यास हो गया था और पिछले तीन महीनेमें उसने इन चार सौ कैदियोंको अनेक परि-स्थितियोंमें कई बार देखा था, फिर भी जब कभी यह इन लोगोंके पास जाता और इनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित देखता—जैसा आज देख रहा था—तब उनके प्रति अपने पाप तथा लज्जाकी भावनासे इसका हृदय व्यथित हो जाता था। लज्जा और पापकी इस भावनाके साथ-साथ बीभत्सता और घृणाकी एक अजेय भावना उसके हृदयमें और भी पैदा

होती थी। वह समझता था कि जैसी परिस्थितिमें ये लोग हैं वैसी परि-स्थितिमें हर एक आदमी इन्हीं लोगोंकी तरहका बन जाता है। फिर भी वह अपनी घृणाकी भावनाको दबा नहीं सकता था।

नेख्लीड्ङ जिस समय राजनीतिक कैदियोंके कमरेके पास पहुँचा, भारी स्वरमें उसे सुनाई पड़ा "इस खाऊबीरके लिए यही चाहिये।" इसके साथ-साथ अश्लील गालियोंके भी कुछ वाक्य और द्वेष तथा व्यंगपूर्ण हँसी-ठट्ठा भी इसके कानोंमें पड़ा।

———

दसवाँ अध्याय

मर्दोंके कमरेसे आगे बढ़कर जब ये लोग राजनीतिक कैदियोंके कमरे-के पास पहुँचे सारजेन्टने नेख्लीडूसे बिदा ली और मुआइनासे पहले वापस आनेकी उससे प्रार्थना की। सारजेन्टके चले जानेके बाद एक कैदी नंगे पैर, अपनी बेड़ियाँ हाथमें पकड़े, तेजीके साथ नेख्लीडूके सामने आकर खड़ा हो गया और रहस्यपूर्ण ढंगसे बोला—"हुजूर! इस मुक-दमेको भी आप अपने हाथमें ले लीजिये। लोगोंने लड़केको बिल्कुल धोखा दिया है, उसको शराब पिलायी है और आज मुआइनेके मौकेपर इसने कहा कि मेरा नाम करमानव है। इसको रोकिये। हम लोगोंकी तो हिम्मत नहीं है। हमें तो मार डालेंगे।" और चारों तरफ घबराते हुए देखकर यह वापस चला गया।

बात यह थी कि करमानव नामके कैदीने एक नौजवान लड़केको, जिसे देशनिकालेकी सजा मिली थी और जो शकल-सूरतमें उससे मिलता था, समझा-बुझाकर यह तय किया था कि वह अपना नाम करमानव बतावे और वह उसके बदले खानोंमें चला जाय। करमानव उसकी जगहपर निर्वासनमें चला जायेगा।

नेख्लीडूको इस अदलाबदलीकी खबर थी। कुछ कैदियोंने एक हफ्ते पहले उससे ये सब बातें बतायी थीं। नेख्लीडूने इसलिए इस ढंगसे अपना सर हिलाया जो इस बातका सूचक था कि "मैं सब जानता हूँ और यथासाध्य प्रयत्न करूँगा।" फिर वह बिना चारों ओर देखे आगे बढ़ गया।

नेख्लीडू इस कैदीको, जिसने इससे बातें की थीं, पहचानता था। इसके इस कामसे उसे आश्चर्य भी हुआ था। एकाटरिनबर्गमें इसी कैदीने नेख्लीडूके द्वारा इस बातकी इजाजत चाही थी कि उसकी स्त्रीको

उसके साथ जाने दिया जाय। यह साधारण कृषक-वर्गका आदमी था। मझोला डीलडौल था और करीब तीस बरसकी उम्र थी। हत्या और डकैतीकी कोशिश करनेके जुर्ममें इसे कड़ी मिहनतकी सजा मिली थी। मकर देवकिन इसका नाम था, और इसका जुर्म बहुत ही विचित्र प्रकारका था। नेखलीदूसे अपना हाल बताते हुए उसने कहा था कि "मैं हत्या और डकैती नहीं करना चाहता था, बल्कि शैतानने मेरे हृदयमें पैठकर यह काम करा दिया था।" उसने बताया "मेरे पिताके घरपर एक यात्री आया। छब्बीस मील दूरके एक गाँवमें पहुँचा देनेके लिए उसने एक बरफपर चलनेकी गाड़ी किरायेपर की। मेरे पिताने इस यात्रीको पहुँचा आनेके लिए मुझे कहा। मैंने घोड़ा कसा, कपड़े पहने और यात्रीके साथ बैठकर चाय पीने लगा। इस यात्रीने चाय पीते हुए बताया कि मैंने मास्कोमें पाँच सौ रूबल कमाये हैं, जो मेरे पास हैं और मैं अब अपनी शादी करने जा रहा हूँ। जब मैंने यह सुना तो मैं आँगनमें गया और गाड़ीमें पयालके नीचे एक गँड़ासा रख दिया।

"मैं खुद यह नहीं समझ सका कि मैं गँड़ासा क्यों ले जा रहा हूँ। 'गँड़ासा ले लो' शैतानने कहा और मैंने ले लिया। हम लोग गाड़ीपर बैठकर चल दिये और हँसी-खुशी थोड़ी दूरतक निकल गये। मैं गँड़ासेके बारेमें बिल्कुल भूल भी गया। गाँव चार मील और रह गया था। इस चौराहेसे सड़कपर जो रास्ता गया था उसपर चढ़ाई थी। इसलिए मैं उतर पड़ा और गाड़ीके पीछे पीछे चलने लगा। शैतानने मेरे कानमें कहा 'क्या सोच रहे हो। जब पहाड़ीके ऊपर पहुँच जाओगे तब सड़कपर बहुतसे आदमी मिलने लगेंगे और फिर गाँव मिल जायेगा। यह रुपया लेकर चल देगा। अगर तुमको कुछ करना है तो अभी कर डालो।' मैं गाड़ीके अन्दर झुका, मानो पयाल ठीक कर रहा हूँ। गँड़ासा खुद उछलकर मेरे हाथमें आ गया। मुसाफिरने फिरकर मेरी तरफ देखा और बोला 'क्या कर रहे हो?' गँड़ासा उठाकर मैंने उसे मारना चाहा लेकिन वह फुर्तीला था, कूदकर बाहर खड़ा हो गया। उसने मेरे दोनों

हाथ पकड़ लिये। 'बदमाश, तू यह क्या कर रहा है?' वह बोला और उसने मुझे उठाकर बरफमें पटक दिया। मैंने जरा भी जोर नहीं दिखाया और फौरन ही हार मान ली। उसने अपने पतलेसे मेरे हाथ बाँध दिये और गाड़ीमें मुझे डाल सीधे थाने ले गया। मैं हवालातमें बन्द कर दिया गया और मेरे ऊपर मुकदमा चला। पंचायतने मेरे चालचलनको अच्छा बताया और कहा कि यह अच्छा आदमी था और मेरे बारेमें कोई बुराई कभी नहीं देखी गयी। मैं जिस आदमीके यहाँ काम करता था उसने भी मेरे लिए सिफारिश की। लेकिन हम लोगोंके पास इतना पैसा नहीं था कि कोई वकील करते इसलिए मुझे चार बरसकी सख्त सजा मिली।"

यही आदमी था जो अपने गाँवके एक आदमीको बचानेके लिए अपनी जान खतरेमें डाल रहा था; क्योंकि वह जानता था कि अगर उसकी इस बातका पता कैदियोंको चल गया तो वे इसका गला घोंट देंगे। फिर भी उसने कैदियोंके इस भेदको नेखलीडूसे आकर बता दिया।

ग्यारहवाँ अध्याय

राजनीतिक कैदियोंको दो छोटे कमरोंमें रखा गया था जिनके दर्वाजे इसी रास्तेपर थे, लेकिन एक दीवार खींचकर इन दोनों कोठरियोंको बाकी रास्तेसे अलग कर दिया गया था। रास्तेके इस हिस्सेमें घुसनेपर नेख्लीडूने साइमनसनको देखा। यह रबरका सलूका पहने, हाथमें देवदारका एक चैला लिये, बड़ी अँगीठीके सामने बैठा था।

साइमनसनने नेख्लीडूको अपनी उभरी हुई भौंहोंके नीचेसे देखा और बिना उठे उससे हाथ मिलाया।

"मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप आ गये। मुझे आपसे कुछ बातें करनी हैं।" साइमनसनने कहा और अर्थसूचक दृष्टिसे नेख्लीडूसे आँख मिलाते हुए उसकी ओर देखने लगा।

"अच्छी बात है, कहिये।" नेख्लीडूने कहा।

"अभी नहीं, बादको बातें कर लूँगा। इस समय मैं काम कर रहा हूँ।" साइमनसनने कहा और अँगीठीकी तरफ फिर घूम गया। यह इस अँगीठीको एक ऐसे सिद्धान्तके अनुसार जलाना चाहता था कि इसकी गर्मी कमसे कम नष्ट हो। नेख्लीडू पहले दर्वाजेमें घुसनेवाला ही था कि झुकी हुई झाड़ूसे कूड़ेका एक बड़ा ढेर अँगीठीकी तरफ खिसकाती हुई, मस्लोवा दूसरे दर्वाजेसे बाहर निकल आयी। यह सफेद सलूका पहने हुए थी, इसने लहँगेको जरा ऊपर खिसका रखा था, रूमालको अपनी भौंहोंतक बाँध रखा था जो इसके बालोंको धूलसे बचा रहा था। नेख्लीडूको देखकर यह ठिठक गयी। इसका चेहरा तमतमा गया। इसने झाड़ू छोड़ दी और हाथ लहँगेमें पोंछकर यह उसके सामने आकर खड़ी हो गयी।

"अच्छा, कमरेकी सफाई हो रही है।" नेख्लीडूने कहा और उससे हाथ मिलाया।

"जी हाँ, यह मेरा पुराना काम है।" मस्लोवाने मुस्कराकर कहा "और यहाँ धूल इतनी ज्यादा है कि क्या बताऊँ, सफाई करते करते नाकों दम आ गया है।" फिर वह साइमनसनकी तरफ मुड़कर बोली "क्या लोई सूख गयी?"

"करीब करीब सूख गयी है।" साइमनसनने उत्तर दिया और मस्लोवाको एक विशेष दृष्टिसे देखा जिसे नेख्लीड्व ताड़ गया।

अच्छी बात है, मैं अभी आती हूँ। उसे ले जाऊँगी और चोगा सूखनेके लिए दे जाऊँगी।" "सब लोग इस कमरेमें हैं।" मस्लोवाने नेख्लीड्वसे कहा और पहले कमरेकी तरफ इशारा करके खुद दूसरे कमरेमें घुस गयी।

नेख्लीड्व दर्वाजा खोलकर इस छोटे कमरेमें घुसा। इसमें टीनका एक छोटा चिराग जल रहा था। कमरेमें बड़ी ठण्ढक थी, और गर्दकी बू आती थी जो अभीतक बैठी नहीं थी। सील भी थी और तम्बाकूका धुआँ भरा हुआ था। इस टीनके चिरागकी रोशनी नजदीककी चीजोंपर काफी पड़ती थी, लेकिन बिस्तर अँधेरेमें थे और दीवालोंपर काली परछाइयाँ फुदकती हुई दिखाई देती थीं।

दो आदमियोंको खाने-पीनेका प्रबन्ध सौंपा गया था। वे गर्म पानी और सामान लेनेके लिए बाहर गये हुए थे, लेकिन अधिकांश राजनीतिक कैदी इसी छोटे कमरेमें इकट्ठा थे। यहीं नेख्लीड्वकी चिरपरिचित वीरा दुखोवा भी थी जो पहलेसे दुबली और ज्यादा पीली हो गयी थी। इसकी बड़ी बड़ी आँखें भयभीत दिखाई देती थीं। इसके बाल छोटे थे और माथेकी एक नस फूली हुई थी। यह सफेद सलूका पहने, अपने सामने एक अखबार बिछाये, काँपते हुए हाथोंसे सिगरेटोंको लुढ़का रही थी।

इमीली रेन्तसेवा भी, जिसे नेख्लीड्व राजनीतिक कैदियोंमें सबसे हँसमुख समझता था, यहीं थी। घरका इन्तजाम इसीके जिम्मे था। यह अत्यन्त कष्टकर परिस्थितिमें भी ऐसा प्रबन्ध करती थी जिससे

लोगोंको यह भावना बनी रहती थी कि उन्हें घरका-सा सुख और सुविधाएँ मिल रही हैं। यह चिरागके पास अपनी आस्तीनें चढ़ाये बैठी थी और हाथोंसे प्याले और कटोरे पोंछ-पोंछकर एक कपड़ेपर, जो चारपाईके ऊपर बिछा हुआ था, रखती जाती थी। रैन्तसेवा साधारण शकल-सूरतकी नौजवान स्त्री थी, लेकिन उसके चेहरेपर कोमलता और चेतनताके चिह्न थे। मुस्करानेपर उसका चेहरा प्रफुल्ल, उत्तेजित और मनोहर हो जाता था। इसी प्रकारकी मुस्कराहटके साथ इस समय इसने नेख्लीडूका स्वागत किया।

"हम लोग तो यह समझ रहे थे कि आप रूस लौट गये।" उसने कहा।

मेरी पावलोभ्ना भी यहीं एक अँधेरे कोनेमें बैठी हुई थी और एक छोटी-सी सुन्दर बालोंवाली लड़कीसे बातचीत कर रही थी जो अपने मधुर शिशु-स्वरमें खूब बोल रही थी।

"बड़ी खुशी हुई कि आप आ गये" मेरी पावलोभ्नाने नेख्लीडूसे कहा "कटूशासे आप मिले? हम लोगोंके यहाँ एक मेहमान आया है।" और उसने इस छोटी लड़कीकी तरफ इशारा किया।

अनातोले क्रिलसव भी यहीं था। यह नमदेके जूते पहने, झुका हुआ दूर कोनेमें काँपता, अपने चोगेकी अस्तीनोंमें हाथ छिपाये हुए पैर मोड़े बैठा था और अपनी ज्वरग्रस्त आँखोंसे नेख्लीडूको देख रहा था। नेख्लीडू उसके पास जाना चाहता था, लेकिन दर्वाजेके दाहिनी ओर रबरका सलूका पहने, ऐनक लगाये और सरपर लाल लटें फेंके एक आदमी सुन्दर मुस्कराती हुई ग्रैबेट्ससे बातें कर रहा था। यह आदमी प्रख्यात क्रान्तिकारी नोवोड्वोरो था। नेख्लीडूने इसे इसलिए जल्दीसे सलाम किया कि वह राजनीतिक कैदियोंमें सबसे ज्यादा इस आदमीको ही नापसन्द करता था। नोवोड्वोरोकी नीली आँखें ऐनकके नीचेसे चमक उठीं। उसने अपने माथेमें बल डालकर नेख्लीडूकी तरफ देखा और अपना पतला हाथ मिलानेके लिए आगे बढ़ाया।

"कहिये, सफर तो आनन्दसे कट रहा है न ?" उसने व्यंगसे पूछा।

"जी हाँ, बहुत दिलचस्प चीजें देखनेमें आ रही है।" नेख्लीडूने उत्तर दिया। उसने प्रकट किया मानो उसने व्यंग नहीं समझा बल्कि उसके प्रश्नको सज्जनोचित समझा। नेख्लीडू क्रिलसवकी ओर बढ़ गया।

यद्यपि नेख्लीडू उदास मालूम होता था फिर भी वह उदास नहीं था। नोवोड्वोरोके इन शब्दोंने, जो उसकी यह भावना प्रगट करते थे कि वह कुछ अरुचिकर बात कहना या करना चाहता है, नेख्लीडूकी अहिंसापूर्ण मनोवृत्तिको बिगाड़ दिया और वह उदास हो गया।

"कहिये, आप कैसे हैं।" नेख्लीडूने क्रिलसवके टेढ़े और काँपते हाथोंसे हाथ मिलाते हुए कहा।

"बहुत अच्छा हूँ, सिर्फ सर्दी मालूम हो रही है। मैं बिल्कुल भींग गया।" क्रिलसवने उत्तर दिया और फौरन ही हाथ फिर अपने चोगेकी आस्तीनमें छिपा लिया। "और यहाँ ठंढक भी बड़े कड़ाकेकी पड़ती है। यह देखिये, खिड़कियोंके शीशे टूटे हुए हैं।" क्रिलसवने लोहेकी छड़ोंके पीछे टूटे हुए शीशोंकी तरफ इशारा किया। "आप कैसे रहे ? बहुत दिनोंसे हम लोगोंसे मिलने नहीं आये ?"

"मुझे अनुमति ही नहीं मिली। अधिकारी बड़े कड़े थे। लेकिन आजका अफसर कुछ मुरौवती मालूम होता है।"

"मुरौवती ! खूब कहा ! मुरौवती है ?" क्रिलसवने कहा "मेरीसे पूछिये कि आज सुबह उसने क्या किया।"

मेरी पावलोभ्नाने, कोनेमें बैठे बैठे, अपनी जगहसे वे सब बातें बतायीं, जो इस छोटी लड़कीके सम्बन्धमें आज सुबह पड़ावपर हुई थीं।

"मैं समझती हूँ, यह अत्यन्त आवश्यक है" वीरा दुखोवाने एक निश्चित स्वरसे लेकिन भयभीत और अनिश्चित आकृतिसे कभी एक तरफ और कभी दूसरी तरफ देखते हुए कहा कि "हम लोग सामूहिक रूपसे विरोध प्रदर्शित करें। व्लादीमीर साइमनसनने विरोध तो किया था, लेकिन उतना काफी नहीं है।"

"आप किस किस्मका विरोध करना चाहती हैं?" क्रिलसवने चिढ़कर और त्यौरी बदलकर कहा। वीराके कृत्रिम ढंगसे, उसकी घबराहट और उसके सरलताशून्य व्यवहारसे, यह देरसे चिढ़ा बैठा था।

"आप क्या कटूशाकी तलाशमें हैं?" क्रिलसवने नेख्लीडूसे पूछा "वह तो हर वक्त काम ही करती रहती है। उसने पहले मर्दोंके इस कमरेको साफ किया; अब वह औरतोंके कमरेको साफ करने गयी है। मक्खियों और मच्छरोंको साफ करना सम्भव नहीं। ये जिन्दा खा जाते हैं।" "और मेरी क्या कर रही है?" इसने मेरीकी तरफ देखकर कहा।

"वह तो अपनी गोद ली हुई लड़कीके बालोंमें कंघी कर रही है।" रेन्तसेवाने कहा।

"देखो, कहीं जूँओंको हम लोगोंके ऊपर न छोड़ देना। क्रिलसवने कहा।

"नहीं नहीं, मैं बहुत सावधानी कर रही हूँ और यह छोटी लड़की अब बड़ी साफ है। रेन्तसेवा!" मेरीने कहा "इस लड़कीको अब तुम देखना। मैं जाती हूँ। कटूशाकी कुछ मदद करूँगी और क्रिलसवका ऊनी चदरा ले आऊँगी।"

रेन्तसेवाने छोटी लड़कीको अपनी गोदमें बिठा लिया और मातृप्रेम प्रदर्शित करते हुए उसके थुलथुले छोटे नंगे हाथोंको अपनी छातीसे लगा लिया तथा शकरका एक टुकड़ा उसे खानेको दिया।

ज्यों ही मेरी पावलोभ्ना कमरेसे बाहर गयी, दो आदमी गर्म पानी और सामान लिये हुए अन्दर आये।

बारहवाँ अध्याय

इन दोनों आदमियोंमेंसे एक छोटे कदका दुबला-पतला था और भेड़की खालका कोट, जिसपर कपड़ा चढ़ा हुआ था, और ऊँचे जूते पहने हुए था। भाप निकलती हुई दो चायदानियाँ हाथमें लिये और एक रोटीको कपड़ेमें लपेटे बगलमें दबाये यह तेजीसे दबे-पाँव कमरेमें दाखिल हुआ।

"अच्छा, राजकुमार साहब फिर तशरीफ लाये हैं।" उसने कहा। चायदानियाँ प्यालोंके पास रख दीं और रोटी रेन्तसेवाको दे दी। "हम बड़ी बढ़िया बढ़िया चीजें लाये हैं।" उसने कहा और अपना चमड़ेका कोट उतार कर दूसरोंके सरपर फेंक दिया। "मार्केल दूध और अण्डे लाया है और रातको आज नियमानुसार नाच होगा। रेन्तसेवा कितनी सुन्दरतासे सफाई कर रही है।" उसने कहा और रेन्तसेवाकी तरफ देखा "रेन्तसेवा चाय बना देगी।"

इस आदमीके अस्तित्वमें, इसके चलने-फिरनेमें, आवाजमें, आकृतिमें, प्रसन्नता और स्फूर्ति भरी हुई थी। दूसरा आदमी बिल्कुल इसका उलटा था। यह निराश और उदास दिखाई देता था। यह छोटे कदका, हड्डीदार हल्के पीले चेहरेका आदमी था। इसकी गालकी हड्डियाँ बहुत उभरी हुई थीं और इसकी सुन्दर हलकी भूरी आँखें एक-दूसरीसे दूर थीं। यह एक पुराना मोटा कोट, लम्बे बूट और लकड़ीके जूते पहने था और दो प्याले दूध और छालके बने हुए बक्स लिये था। इसने इन्हें रेन्तसेवाके सामने रख दिया। अपनी गर्दन झुकाकर इसने नेख्लीडूको सलाम किया। यह नेख्लीडूकी तरफ आँखें एकटक लगाये रहा। अपने भीगे हुए हाथसे हाथ मिलाकर इसने सामान निकालना शुरू किया।

ये दोनों राजनीतिक कैदी साधारण वर्गके आदमी थे। पहला नबाटव नामक किसान था। दूसरा कारखानेका मजदूर था। इसका नाम मार्केल कोन्ड्रेटिव था। मार्केल काफी जवान हो जानेपर क्रान्तिकारियोंमें शामिल हुआ था। नबाटव अठारह वर्षकी उम्रमें ही क्रान्तिकारी दलमें आ गया था। देहाती स्कूल पास करनेके बाद नबाटव अपनी असाधारण योग्यताके कारण हाईस्कूलमें प्रविष्ट हो गया था और लोगोंको पढ़ाकर अपनी जीविका चलाता था। स्वयं भी बराबर पढ़ता रहता था। इसने हाईस्कूलकी परीक्षा पास कर ली और इसे सोनेका पदक मिला था परन्तु यह यूनिवर्सिटीमें नहीं गया; क्योंकि हाईस्कूलके ऊँचे दर्जेमें ही इसने जनतामें जाकर अपने परित्यक्त और सो रहे भाइयोंकी सेवा करनेका निश्चय कर लिया था। यही इसने किया भी। इसने एक बड़े गाँवमें सरकारी नौकरी कर ली। लेकिन यह बहुत जल्द पकड़ लिया गया; क्योंकि यह किसानोंको किताबें और अखबार पढ़-पढ़कर सुनाता था और उनमें व्यावसायिक सहयोग-सभाएँ कायम करता था। अधिकारियोंने इसे आठ महीने कैद रखा, बादको छोड़ दिया। लेकिन पुलिस द्वारा इसकी निगरानी होती रही। यह छूटते ही दूसरे गाँवको चला गया और वहाँ अध्यापक हो गया। वहाँ भी इसने वही काम शुरू किया। यह फिर भी गिरफ्तार कर लिया गया और इस बार चौदह महीने जेलमें रहा। अबकी बार इसके राजनीतिक विश्वास अधिक दृढ़ हो गये।

इसके बाद यह पर्मकी गवर्मेंटमें निर्वासित करके भेज दिया गया। वहाँसे यह भाग निकला। फिर यह पकड़ा गया और सात महीने कैद रखनेके बाद गवर्मेंटने इसे निर्वासित करके आर्केंजिल भेज दिया। इसने फिर भागनेकी कोशिश की और पकड़ा जाकर याकुत्स्क प्रान्तको निर्वासित करके भेज दिया गया। इस तरहसे जवान होनेके बाद इसकी आधी जिंदगी या तो जेलमें या निर्वासित होकर कटी थी। लेकिन इन साहस-पूर्ण चेष्टाओंने न तो इसकी हिम्मतको पस्त किया, न इसकी शक्तिको मंद; बल्कि इनमें उत्तेजना ही पैदा हुई। यह हँसमुख, सशक्त

बड़ा ही तेज, फुर्तीला और खूब पचानेवाला युवक था। बराबर कुछ न कुछ करता रहता था। वह किसी बातके लिए पछताता नहीं था और न बहुत आगेकी चीज देखनेकी कोशिश करता था। वह अपनी सारी शक्तियों, होशियारी और व्यावहारिक ज्ञानको नित्यके कर्मोंको कुशलता-पूर्वक करनेमें लगाता था। जब छुट्टी पाता तो वह उद्देश्यकी प्राप्तिमें लग जाता था जो उसने अपने सामने रखा था, अर्थात् मजदूरोंको—विशेषकर गाँवोंके मजदूरोंको—पढ़ाना और उनका संगठन करना। जब जेलमें रहता था, तब वह बाहरी दुनियासे सम्पर्क रखनेके लिए और अपने तथा अपने दलके आदमियोंके जीवनको, परिस्थितिकी संभावनाके अनुसार, सुसंगठित और सुखद बनानेके लिए पूर्ववत् उत्साह और व्यवहार-कुशलता दिखलाता था। सबसे बड़ी बात उसमें यह थी कि वह मिलनसार आदमी था—पंचायतका मेम्बर था। वह अपने लिए कुछ नहीं चाहता था और उसे बहुत संतोष हो जाता था, लेकिन अपने दलके लिए—अपने मित्रोंके लिए—वह खूब माँग करता था। और इसके निमित्त दिनरात बिना खाये-पिये और सोये शरीरसे या मनसे बराबर काम कर सकता था। किसानकी हैसियतसे भी यह मिहनती, समझदार और हर एक बातको गौरसे देखने-भालनेवाला आदमी था। स्वभावतः आत्मसंयमी, अकृत्रिम विनयी और दूसरोंकी इच्छाओं और विचारोंका आदर करनेवाला मनुष्य था। इसकी विधवा माँ अबतक जीवित थी। वह अपढ़ अंधविश्वासी बुड्ढी किसान स्त्री थी। यह उसकी मदद करता था और स्वतंत्रताके दिनोंमें उससे मिलने भी जाया करता था। घर जानेपर यह अपनी माताके जीवनकी सब दिलचस्पियोंमें हिस्सा लेता था और अपनी बाल्यावस्थाके साथियोंसे मिलता-जुलता था। उनको समझाता कि 'गवर्मेंट तुमको किस तरह धोखा दे रही है और किस तरह तुम्हें गवर्मेंटके धोखेसे निकलना चाहिये। क्रान्तिके विषयमें जब कभी यह सोचता या कहता तो हमेशा यह मत प्रकट करता था कि क्रान्तिके बाद जनता, अर्थात् वह वर्ग जिसमें यह खुद पैदा हुआ था, करीब-करीब उसी हालतमें

रहेगी जिसमें आजकल है। केवल इतना अन्तर हो जायेगा कि जनताको काफी जमीन मिल जायेगी और बड़े वर्गके आदमी तथा सरकारी अफसर न रह जायेंगे। इसके मतानुसार क्रान्तिको जनताके जीवनके मौलिक रूपको न बदलना चाहिये। क्रान्ति इस प्रकारकी न होनी चाहिये कि सारी इमारतको ढा दे। सिर्फ इतना होना चाहिये कि समाजका यह सुन्दर दृढ़ विशाल प्राचीन ढाँचा, जो उसे बहुत प्रिय था कायम रहे, केवल उसकी अंदरूनी दीवार बदल जाय और यहीं, उसका नोवोड्वोरो और नोवोड्वोरोके अनुयायी मार्केल कोन्ड्रेटिवके साथ मतभेद था।

धर्मके मामलेमें भी वह किसानोंकी तरह विश्वास रखता था। वह आध्यात्मिक प्रश्नोंपर कभी विचार नहीं करता था। आदिका आदि कभी नहीं सोचता था, और न उसे परलोककी चिन्ता थी। ईश्वर उसके लिए एक ऐसी चीज थी जिसकी उसे अभीतक जरूरत महसूस नहीं हुई थी। उसको इस बातकी जरा भी चिन्ता नहीं थी कि दुनिया कैसे बनी। वह इस बातकी भी फिक्र नहीं करता था कि मूसा ठीक रास्तेपर थे या डारविन। विकासवादको (डारविनका मत), जो उसके साथियोंके लिए बहुत महत्वकी चीज थी, वह मनका खिलौना समझता था—उसी तरह जैसे छ रोजमें सृष्टिकी रचनाकी बातको।

पृथ्वी कैसे बनी, इस प्रश्नमें भी उसकी दिलचस्पी नहीं थी। और उसका एकमात्र कारण यह था कि इस संसारमें अत्युत्तम ढंगसे रहनेका प्रश्न बराबर उसके सामने रहता था। वह परलोककी चिंता इसलिए नहीं करता था, क्योंकि उसकी आत्मामें यह विश्वास बड़ी दृढ़तासे जमा हुआ था, जिसे उसने अपने पूर्वजोंसे पाया था और जो जमीनपर मेहनत करनेवाले सभी लोगोंमें पाया जाता है कि जैसे—पशु और वनस्पति-संसारमें किसी चीजका अस्तित्व नष्ट नहीं होता, हरएक चीजका केवल रूप बदल जाता है—खाद अनाज बन जाती है, अनाज भोजन बन जाता है, 'टैडपोल' मेंढक हो जाता है, और 'कैटरपिलर' तितली बन जाता है या ओक (एक विशाल वृक्ष)का बीज ओक हो जाता है;

इसी प्रकार आदमी भी नष्ट नहीं होता, सिर्फ उसमें परिवर्तन आ जाता है। वह इस सिद्धान्तमें विश्वास रखता था और इसलिए हमेशा मृत्युसे मुकाबिला करनेके लिए तैयार रहता था। बहादुरीसे उन कष्टोंको सहता था जो उसे मृत्युकी ओर लिये जा रहे थे। लेकिन इस सिद्धान्तको प्रकट करनेकी न तो वह पर्वाह करता था और न इसके लिए उसके पास शब्द थे। उसे परिश्रमसे प्रेम था। वह हमेशा किसी व्यावहारिक काममें लगा रहता था और अपने साथियोंको भी इसी दिशामें प्रेरित करता था।

जनताका दूसरा राजनीतिक कैदी मार्केल कोन्ड्रेटिव बिल्कुल दूसरी तरहका आदमी था। इसने पन्द्रह वर्षकी उम्रसे ही मजदूरी करना शुरू कर दिया था और अपने दिलकी इस संदिग्ध भावनाको, कि इसके साथ जुल्म किया जा रहा है, दबानेके लिए इसने तम्बाकू और शराब पीना शुरू कर दिया था। यह भावना पहले-पहल उसमें एक बड़े दिनपर पैदा हुई। कारखानेके बच्चे बड़े दिनके त्यौहारपर कारखानेके मालिककी स्त्री द्वारा निमंत्रित किये गये थे। वहाँ उसे एक सीटी, एक सेब, एक अखरोट और एक अंजीर मिला और कारखानेके मालिकके लड़कोंको ऐसी ऐसी चीजें मिलीं जिन्हें वह समझता था कि स्वर्गसे आयी हैं और जिनकी कीमत, जैसा कि उसे बादको मालूम हुआ, पचास रूबलसे ज्यादा थी। जब उसकी उम्र तीस वर्षकी हुई, एक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी लड़की कारखानेमें काम करनेके लिए आयी। उसने इसकी योग्यताको देखकर इसे किताबें और पर्चे पढ़नेके लिए दिये। वह इससे बातचीत भी किया करती थी और समझाती थी कि तुम्हारी क्या हैसियत है और इस दुर्दशासे बचनेका क्या उपाय है। इसके मनमें जब इस बातकी संभावना बिल्कुल स्पष्ट हो गयी कि मैं अपनेको और दूसरोंको इस जुल्मसे छुड़ा सकता हूँ तब वर्तमान प्रणालीका अन्याय इसे अधिक निर्दयतापूर्ण और भयंकर दीखने लगा। इसके हृदयमें उत्कट इच्छा पैदा हुई—केवल इस अन्यायसे बचनेकी ही नहीं बल्कि उन लोगोंको सजा देनेकी भी जिन्होंने इस प्रकारके निर्दयतापूर्ण अन्यायको कायम

रखा था। उसको लोगोंने बताया कि विद्यासे यह संभावना पैदा हो सकती है। इसलिए कोन्ड्रेटिवने बड़े जोशके साथ ज्ञान प्राप्त करना शुरू किया। उसकी समझमें यह बात अच्छी तरह नहीं आयी थी कि समाजवादके आदर्शकी प्राप्ति ज्ञानसे कैसे होगी। लेकिन उसने यह समझा कि मैंने विद्यासे ही परिस्थितिका अन्याय समझा है और संभव है, यही विद्या अन्यायको नष्ट करनेमें भी सहायता कर दे। इसके अलावा उसने यह देखा कि विद्या प्राप्त करनेसे वह दूसरोंकी नजरोंमें ऊँचा भी हो जायेगा, इसलिए उसने तंबाकू और शराब पीना छोड़ दिया और अपना सारा समय विद्याध्ययनमें लगाने लगा।

इस क्रान्तिकारी लड़कीने इसे पढ़ाना शुरू किया। हर प्रकारके ज्ञानके लिए कोन्ड्रेटिवकी पिपासा और उसको समझ लेनेकी शक्तिको देखकर इस लड़कीको आश्चर्य हुआ। दो वर्षमें इसने गणित और इतिहास, जिसमें यह विशेष रूपसे दिलचस्पी लेता था, अच्छी तरह पढ़ लिया और साहित्य, विशेषकर समाजवाद-संबंधी साहित्यसे अच्छा खासा परिचय प्राप्त कर लिया।

इस क्रांतिकारी लड़कीके साथ साथ कोन्ड्रेटिव भी पकड़ा गया, क्योंकि इसके पास जब्त किताबें निकलीं। कुछ दिन यह जेलमें रहा। इसके बाद वोलोग्दा प्रान्तमें निर्वासित करके भेज दिया गया। यहाँ कोन्ड्रैटिवका नोवोडवोरोसे परिचय हुआ और इसे क्रान्तिकारी साहित्यके पढ़नेका और भी मौका मिला। इसने ये सब बातें याद कर लीं तथा और भी कट्टर समाजवादी बन गया। निर्वासनसे वापस आनेपर इसने एक बड़ी हड़ताल करायी जिसमें कारखाना नष्टभ्रष्ट हो गया और डाइरेक्टर मार डाला गया। यह फिर पकड़ा गया और इस बार इसे निर्वासित कर साइबेरिया भेज दिया गया।

इसके धार्मिक विचार भी वर्तमान आर्थिक स्थिति संबंधी विचारोंकी तरह अभावात्मक थे। चूँकि इसने उस धर्मकी निरर्थकता देख ली थी जिसमें यह पला था और बहुत कोशिशसे अपनेको इससे छुड़ा पाया

था—पहले तो डरता था लेकिन बादको इसने जोशके साथ धर्मको त्याग दिया—इसलिए यह उस धोखेबाजीका बदला लेनेके लिए, जो इसके ऊपर तथा इसके पूर्वजोंके साथ की गयी थी, पादरियोंकी और धार्मिक सिद्धान्तोंकी, द्वेष और क्रोधसे बारबार हँसी उड़ाता था।

स्वभावसे यह संयमी आदमी था। थोड़ेमें ही इसका संतोष हो जाता था और यह बहुत ज्यादा तथा बहुत आसानीसे परिश्रम कर सकता था। यह हाथ-पैरके कामोंमें बहुत फुर्तीला था, लेकिन सबसे ज्यादा कदर यह उस अवकाशकी करता था जो पड़ावपर और जेलखानेमें उसे मिलता था; क्योंकि इन्हीं छुट्टियोंमें यह अपना अध्ययन जारी रखता था। इस समय यह कार्ल मार्क्सकी पहली किताब पढ़ रहा था और इसे बहुत सावधानीसे अपने बोरेमें छिपाकर रखता था जैसे यह कोई बड़ा खजाना हो। नोवोड्वोरोके अलावा, जिससे यह बहुत प्रेम करता था और समस्त विषयोंपर जिसकी युक्तियोंको निर्विवाद सत्य मानता था, अपने दूसरे साथियोंसे यह गंभीरता और उदासीनताके साथ मिलता था।

स्त्रियोंके प्रति कोन्ड्रेटिवको बेहद घृणा थी। यह उनको समस्त लाभदायक प्रवृत्तियोंके मार्गका कण्टक समझता था। लेकिन यह मस्लोवापर दयालु था और उसके साथ कोमलताका व्यवहार करता था; क्योंकि यह उसे इस बातका उदाहरण समझता था कि ऊँचे वर्गके लोग निम्न वर्गवालोंका शोषण किस प्रकार करते हैं। इसी कारण यह नेखलीडू-को भी नापसन्द करता था और उससे बहुत कम बातचीत करता था। यह हाथ मिलानेमें कभी नेखलीडूका हाथ नहीं दबाता था, केवल अपना हाथ बढ़ा दिया करता था।

तेरहवाँ अध्याय

आग जल चुकी थी और अँगीठी गरम थी। चाय तैयार हुई, प्याले और प्यालियोंमें डाली गयी और उसमें दूध मिलाया गया। बिस्कुट, ताजी राई, गेहूँकी रोटी, मक्खन, कड़े उबले हुए अण्डे और बछड़ेका सर तथा पैर, दस्तरखानपर रखे गये। हर एक आदमी पलंगके उस हिस्सेतक बढ़ गया था जिससे मेजका काम लिया जाता था। सब बैठकर खाने और बातें करने लगे। रेन्तसेवा बक्सपर बैठी चाय उँडेल रही थी और लोग उसको चारों तरफ घेरे बैठे थे। सिर्फ क्रिलसव अपना भीगा चोगा उतारकर, ऊनी चद्दरा ओढ़कर, अपनी जगहपर लेटा हुआ नेख्लीडूसे बात कर रहा था।

ठण्ढक और नमीमें चलनेके बाद, यहाँकी गन्दगी और बदइन्त-जामीको बहुत मेहनतसे दुरुस्त करके, और सब चीजोंको नियमपूर्वक लगाकर, गरम चाय पीने और कुछ खानेके बाद ये लोग बहुत प्रसन्न-चित्त हो रहे थे।

पैरोंकी धबधबाहट, साधारण कैदियोंकी चीख और गालियाँ, जो दीवारसे होकर इनके कानोंतक पहुँचती थीं, इस बातकी याद दिलाती थीं कि ये किस परिस्थितिमें हैं। फिर भी इससे इनकी प्रसन्नता बढ़ती जाती थी। ये लोग थोड़ी देरके लिए कष्ट और पतनसे घिरे होनेपर भी, अपनेको इनसे अपमानित समझ रहे थे, जैसे टापूमें बैठा हुआ कोई आदमी अपनेको समुद्रसे सुरक्षित समझता है। इसी वजहसे इनकी प्रफुल्लता बढ़ी और इनमें उत्तेजना आयी। ये लोग अनेक विषयोंपर बात-चीत कर रहे थे, अगर बात-चीत नहीं कर रहे थे तो अपनी वर्तमान दशाकी और अपने भविष्यकी चिन्ता कर रहे थे। बहुत मतभेद होनेपर भी इन लोगोंमें मेल-जोल और आकर्षण पैदा हो गया था। करीब-करीब सभी किसी न किसीसे प्रेम करने लगे थे। नोवोडवोरो सुन्दर हँसमुख ग्रैबेट्ससे प्रेम करने लगा था। यह वही विचारशून्य युवती थी जो थोड़ी-

बहुत पढ़ी-लिखी थी और क्रान्तिकारी प्रश्नोंसे बिल्कुल उदासीन थी, लेकिन समयके प्रभावमें आकर इसने कुछ गड़बड़ की और निर्वासित कर दी गयी थी। मुकदमेके तथा कैदके जमानेमें इसकी खास दिलचस्पी इसमें थी कि यह पुरुषोंको कहाँतक अपने वशमें रख सकती है। स्वाधीन रहते समय भी इसे यही दिलचस्पी थी। इस सफरमें यह अपने दिलको सांत्वना देती थी कि नोवोडवोरो मुझे चाहने लगा है और यह भी उसपर मोहित हो गयी थी। वीरा दुखोवा भी बड़ी प्रेमपरायण थी, लेकिन दूसरेके हृदयमें प्रेम जाग्रत् नहीं कर पाती थी, यद्यपि वह आशा करती थी कि कोई मुझसे प्रेम करेगा। कभी वह नबाटवकी तरफ और कभी नोवोडवोरोकी तरफ आकर्षित होती थी। क्रिलसवके दिलमें मेरी पावलोभ्नाके प्रति प्रेमकीसी एक भावना थी। यह उसे पुरुष हृदयसे प्रेम करता था। लेकिन यह जानते हुए कि मेरी इस प्रकारके प्रेमको कैसा समझती है, यह अपनी मुहब्बतको मित्रता और कृतज्ञताका रूप देकर प्रकट करता था। नबाटव और रेन्तसेवा अनेक गुत्थियोंसे एक दूसरेसे बँधे हुए थे। मेरी पावलोभ्ना निष्कलंक कुमारी थी और रेन्तसेवा थी पतिव्रता।

जब यह सोलह वर्षकी थी और स्कूलमें पढ़ती थी, पीटर्सबर्गकी यूनिवर्सिटीके एक विद्यार्थी रेन्तसेवसे इसका प्रेम हो गया और यूनिवर्सिटीकी पढ़ाई खतम होनेके पहले ही इसने उससे विवाह कर लिया। उस समय यह उन्नीस वर्षकी थी। यूनिवर्सिटीमें इसके पतिका चौथा साल था, जब विद्यार्थियोंमें कुछ झगड़ा हुआ और रेन्तसेव भी उसमें फँस गया। वह पीटर्सबर्गसे निर्वासित कर दिया गया और क्रान्तिकारी बन गया। यदि इस लड़कीने अपने पतिको सबसे श्रेष्ठ और बुद्धिमान् न समझा होता तो यह उससे प्रेम न करती और प्रेम न करती तो शादी भी न करती। लेकिन जिसे यह सबसे श्रेष्ठ और बुद्धिमान् समझती थी उससे प्रेम कर तथा शादी करके इसने जीवनपर उसी दृष्टिसे देखना आरम्भ किया जिस दृष्टिसे सबसे श्रेष्ठ और बुद्धिमान् पुरुष देखता था।

पहले यह युवक समझता था कि विद्योपार्जन जीवनका उद्देश्य है, इसलिए यह भी विद्योपार्जनको जीवनका उद्देश्य समझने लगी थी। उस समय यह बड़ी सफाईके साथ साबित करता था कि वर्तमान परिस्थिति ज्यादा दिनोंतक नहीं चल सकती और इस परिस्थितिका मुकाबला करना तथा ऐसी परिस्थिति लानेकी कोशिश करना जिसमें व्यक्ति स्वतन्त्रताके साथ उन्नति इत्यादि कर सके, हरएक आदमीका कर्तव्य है। उस समय यह उक्त बातोंको अपना भी खयाल समझती लेकिन वास्तवमें इसका पति जो कुछ कहता था उसको यह अकाट्य सत्य मान लेती थी और उसीसे सोलहों आने सहमत हो जाती थी। अपनी और अपने पतिकी आत्माका एकीकरण ही एकमात्र ऐसी स्थिति थी जिसमें इसको पूरा पूरा नैतिक सन्तोष मिलता था।

अपने पति तथा अपने बच्चेका वियोग (इसकी माँने बच्चेको अपने पास रख लिया था) इसके लिए बहुत असहनीय था। लेकिन इसने दृढ़ता और शान्तिके साथ इस दुःखको सहा; क्योंकि यह दुःख अपने पतिके लिए और ऐसे कामके लिए था जिसके अच्छे होनेमें इसे सन्देह नहीं था। बात यह थी कि इसका पति इस कामको अच्छा समझता था। यह सदा पतिका मनन करती रहती थी और जैसे उसकी मौजूदगी-में वैसे ही इस समय भी यह किसी दूसरेसे प्रेम कर ही नहीं सकती थी। लेकिन नबाटबके पवित्र और भक्तिपूर्ण प्रेमने इसके हृदयको स्पर्श किया था और इसको उत्तेजित कर दिया था। इस दृढ़ और नैतिक पुरुषने, जो इसके पतिका मित्र था, इसके साथ बहनके समान व्यवहार करनेकी कोशिश की, लेकिन व्यवहारमें इसके प्रति दूसरी ही भावना प्रकट होने लगी। इससे दोनों भयभीत थे, लेकिन इनके कठोर जीवनमें इसीकी वजहसे कुछ रस था।

इसलिए इस मण्डलीमें केवल मेरी पावलोम्ना और कोन्ड्रेटिव ही प्रेम-चर्यासे मुक्त थे।

चौदहवाँ अध्याय

नेखलीदू क्रिलसवके पास बैठा इस आशासे बातें कर रहा था कि पूर्ववत् चायके बाद कटूशासे एकान्तमें बातचीत करनेका मौका मिले। नेखलीदूने क्रिलसवसे बहुत-सी बातें कीं। उसमें उसने क्रिलसवसे मकरके अपराध और मकरकी प्रार्थनाके बारेमें भी जिक्र किया। क्रिलसव सावधानीसे सुनता रहा और अपनी चमकती हुई आँखोंसे नेखलीदूको देखता रहा।

"जी हाँ," उसने एकाएक कहा "मैं अक्सर सोचता हूँ कि हम लोग यहाँ तो इन लोगोंके साथ साथ चल रहे हैं—और ये लोग हैं कौन? यही लोग, जिनके लिए हम तकलीफें उठा रहे हैं, न हमको जानते हैं और न हम उनको जानते और जाननेकी इच्छा भी नहीं करते। ये लोग इतने बुरे हैं कि हमसे नफरत करते हैं और हमको दुश्मन समझते हैं। क्या यह भयंकर बात नहीं है?"

"इसमें कोई भयंकर बात नहीं है।" नोवोडवोरोने कहा, जिसने इन लोगोंकी बात सुन ली थी। "जनता तो हमेशा शक्ति, और केवल शक्तिकी ही उपासना करती है। गवर्नमेंटके पास इस समय शक्ति है इसलिए लोग उसकी उपासना करते हैं और हमसे नफरत करते हैं। यदि कल शक्ति हमारे हाथमें आ जायेगी तो ये हमारी पूजा करने लगेंगे।" इसने कहा।

इतनेमें दीवारके पीछेसे गालियोंकी बौछार और बेड़ियोंकी झनकार आयी। मालूम होता था कि दीवारपर कुछ धमधमा रहा है और चिल्लाहट हो रही है। कोई पीटा जा रहा है, कोई चिल्ला रहा है, "बचाओ, बचाओ, मार डाला।"

"सुनिये इन जानवरोंकी पुकार, हम लोगोंमें और इनमें कैसे संसर्ग हो सकता है?" नोवोडवोरोने शान्तिसे कहा।

"आप इनको जानवर कहते हैं और नेख्लीडू अभी हमें यही बता रहे थे।" क्रिलसवने चिढ़कर कहा और नोवोडवोरोसे बताया कि कैसे मकर अपने गाँवके एक आदमीको बचानेके लिए अपनी जान जोखिममें डाल रहा है। "यह पशुका काम हो सकता है! यह तो महापुरुषका काम है।"

"भावुकता है।" नोवोडवोरोने घृणासे उत्तर दिया "इन लोगोंकी भावनाओंको तथा इनके कामोंके अभिप्रायको मैं तो समझ नहीं सकता। आप इसे उदारता और परोपकार समझते हैं, लेकिन सम्भव है कि दूसरे कैदीके प्रति द्वेषके कारण वह ऐसा कर रहा हो।"

"यह क्या बात है कि आपको किसी दूसरेमें कोई अच्छाई कभी दिखाई ही नहीं देती?" मेरी पावलोम्नाने एकदम बिगड़कर कहा।

"जब अच्छाई हो तब न दिखाई पड़े?"

"अच्छाई तो है, नहीं तो कोई अपनी जान जोखिममें क्यों डालेगा?"

"मैं समझता हूँ।" नोवोडवोरोने कहा "अगर हम लोग कुछ करना चाहते हैं तो पहली शर्त यह है—" (इसी समय कोन्ड्रेटिवने अपनी पुस्तक, जिसे वह लालटेनकी रोशनीमें पढ़ रहा था, रख दी। वह अपने गुरुके शब्दोंको सावधानीसे सुनने लगा।) "कि हम कल्पना-के जालमें न फँसें बल्कि जो चीज जैसी है उसे वैसी ही देखनेकी कोशिश करें। अपनेमें जितनी शक्ति है उतनी शक्तिसे जनताके लिए, बदलेमें कुछ पानेकी आशा छोड़कर, काम करना चाहिये। जनता तो हमारी प्रवृत्तियोंका विषय हो सकती है। ये लोग जबतक अपनी वर्तमान जड़तामें फँसे हैं, हमारे सहकारी नहीं हो सकते।" इसने लेक्चर-सा देना शुरू किया। "इसलिए जबतक इनमें उन्नति न शुरू हो जाय, जिसके लिए हम तैयारी कर रहे हैं, इनसे किसी बातकी आशा करना भ्रम होगा।"

"किस किस्मकी उन्नति?" क्रिलसवने तमतमाकर कहा "हम लोग

अपनेको मनमानी निरंकुशताके खिलाफ बताते हैं। आपकी बातमें तो भयंकर निरंकुशता है।"

"इसमें जरा भी निरंकुशता नहीं।" नोवोडवोरोने शान्तिसे कहा "मैं तो यह कह रहा हूँ कि जनताको जिस रास्तेपर चलना है, वह मैं जानता हूँ और मैं उसको रास्ता बता सकता हूँ।"

"लेकिन आप निश्चित रूपसे कैसे कह सकते हैं कि जो रास्ता आप बता रहे हैं वही ठीक है? आपकी बातमें तो उसी प्रकारकी निरंकुशता पायी जाती है जो फ्रांसकी राज्यक्रान्ति और इन्क्विजिशनके अत्याचारोंकी जड़में थी। वे भी कहते थे कि विज्ञान द्वारा हमने सही रास्ता देख लिया है।"

"अगर उन लोगोंसे गलती हुई तो यह इस बातका सबूत नहीं कि मैं भी गलती करूँगा। इसके अलावा विचारकोंकी बड़बड़ाहटमें, और सच्चे अर्थशास्त्र द्वारा निर्धारित सिद्धान्तोंमें बड़ा फर्क होता है।

सारा कमरा नोवोडवोरोकी आवाजसे भर गया। वही बोल रहा था, बाकी सब चुप थे।

"ये लोग हमेशा बहस-मुबाहिसा करते रहते हैं।" जरा सी शान्ति होनेपर मेरी पावलोम्नाने कहा।

"और आपकी क्या राय है?" नेखलीडूने मेरी पावलोम्नासे पूछा।

"मेरी समझमें क्रिलसव ठीक कह रहे हैं। हमें अपनी राय जनताके ऊपर न लादनी चाहिये।"

"और कटूशा, तुम्हारी क्या राय है?" नेखलीडूने मुस्कराते हुए पूछा। वह चिंताके साथ उत्तरकी प्रतीक्षा करने लगा। उसे भय था कि कटूशा कोई भोंडी बात न कह दे।

"मैं समझती हूँ कि जनताके साथ अत्याचार किया जाता है।" यह कहकर मस्लोवा कुछ झेंपी। मैं समझती हूँ कि बहुत अत्याचार किया जाता है।"

"ठीक कहा मस्लोवा, बहुत ठीक कहा।" नबाटव चिल्लाकर

बोला। "जनताके साथ भयंकर अत्याचार होता है—और जनता—इसके साथ अत्याचार न होना चाहिये, बस यही हमारा लक्ष्य है।"

"क्रान्तिका तो यह बड़ा आश्चर्यजनक लक्ष्य हुआ?" नोवोडवोरोने चिढ़कर कहा और चुपचाप सिगरेट पीने लगा।

"मैं इससे बात नहीं कर सकता।" क्रिलसवने बहुत धीरेसे कहा और चुप हो गया।

"अच्छा है, आप बात न कीजिये।" नेख्लोडूने कहा।

पन्द्रहवाँ अध्याय

यद्यपि सभी क्रान्तिकारी नोवोडवोरोका सम्मान करते थे और वह बहुत विद्वान् था भी तथा लोग उसे बहुत बुद्धिमान् समझते भी थे, पर नेख्लीडू उसको उन आदमियोंमें समझता था जो साधारण नैतिक आदर्शके निम्न श्रेणीके क्रान्तिकारियोंमें होते हैं। इस आदमीकी बौद्धिक शक्ति अधिक थी, लेकिन अपने बारेमें इसका अपना विचार दूर कहीं ज्यादा बड़ा था।

इसका स्वभाव साइमनसनके स्वभावसे विपरीत था। साइमनसनको पुरुष-प्रकृतिका कह सकते हैं। इसकी बुद्धिके निश्चयोंसे इसके कर्म पैदा होते थे और यही निश्चय इसके कर्मको निर्धारित भी करते थे। इसके विपरीत नोवोडवोरोको स्त्री-प्रकृतिका कह सकते हैं। यह अपनी बुद्धिको उस लक्ष्यकी प्राप्तिके लिए काममें लाता था जिसे इसकी भावनाओंने निश्चित किया हो, तथा अपनी बुद्धिको भावना द्वारा प्रेरित कामोंको उचित सिद्ध करनेमें लगाता था।

नोवोडवोरोकी सारी क्रान्तिकारी प्रवृत्तियोंकी बुनियाद उसकी शक्ति-लोलुपता और कीर्ति-प्राप्तिकी लालसा थी, यद्यपि वह कहता यह था, और बहुत योग्यतापूर्वक समझा दिया करता था कि इन प्रवृत्तियोंका आधार और स्रोत कुछ और ही है। पहले तो दूसरेके विचारोंको समझकर उनको ठीक शब्दोंमें प्रकट करनेकी उसकी योग्यताने उसे स्कूल और युनिवर्सिटीमें, जहाँ ऐसी योग्यताकी बड़ी कदर है, विद्यार्थियों और शिक्षकोंके बीच प्रभुत्व दे दिया, और वह बहुत संतुष्ट रहता था; लेकिन पढ़ाई खतम हो जाने पर जब उसे डिप्लोमा मिल गया, उसका यह प्रभुत्व जाता रहा और उसने अपने विचार (क्रिलसवके कथनानुसार, जो उसे पसंद नहीं करता था) इसलिए एकदम बदल दिये कि दूसरे

क्षेत्रमें प्रभुत्व प्राप्त करे और वह नरम दलसे एकाएक नारोडोवेल्स्टवका कट्टर अनुयायी बन गया।

नोवोडवोरोमें वे नैतिक और ललित गुण नहीं थे जो संशयों और दुविधाओंको जन्म देते हैं। इसलिए बहुत ही जल्द वह क्रान्तिकारी दलका नेता बन गया और इससे संतुष्ट हो गया। एक बार किसी मार्गपर कदम बढ़ा देनेके बाद उसे कभी संकोच या संशय न होता था, इसलिए उसे पूर्ण विश्वास रहता था कि मुझसे कभी गलती होती ही नहीं। उसे हर एक चीज बिल्कुल सरल, स्पष्ट और निश्चित दिखाई देती थी। विचारोंकी संकीर्णता और एकपक्षताकी वजहसे हर एक चीज उसको सीधी, सादी और बिल्कुल साफ दिखाई देती थी। वह कहता था कि तर्कसे काम लो, सब चीज स्पष्ट दिखाई दे जायगी। अपने ऊपर उसको इतना अधिक विश्वास था कि इसके कारण लोग या तो उससे दूर भागते थे या उसके सामने सर झुका देते थे। उसकी प्रवृत्तियाँ बहुत कम उम्रके लोगोंमें हुआ करती थीं। वे लोग उसके आत्मविश्वासको उसकी गहराई और बुद्धिमत्ता समझते थे। अधिकांश लोग उसकी बात· को चुपचाप मान लेते थे। क्रान्तिकारी क्षेत्रमें उसको बड़ी सफलता मिली। उसने एक विद्रोहकी तैयारी करने और सारी शक्ति अपने हाथमें ले लेनेका प्रयत्न किया। इसके लिए उसने एक अंतरंग सभा बुलायी। इस सभाके सामने उसने अपना कार्यक्रम पेश किया। उसको पूरा विश्वास था कि यह कार्यक्रम हर एक समस्याको हल कर देता है, और यह अवश्य सफल रहेगा।

नोवोडवोरोके साथी उसका आदर तो करते थे लेकिन उससे प्रेम नहीं करते थे। वह भी किसीसे प्रेम नहीं करता था और समस्त प्रसिद्ध आदमियोंको अपना प्रतिद्वन्द्वी मानता था। अगर उसकी चलती तो वह इन लोगोंके साथ वही व्यवहार करता जो बड़े बन्दर छोटे बन्दरोंसे करते हैं। उसका वश चलता तो वह दूसरे आदमियोंकी समस्त बौद्धिक शक्तियों तथा उनकी योग्यताओंको तोड़-फोड़ डालता जिससे वे लोग इसके कौशल

प्रदर्शनमें विघ्न न डाल सकें। जो लोग इसके सामने सर झुका देते उनके साथ यह अच्छा व्यवहार करता था। इस सफरमें कौन्ड्रेटिवके साथ इसका बर्ताव बहुत अच्छा था; क्योंकि यह उसके विचारोंसे प्रभावित हो चुका था। वीरा दुखोवा और सुन्दर नन्ही-सी ग्रैबेट्सके साथ भी इसका व्यवहार अच्छा था; क्योंकि दोनों ही इसपर मोहित थीं। यद्यपि सिद्धान्तरूपसे, यह स्त्रियोंमें आन्दोलन चलानेके पक्षमें था लेकिन अपनी अन्तरात्मामें सब स्त्रियोंको मूर्ख और महत्त्वशून्य समझता था सिवाय उन स्त्रियोंके जिनसे इसकी मुहब्बत हो जाती थी (जैसी कि इस समय ग्रैबेट्ससे थी)। इन स्त्रियोंको यह असाधारण समझता था और इनकी योग्यताको समझनेका अधिकारी अपनेको ही मानता था। स्त्री-पुरुष-सम्बन्धके प्रश्नको यह दो शब्दोंमें हल कर देता था—'स्वच्छन्द सम्पर्क'।

एक स्त्री इसकी नाममात्रकी स्त्री थी और एक वास्तविक स्त्री थी, जिससे यह इस नतीजेपर पहुँचकर अलग हो गया था कि अब इन दोनोंमें प्रेम बाकी नहीं रहा। वह अब सोच रहा था कि ग्रैबेट्सके साथ स्वच्छन्द सम्पर्क कर ले। नोवोडवोरो नेख्लीडूसे उसकी मूर्खताके कारण नफरत करता था और यह मूर्खता थी मस्लोवाके पीछे पीछे फिरनेकी, लेकिन विशेषकर घृणा इसलिए थी कि नेख्लीडू वर्तमान प्रणालीके दोषोंपर तथा इनके सुधारपर स्वतन्त्रतासे विचार करता था और उसके विचार करनेका ढंग नोवोडवोरोसे भिन्न था। नेख्लीडूका अपना ढंग, नोवोडवोरोके मतानुसार, राजाओंका (यानी बेवकूफोंका) ढंग था। नोवोडवोरोके हृदयमें नेख्लीडूके प्रति जो भावना थी उसे वह समझता था और उसे यह जानकर बड़ा दुःख होता था कि यद्यपि सारे रास्तेमें चारों तरफ अनुकूल वातावरण मिला फिर भी उसे नोवोडवोरोके प्रति 'जैसेको तैसा' व्यवहार करना पड़ा।

———

सोलहवाँ अध्याय

दूसरे कमरेसे सरकारी अफसरोंकी आवाज सुनाई दी। सारे कैदी शान्त हो गये और एक सार्जेन्ट, गारदके दो सिपाही लिये हुए, दाखिल हुआ। मुआइनेका समय आ चुका था। सार्जेन्टने सब कैदियों-की गिनती की और जब वह नेख्लीडूके पास आया, उसने बड़े अदबके साथ कहा—"राजकुमार! मुआइनेके बाद आपको न ठहरना चाहिये। अब आप जायँ।"

नेख्लीडू इसका मतलब समझ गया। उसने पास जाकर सार्जेन्टके हाथमें तीन रूबलका नोट रख दिया।

"ओहो! आपके साथ भला कोई क्या सख्ती करेगा! अच्छा, ठह-रिये; थोड़ी देर और ठहर जाइये।" यह सार्जेन्ट जानेवाला ही था कि दूसरा आ गया। इसके पीछे एक दुबला-पतला कैदी था जिसकी दाढ़ी छोटी थी और आँखके नीचे चोटके निशान थे।

"मैं लड़कीको देखने आया हूँ।" कैदीने कहा।

'देखो, बप्पा आ गये।" एक बच्चेकी आवाज सुनाई दी। सुनहरे बालोंका सर रेन्तसेवाके पीछेसे बाहर निकल पड़ा। कटूशा और मेरी पावलोम्नाकी मददसे रेन्तसेवा अपने पेटीकोटके कपड़ेसे इस बच्चीके लिए नया कपड़ा सी रही थी।

"अच्छा बिटिया! मैं हो हूँ।" बुजोवकिन कैदीने वात्सल्यसे कहा।

"यहाँपर यह बड़े आरामसे है।" मेरी पावलोम्नाने बुजोवकिनके चोट खाये हुए चेहरेको दयासे देखकर कहा। "इसे हम लोगोंके ही पास रहने दीजिये।"

"ये महिलाएँ मेरे लिए नये कपड़े सी रही हैं।" लड़कीने रेन्त-सेवाकी सिलाईको दिखाकर कहा "अच्छे लाल लाल कपड़े!" लड़की खूब बातें करने लगी।

"तुम हमारे पास सोओगी न ?" रेन्तसेवाने बच्चीको प्यार करते हुए कहा।

"हाँ, मैं सोऊँगी और बप्पा भी सोयेंगे।"

रेन्तसेवाके चेहरेपर मुस्कराहट आ गयी।

"नहीं, बप्पा नहीं सो सकते।" रेन्तसेवाने कहा और बुजोवकिन-की तरफ मुड़कर बोली "अच्छा, हम लोग इसको रख लेंगे।"

"ठीक है। तुम इसको यहीं छोड़ दो।" पहले सार्जेन्टने कहा और दूसरोंके साथ चला गया।

ये लोग ज्यों ही कमरेसे बाहर गये, नबाटव बुजोवकिनके पास पहुँचा और उसके कन्धोंको थपथपाकर बोला—"क्या यह सच है कि कारमनोट अदलाबदली करना चाहता है ?"

बुजोवकिनका दयापूर्ण मृदुल चेहरा एकदम उदास हो गया। उसकी आँखोंके सामने धुँधली-सी छा गयी।

"हमने सुना है...कुछ तो नहीं।" उसने धीरे धीरे कहा और अपनी आँखोंको उसी प्रकार अश्रुपूर्ण किये हुए बच्चीकी तरफ घूम गया।

"अच्छा अकसुत्का ! मालूम होता है कि तुम इन महिलाओंके साथ बहुत आरामसे हो। अच्छी बात है।" उसने कहा और चल दिया।

"अदलाबदलीवाली बात ठीक मालूम होती है और यह अच्छी तरह जानता है," नबाटवने कहा "अब क्या करना चाहिये ?"

"मैं अधिकारियोंसे अगले पड़ावपर कह दूँगा। मैं दोनों कैदियोंको पहचानता हूँ।" नेख्लीडूने कहा।

सब चुप हो गये और इस बातकी आशंका करने लगे कि अभी बहस-मुबाहिसा शुरू होगा।

साइमनसन उठा। यह अभीतक अपने सरके नीचे हाथोंका तकिया लगाये चुपचाप लेटा था। अब यह और बैठे लोगोंके पाससे सावधानीसे गुजरता हुआ नेख्लीडूके पास पहुँचा।

"इस समय क्या आप मुझसे बात कर सकेंगे ?"

"अवश्य !" नेख्लीडूने कहा और उसके पीछे चला गया।

कटूशाने अचंभेसे देखा और जब नेख्लीडूसे उसकी चार आँखें हुईं तो वह झेंप गयी और अपना सर हिलाने लगी, मानो परेशानीमें हो।

"मैं आपसे इस विषयपर बातचीत करना चाहता था।" साइमनसनने कहना शुरू किया, जब ये बाहर दालानमें निकल आये। बाहरकी दालानमें साधारण कैदियोंकी आवाज खूब गूँज रही थी और शोर बढ़ता ही जाता था। नेख्लीडूने मुँह बनाया, लेकिन साइमनसन इससे घबराया नहीं।

"मैं आपके और कटूशा मस्लोवाके संबंधको जानता हूँ।" उसने गंभीरता तथा स्पष्टतासे कहना शुरू किया और अपनी मृदुल आँखोंसे नेख्लीडूके चेहरेकी तरफ सीधा देखने लगा। "मैं यह अपना कर्तव्य समझता हूँ—।" इसको रुक जाना पड़ा; क्योंकि दर्वाजेके पास ही दो आदमी जोर जोरसे चिल्लाते और आपसमें झगड़ा करते थे।

"मैं कहता हूँ बेवकूफ, यह मेरी नहीं है।" एक आदमी चिल्लाकर कह रहा था।

"चुप रह बदमाश !" दूसरा आदमी जोरसे कह रहा था।

इतनेमें मेरी पावलोभ्ना भी दालानमें आ गयी।

"यहाँ कोई कैसे बातें कर सकता है ?" मेरीने कहा। "इसमें चले जाइये, वीरा अकेली है।" और वह दूसरे दर्वाजे होती हुई एक छोटे-से कमरेमें घुसी जो तनहाईकी कोठरी थी और अब राजनीतिक स्त्री-कैदियोंके लिए अलग कर दी गयी थी। वीरा दुखोवा सरसे पैरतक अपनेको ढके हुए चारपाईपर लेटी हुई थी।

"वीराके सरमें दर्द था। वह सो गयी। आप लोगोंकी बातें वह सुन न सकेगी और मैं जाती हूँ।" मेरी पावलोभ्नाने कहा।

"जानेकी बात न कीजिये, ठहरिये।" साइमनसनने कहा "मैं तो अपनी बात किसीसे छिपाता नहीं, खासकर आपसे।"

"अच्छी बात है।" मेरी पावलोभ्नाने कहा और वह अपने शरीर-

को बच्चेकी तरह इधरसे उधर झुलाती हुई चारपाईके एक कोनेमें जाकर बैठ गयी और सुनने लगी। उसकी सुन्दर नीली आँखें, मालूम होता था कि कहीं बहुत दूर देख रही हैं।

"अच्छा, मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ" साइमनसनने फिर दुहराया। "आपके और कटूशाके संबंधको जानते हुए भी मैं यह अपना कर्तव्य समझता हूँ कि उसके साथ अपना सम्बन्ध भी आपको समझा दूँ।"

नेख्लीडू साइमनसनकी इस सरलता और स्पष्टवादितापर बहुत प्रसन्न हो गया।

"मैंने आपका मतलब नहीं समझा।" नेख्लीडूने कहा।

"मेरा मतलब यह है कि मैं कटूशा मस्लोवासे शादी करना चाहता हूँ।"

"कितने आश्चर्यकी बात है!" मेरी पावलोग्नाने साइमनसनकी तरफ टकटकी लगाकर देखते हुए कहा।

"और इसलिए मैंने निश्चय कर लिया है कि उससे अपने साथ विवाह कर लेनेको कहूँ।" साइमनसनने कहा।

"मैं इसमें क्या कर सकता हूँ?" नेख्लीडूने उत्तर दिया "यह तो कटूशापर निर्भर है।"

"हाँ, यह तो आप ठीक कहते हैं; लेकिन बिना आपसे पूछे वह कोई निश्चय नहीं कर सकती।"

"क्यों?"

"इसलिए कि जबतक आपका और उसका संबंध अनिश्चित है, वह कोई पक्का इरादा नहीं कर सकती।"

"जहाँतक मेरा संबंध है, वह तो अंतिम तौरसे निश्चित हो चुका है। मैं तो वही करना चाहता हूँ जो अपना कर्तव्य समझता हूँ और उसके कष्टको हल्का करना चाहता हूँ। लेकिन मैं किसी तरह भी उसपर कोई दबाव नहीं डालना चाहता।"

"ठीक है, लेकिन वह आपके इस बलिदानको स्वीकार करनेके लिए तैयार नहीं है।"

"इसे मैं बलिदान नहीं समझता।"

"मैं जानता हूँ, लेकिन इस संबंधमें उसका निश्चय अंतिम है।"

"अगर यह बात है तो मुझसे पूछनेकी कोई जरूरत नहीं।" नेख्लीडूने कहा।

"वह चाहती है, आप इस बातको स्वीकार कर लें कि आप उसके विचारसे सहमत हैं।"

"भला मैं यह कैसे स्वीकार कर सकता हूँ कि मुझे अपना कर्तव्य न करना चाहिये ? मैं सिर्फ यही कह सकता हूँ कि मैं आजाद नहीं, वह आजाद है।"

साइमनसन शान्त हो गया। थोड़ी देर सोचनेके बाद उसने कहा—"अच्छी बात है, मैं उससे कह दूँगा। आप यह न समझियेगा कि मैं उसपर मोहित हूँ।" साइमनसन बोला "मैं उसे प्यार जरूर करता हूँ लेकिन इसलिए कि वह एक विचित्र तेजस्विनी है जिसने बहुत कष्ट उठाया। मैं उससे कुछ नहीं चाहता। मेरी उत्कट इच्छा यह है कि मैं उसके दुःखको हल्का करनेमें—"

साइमनसनकी आवाज काँपने लगी ? यह देखकर नेख्लीडूको आश्चर्य हुआ।

—"मदद दूँ। अगर वह आपकी सहायता स्वीकार करना नहीं चाहती तो मेरी सहायता स्वीकार करने दीजिये। अगर उसने पसन्द किया तो मैं अधिकारियोंसे कहकर वहाँ चला जाऊँगा जहाँ वह कैद होगी। चार बरसका समय कोई अनन्त काल नहीं है। मैं उसके नजदीक रहूँगा, शायद मैं उसके दुःखको हल्का कर सकूँ......।" वह फिर रुक गया और इतना विह्वल हो गया कि बात नहीं कर सका।

"मैं क्या कह सकता हूँ ?" नेख्लीडूने कहा "मुझे तो इस बातकी कद्रशाखुशी है कि ।को आप जैसा संरक्षक मिल गया।"

"मैं यही तो जानना चाहता था।" साइमनसनने कहा "मैं जानना यह चाहता हूँ कि जब आप उससे प्रेम करते हैं, उसे सुखी देखना चाहते हैं, तो क्या आप इसे अच्छा समझेंगे कि वह मेरे साथ शादी कर ले ?'

"जी हाँ।" नेख्लीडूने निश्चयपूर्वक कहा।

"सब बातें उसीपर निर्भर हैं। मैं तो यही चाहता हूँ कि उसकी दुखी आत्माको शान्ति मिले।" साइमनसनने बहुत प्रेमके साथ कहा जिस प्रेमकी आशा ऐसे उदास मुँहवाले आदमीसे कोई कर ही नहीं सकता था।

साइमनसन उठकर खड़ा हो गया। वह मुस्कराता और झेंपता हुआ नेख्लीडूके पास गया और उसे चूम लिया।

"तो मैं उससे यही बात कह दूँगा।" साइमनसनने कहा और चला गया।

सत्रहवाँ अध्याय

"इसके बारेमें आपकी क्या राय है?" मेरी पावलोभ्नाने कहा "मुग्ध है, बिल्कुल मुग्ध, और यह एक ऐसी बात है जिसकी इनसे मुझे किंचिन्मात्र आशा नहीं थी—लादीमीर साइमनसन प्रेम करने लगे और बच्चोंकी तरह इस बेवकूफीके साथ! बड़े ताज्जुबकी बात है। सच तो यह है कि अफसोसकी बात है।" मेरी पावलोभ्नाने कहा और लंबी साँस ली।

"लेकिन वह—कटूशा? वह इनकी इस अवस्थाको किस दृष्टिसे देखती है?" नेखलीडूने पूछा।

"वह?" मेरी पावलोभ्ना ठहर गयी। वह यथासम्भव नपा-तुला उत्तर देना चाहती थी। "वह? आप देखिये, यद्यपि उसका अतीत जो कुछ रहा है फिर भी उसकी प्रकृति अत्यंत नैतिक है—उसकी भावनाएँ बड़ी उच्च हैं। वह आपसे प्रेम करती है और ठीक प्रेम करती है। वह इसीमें सुखी है कि आपके साथ निषेधात्मक भलाई कर रही है, अर्थात् वह आपको अपने मामलेमें फाँसना नहीं चाहती। वह अगर आपके साथ शादी कर ले तो उसका घोर पतन हो जाय—अतीतसे भी निकृष्ट। इसलिए वह इस बातपर कभी राजी न होगी। इतनेपर भी आपकी मौजूदगीसे उसे बेचैनी रहती है।"

"अच्छा, तो मैं क्या करूँ? क्या गायब हो जाऊँ?"

मेरी पावलोभ्नाने बच्चोंकी तरह मिठासके साथ मुस्कराते हुए कहा—"हाँ, अंशतः।"

"कोई अंशतः कैसे गायब हो सकता है?"

"खैर, यह तो मैं बकवाद कर रही थी। लेकिन जहाँतक कटूशाका सम्बन्ध है, मैं आपसे बताना चाहती हूँ कि वह इनके इस उन्मादपूर्ण

प्रेमको मूर्खता समझती है—इन्होंने कटूशासे तो बातचीत की है नहीं—और वह प्रसन्न भी है और डरती भी है। आप जानते हैं कि ऐसे मामलों में मुझे सही राय कायम करनेका अधिकार नहीं है। फिर भी मेरा यह विश्वास है कि साइमनसनके दिलमें वही भावना है जो साधारणसे साधारण पुरुषके दिलमें पायी जाती है, यद्यपि है छिपी हुई। वह कहता है 'इस प्रेमसे मेरी शक्ति बढ़ती है, मेरा प्रेम निःस्वार्थ है' लेकिन मैं जानती हूँ कि यह कितना ही असाधारण क्यों न हो, इसकी तहमें वही क्रूरता है......वही जो नोवोडवोरो और ग्रैबेट्सके दर्मियान पायी जाती है।"

मेरी पावलोभ्ना विषयसे हट गयी थी और अपने पुराने विषयपर पहुँच गयी थी।

"फिर मैं क्या करूँ?" नेख्लीडूने पूछा।

"मैं समझती हूँ कि उससे सब बातें कह दीजिये। हर एक बातको साफ साफ कह देना हमेशा उत्तम होता है। उससे आप बात कर लीजिये। क्या मैं उसे बुला दूँ?" मेरी पावलोभ्नाने कहा।

"जी हाँ, बुला दीजिये, मेहरबानी होगी।" नेख्लीडूने कहा।

मेरी पावलोभ्ना बाहर चली गयी।

इस छोटे कमरेमें वीरा दुखोवा सो रही थी। यहाँ अकेले रह जानेपर नेख्लीडूको वीराके श्वासोच्छ्वासकी हल्की आवाज सुनाई पड रही थी। कभी कभी कराहना भी सुन पड़ता था। इसके साथ साधारण कैदियोंका शोर भी दोनों दर्वाजोंको चीरकर आ रहा था। नेख्लीडूके मनमें विचित्र भावनाएँ उठने लगीं। साइमनसनने उससे जो कुछ कहा था वह उसे उस कर्तव्यसे मुक्त कर देता था जो उसने अपने ऊपर ले रखा था और जो अपनी कमजोरीके क्षणोंमें उसे कभी कभी कठोर और अद्भुत भी मालूम पड़ता था। लेकिन इस तरहसे मुक्त हो जाने पर उसे अरुचि ही नहीं हुई बल्कि दुःख भी हुआ। उसको ऐसा अनुभव होने लगा कि साइमनसनके प्रस्तावसे मेरे बलिदानकी असाधारणता नष्ट हो गयी।

इसलिए उसकी कदर दूसरोंकी नजरोंमें और अपनी नजरोंमें भी घट गयी। जब ऐसा भला आदमी पाया जाता है, जो मस्लोवाके साथ किसी बंधनमें बँधा न होनेपर भी, अपने जीवनको उसके साथ सूत्रबद्ध करनेको तैयार है तो स्पष्ट है कि उसके (नेख्लीडूके) बलिदानका कोई महत्त्व नहीं था। इस भावनामें साधारण द्वेषका भी कुछ सम्मिश्रण हो सकता था। वह कटूशाके प्रेमका इतना आदी हो चुका था कि कटूशा-का कभी दूसरेको प्यार कर सकना उसकी समझके बाहर था।

कैदके दिन काटते समय कटूशाके निकट जीवन बितानेकी नेख्लीडू-की योजना भी इस प्रस्तावके कारण गड़बड़ा गयी। अगर कटूशाने साइमनसनसे शादी कर ली तो यहाँ मेरे रहनेकी आवश्यकता जाती रहती है। तब नयी योजना बनानी पड़ेगी।

नेख्लीडूके अपनी इन भावनाओंका विश्लेषण कर सकनेसे पहले ही दर्वाजा खुलनेपर कैदियोंका शोर जोरके साथ आने लगा (आज इन लोगोंमें कोई विशेष बात चल रही थी) और कटूशा आ गयी।

तेजीसे कदम रखती हुई वह नेख्लीडूके नजदीक जाकर खड़ी हो गयी।

"मेरी पावलोव्नाने मुझे भेजा है।" उसने कहा।

"हाँ, मुझे तुमसे बातें करनी हैं। बैठ जाओ। व्लादीमीर साइमन-सन अभी मुझसे बातें करके गये हैं।"

कटूशा बैठ गयी। उसने अपनी गोदमें हाथ मोड़कर रख लिये। वह बिल्कुल शान्त थी, लेकिन ज्यों ही नेख्लीडूने साइमनसनका नाम लिया, उसका चेहरा लाल पड़ गया।

"उन्होंने क्या कहा ?" कटूशाने पूछा।

"उन्होंने मुझसे यह कहा कि वे तुमसे शादी करना चाहते हैं।"

कटूशाका चेहरा एकदम दुःखसे फीका पड़ गया। उसने बिना कुछ कहे आँखें नीचे कर लीं।

"वे मेरी स्वीकृति या सलाह चाहते हैं। मैंने उनसे कहा कि यह

सब तुम्हारे ऊपर (कटूशाके ऊपर) निर्भर है । तुम्हीं निश्चित कर सकती हो ।"

"इसका क्या मतलब ? क्यों ?" कटूशाने कहा और अपनी तिरछी आँखोंसे नेख्लीडूकी तरफ देखा । दोनों कई क्षणतक चुपचाप बैठे एक दूसरेकी आँखोंमें देखते रहे और इस दृष्टिने एक दूसरेको बहुत कुछ भाव बता दिया ।

"निश्चय तो तुम्हींको करना पड़ेगा ।" नेख्लीडूने फिर दुहराया ।

"मैं क्या निश्चय करूँ ? हर एक बात तो बहुत पहले ही निश्चित हो चुकी है ।"

"नहीं, निश्चय करना पड़ेगा कि तुम लादीमीर साइमनसनके प्रस्तावको स्वीकार करती हो या नहीं ।" नेख्लीडूने कहा ।

"मैं—एक कैदी—किस किस्मकी पत्नी बन सकती हूँ ? मैं लादीमीर साइमनसनकी जिंदगीको भी क्यों चौपट करूँ ?" कटूशाने भौंहें चढ़ाते हुए कहा ।

"लेकिन अगर सजा मन्सूख हो गयी तो ?"

"मुझे छोड़िये । अब कुछ कहना-सुनना बाकी नहीं है ।" उसने कहा और कमरेसे उठकर चली गयी ।

अठारहवाँ अध्याय

कट्यूशाके पीछे-पीछे जब नेख्लीडू पुरुष कैदियोंके कमरेमें वापस गया, उसने देखा कि सब लोग उत्तेजित हैं। नबाटव हर जगह जाकर, हर एक आदमीसे मिलकर, हर एक चीज देख-भालकर अभी खबर लाया था जिसको सुनकर सब लोग थर्रा गये थे। खबर यह थी कि यहाँ किसी दीवारपर क्रान्तिकारी पेटलिनका, जिसको कड़ी मिहनतकी सजा मिली थी और जिसके बारेमें सब यही समझते थे कि वह कारा पहुँच गया, लिखा हुआ एक नोट मिला है। इस नोटसे पता चलता था कि वह हालमें ही इसी रास्ते गया है और साधारण कैदियोंमें वही अकेला राजनीतिक कैदी था।

"सत्रह अगस्तको" नोटमें लिखा था "मुझे अकेला साधारण कैदियोंके साथ रवाना कर दिया गया। निवीरव भी मेरे साथ था लेकिन कजनके पागलखानेमें उसने फाँसी लगा ली। मैं बहुत अच्छी तरह हूँ और प्रसन्न हूँ। आशा है, भविष्यमें अच्छी तरह रहूँगा।"

सभी लोग पेटलिनके बारेमें तथा निवीरवकी आत्महत्याके कामोंपर बात-चीत कर रहे थे। केवल किलसव चुपचाप बैठा कुछ सोच रहा था। इसकी चमकदार आँखें सामने एकटक लगी थीं।

"मेरे पतिने बताया था कि निवीरवको, जब वह पेट्रोपाव्लोव्स्कीमें ही था, आकाशवाणी सुनाई दी थी।" रेन्तसेवाने कहा।

"हाँ! वह कवि था, कल्पना-प्रवण था। ऐसे लोग तनहाईकी कैद नहीं सह सकते।" नोवोडवोरोने कहा, "इसीलिए जब मुझे तनहाई हुई तब मैं कभी अपनी कल्पनापर जोर नहीं देता था और अपने दिनके कार्यक्रमोंको नियमित रूपसे चलाता था। इसीसे बहुत अच्छी तरह उन दिनोंको काट ले गया।"

"हर एक चीज आदमी सह लेता है। देखिये, जब मुझे तालेके अंदर बंद कर दिया, मैं बहुत खुश हुआ।" नबाटवने प्रसन्नतासे कहा। मण्डली-में जो उदासी छायी हुई थी उसे वह हटा देना चाहता था। "आदमी हर एक चीजसे डरता रहता है, कहीं पकड़ न जाऊँ, कहीं दूसरे न फँस-जायँ, कहीं सब काम खराब न हो जाय, लेकिन जब गिरफ्तार हो गया तो सब जिम्मेदारी खतम हो जाती है और आदमी आराम कर सकता है—आरामसे बैठे और सिगरेट पीता रहे।"

"आप तो उसको अच्छी तरहसे जानते थे न?" मेरी पावलोम्नाने पूछा और क्रिलसवके बदले और उतरे हुए चेहरेकी तरफ चिंतासे देखा।

"निवीरवको आप कल्पना-प्रवण कहते हैं?" क्रिलसवने एकाएक कहना शुरू किया और हाँफने लगा, मानों वह देरसे चिल्ला रहा है। "निवीरव महान् आत्मा था और जैसा हम लोगोंका वार्डर कहा करता था, उसके समान महान् आत्माको यह पृथ्वी विरले ही पैदा करती है।' जी हाँ......उसका हृदय साफ था। एक एक बात देख लीजिये। वह झूठ नहीं बोल सकता था, कपट नहीं कर सकता था। उसकी सारी बातें निश्छल और साफ होती थीं। वह बड़ी अच्छी तबीयतका आदमी था, ऐसा नहीं......लेकिन अब बातचीत करनेसे क्या फायदा?" अब क्रिलसव थोड़ी देरके लिए रुक गया और फिर त्योरियाँ चढ़ाकर बोला— "हम लोग इसपर बहस-मुबाहिसा करते हैं कि पहले जनतामें शिक्षा प्रचार किया जाय, इसके बाद सामाजिक जीवनमें परिवर्तन किया जाय या पहले सामाजिक जीवनमें परिवर्तन किया जाय। फिर यह बहस करने लगते हैं कि हम संघर्ष कैसे चलावें, शान्तिमय प्रचारसे या आतंकवादसे? बस, हम बहस-मुबाहिसा करते रहते हैं। लेकिन ये लोग ऐसा नहीं करते। ये अपना काम जानते हैं। इनको इस बातकी पर्वाह नहीं कि दस-बीस आदमी मरते हैं या सैकड़ों। और कैसे आदमी? सबसे श्रेष्ठ आदमीका ये लोग बलिदान करना चाहते हैं। हरजन कहा करता था कि जब दिस-म्बरियोंको समाजसे अलग कर दिया गया तो हमारे समाजका पाया

झुक गया और मैं समझता हूँ कि जरूर झुक गया था। इसके बाद हरजन और इसके साथी उठा लिये गये और अब निवीरव......"

"लेकिन इस प्रकारके सभी आदमियोंका नाश नहीं हो सकता" नबाटवने हँसते हुए कहा "इस परम्पराको चलाते रहनेके लिए बराबर आदमी आते जायेंगे।"

"नहीं, अगर हम इनपर दया दिखाते रहे तो यह न होगा।" क्रिलसवने आवाज ऊँची करके कहा "मुझे एक सिगरेट दीजिये।"

"ओ अनाटोले, सिगरेट मत पियो; तुम्हें नुकसान करेगा।" मेरी पावलोम्नाने कहा।

"जाने भी दीजिये।" क्रिलसवने कुछ रुष्ट होकर कहा और सिगरेट जलाया, लेकिन फौरन खाँसने लगा। उसे उबकाई आने लगी मानो फौरन कै हो जायगी। उसने कफ थूका और कहा—"अभीतक जो काम हम लोग कर रहे थे वह ठीक नहीं था। बहस-मुबाहिसेका समय नहीं है। सबको मिल जाना चाहिये...और उनको नष्ट कर देना चाहिये।"

"लेकिन वे लोग भी तो आदमी ही हैं।" नेख्लीडूने कहा।

"नहीं, वे-आदमी नहीं हैं, अगर आदमी होते तो ऐसा काम क्यों करते...नहीं...सुनते हैं कि बम और गुब्बारे बनाये गये हैं। कोई गुब्बारेमें बैठकर आसमानमें जाय और बम बरसाकर इन लोगोंको खटमलकी तरह भून डाले...हाँ। क्योंकि"...क्रिलसव अपनी बात जारी रखना चाहता था, लेकिन उसे पहलेसे ज्यादा जोरकी खाँसी आ गयी और उसके मुँहसे खून गिरने लगा। नबाटव दौड़कर कुछ बरफ लाया, मेरी पावलोम्नाने वलेरियन* रस लाकर उसे दिया। लम्बी लम्बी और जल्द जल्द साँस लेते हुए इसने इसे अपने पतले सफेद हाथसे अलग कर दिया और आँखें बन्द कर लीं। बरफ और ठंडे पानीने जब इसे जरा

---

* पश्चिमका एक पौधा, जिसका रस औषधकी तरह काममें आता है।

आराम पहुँचाया और इसे बिस्तर पर लिटा दिया गया तब नेख्लीडू सब लोगोंसे सलाम करके सार्जेन्टके साथ, जो उसका कुछ देरसे इन्तजार कर रहा था, बाहर चला गया।

साधारण कैदी अब शान्त थे और बहुतसे सो गये थे यद्यपि लोग कमरोंमें चारपाइयोंपर और नीचे तथा दो चारपाइयोंके बीचमें पड़े हुए थे फिर भी सबको कमरेमें नहीं रखा जा सकता था। इसलिए कुछ दालानमें अपने अपने बोरोंको सरके नीचे रखे और अपने भींगे चोंगे अपने ऊपर डाले पड़े थे। खर्राटे, आहें और नींदमें पैदा होनेवाली आवाज खुले दर्वाजेसे बाहर आ रही थी और दालानतकमें सुनाई देती थी। मनुष्य ठोस गठरियाँ बने, जेलके चोगेसे ढके, सभी जगह पड़े दिखाई देते थे। कुछ लोग पुरुषोंके कमरेमें चिरागकी रोशनीमें बैठे थे। सार्जेण्टको देखा तो चिराग बुझा दिया गया। एक बूढ़ा आदमी दालानमें नंगा बैठा कमीजसे चीलर निकाल रहा था। राजनीतिक कैदियोंके कमरेकी ठंढी हवा इस जगहकी गंदगीके मुकाबले स्वच्छ मालूम होती थी। धुएँदार चिराग कुहरेमेंसे धुँधला देख पड़ता था। इस जगह साँस लेना मुश्किल था। इस दालानमें चलनेके लिए कदम रखनेको, बड़ी सावधानीसे पहले जगह तलाश करनी पड़ती थी, और एक जगह कदम रखनेके बाद दूसरे कदमके लिए जगह ढूँढ़ना जरूरी था। तीन आदमियोंको दालानमें भी जगह नहीं मिली थी। वे बदबूदार और टपकते हुए नाँदके पास अगले कमरेमें पड़े हुए थे। इनमें एक पगला था जिसको नेख्लीडूने जत्थेके साथ चलते देखा था। एक बारह बरसका लड़का था, जो दो और कैदियोंके बीचमें एककी टाँगपर सर रखे सो रहा था।

नेख्लीडूने फाटकसे बाहर निकलकर गहरी साँस ली और कुहरेदार हवाको देरतक गहरी साँसमें खींचकर अपने फेफड़ोंको स्वच्छ किया।

उन्नीसवाँ अध्याय

आकाश साफ हो गया था। तारे चमक रहे थे। चन्द जगहोंको छोड़कर सब जगह कीचड़ सख्त जम गया था। जिस समय नेख्लीडू अपनी सरायको वापस गया, इसने एक अँधेरी खिड़कीके पास जाकर उसे खटखटाया। चौड़े कन्धेवाला एक मजदूर, नंगे पैर, दर्वाजा खोलने आया। दाहिनी तरफके एक दर्वाजेसे, जो मकानके पिछले हिस्सेसे जाता था, गाड़ीवानोंकी खर्राहट सुनाई दे रही थी और हातेसे घोड़ोंके दाना खानेकी आवाज आ रही थी। अगले कमरेमें, जहाँ क्राइस्टकी मूर्तिके सामने एक लाल चिराग जल रहा था, पसीनेकी बू आ रही थी और एक पर्देके पीछे कोई मजबूत फेफड़ेवाला आदमी खर्राटे ले रहा था। नेख्लीडूने आकर कपड़े उतारे, आयलक्लाथके गद्दीदार सोफेपर चमड़ेकी सफरी तकिया रखी और वह कंबल ओढ़कर लेट गया। उस दिन उसने जो कुछ देखा और सुना था उसपर विचार करने लगा। सबसे अधिक बीभत्स दृश्य उसे उस लड़केका मालूम हुआ जो कैदीके पैरपर सर रखे पानीमें, जो बदबूदार नाँदसे धीरे धीरे टपक रहा था, लेटा हुआ था।

नेख्लीडूके जागनेके पहले ही गाड़ीवाला सरायसे रवाना हो गया था। सरायकी मालकिन चाय पी चुकी थी। अपनी मोटी गर्दनका पसीना रूमालसे पोंछती हुई वह नेख्लीडूके कमरेमें आयी और यह बताया कि पड़ावसे एक सिपाही एक पर्चा लाया है। यह पर्चा मेरी पावलोभ्नाका था। इसमें उसने लिखा था कि "क्रिलसवकी तबियत बहुत खराब हो गयी थी। हम लोग उनको यहीं छोड़ देना चाहते थे। मैं चाहती थी कि मुझे उनके साथ ठहरनेकी इजाजत मिल जाय लेकिन इजाजत नहीं मिली इसलिए हम लोग उनको अपने साथ लिये जा रहे हैं। लेकिन भय

है कि न जाने क्या हो जाय। कृपा कर ऐसा इंतजाम कर दीजिये जिससे उन्हें अगले पड़ावपर छोड़ना पड़े तो हममेंसे कोई उनके साथ रह सके। अगर मुझे ठहरनेकी इजाजत इसी शर्तपर मिल सकती हो कि मैं उनसे विवाह कर लूँ तो मैं इसके लिए भी तैयार हूँ।"

नेख्लीडूने नौजवान मजदूरको अड्डेपर घोड़ोंको लानेके लिए भेजा और स्वयं फुर्तीके साथ असबाब बाँधने लगा। वह चायका दूसरा प्याला खतम न कर सका था कि तीन घोड़ोंकी गाड़ी, घंटियाँ बजाती हुई, पत्थरके समान जमे हुए कीचड़पर पहियोंको खड़खड़ाती बाहर आकर खड़ी हो गयी। नेख्लीडूने सरायकी मोटी गर्दनवाली मालकिनका हिसाब चुकता किया। फुर्तीसे निकलकर वह गाड़ीमें बैठा और कोचवानको हुक्म दिया कि घोड़ोंको तेजीसे हाँको जिससे कैदियोंके जत्थेतक जल्द-से-जल्द पहुँच जाय। गोचरके फाटकसे थोड़ी दूर आगे निकलनेके बाद इनको कुछ गाड़ियाँ मिलीं जिनके खड़खड़ाते हुए पहिये जमे हुए कीचड़को बराबर काटते जा रहे थे और जिनपर बोरे और बीमार कैदी लदे थे। कोई अफसर इन गाड़ियोंके पास नहीं था, वे लोग आगे चले गये थे। शराब पिये हुए सिपाही लोग हँसते-बोलते सड़कके किनारे किनारे इन गाड़ियोंके पीछे पीछे चल रहे थे। गाड़ियाँ बहुत-सी थीं। अगली गाड़ियोंमें छः छः बीमार कैदी ठुसे हुए बैठे थे। पिछली तीन गाड़ियोंपर तीन तीन राजनीतिक कैदी थे। एकपर नोवोड्वोरो, ग्रैबेट्स और कोन्ड्रेटिव थे। रेन्तसेवा, नबाटव और एक दूसरी स्त्री, जिसको मेरी पावलोभ्नाने अपनी जगह दे दी थी, दूसरी गाड़ीपर थी। तीसरी गाड़ीपर क्रिलसव, घासके बोझपर सरके नीचे एक तकिया रखे, लेटा था और मेरी पावलोभ्ना गाड़ीके किनारे उसके पास बैठी थी। नेख्लीडूने कोचवानसे अपनी गाड़ी रोकनेके लिए कहा। वह उतरकर क्रिलसवकी तरफ बढ़ा। शराब पिये हुए एक सिपाहीने नेख्लीडूको हाथका इशारा किया लेकिन उसने इसकी कुछ पर्वाह न करके क्रिलसवके नजदीक जा एक हाथसे गाड़ीको पकड़कर चलना शुरू किया। भेड़की खालका कोट पहने, सर-

पर बालदार टोपी लगाये, रूमालसे मुँह बाँधे क्रिलसव लेटा था। उसका चेहरा पहलेसे ज्यादा पीला और दुर्बल दिखाई देता था। उसकी सुन्दर आँखें बहुत बड़ी और चमकदार मालूम होती थीं। गाड़ीकी हचकसे वह कभी इधर कभी उधर हचकोरा खा जाता था, लेकिन नेख्लीडूको एकटक निगाहसे देख रहा था। जब उससे पूछा गया कि तुम्हारी तबीयत कैसी है तो उसने आँखें बन्द कर लीं और रोषसे अपना सिर हिलाया। उसकी सारी शक्ति इस समय गाड़ीकी हचकोंको बर्दाश्त करनेमें लग रही थी। मेरी पावलोभ्ना गाड़ीकी दूसरी तरफ थी। उसने नेख्लीडूकी तरफ अर्थ-सूचक दृष्टिसे देखा जिससे क्रिलसवकी दशाके बारेमें उसकी चिंता प्रकट होती थी। लेकिन तुरन्त ही उसने प्रसन्नतापूर्वक बात-चीत करना शुरू कर दिया।

"मालूम होता है, अफसर साहबको अपने ऊपर शर्म आयी।" उसने चिल्लाकर कहा जिससे पहियोंकी खड़खड़ाहटमें भी उसकी आवाज सुनी जा सके। "बुजोवकिनकी हथकड़ियाँ निकाली गयी हैं और वह अपनी छोटी लडकीको लिये जा रहा है। कटूशा और साइमनसन भी उसके साथ हैं और वीरा भी है। वह मेरी जगहपर बैठी है।"

क्रिलसवने कुछ कहा लेकिन खड़खड़ाहटमें कुछ सुनाई न दिया। खाँसी रोकनेकी कोशिशमें उसके माथेपर बल पड़ गये और उसने अपना सिर हिलाया। नेख्लीडू झुककर अपना कान उसने नजदीक ले गया। क्रिलसवने मुँहके ऊपरसे रूमाल हटाकर धीरेसे कहा "पहलेसे अच्छा हूँ, डरता हूँ कि कहीं सर्दी न लग जाय।" नेख्लीडूने हुँकारी भरी और सिर हिलाया। वह मेरी पावलोभ्ना की तरफ देखने लगा।

"त्रिमूर्तिकी समस्याका क्या हाल है?" क्रिलसवने बहुत कोशिशसे मुस्कराते हुए कहा "हाल कठिन मालूम होता है।"

नेख्लीडूने यह बात समझ न पायी। मेरी पावलोभ्नाने समझाया कि क्रिलसव गणितकी उस प्रसिद्ध समस्याकी ओर इशारा कर रहा है जिसमें सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वीकी जगह निर्धारित की गयी है, और जिसकी

उपमा ये नेख्लीडू, कटूशा और साइमनसनसे देते हैं। क्रिलसवने अपना सर इस बातको दिखानेके लिए हिलाया कि मेरीने मजाकको अच्छी तरह समझा दिया है।

"इसका हल मेरे पास नहीं है।" नेख्लीडूने कहा।

"मेरा पर्चा आपको मिला था, आप वह काम कर दीजियेगा न?" मेरी पावलोभ्नाने पूछा।

"अवश्य," नेख्लीडूने उत्तर दिया। क्रिलसवके चेहरेपर अरुचिके चिह्न देखकर नेख्लीडू अपनी गाड़ीपर वापस गया और बैठ गया। वह दोनों हाथोंसे गाड़ीके दोनों बाजू पकड़कर हचकसे अपनी रक्षा करने लगा। थोड़ी देरमें इसकी गाड़ी कैदियोंके जत्थेतक पहुँच गयी। सफेद चोगा और भेड़के चमड़ेका कोट पहने, हथकड़ी और बेड़ियोंमें बँधे, कैदियोंका एक जत्था सड़कपर तीन चौथाई मीलतक फैला हुआ था। सड़ककी दूसरी तरफ नेख्लीडूने कटूशाकी नीली शाल, वीरा दुखोवाका काला कोट और साइमनसनकी कढ़ी हुई टोपी और सफेद मोजे—जो चप्पलकी तरह उसके पैरोंमें बँधे हुए थे—देखे। साइमनसन औरतोंके साथ साथ चल रहा था और बहुत जोरके साथ बहस करता जाता था।

इन लोगोंने नेख्लीडूको देखकर सलाम किया। साइमनसनने बड़ी गंभीरतासे अपनी टोपी उठायी। नेख्लीडूको कुछ कहना-सुनना नहीं था। इसलिए उसने कोचवानको नहीं रोका और थोड़ी ही देर में वह इस जत्थेसे आगे हो गया। आगे फिर बराबर सड़क मिल गयी और कोचवानने गाड़ीको तेजीसे बढ़ाना शुरू किया, लेकिन इसे बनी हुई लीकसे बार बार इधर उधर रहना पड़ता था; क्योंकि गाड़ियाँ इधर और उधर दोनों तरफसे आ-जा रही थीं।

कोचवानने लगाम खींची और दाहिने घोड़ेको चाबुक मारी। वह कोचबाक्सपर दाहिनी तरफ खिसककर बैठ गया जिससे लगाम उसीकी तरफ झुक गयी। अपनी कला दिखानेकी इच्छासे उसने नदीकी तरफ गाड़ी बढ़ायी जिसे नावद्वारा पार किया जाता था। एक नाव आ रही

थी जो धाराके बीचमें पहुँच चुकी थी। इस किनारेपर करीब बीस गाड़ियाँ उतरनेके लिए खड़ी थीं। नेख्लीडूको देरतक इन्तजार नहीं करना पड़ा; क्योंकि जो नाव बहुत दूर बीचमें ही रुक गयी थी, लहरोंकी थपेड़से जल्द ही घाटपर आ लगी।

चौड़े कन्धोंके, लम्बे, शान्त मजबूत मल्लाहने रस्सियोंको किनारे फेंका और नावको अपने अनुभवी हाथोंसे खींचकर किनारे लगा दिया। नावपर जो गाड़ियाँ थीं, नीचे उतार दी गयीं और जो इस किनारे उतरनेके लिए खड़ी थीं, चढ़ा ली गयीं। सारी नाव गाड़ियों और घोड़ोंसे, जो पानी देखकर बिचक रहे थे, भर गयी। चौड़ी तेज नदीकी लहरें नावमें टकरा रही थीं और जिन रस्सियोंसे यह बँधी हुई थी वे रस्सियाँ तनी जा रही थीं। जब नाव भर गयी और नेख्लीडूकी गाड़ी, जिसमेंसे घोड़े खोल लिये गये थे, नावपर पहुँच गयी, मल्लाहने तख्ता गिरा दिया और जिन्हें नावपर जगह नहीं मिली थी, उन लोगोंके चिल्लानेकी कुछ पर्वाह न करते हुए उसने रस्सियाँ खोल दीं। नाव रवाना हो गयी।

नावपर बिल्कुल शान्ति थी। मल्लाहोंके जूतेकी आवाज तथा घोड़ोंकी टापोंके अलावा और कुछ सुनाई नहीं देता था।

बीसवाँ अध्याय

नेख्लीडू नावके किनारेपर खड़ा नदीके चौड़े पाटको देख रहा था। दो चित्र इसके मनमें चक्कर काट रहे थे। एक तो क्रिलसवके हिलते हुए सरका जो क्रोधमें अपने प्राण दे रहा था, और दूसरे साइमनसनके साथ साथ सड़कके ऊपर तेजीसे चलती हुई कटूशाका। मृत्युके लिए अप्रस्तुत किन्तु मरते हुए क्रिलसवके चित्रने उसके मनको बहुत उदास कर दिया। दूसरे चित्रसे अर्थात् शक्तिसे परिपूर्ण साइमनसन ऐसे पुरुषके प्रेमको प्राप्त सुपथगामिनी कटूशाके चित्रसे उसे प्रसन्नता होनी चाहिये थी, लेकिन इसने भी नेख्लीडूके मनपर एक बोझ-सा रख दिया जिसको वह हटा नहीं सकता था।

पीतलके बड़े घंटेकी झनझनाहटकी आवाज शहरसे कानोंमें पहुँची। नेख्लीडूका कोचवान पास ही खड़ा था। उसने, तथा नावपर दूसरे आदमियोंने, वह आवाज सुनकर सरकी टोपियाँ उतार लीं। वे हाथ जोड़कर खड़े हो गये। एक छोटे कदके बुड्ढे आदमीने ऐसा नहीं किया जिसके बाल बिखरे हुए थे, जो नावके किनारे जँगलेमें लगा हुआ खड़ा था और जिसे नेख्लीडूने अभीतक नहीं देखा था। यह बुड्ढा पैबन्ददार कोट, पायजामा और पुराना गठा हुआ जूता पहने था। इसकी पीठपर एक थैला था और सरपर ऊँची पुरानी टोपी, जिसके बाल उड़ गये थे।

"क्यों बुड्ढे! तुमने हाथ क्यों नहीं जोड़े?" नेख्लीडूके कोचवानने अपनी टोपी अपने सरपर रखकर पूछा "क्या तुम्हारा बपतिस्मा अभी तक नहीं हुआ है?"

"किसको हाथ जोड़ूँ?" चिथड़े लगे हुए बुड्ढेने तेजीसे तथा निश्चित स्वरमें हर एक शब्दको अलग अलग उच्चारण करते हुए कहा।

"किसको? ईश्वरको और किसको?" कोचवानने कहा।

"आप मुझे दिखा दीजिये कि ईश्वर है कहाँ।"

बुड्ढे आदमीकी आकृतिमें कुछ ऐसी गंभीरता और दृढ़ता थी जिससे कोचवान समझ गया कि दृढ़ चित्तवाले आदमीसे पाला पड़ा है। इससे वह कुछ हकबका-सा गया। लेकिन वह यह नहीं दिखाना चाहता था कि हकबका गया हूँ और जो लोग इनकी बात-चीत सुन रहे थे उनके सामने वह झेंपकर चुप रहना नहीं चाहता था। इसलिए कोचवानने फौरन जवाब दिया—"है कहाँ? आसमानमें है।"

"क्या आप वहाँ पधारे थे?"

"मैं वहाँ गया हूँ या नहीं, इससे क्या? सभी जानते हैं कि ईश्वरके सामने हाथ जोड़ना चाहिये।"

"किसीने कभी ईश्वरको नहीं देखा। केवल उसके इकलौते बेटेने, जो अपने पिताकी गोदमें है, उसका नाम बताया।" बुड्ढे आदमीने उतनी ही तेजी और कठोरतासे कहा।

"मालूम हो गया कि तुम ईसाई नहीं हो और अंधकारके पुजारी हो। तुम अंधकारके सामने हाथ जोड़ते हो।" कोचवानने अपने चाबुकको पेटीमें रखते हुए कहा। वह घोड़ोंकी जीन दुरुस्त करने लगा।

कोई हँस पड़ा।

"तुम्हारा धर्म कौन-सा है दादा?" एक अधेड़ आदमीने, जो अपनी गाड़ीके पास नावके इसी हिस्सेमें खड़ा था, पूछा।

"मेरा कोई धर्म नहीं है; क्योंकि मैं किसीपर विश्वास नहीं करता। मैं अपने ऊपर विश्वास करता हूँ।" बुड्ढेने वैसे ही फुर्ती और निश्चयसे जवाब दिया।

"अपने ऊपर आप कैसे विश्वास कर सकते हैं?" नेख्लीडूने इस बातचीतमें हिस्सा लेते हुए कहा "आपसे गलती हो सकती है।"

"आज तक मुझसे गलती नहीं हुई।" बुड्ढेने फिर निश्चयपूर्वक सर हिलाते हुए कहा।

"अगर यह बात है तो धर्म अनेक क्यों हैं?" नेख्लीडूने पूछा।

"इसलिए कि मनुष्य दूसरोंपर विश्वास करते हैं, अपने पर नहीं। इसीलिए अनेक मतमतान्तर हैं। मैं भी पहले दूसरोंपर विश्वास करता था जिसका परिणाम यह हुआ कि मैं दलदलमें फँस गया—ऐसा फँसा कि निकलनेकी कोई आशा नहीं रह गयी। सनातनी, अर्वाचीनी, जुडाई,* हिलिस्ती, पोपोत्सी, वेसपोपोत्सी, अवस्त्री, मुलोकान्, स्काप्सी—हर एक मतके आदमी अपनी ही तारीफ करते हैं इसलिए ये लोग अंधे पिल्लोंकी तरह रेंगते रहते हैं। मत-मतान्तर तो अनेक हैं लेकिन आत्मा एक है, हममें, तुममें, सबमें, इसलिए अगर सब लोग अपने ऊपर विश्वास करने लगें तो सभी एक हो जायँ।"

बुड्ढा आदमी जोरसे बोल रहा था और अपने चारों ओर देख रहा था। वह चाहता था कि ज्यादासे ज्यादा आदमी उसकी बात सुन सकें।

"आप क्या इस विचारको बहुत दिनोंसे मानते आ रहे हैं?"

"मैं? बहुत दिनोंसे। यह तेईसवाँ वर्ष है कि लोग मुझको सता रहे हैं।"

"सता रहे हैं? कैसे?"

"जैसे क्राइस्टको सताया था। मुझे गिरफ्तार करते हैं और अदालत, उपदेशक, स्क्राइब और फेरीसियोंके सामने ले जाते हैं। एक बार इन लोगोंने मुझे पकड़कर पागलखानेमें बंद कर दिया। लेकिन मेरा कुछ बना-बिगाड़ नहीं सकते; क्योंकि मैं स्वाधीन हूँ। मुझसे पूछा कि "तुम्हारा नाम क्या है?" समझते थे कि मैं अपना नाम बता दूँगा। लेकिन मैंने अपना नाम रखा ही नहीं। मैंने सब कुछ छोड़ दिया। मेरा न कोई नाम है न मेरा कोई गाँव है, न कोई देश है। मेरा कुछ नहीं, मैं बस मैं हूँ। मेरा नाम आदमी है। क्या उम्र है? मैं कहता हूँ कि मैं अपनी उम्र नहीं गिनता और न गिन ही सकता हूँ, क्योंकि मैं हमेशा था और हमेशा रहूँगा। पूछते हैं कि तुम्हारे माता-पिता कौन हैं? मैं कहता हूँ कि धरती और ईश्वरके अलावा मेरा

* ये रूसके ईसाई धर्मके मतमतान्तरोंके नाम हैं।

माता-पिता कोई नहीं। ईश्वर मेरा पिता है। जारको मानते हो? इसका उत्तर देता हूँ कि क्यों नहीं मानता। जार अपना जार है और मैं अपना जार हूँ। इसपर लोग कहने लगते हैं कि ऐसे आदमीसे बातचीत करनेसे क्या मतलब? मैं कहता हूँ कि मैंने आपसे कब कहा बातचीत करनेके लिए? इसपर ये लोग मुझे सताने लगते हैं।"

"अब आप कहाँ जा रहे हैं?" नेख्लीडूने पूछा।

"ईश्वर जहाँ ले जाय। जब मुझे काम मिल जाता है, काम करता हूँ। जब काम नहीं मिलता तो भिक्षा माँगता हूँ।

बुड्ढे आदमीने देखा कि नाव किनारेपर पहुँच रही है इसलिए उसने बातचीत करना बन्द कर दिया। वह आस-पास खड़े हुए लोगोंको विजय-सूचक भावसे देखने लगा।

नेख्लीडूने जेबसे कुछ पैसे निकालकर इसको देने चाहे लेकिन इसने इन्कार कर कहा—"मैं यह चीज नहीं लेता! मैं भिक्षामें केवल रोटी लेता हूँ।"

"क्षमा कीजियेगा।" नेख्लीडूने कहा।

"क्षमा करनेकी कोई बात नहीं। आपने मेरा अपमान नहीं किया, और मेरा अपमान कोई कर भी नहीं सकता।" यह कहते हुए बुड्ढेने अपना थैला, जिसे उसने उतारकर रख दिया था, फिर पीठपर लाद लिया।

गाड़ी उतर चुकी थी और उसमें घोड़े जोते जा चुके थे।

"हुजूर! आप ऐसे आदमियोंसे बातचीत करते हैं!" कोचवानने नेख्लीडूसे कहा, जब वह मल्लाहको पैसा देकर गाड़ीमें बैठ रहा था। "यह कोई निकम्मा आवारा है।"

———

इक्कीसवाँ अध्याय

गाड़ी जब नदीके किनारेसे ऊपर पहुँची, कोचवानने नेख्लीडूसे पूछा—

"किस होटलको ले चलूँ ?"

"जो सबसे अच्छा हो।"

" 'साइबेरियन' होटलसे अच्छा दूसरा होटल नहीं, लेकिन पूरबका भी होटल अच्छा है।"

"जहाँ तबियत चाहे चले चलो।"

कोचवान फिर कोचबाक्सपर एक तरफ झुककर बैठ गया और गाड़ीको तेजीसे हाँकने लगा। यह शहर भी अपने समान और शहरोंकी तरह था। एक ही किस्मके मकान, वैसी ही खिड़कियाँ, वैसी ही छतें, वैसे ही गिर्जाघर, उसी किस्मकी दूकानें और गलियाँ और उसी किस्मके पुलिसवाले। लेकिन मकान लकड़ीके बने हुए थे और सड़कें पक्की नहीं थीं। कोचवानने एक बड़ी सड़कपर होटलके सामने गाड़ी रोकी, लेकिन यहाँ कोई कमरा खाली नहीं था इसलिए यह दूसरी जगह गया। यहाँ नेख्लीडूको दो महीनेके बाद फिर सफाई और आरामकी दृष्टिसे वैसा ही वातावरण मिला, जिसमें रहनेकी उसकी आदत थी। जो कमरा उसे मिला था वह यद्यपि सादा और साधारण था, लेकिन दो महीनेतक गाँवकी सरायों, पड़ावों तथा घोड़ेगाड़ियोंमें जीवन बितानेके बाद यहाँ आकर उसे बहुत आराम मिला। पहला काम उसने यह किया कि चीलरोंसे छुट्टी पायी। पड़ावोंमें जानेके बादसे इन चीलरोंने कभी भी इसका पीछा नहीं छोड़ा था। अपना असबाब खोलनेके बाद यह पहले रूसी स्नानगृहमें गया और शहरी कपड़ा—कलप की हुई कमीज, पतलून, फ्राककोट, ओवरकोट—पहननेके बाद यह उस जिलेके मुख्य शासकसे

मिलनेके लिए चल दिया। होटलवालेने एक बग्घी मँगा दी जिसके किरगजी घोड़ोंने नेख्लीडूको एक शानदार बँगलेके सामने, जहाँ पुलिसके सिपाही और सन्तरी खड़े थे, लाकर खड़ा कर दिया। इस बँगलेके सामने और पीछे बाग था जिसके ऐस्पन और बर्चके पेड़ों तथा चीड़ और देवदारके दरख्तोंकी नंगी डालियोंमें गहरी हरी पत्तियाँ थीं। जनरल अर्थात् मुख्य शासककी तबियत अच्छी नहीं थी। वह लोगोंसे मिलता नहीं था, फिर भी नेख्लीडूने चपरासीको अपना कार्ड दिया जो थोड़ी देरमें अनुकूल उत्तरके साथ वापस आया।

"तशरीफ लाइये।"

यहाँका बड़ा कमरा, यहाँके चपरासी, अर्दली, जीने, नाचघर और इसका चमकदार फर्श सब वैसे ही थे जैसे पीटर्सबर्गमें। वहाँकी अपेक्षा कुछ गन्दे जरूर थे लेकिन ज्यादा भव्य दिखाई देते थे। नेख्लीडूको दफ्तरमें ले जाकर बिठा दिया गया।

"श्रीमान्‌का मिजाज कैसा है? क्षमा कीजियेगा मैं गाउन पहने बैठा हूँ। न मिलनेसे तो यही अच्छा हुआ कि गाउन पहने मैंने आपसे मुलाकात कर ली।" जनरल महोदयने कहा और अपने गाउनको सरकाकर अपनी मोटी गर्दन छिपा ली। "मेरी तबियत अच्छी नहीं है। मैं बाहर नहीं निकलता हूँ। आप हमारे इस दूरस्थ देशमें कैसे आये?"

"मैं कैदियोंके एक जत्थेके साथ आया हूँ, जिसमें एक व्यक्ति ऐसा है जिससे मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध है।" नेख्लीडूने कहा "और मैं श्रीमान्‌से कुछ तो इस व्यक्तिकी तरफसे, और कुछ दूसरे कामके सिलसिलेमें, मिलने आया हूँ।"

जनरलने सिगरेटका एक कश खींचा और एक घूँट चाय पी। सिगरेटको राखदानीमें रख दिया और अपनी छोटी आँखें नेख्लीडूपर लगाकर वह गम्भीरतासे बात सुनने लगा। केवल एक दफा उसने बीचमें टोका और यह उस समय जब उसने नेख्लीडूको सिगरेट पेश किया।

नेखलीडूने जनरलको बताया कि जिस व्यक्तिमें मेरी दिलचस्पी है वह एक स्त्री है। उसे अन्यायसे सजा दी गयी है। उसकी तरफसे सम्राट्‌के पास अर्जी भी भेजी गयी है।

"ठीक है।" जनरलने कहा।

पीटर्सबर्गमें मुझसे वादा किया गया था कि इस स्त्रीके भाग्यके निपटारेकी खबर मुझे इस महीनेतक यहाँ पहुँचा दी जायगी।"

जनरलने अपनी मोटी उँगलियाँ मेजकी तरफ बढ़ायीं और घण्टी बजायी। वह नेखलीडूकी तरफ देखता, सिगरेट पीता और जोर जोरसे खाँसता रहा।

"इसलिए मैं चाहता यह हूँ कि यह स्त्री उस समयतक यहाँ रोक ली जाय जबतक अपीलका जवाब नहीं आ जाता।"

वर्दी पहने एक अर्दली अन्दर आया।

"देखो, ऐना वेसलीव उठी है?" जनरलने अर्दलीसे कहा। "और कुछ चाय और ले आना।" इसके बाद नेखलीडूकी तरफ फिरकर बोला—"हाँ, और क्या?"

"मेरी दूसरी प्रार्थना यह एक राजनीतिक कैदीके बारेमें है जो इसी जत्थेके साथ है।"

"अच्छा!" जनरलने कहा और अर्थसूचक भावसे अपना सर हिलाया।

"वह बहुत ज्यादा बीमार है—मर रहा है। उसको यहीं अस्पतालमें छोड़ना पड़ेगा। इसलिए एक स्त्री राजनीतिक कैदी उसके साथ यहीं ठहर जाना चाहती है।"

"वह उसकी कोई रिश्तेदार तो नहीं है न?"

"नहीं, रिश्तेदार नहीं है। लेकिन अगर उसे ठहरनेकी इजाजत इस बिनापर मिल सके कि वह उसके साथ शादी कर ले तो वह इसके लिए भी तैयार है।"

जनरल अपने मेहमानकी तरफ आँखें गड़ाये देखता रहा और चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा।

जब नेख्लीडूकी बात खतम हो गयी, जनरलने मेजपरसे एक किताब उठायी और उँगलियाँ तर करके उसके पन्ने उलटने शुरू किये। विवाह-संबंधी कानून निकालकर पढ़ा। "उस स्त्रीको क्या सजा हुई है?" उसने किताबसे दृष्टि उठाकर नेख्लीडूको देखते हुए पूछा।

"उसे सख्त मशक्कतकी सजा मिली है।"

"फिर तो विवाहसे ऐसे व्यक्तिको कोई फायदा नहीं पहुँच सकता।"

"अच्छा, लेकिन—"

"माफ कीजिये, अगर कोई स्वाधीन पुरुष भी ऐसी स्त्रीसे शादी करे तो भी उस स्त्रीको सजा भुगतनी पड़ेगी। ऐसे मामलोंमें प्रश्न यह होता है कि सजा किसकी ज्यादा है—स्त्रीकी या पुरुषकी?"

"दोनोंको सख्त मशक्कतकी सजा मिली है।"

"ठीक है। ऐसी हालतमें दोनों बराबर हो गये।" जनरलने हँसते हुए कहा। "औरतको भी उसी किस्मकी सजा है जैसी मर्दको, लेकिन मर्द बीमार है इसलिए वह रोक लिया जा सकता है और उसके दुःखको कम करनेके लिए जो कुछ किया जा सकता है, किया जायेगा। हाँ, जहाँतक स्त्रीका सम्बन्ध है, वह उससे शादी कर लेती है तो भी वह यहाँ रोकी नहीं जा सकती।"

"श्रीमतीजी काफी पी रही हैं।" चपरासीने आकर कहा।

जनरलने अपना सर हिलाया और कहने लगा—"अच्छा, मैं इसपर फिर विचार करूँगा। उनके नाम क्या हैं? नाम यहीं लिख दीजिये।"

नेख्लीडूने उनके नाम लिख दिये।

"मुझे इस मरते हुए आदमीसे मिलनेकी अनुमति दी जाय," नेख्लीडूकी इस प्रार्थनाका जनरलने इन शब्दोंमें जवाब दिया—"मैं यह भी नहीं कर सकता। मुझे आप पर जरा भी शक नहीं है लेकिन

आप उस कैदीमें और दूसरोंमें दिलचस्पी रखते हैं और आपके पास पैसा है तथा यहाँ पैसेसे सब कुछ किया जा सकता है। मुझसे रिश्वत रोकनेको कहा जाता है लेकिन मैं कैसे रोकूँ जब हर एक आदमी रिश्वत लेता है। जितना ही छोटे दर्जेका आदमी होता है उतना ही ज्यादा वह रिश्वत लेनेको तैयार रहता है। तीन हजार मीलसे बैठकर कोई कैसे पता लगावे। वहाँपर तो हर एक सरकारी नौकर छोटा-मोटा जार बना हुआ है, जैसा मैं यहाँ हूँ।" और वह हँसा। "आप राजनीतिक कैदियों-से जरूर मिले होंगे। आपने रिश्वत देकर इजाजत पायी होगी। है न यह बात?" जनरल मुस्कराया।

"जी हाँ।"

"मैं समझ गया। आपको मजबूरन यह करना पड़ा होगा। आपको एक राजनीतिक कैदीपर दया आयी, आपने चाहा कि उससे मिलें। इन्स्पेक्टर या गारदके सिपाहीने आपसे रिश्वत ले ली; क्योंकि उसे एक दिनमें सिर्फ एक शिलिंग मिलता है और उसे अपना परिवार पालना है। वह रिश्वत न ले तो करे क्या? आपकी जगहपर या उसकी जगहपर अगर मैं होता तो यही करता। लेकिन इस ओहदेपर होते हुए मैं भी आदमी हूँ, कहीं दयाका असर मेरे ऊपर भी न हो जाय। मैं कार्य-कारिणीका मेंबर हूँ और इस विश्वासकी जगहपर कुछ शर्तोंके साथ नियुक्त किया गया हूँ। उन शर्तोंका पालन करना मेरा कर्तव्य है।... खैर, अब तो काम खतम हो गया, अब यह बताइये कि राजधानीमें क्या हो रहा है। इसके बाद जनरलने खबरें सुननेकी इच्छासे और अपनी विद्वत्ता तथा उदारता दिखानेके अभिप्रायसे प्रश्न करने शुरू किये और स्वयं भी कुछ सुनाने लगा।

बाईसवाँ अध्याय

"अच्छा, यह तो बताइये कि आप ठहरे कहाँ हैं?" जनरलने नेखलीडूसे विदा लेते हुए पूछा। "दुखव होटलमें! वह तो अच्छी जगह नहीं है। आज शामको पाँच बजे आकर यहीं खाना खाइये। आप अँगरेजी तो बोल लेते हैं?"

"जी हाँ! मैं अँगरेजी बोल लेता हूँ।"

"अच्छी बात है। आपसे एक अँगरेज मुसाफिरसे मुलाकात होगी जो अभी यहाँ आया है। वह निर्वासनके प्रश्नका अध्ययन कर रहा है और साइबेरियाके जेलखाने देख रहा है। आज रातको वह हम लोगोंके साथ खाना खानेवाला है। आप जरूर आइये और उससे मिलिये। हम लोग पाँच बजे खाना खाते हैं और मेरी पत्नी समयकी बहुत पाबन्द है। मैं उसी समय आपको उस स्त्री और बीमार आदमीके बारेमें भी जवाब दूँगा। सम्भव है, कोई उसके साथ ठहर जाय।"

जनरलसे विदा होकर नेखलीडू डाकखाने गया। उसके मनमें इस समय खूब उत्साह और जोश पैदा हो गया था।

डाकखानेकी इमारत नीची मेहराबकी थी। बहुतसे बाबू लोग काउन्टरके पीछे बैठे लोगोंका, जिनकी संख्या बहुत काफी थी, काम कर रहे थे।

एक बाबू सर झुकाये चिट्ठियोंपर मुहर लगा रहा था। नेखलीडूको देरतक इन्तजार करना पड़ा। अपना नाम बताते ही उसे उसकी जितनी डाक आयी थी फौरन दे दी गयी। काफी डाक थी। बहुत-से पत्र थे, मनीआर्डर थे, किताबें थीं और यूरोपियन मेसेंजरका नया परचा था। नेखलीडू इन चीजोंको लेकर एक बेंचपर बैठ गया। इसपर एक सिपाही भी हाथमें किताब लिये बैठा था, नेखलीडू अपनी चिट्ठियोंको

अलग अलग रखने लगा। इन चिट्ठियोंमें एक रजिस्ट्री थी जिसका लिफाफा बहुत अच्छा था। उसके ऊपर लाल रंगकी मुहर लगी हुई थी।

मुहर तोड़कर देखा कि यह खत सेलेनिनके पाससे आया है और उसमें कुछ सरकारी कागज हैं। नेख्लीड्का चेहरा लाल हो गया। उसके हृदयकी गति रुक-सी गयी। यह कटूशाकी अपीलका जवाब था। "क्या जवाब आया है? निस्सन्देह अपील नामंजूर न हुई होगी।" नेख्लीड्ने चिट्ठीको जल्दीसे एक नजर देखा वह छोटे अक्षरोंमें लिखी थी, और मुश्किलसे पढ़ी जाती थी। उसने इतमीनानसे साँस ली। जवाब अनुकूल था।

"मित्रवर!" सेलेनिनने लिखा था "हम लोगोंने जो अन्तिम बार बात की उसका मेरे ऊपर बहुत प्रभाव पड़ा। मस्लोवाके बारेमें आपके विचार सही थे। मैंने मुकदमेकी पूरी मिसिल बड़ी सावधानीसे देखी है। मुझे विश्वास है कि मस्लोवाके साथ घोर अन्याय किया गया है। इसकी अपील पिटीशनकी कमेटीके सामने ही हो सकती थी जिसके सामने आपने अर्जी दी भी थी। मुकदमेकी निगरानीके अवसरपर बहसकी, और सजाकी कमीके हुक्मकी नकल इसके साथ भेजता हूँ। आपकी मौसी काउन्टेस कैथरीन आइवनोव्नाने मुझे जो पता बताया उसपर यह खत भेज रहा हूँ। असली हुक्म उस जगह भेजा गया है जहाँ मस्लोवा मुकदमेके पहले हिरासतमें रखी गयी थी। वहाँसे यह हुक्म साइबेरियाके खास सरकारी दफ्तरको फौरन ही भेज दिया जायगा। इस शुभ समाचारको मैं जल्दीसे आपके पास भेज रहा हूँ और सलाम करता हूँ—आपका सेलेनिन।"

यह खबर खुशीकी और महत्त्वपूर्ण थी। नेख्लीड् जो कुछ कटूशाके लिए और अपने लिए आशा करता था, हो गया।

"ये प्रश्न अपने आप ही भविष्यमें हल हो जायेंगे," उसने अपने मनमें कहा "अब मैं इसपर इस समय विचार न करूँगा। मुझे यह अच्छी खबर फौरन जाकर मस्लोवाको सुना देनी चाहिये और उसे आजाद करा

देना चाहिये।" नेख्लीडूका यह विचार था कि इस हुक्मकी नकलसे ही काम चल जायेगा। इसलिए जब वह डाकखानेसे निकला तो उसने कोचवानसे कहा कि गाड़ी जेलखानेकी ओर ले चलो।

यद्यपि उसे जेलखानेमें मिलनेकी इजाजत जिलाधीशसे नहीं मिली थी फिर भी उसे अपने अनुभवसे यह विश्वास था कि जिस बातकी इजाजत बड़े अधिकारी नहीं देते हैं वही छोटे अधिकारियोंसे आसानीसे मिल जाती है। इसलिए उसने जेलखानेमें कटूशासे मिलनेका विचार किया। उसे यह शुभ समाचार सुनाऊँगा और शायद उसे छुड़ा भी लूँगा। साथ ही यह भी देख लूँगा कि क्रिलसवकी तबीयत कैसी है और जो कुछ जनरलने कहा है वह भी उसे तथा मेरी पावलोम्नाको बता दूँगा।

जेलखानेका इन्स्पेक्टर एक लम्बा और रोबीला आदमी था। इसकी मूँछें और गलमुच्छे मुँहकी तरफ झुके थे। इसने बहुत कटोरतासे नेख्लीडूका स्वागत किया और साफ साफ बता दिया कि अपने अफसरकी विशेष आज्ञाके बिना मैं किसी बाहरी आदमीको कैदियोंसे मिलनेकी इजाजत नहीं दे सकता।

हुक्मकी नकल भी, जो बादशाहके दफ्तरसे सीधे आयी थी, जेलके इन्स्पेक्टरपर कोई प्रभाव न डाल सकी। इन्स्पेक्टरने नेख्लीडूको जेलखानेके अहातेमें घुसनेसे रोक दिया। नेख्लीडूके इस विचित्र विचारपर कि हुक्मकी नकलसे मस्लोवा रिहा हो सकती है, वह तिरस्कारपूर्वक मुस्कराने लगा। उसने कहा कि जबतक हमारे अफसर हुक्म नहीं देते, कोई कैदी छोड़ा नहीं जा सकता। वह सिर्फ यह करनेके लिए तैयार हुआ—मस्लोवासे बता देगा कि सजा घटा दी गयी है। उसने इस बातका भी वादा किया कि अपने अफसरके पाससे मस्लोवाकी रिहाईका हुक्म पानेके बाद उसे एक घंटे भी जेलमें न रखेगा। उसने क्रिलसवके बारेमें भी कुछ नहीं बताया। वह इतना कहनेके लिए भी तैयार नहीं था कि क्रिलसव वहाँ है या नहीं। इस तरह कुछ कर-धर न पाकर नेख्लीडू अपनी गाड़ीमें बैठकर अपने होटलको वापस आया।

इन्स्पेक्टरकी सख्तीका विशेष कारण यह था कि जेलमें टाइफसकी महामारी शुरू हो गयी थी; क्योंकि जितने आदमी उस जेलखानेमें रखे जा सकते थे उसके दुगुने उसमें ठूँस दिये गये थे। कोचवानने नेख्लीड्र-को बताया था कि जेलमें रोज बहुतसे आदमी मर रहे हैं। कोई महा-मारी आ गयी है। एक एक दिनमें बीस बीस आदमी दफन किये जा रहे हैं।

तेईसवाँ अध्याय

जेलमें असफल रहनेपर भी नेख्लीदूमें वही जोश, फुर्ती और तेजी मौजूद थी। वह फौरन जिलाधीशके दफ्तरमें इस बातका पता लगाने गया कि मस्लोवाका असली हुक्म आया कि नहीं। हुक्म अभीतक नहीं आया था। इसलिए नेख्लोदू होटल गया। उसने सेलेनिन और वकीलको तुरन्त चिट्ठी लिखी। चिट्ठी लिखनेके बाद उसने घड़ी देखी। जनरलके यहाँ खाना जानेका समय हो रहा था।

जनरलके यहाँका खाना बड़ी शानका था, ऐसा जिसकी नेख्लीदूको आदत थी और जो साधारण तौरपर अमीरोंमें और ऊँचे अफसरोंमे दिया जाता है। इतने दिनोंतक व्यसनमे ही नहीं, बल्कि साधारण आरामसे भी वंचित रहनेके बाद नेख्लीदूको यह खाना बहुत अच्छा लगा।

जनरलने नेख्लीदूसे पूछा कि सुबह हमसे मिलनेके बाद कहाँ कहाँ गये थे। नेख्लीदूने बताया कि डाकखाने गया था। वहाँ वह खबर मिली, जिसके बारेमें मैंने सुबह बातचीत की थी कि उसकी सजा घटा दी गयी है। अब उसने फिर जनरलसे जेलखाने जानेकी इजाजत माँगी।

जनरलको कुछ बुरा मालूम हुआ कि खानेके समय उसने इस किस्मकी बातें कीं, इसलिए वह चुप हो गया।

"एक ग्लास वोड्का पीजिये।" जनरलने अँगरेजसे कहा, जो अभी मेजके पास आया था।

अँगरेजने एक ग्लास पिया और कहा—"मैं अभी गिर्जाघर और कारखाना देखने गया था, लेकिन अब कैदखाना देखना चाहता हूँ।

"बस, ठीक बात है।" जनरलने नेख्लीदूसे कहा। "आप दोनों साथ साथ चले जाइयेगा। इन लोगोंको पास दे देना।" उसने अपने एडीकाँगकी तरफ झुककर कहा।

"आप कब जाना पसन्द करेंगे ?" नेख्लीडूने पूछा ।

"मैं जेलखानोंमें शामको जाता हूँ ।" अँगरेजने जवाब दिया । "उस समय सब अन्दर रहते हैं । कोई तैयारी भी नहीं कर सकता और जैसी हालत होती है वह देखी जा सकती है ।"

"अच्छा, आप कैदियोंको उनके असली रूपमें देखना चाहते हैं । अच्छी बात है, देखिये । मैंने लिखकर भेज दिया है—कोई पर्वाह नहीं करता । अब विदेशी अखबारोंसे उनको पता चल जायेगा ।" जनरलने कहा और खानेकी मेजकी तरफ हट गया जहाँपर गृहिणी मेहमानोंको उनके बैठनेकी जगह बता रही थी ।

मौसम बदल चुका था । जोरोंसे बरफ गिर रही थी और बागके पेड़-पौधे, सड़क, छत, फाटक सीढ़ियाँ, तथा गाड़ीकी छत और घोड़ेकी पीठ, सब आच्छादित हो रहे थे । अँगरेजके पास अपनी गाड़ी थी । उसने कोचवानको जेलकी तरफ जानेका हुक्म दिया । नेख्लीडू भी अपनी बग्घीपर अकेले बैठा और एक अरुचिकर कर्तव्य पालन करनेकी जिम्मेदारीको अनुभव करता हुआ अँगरेजकी गाड़ीके पीछे पीछे मुलायम बर्फपर, जिसमें पहिये मुश्किलसे चलते थे, रवाना हो गया ।

चौबीसवाँ अध्याय

जेलखानेकी भयावनी इमारतके सामने सन्तरी खड़ा था। इसके फाटकपर लैम्प जल रहा था। प्रकाशित खिड़कियोंकी लम्बी कतारकी वजहसे फाटक, छत और दीवार हर एक चीजपर स्वच्छ सफेद चादर-सी बिछी हुई थी। अब यह इमारत प्रातःकालकी अपेक्षा कहीं ज्यादा भयावनी मालूम होती थी।

रोबीला इन्स्पेक्टर फाटकसे बाहर आया। लैम्पकी रोशनीमें, उस 'पास'को पढ़कर जो अँगरेज और नेख्लीडूको दिया गया था, आश्चर्यसे कन्धे उसकाने लगा। लेकिन हुक्मके अनुसार वह इन लोगोंको अपने साथ अन्दर ले गया। दालानसे होता हुआ वह पहले एक दर्वाजेपर पहुँचा और दाहिनी तरफ मुड़कर जीनेपरसे दफ्तरमें आया। यहाँपर इसने इन लोगोंके बैठनेके लिए कुर्सियाँ दीं और इनसे पूछा कि मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ? नेख्लीडूने बताया कि मस्लोवासे फौरन मिलना चाहता हूँ। इसने मस्लोवाको बुलानेके लिए एक जेलर भेज दिया। इसके बाद उसने अँगरेजके प्रश्नोंके जवाबकी तैयारी की। अँगरेज जो प्रश्न पूछता था उसे नेख्लीडू रूसी भाषामें इन्स्पेक्टरको समझाता था।

"इस जेलखानेमें कितने कैदियोंकी जगह है?" अँगरेजने पूछा। "इसमें कितने बन्द हैं...कितने मर्द हैं...कितनी औरतें हैं...कितनोंको खानोंमें काम करनेकी सजा मिली है...कितने निर्वासित हैं...कितने बीमार हैं...?"

नेख्लीडू अँगरेजके और इन्स्पेक्टरके वाक्योंका अनुवाद करता चला जाता था और इन वाक्योंके अर्थपर कोई ध्यान नहीं दे रहा था। उसके दिलमें एक बेचैनी थी जिसकी उसे पहले तनिक भी आशंका न थी। वह

यह थी कि अभी होनेवाली मुलाकातमें क्या होगा। वह अँगरेजके एक वाक्यका अनुवाद कर रहा था और अनुवाद अभी समाप्त भी नहीं हो पाया था कि, उसे किसीके पैरोंकी आवाज सुनाई दी। दफ्तरका दर्वाजा खुला और जैसा पहले कई बार हो चुका था, जेलर आया और उसके पीछे कटूशा आयी। नेख्लीडूने देखा कि कटूशा अपने सरमें रूमाल बाँधे और जेलका सलूका पहने है। उसका सारा शरीर काँप सा गया।

"मैं जीवन चाहता हूँ, कुटुम्ब चाहता हूँ, बच्चे चाहता हूँ मनुष्य-की जिन्दगी चाहता हूँ।" ये विचार नेख्लीडूके मनमें, ज्यों ही कटूशा तेज कदमोंसे आँखें नीची किये हुए आयी, चमक गये।

नेख्लीडू उठकर खड़ा हो गया और उससे मिलनेके लिए दो-एक कदम आगे बढ़ा। कटूशाका चेहरा नेख्लीडूको कठोर और अरुचिकर मालूम हुआ। यह चेहरा आज उसी प्रकारका था जैसा उस दिन था जब कटूशाने इसे भली-बुरी सुनायी थी। कटूशाका चेहरा पहले तो लाल और फिर पीला हो गया। उसकी अँगुलियाँ बेताबीसे सलूकेके एक कोने-को मरोड़ने लगीं। उसने आँखें उठाकर नेख्लीडूको देखा और फिर निगाह नीची कर ली।

"तुम्हें मालूम हुआ कि सजा कम कर दी गयी?"

"हाँ, जेलरने बताया था।"

"इसलिए ज्यों ही असली हुक्म आ जाय, तुम निकल आ सकती हो और यह तै कर सकती हो कि कहाँ रहा जाय। हम लोग तब विचार—।"

कटूशाने तुरन्त ही उसकी बात काट दी।

"मुझे क्या विचार करना है? ब्लादीमीर साइमनसन जहाँ जायगा, मैं भी उसके पीछे-पीछे जाऊँगी।"

उत्तेजनाके होते हुए भी कटूशाने आँख उठाकर नेख्लीडूको देखा और इन शब्दोंको उसने इतनी स्पष्टता और तेजीसे कहा मानो उसने इन वाक्योंको पहलेसे तैयार कर रखा हो।

"सचमुच ?"

"डिमिट्री आइवनिच ! देखो, वह चाहता है कि मैं उसके साथ रहूँ ।..." कटूशा ठहर गयी । भयभीत होकर उसने अपने शब्दोंका संशोधन किया "वह चाहता है कि मैं उसके नजदीक रहूँ । इसके अलावा मुझे और क्या चाहिये ? मैं इसीको आनन्द समझती हूँ, मेरे लिए अब और है क्या ?"

"इन दोनोंमेंसे एक न एक बात हो सकती है ।" नेख्लीडूने अपने मनमें सोचा "या तो यह साइमनसनपर मोहित हो गयी है और इसे उस बलिदानकी जरा भी आवश्यकता नहीं है जो मैं समझता था कि मैं इसके लिए कर रहा हूँ । या यह हो सकता है कि मुझे अब भी प्यार करती है और मेरे हितके लिए विवाहसे इन्कार कर रही है और साइमनसनके साथ शादी करके छुट्टी पा जाना चाहती है ।"

नेख्लीडू झेंप गया और उसे अपनी झेंपका पता चल गया ।

"और तुम उसको प्यार करती हो ?" नेख्लीडूने कटूशासे पूछा ।

"प्यार करूँ या न करूँ, इससे क्या होता है । मैंने सब कुछसे हाथ धो रखा है, लेकिन व्लादीमीर साइमनसन एक असाधारण आदमी हैं ।"

"निस्संदेह ।" नेख्लीडूने कहा "वह बड़ा प्रतिभाशाली मनुष्य है और मैं समझता हूँ—"

लेकिन कटूशाने फिर उसकी बात काट दी । मानो उसको इस बातका डर था कि कहीं नेख्लीडू बहुत कुछ न कह जाय और वह कुछ न कहने पावे ।

"नहीं डिमिट्री आइवनिच ! अगर मैं तुम्हारे कहनेके मुताबिक नहीं कर रही हूँ तो मुझे क्षमा करना ।" और कटूशाने नेख्लीडूको अपनी अगाध तिरछी आँखोंसे देखा । "ऐसा ही होना चाहिये । तुम्हारी भी तो जिंदगी है ।"

कटूशाने वही कहा जो थोड़ी देर पहले नेख्लीडू अपने मनसे कह रहा था । लेकिन अब नेख्लीडूके ये विचार नहीं थे । उसकी भावना और

उसके खयाल अब बिलकुल बदल चुके थे। वह केवल लज्जित ही नहीं था बल्कि दुःखित भी था कि कटूशाके साथ-साथ मैं और कितनी चीजों-से हाथ धो रहा हूँ।

"मुझे इसकी आशा नहीं थी।" नेख्लीडूने कहा।

"यहाँ तुम्हारे रहने और तकलीफ उठानेकी क्या जरूरत ? तुमने काफी तकलीफ उठायी।" कटूशाने कहा और मुस्करायी।

"मैंने कोई तकलीफ नहीं उठायी। मेरे लिए तो यह बड़ा कल्याणकर हुआ और मैं तो यह चाहता हूँ कि तुम्हारी सेवा बराबर करता रहूँ।"

"हम लोग—" कटूशाने जब 'हम लोग' शब्द कहा, नेख्लीडूकी तरफ देखा—"कुछ नहीं चाहते। तुमने हमारे लिए 'बहुत कुछ किया। अगर तुम न होते......"। कटूशा कुछ और कहना चाहती थी लेकिन उसकी आवाज रुँध गयी।

"तुम्हें तो मुझे धन्यवाद देनेकी कोई वजह नहीं।" नेख्लीडूने कहा।

"कौन धन्यवादका पात्र है और कौन नहीं, इसका हिसाब-किताब करनेसे क्या फायदा ? अब ईश्वर हम लोगोंका हिसाब-किताब करेगा।" मस्लोवाने कहा और उसकी काली आँखें आँसुओंसे, जो डबडबा आये थे, चमकने लगीं।

"तुम कितनी अच्छी स्त्री हो।" नेख्लीडूने कहा।

"मैं और अच्छी !" कटूशाने आँसू गिराते हुए कहा और उसके चेहरेपर एक दयनीय मुस्कराहट आ गयी।

"आप तैयार हैं ?" अँगरेजने इतनेमें पूछा।

"जी हाँ।" नेख्लीडूने उत्तर दिया और कटूशासे क्रिलसवका हाल जानना चाहा।

कटूशाने अपनी भावनाओंको दबाकर क्रिलसवके बारेमें जो कुछ मालूम था, बताया। क्रिलसव बहुत कमजोर था और अस्पताल भेज दिया गया था। मेरी पावलोव्ना बहुत चिंतित थी और उसने

अस्पतालमें उसके साथ नर्स बनकर जानेकी इजाजत माँगी थी, लेकिन इजाजत नहीं मिली।

"मैं जाऊँ ?" कटूशाने यह देखकर पूछा कि अँगरेज खड़ा इन्तजार कर रहा है।

"मैं अन्तिम विदा तो नहीं करूँगा। मैं तुमसे फिर मिलूँगा।" नेख्लीडूने कहा और मिलानेके लिए हाथ बढ़ाया।

"क्षमा करना।" कटूशाने इतने धीरेसे कहा कि नेख्लीडू इसे मुश्किलसे सुन सका। लेकिन इनकी आँखें मिलीं और तिरछी आँखोंकी विचित्र निगाह और दयनीय मुस्कराहटसे, जिसके साथ कटूशाने "अंतिम विदा" नहीं बल्कि * "क्षमा करो" कहा था, नेख्लीडू समझ गया कि अपने निश्चयपर अटल रहनेके दो कारणोंमेंसे, जिन्हें वह समझता था, दूसरा कारण ही असली कारण है। कटूशा उससे प्रेम करती है लेकिन यह समझती है कि अगर उसने मेरे साथ विवाह कर लिया तो मेरी जिन्दगी खराब हो जायेगी। अगर वह साइमनसनके साथ चली गयी तो वह यह सोचती है कि वह मुझे स्वतंत्र कर देती है और इसी लिए वह प्रसन्न है कि अपना कर्त्तव्य पूरा कर लिया। फिर भी उसके वियोगसे कटूशाको कष्ट हुआ है।

कटूशाने हाथ मिलाया और फुर्तीसे घूमकर कमरेसे बाहर चली गयी।

नेख्लीडू चलनेको तैयार था लेकिन यह देखकर कि अँगरेज कुछ लिख रहा है, उसने उसे छेड़ना पसन्द नहीं किया। वह एक लकड़ीकी बेंचपर, जो दीवारके पास रखी हुई थी, बैठ गया। एकाएक उसे बड़ी थकावट मालूम होने लगी। इसकी वजह यह नहीं थी कि रातको उसे नींद नहीं आयी थी और न सफरकी तकलीफ या दौड़-धूप ही इसकी वजह थी। उसे तो जिंदगीसे थकावट मालूम हो रही थी। उसने बेंचके

* रूसी भाषामें इन दोनों शब्दोंका उच्चारण बहुत मिलता-जुलता है।

पुस्तेपर अपना सर रख लिया, आँखें बन्द कर लीं, और एक क्षणमें वह गहरी नींदमें सो गया।

"कहिये, आप कोठरियाँ देखने चलेंगे?" इन्स्पेक्टरने पूछा।

नेख्लीडूने आँखें खोलीं। उसे ताज्जुब हुआ कि मैं कहाँ हूँ। अँगरेज अपने नोट लिख चुका था और कोठरियाँ देखनेको जाना चाहता था।

नेख्लीडू थका हुआ और बिल्कुल उदासीन उसके पीछे-पीछे चल दिया।

पच्चीसवाँ अध्याय

ये लोग अगले कमरेमें दाखिल हुए, इसके बाद बदबूदार गंदे दालानमें पहुँचे जहाँ यह देखकर इनको आश्चर्य हुआ कि दो कैदी फर्श पर पेशाब कर रहे थे। अँगरेज, नेखलीडू और इन्सपेक्टर, जो इनके साथ था, पहले वार्डमें पहुँचे। यहाँपर वे लोग बन्द थे जिन्हें सख्त मशक्कतको सजा हुई थी। कैदी लोग चारपाइयोंपर, जो वार्डके बीचमें पड़ी हुई थीं, लेट चुके थे। ये लोग एक कतारमें लेटे हुए थे। इनकी संख्या करीब सत्तरके होगी। जब ये तीनों वार्डमें पहुँचे, सिवाय दो आदमियोंके सब कैदी अपना-अपना बिस्तर छोड़कर उठ खड़े हुए। इनमें एक नौजवान था जिसको बहुत बुखार था और दूसरा बुड्ढा, जो पड़ा-पड़ा कराह रहा था।

अँगरेजने पूछा कि यह नौजवान क्या बहुत दिनोंसे बीमार है? इन्सपेक्टरने बताया कि यह आज ही सुबह बीमार पड़ा है लेकिन बुड्ढे आदमीके पेटमें दर्द जरूर बहुत दिनोंसे चला आ रहा है और अस्पताल-में जगह न होनेकी वजहसे इसको वहाँ भेजा नहीं जा सका है। यह बात सुनकर अँगरेजने असंतोषसे अपना सर हिलाया। उसने कैदियोंसे कुछ कहनेकी भी इच्छा प्रकट की। उसने नेखलीडूसे कहा कि आप मेरी बातको रूसी भाषामें उल्था करके लोगोंको समझा दीजिये। पता यह चला कि अँगरेज महोदयका उद्देश्य निर्वासनके स्थान तथा साइ-बेरियाके जेलखानोंके मुआइना करनेके अलावा यह भी था कि वह ईमान और तोबा द्वारा मुक्तिका प्रचार करता था।

"इनको बताइये" अँगरेजने कहा "कि क्राइस्ट इनपर दया करता था और इनसे प्रेम करता था और उसने इनके लिए प्राण दिये। अगर ये लोग इस बातमें विश्वास करते हैं तो इनकी मुक्ति हो जायेगी।"

जब वह बोल रहा था, सब कैदी चुपचाप हाथ लटकाये खड़े थे। "इस किताबमें सब कुछ लिखा हुआ है, इन्हें बता दीजिये।" उसने कहा। "इन लोगोंमें कोई पढ़ सकता है?"

बीससे ज्यादा आदमी पढ़ सकते थे।

अँगरेजने कई दफ्ती बँधी हुई बाइबिलें हैण्डबेगसे निकालीं, और मोटी कमीजोंमेंसे सख्त काले नाखूनोंवाले कई मजबूत हाथ, एक दूसरेसे लड़ते हुए, इस किताबके लिए इसकी तरफ बढ़ने लगे। इस वार्डमें उसने दो बाइबिलें प्रदान कीं।

दूसरे वार्डमें भी यही बात हुई। यहाँ भी उसी किस्मकी गंदी हवा थी। दो खिड़कियोंके बीचमें उसी तरह क्राइस्टकी मूर्ति लटकी हुई थी। उसी किस्मकी नाँद दर्वाजेकी बायीं ओर रखी थी। कैदी लोग एक दूसरेसे मिले हुए बराबर लेटे थे। इनके पहुँचने पर ये लोग उसी तरह हाथ लटकाकर सीधे खड़े हो गये—सिवाय तीन कैदियोंके जिनमें दो तो उठकर बैठ गये और एक पड़ा ही रहा। उसने नवागन्तुकोंको देखातक नहीं। ये तीनों बीमार थे। अँगरेज महाशयने वही भाषण किया और यहाँ भी दो बाइबिलें दीं।

तीसरे कमरेमें चार बीमार थे। जब अँगरेजने पूछा कि बीमारोंको एक वार्डमें इकट्ठा क्यों नहीं रखा जाता, इन्स्पेक्टरने जवाब दिया कि ये लोग स्वयं इकट्ठा रहना नहीं चाहते। इनकी बीमारियाँ छूतकी नहीं हैं। डाक्टर इनकी देखरेख यहीं करता है और जो कुछ जरूरी होता है, किया जाता है।

"पन्द्रह दिनसे डाक्टर साहबके दर्शन नहीं हुए हैं।" किसीने बड़बड़ाते हुए कहा।

इन्स्पेक्टरने कुछ जवाब नहीं दिया। वह इन लोगोंको दूसरे वार्डमें लेकर चला गया। इसी तरह यहाँ भी दर्वाजा खुला, सब लोग उठकर चुपचाप खड़े हो गये और अँगरेजने बाइबिलें दीं। पाँचवें और छठे वार्डोंमें और उन वार्डोंमें भी जो दाहिनी या बाँयीं ओर थे, यही बात हुई।

सख्त मशक्कतवाले कैदियोंसे होकर ये लोग निर्वासित कैदियोंके पास पहुँचे। निर्वासित कैदियोंसे उन कैदियोंके यहाँ गये जिनको उनकी पंचायतने देशनिकालेकी सजा दी थी। फिर ये उन लोगोंके यहाँ गये, जो अपनी इच्छासे यहाँ आये थे। हर एक जगहपर कैदियोंका—ठिठुरे हुए, भूखे, आलसी, बीमार, पतित आदमियोंका—उसी प्रकार मुआइना कराया गया जैसे जंगली जानवरोंका होता हो। अँगरेजने बाइबिलकी एक नियत संख्या बाँट चुकनेके बाद और बाइबिलें देना बन्द कर दिया और उसने अपना भाषण भी बन्द कर दिया। हृदयको पस्त करनेवाले दृश्य और विशेषकर श्वासरोधी वातावरणने इस अँगरेजकी भी शक्तिको दबा दिया था। वह एक कोठरीसे दूसरी कोठरीमें चुपचाप जाता और कैदियोंके बारेमें इन्स्पेक्टरकी रिपोर्टपर केवल "आल राइट" कहता था।

नेखलीडू इनके पीछे पीछे चलता जाता था, मानो स्वप्नमें चल रहा हो। वह न तो इनके साथ-साथ चलनेसे इनकार कर सकता था और न इनको छोड़कर जा सकता था। थकावटसे पस्त और असहाय वह इनके पीछे-पीछे चल रहा था।

छब्बीसवाँ अध्याय

निर्वासितोंके वार्डमें नेख्लीडूको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह विचित्र बुड्ढा आदमी भी, जिसने उस दिन सुबह उसके साथ नदी पार की थी, वहाँ मौजूद है। यह चिथड़ोंसे लगा हुआ था और इसके चेहरेपर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं। यह चारपाइयोंके पास नंगे पैर एक गंदी कोयलेके रंगकी कमीज, जो एक कंधेपर फटी हुई थी, और इसी किस्मका पायजामा पहने जमीनपर बैठा हुआ था। इसने नवागन्तुकोंको कठोरता और प्रश्नात्मक दृष्टिसे देखा। इसका दुर्बल शरीर, जो इसकी गंदी कमीजके छेदोंसे दिखाई देता था, बहुत कमजोर मालूम होता था। लेकिन इसके चेहरेपर इतनी ज्यादा एकत्रित गंभीरता और सजीवता थी जितनी नदी पार करते समय भी नेख्लीडूने नहीं देखी थी। और वार्डोंकी तरह यहाँके कैदी भी अफसरोंके आ जाने पर कूदकर खड़े हो गये। लेकिन बुड्ढा आदमी बैठा ही रहा। इसकी आँखें चमक रही थीं और इसके माथेपर क्रोधसे बल पड़ रहा था।

"खड़ा हो जा।" इन्स्पेक्टरने चिल्लाकर कहा।

बुड्ढा आदमी नहीं उठा। वह तिरस्कारपूर्वक मुस्कराता रहा।

"तेरे नौकर तेरे सामने खड़े हैं। मैं तेरा नौकर नहीं हूँ। तेरे माथेपर मुहर...।" बुड्ढे आदमीने कहा और इन्स्पेक्टरके माथेकी तरफ इशारा किया।

"क्या?" इन्स्पेक्टरने धमकी देते हुए कहा और उसकी तरफ बढ़ा।

"मैं इस आदमीको जानता हूँ।" नेख्लीडूने जल्दीसे कहा। "यह किस कारण पकड़ा गया है?"

"पुलिसने इसे इसलिए भेजा है कि इसके पास पासपोर्ट नहीं था। हम लोग बराबर कहते रहते हैं कि ऐसे आदमियोंको यहाँ मत भेजा

करो। लेकिन ये लोग मानते नहीं।" इन्स्पेक्टरने कहा और क्रोधसे बुड्ढे आदमीको कनखियोंसे देखा।

"और ऐसा मालूम होता है कि तू भी क्राइस्ट-विरोधी सेनामें है। बुड्ढे आदमीने नेख्लीडूसे कहा।

"नहीं, मैं तो देखने आया हूँ।" नेख्लीडूने कहा।

"अच्छा, तू यह देखने आया है कि क्राइस्टके विरोधी लोग आदमियोंको किस प्रकार यातना पहुँचाते हैं? यह देख, इसने इन लोगोंको—एक पूरी फौजको—पिंजड़ेमें बंद कर रखा है। आदमियोंको पसीना गिराकर भोजन करना चाहिये। लेकिन इसने इनको बन्द कर रखा है और कोई काम नहीं देता। इनको सूअरोंकी तरह खिलाता है ताकि ये सब पशु बन जायँ।"

"यह क्या कह रहा है?" अँगरेजने पूछा।

नेख्लीडूने बताया—"बुड्ढा आदमी इन्स्पेक्टरपर यह दोष लगा रहा है कि उसने इन आदमियोंको कैद कर रखा है।"

"अच्छा, इससे पूछिये कि आखिर जो लोग कानूनके खिलाफ काम करते हैं उनके साथ कैसा बर्ताव होना चाहिये?" अँगरेजने कहा।

नेख्लीडूने इस प्रश्नका रूसी भाषामें अनुवाद कर दिया।

बुड्ढा आदमी विचित्र ढंगसे हँसने लगा। उसके सुडौल दाँत दिखाई देने लगे।

"कानून?" बुड्ढे आदमीने तिरस्कारसे इस शब्दको दुहराया "पहले इसने सब लोगोंको लूट लिया, सारी भूमिपर कब्जा कर लिया और लोगोंके सब अधिकार छीनकर अपने हाथमें कर लिये! जो लोग इसके खिलाफ थे उनको मार डाला और इसके बाद यह कानून गढ़ दिया कि कोई किसीको न लूटे, कोई किसीको न मारे। इसे यह कानून पहले बनाना चाहिये था।"

नेख्लीडूने इस जवाबका अँगरेजीमें अनुवाद कर दिया। अँगरेज मुस्कराया।

"अच्छा, इससे यह पूछिये कि आजकल चारों और हत्यारोंके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये।"

नेख्लीडूने फिर इस प्रश्नका रूसी भाषामें अनुवाद कर दिया।

"इससे कह दीजिये कि पहले अपने माथेके ऊपरसे क्राइस्टके विरोध की मुहर हटा दे।" बुड्ढे आदमीने कठोरतासे त्योरी बदलकर कहा। "इसके बाद इसे न तो चोर दिखाई देंगे न हत्यारे। इसको यह बात समझा दीजिये।"

"यह सनकी मालूम होता है।" अँगरेजने बुड्ढे आदमीके शब्दोंका अनुवाद सुनकर कहा और अपना कंधा उचकाते हुए वहाँसे चल दिया।

"तू अपना काम कर और दूसरोंको छोड़ दे; हरएक आदमी अपने कर्तव्यमें लग जाय। ईश्वर ही जानता है कि किसको फाँसी देना चाहिये और किसको क्षमा करना चाहिये। हम लोग नहीं जानते।" बुड्ढे आदमीने कहा। "तुम स्वयं अपने स्वामी बनो; फिर स्वामियोंकी जरूरत न दिखाई देगी। जाओ, जाओ।" उसने त्योरी बदलते हुए क्रोधसे नेख्लीडूको, जो वार्डसे जाते हुए कुछ झिझक रहा था, अपनी चमकती हुई आँखोंसे देखकर कहा "क्या तू अभीतक नहीं देख सका कि क्राइस्ट-विरोधी लोग किस प्रकार यहाँ आदमियोंके खूनसे चीलरोंको पाल रहे हैं? जाओ, जाओ।"

नेख्लीडू वार्डसे बाहर निकल आया और अँगरेजके पास पहुँचा जो, इन्स्पेक्टरके साथ, एक खुले दर्वाजेके सामने खड़ा यह पूछ रहा था कि वह कोठरी किस कामके लिए थी।"

"यह मुर्दाखाना है।"

"अच्छा।" अँगरेजने कहा और अन्दर जानेकी इच्छा प्रकट की।

मुर्दाखाना एक साधारण कोठरी थी जो बहुत बड़ी नहीं कही जा सकती। एक छोटा-सा लैम्प दीवारपर लटका हुआ था और उसकी धुँधली रोशनीमें कुछ बोटे और लकड़ीके कुन्दे, जो एक कोनेमें इकट्ठा किये हुए थे, दिखाई दे रहे थे। दाहिनी तरफ, चारपाइयोंपर, चार लाशें

पड़ी हुई थीं। पहली लाश, एक मोटी सूती कमीज और जाँघिया पहने, किसी लम्बे आदमीकी थी जिसके दाढ़ी थी और जिसका आधा सर घुटा हुआ था। शव काफी कड़ा हो चुका था। नीले हाथ, जिन्हें मोड़कर सीनेपर रख दिया गया था, अलग हो गये थे। दोनों पैर भी तन गये थे और नंगे बाहर निकले हुए दिखाई देते थे। उसके पास ही एक नंगे-पैर और खुले सरकी बुड्ढी औरतकी लाश पड़ी हुई थी जो सफेद पेटीकोट और सल्का पहने थी। इसके बालोंकी पतली पाटी खुली हुई थी। इसका चेहरा पीला और नाक नुकीली थी। इस औरतके उस तरफ बनफशई रंगका कपड़ा पहने हुए एक दूसरे आदमीकी लाश थी। इस रंगको देखकर नेखलीडूको कुछ स्मरण-सा हो गया।

नेखलीडू लाशके नजदीक आया। उसने इस लाशको गौरसे देखना शुरू किया।

इसकी छोटी नुकीली दाढ़ी ऊपरको उठी हुई थी। दृढ़ सुन्दर नाक, ऊँचा सफेद माथा और पतले घुँघराले बाल देखकर नेखलीडू पहचान गया, लेकिन उसे अपनी आँखोंपर विश्वास नहीं होता था। कल ही उसने इसके क्रोधित और यातनापूर्ण चेहरेको देखा था। आज यह शान्त निःस्तब्ध और भयंकर सुन्दर हो रहा था। यह क्रिलसव था, कमसे कम उसके शारीरिक अस्तित्वका यही एकमात्र चिह्न बच गया था। "क्रिलसवने क्यों यातनाएँ सहीं? उसका जीवन किस लिए था? क्या क्रिलसवने इसे समझ लिया था?" नेखलीडू अपने मनमें सोचने लगा पर उसको कोई उत्तर नहीं मिला। मृत्युके अलावा उसे और कुछ नहीं दिखाई देता था। नेखलीडूको बेहोशी आने लगी। अँगरेजसे बिना बिदा लिये हुए उसने इन्सपेक्टरसे कहा—"मुझे बाहर ले चलो।" इस बातकी अत्यन्त आवश्यकता अनुभव करते हुए कि जो कुछ मैंने देखा है उसपर एकान्तमें बैठकर मनन करूँ, नेखलीडू अपने होटलको वापस गया।

सत्ताईसवाँ अध्याय

नेखलीड़ू पलँगपर नहीं लेटा। वह अपने कमरेमें बड़ी देरतक टहलता रहा। कटूशाके साथ जो कुछ उसका काम था वह खतम ही हो चुका था। कटूशा उसे अपने लिए अनावश्यक समझती थी; इससे वह दुखी और लज्जित था। और उसका दूसरा काम न केवल अभीतक अपूर्ण था बल्कि उसकी वजहसे वह और भी परेशानीमें फँस गया था और दौड़-धूपकी और भी अधिक आवश्यकता हो गयी थी। उसने देखा कि ये भयंकर कुरीतियाँ, जिन्हें उसने पिछले दिनों देखा और जाना था और विशेषकर आज उस बीभत्स जेलखानेमें देखा था—जिससे उस प्यारे क्रिलखवकी मृत्यु हुई थी—राज्य कर रही हैं और विजयी हैं। इनको पराजित करनेकी उसे कोई सम्भावना नहीं दिखाई देती थी और न उसकी समझमें यह आता था कि इनपर किस प्रकार विजय प्राप्त की जाय। उसकी कल्पनामें उन सैकड़ों और हजारों पतित मनुष्यों-का चित्र नाच गया जिनको निकम्मे जनरलों, प्रोक्योररों और इन्स-पेक्टरोंने, प्राणघातक जेलोंमें बन्द कर रखा था। उसे उस स्वतन्त्र विचित्र बुड्ढे आदमीका स्मरण हो आया जो अफसरोंपर दोषारोपण कर रहा था और इसलिए पागल समझा जाता था। लाशोंमें उसे क्रिलसव-का सुन्दर मोम जैसा चेहरा याद आ गया जिसने क्रोधमें अपने प्राण दिये थे। अब उसके सामने फिर यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि वह पागल है या वे लोग पागल हैं जो इस प्रकारके दुराचार करते हैं और समझते हैं कि ठीक कर रहे हैं। यह प्रश्न बहुत जोरसे उठा और उत्तर माँगने लगा।

टहलते-टहलते तथा सोचते-सोचते थककर नेखलीड़ू गद्दीदार सोफापर लालटेनके नजदीक बैठ गया। उसने बाइबिल उठा ली जिसे अँगरेजने

इसे उपहारमें दिया था और जिसे इसने कमरेमें आने पर अपनी जेबसे निकाल कर मेजपर डाल दिया था।

"कहते हैं कि इस किताबमें हर एक सवालका जवाब है।" नेख्लीडूने सोचा और बाइबिलको एकदम खोल दिया। और मैथ्यूरचित इञ्जीलकी, अठारहवें अध्यायकी, पहलीसे चौथी आयत पढ़ी।

"उस घड़ी चेले यीशूके पास आकर पूछने लगे, स्वर्गके राज्यमें बड़ा कौन है। इसपर उसने एक बालकको पास बुलाकर उनके बीचमें खड़ा किया और कहा मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि यदि तुम न फिरो और बालकोंके समान न बनो तो स्वर्गके राज्यमें प्रवेश करने न पाओगे। जो कोई अपने आपको इस बालकके समान छोटा करेगा वह स्वर्गके राज्य में बड़ा होगा।"

"हाँ हाँ, यही है।" नेख्लीडूने कहा और उसे याद आ गया कि जब मैंने अपनेको नम्र कर लिया था तो कितनी शान्ति और आनन्द मिला था।

"और जो कोई मेरे नामसे एक ऐसे बालकको ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है। पर जो कोई इन छोटोंमेंसे, जो मुझपर विश्वास करते हैं, एकको ठोकर मारे, उसके लिए भला होता कि बड़ी चक्कीका पाट उसके गलेमें लटकाया जाता और वह गहरे समुद्रमे डुबाया जाता।" (मैथ्यू १८–५–६)

"इसका क्या मतलब ?—'जो कोई ग्रहण करेगा' कहाँ ग्रहण करेगा ?" और 'मेरे नामसे ?' इसका क्या मतलब ? उसने अपने मनसे पूछा क्योंकि इन शब्दोंके अर्थ वह नहीं समझ पाता था। और यह क्यों लिखा कि 'गर्दनमें चक्की बाँधकर' और 'गहरे समुद्रमें' ? ये शब्द क्यों लिखे ! यह बात समझमें नहीं आती। इसका मतलब साफ नहीं होता। और उसे याद आ गया कि किस प्रकार अनेक बार उसने अपने जीवनमे शुभ समाचार (नया अहदनामा) पढ़ना शुरू किया और इन वाक्योंके स्पष्ट न होनेसे उसकी तबीयत पढ़नेमें नहीं लगी। उसने सातवीं,

आठवीं, नवीं और दसवीं आयतें पढ़ीं जिनमें यह लिखा है कि "लड़-खड़ानेके अवसर आते हैं और उनका आना आवश्यक है और लोगोंको जहन्नुममें भेजकर सजा दी जाती है और कुछ फरिश्ते ऐसे हैं, जो खुदा-के चेहरेको—जो आसमानमें है—देख सकते हैं।" कितने अफसोसकी बात है कि यह सब बेतुका मालूम होता है, फिर भी सभी लोग इसमें कोई न कोई अच्छाई जरूर देखते हैं।

"क्योंकि मनुष्यका पुत्र, जो उसको बचाने आया, खो गया है।" उसने आगे और पढ़ा—

"तुम क्या समझते हो कि यदि किसी मनुष्यके सौ भेड़ें हों और उनमेंसे एक भटक जाये तो क्या वह निन्नानबेको छोड़कर और पहाड़ों-पर जाकर उस भटकी हुईको ढूँढ़ेगा ? और यदि ऐसा हो कि वह उसे पा जाय तो मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वह उन निन्नानबे भेड़ोंके लिए जो भटकी न थीं, इतना आनन्द न करेगा जितना कि इस भेड़के लिए करेगा ? ऐसी ही तुम्हारे पिताकी, जो स्वर्गमें हैं, इच्छा नहीं कि इन छोटोंमेंसे एकका भी नाश हो।"

"ठीक है, यह परम पिताकी इच्छा नहीं कि हम लोग नष्ट हो जायँ और यहाँ हम देखते हैं कि लोग सैकड़ों और हजारोंकी संख्यामें नष्ट हो रहे हैं और इनके बचानेकी कोई संभावना भी नहीं है।" नेख्लीडूने अपने मनमें कहा और आगे पढ़ने लगा।

"तब पतरसने पास आकर उससे कहा हे प्रभु, यदि मेरा भाई मेरा अपराध करता रहे तो मैं कै बार उसे क्षमा करूँ ? क्या सात बारतक ? ईशूने उससे कहा, मैं तुझसे यह नहीं कहता कि सात बार वरन सात बारके सत्तर गुनेतक। इसलिए स्वर्गका राज्य उस राजाके समान है जिसने अपने दासोंसे लेखा लेना चाहा। जब वह लेखा लेने लगा तो एक जन उसके सामने लाया गया जो दस हजार तोड़े धारता था, जब कि भर देनेको उसके पास कुछ न था तो उसके स्वामीने कहा कि यह और इसकी पत्नी और लड़केबाले और जो कुछ इसका है सब बेचा जाय और

वह कर्ज भर दिया जाय। इसपर उस दासने गिरकर उसे प्रणाम किया और कहा हे स्वामी, धीरज धरें, मैं सब कुछ भर दूँगा। तब उस दासके स्वामीने तरस खाकर उसे छोड़ दिया और उसका धार क्षमा किया। पर जब वह दास बाहर निकला तो उसके संगी दासोंमेंसे एक उसको मिला जो उसके सौ दीनार धारता था। उसने उसे पकड़कर उसका गला घोंटा और कहा, जो कुछ तू धारता है भर दे। इसपर उसका संगी दास गिरकर उससे बिनती करने लगा कि धीरज धर, मैं सब भर दूँगा। उसने न माना पर जाकर उसे जेलखानेमें डाल दिया कि जबतक कर्जको भर न दे तबतक वहीं रहे। उसके संगी दास, यह जो हुआ था, देखकर बहुत उदास हुए और जाकर अपने स्वामीको सारा हाल बता दिया। तब उसके स्वामीने उसको बुलाकर उससे कहा 'हे दुष्ट दास, तूने जो मुझसे बिनती की तो मैंने तुझे वह सारा कर्ज क्षमा किया। सो जैसे मैंने तुझपर दया की वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दासपर दया करना चाहिये न था?''

"बस यही बात है।" नेख्लीडू एकदम कह उठा। उसके अंतःकरणकी आवाज भी बोल उठी "बस यही बात है।"

और जैसा कि आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करनेवाले मनुष्योंका होता है, नेख्लीडूका भी हुआ कि वे विचार, जो पहले-पहल उसे आश्चर्यजनक, परस्पर-विरुद्ध और हास्यजनक भी मालूम होते थे, जीवनके अनुभवोंसे अधिकाधिक पुष्ट होते गये और एकदमसे अत्यन्त सरल, बिलकुल सच्चे और निश्चित सिद्धान्त मालूम होने लगे। इस प्रकार उसे यह अच्छी तरह स्पष्ट हो गया कि उन भयंकर बुराइयोंसे, जिनसे मनुष्य यातना पा रहे हैं, मुक्त होनेका एकमात्र निश्चित साधन यह है कि मनुष्य अपनेको ईश्वरके समक्ष अपराधी माने और इसलिए अपनेको दूसरेके सुधारने या सजा देनेके लिए असमर्थ समझे। उसे यह भी अच्छी तरह स्पष्ट हो गया कि जेलखानोंमें उसने जितनी भयंकर बुराइयाँ देखीं और इन बुराइयोंके करनेवालोंमें आत्मविश्वास पाया उनकी वजह यह है कि

आदमी असम्भव कार्य करनेकी कोशिश करता है। अर्थात् स्वयं दूषित होते हुए भी दूसरोंके दोषोंको सुधारनेकी कोशिश करता है। बुरे आदमी दूसरे बुरे आदमियोंको सुधारनेकी कोशिश करते हैं और समझते हैं कि कृत्रिम ढंगसे सुधार कर लेंगे। इसका नतीजा यह होता है कि लालची और स्वार्थी मनुष्य दण्ड देने और सुधारनेके कामको एक पेशा बना बैठते हैं और स्वयं अत्यन्त दूषित हो जाते हैं। और उन लोगोंको भी बिगाड़ देते हैं जिनको वे सताते हैं। अब नेख्लीडूको साफ-साफ दीखने लगा कि समस्त बीभत्सताएँ, जो उसने देखी थीं, किस जगहसे पैदा होती हैं और इनको खतम करनेके लिए क्या करना आवश्यक है। जो उत्तर उसे नहीं मिल रहा था वही क्राइस्टने पीटरको दिया था। वह उत्तर यह था कि हमेशा क्षमा करो, सबको क्षमा करो और अनेक बार क्षमा करो। क्योंकि कोई ऐसा आदमी नहीं जो स्वयं दोषी न हो और इसलिए कोई ऐसा नहीं जिसे सजा देने या सुधारनेका अधिकार हो।

"क्या यह बात इतनी सरल है?" नेख्लीडूने सोचा। फिर भी उसे यह निश्चित रूपसे दिखाई दे रहा था। यद्यपि पहले उसे आश्चर्य हुआ कि जो कुछ मैंने अभी पढ़ा है, केवल शास्त्रीय बात नहीं बल्कि उस प्रश्नका एक व्यावहारिक हल है। अब लोगोंके इस साधारण आक्षेपसे—कि अपराधीके साथ क्या व्यवहार होना चाहिये, निस्संदेह उन्हें अपराध करनेके लिए स्वतंत्र नहीं छोड़ा जा सकता—उसे परेशानी नहीं होती थी। इस आक्षेपका कुछ अर्थ हो सकता था अगर यह प्रमाणित हो जाता कि सजा देनेसे अपराधोंमें कमी हो जाती है और अपराधीका सुधार हो जाता है। लेकिन चूँकि प्रमाणित ठीक इससे उलटी बात होती है और यह स्पष्ट है कि कुछ आदमियोंमें यह शक्ति नहीं कि वे दूसरोंको सुधार सकें इसलिए एकमात्र यही उचित मालूम होता है कि उस कामको रोक दिया जाय जो केवल व्यर्थ ही नहीं बल्कि हानिकारक, अनैतिक और निर्दयतापूर्ण भी है। अनेक शताब्दियोंसे ऐसे लोगोंको, जिन्हें अपराधी समझा गया, फाँसीपर लटकाया गया।

क्या इससे उस प्रकारके अपराधियोंका नाश हो गया? नाश होनेकी कौन कहे बल्कि इनकी संख्या, दण्डसे पतित हुए अपराधियों तथा उन कानूनी अपराधियों द्वारा—जजों, प्रोक्योररों, मजिस्ट्रेटों और जेलरों द्वारा—जो आदमियोंका मुकदमा करते हैं और सजा देते हैं और भी बढ़ गयी है। अब नेख्लीडूकी समझमें यह आया कि समाज और उसके संगठनका अस्तित्व इन कानूनी अपराधियोंकी वजहसे नहीं है जो दूसरोंको सजा देते हैं बल्कि, इनके पतित कार्य-प्रभावके रहते हुए भी, इसलिए है कि मनुष्य एक दूसरेपर दया करते हैं और एक दूसरेसे प्रेम करते हैं।

अपने इस विचारका समर्थन बाइबिलमें पानेके लिए नेख्लीडूने उसे शुरूसे पढ़ना आरंभ किया। पहाड़ीका उपदेश पढ़नेके बाद, जिसको पढ़कर वह हमेशा प्रभावित हो जाया करता था, उसने अपने जीवनमें पहली बार यह देखा कि यह उपदेश कोई सुन्दर, भावपूर्ण सिद्धान्तोंका समूह नहीं जिसमें अत्युक्तिपूर्ण और असंभव बातोंकी माँग की गयी हो, बल्कि यह सरल, स्पष्ट और व्यावहारिक नियमोंका समूह है। यदि इनको कार्यरूपमें परिणत किया जाये (जो बिल्कुल संभव है) तो एक संपूर्ण नये और अद्भुत सामाजिक जीवनका निर्माण हो सकता है। उससे न केवल उद्दण्डता, जिससे नेख्लीडूको इतनी घृणा थी, बिल्कुल जाती रहेगी बल्कि मनुष्योंके लिए अत्यंत कल्याणकर स्थितिका—पृथ्वीपर स्वर्गीय राज्यका—प्रादुर्भाव होगा।

और वे पाँच नियम हैं।

पहला नियम यह है (मैथ्यू ५–२१–२६) कि मनुष्योंको हिंसा न करनी चाहिये। अपने भाईसे नाराजतक न होना चाहिये। किसीको निकम्मा न समझना चाहिये और अगर किसीने किसीसे झगड़ा कर लिया है तो ईश्वरके सामने अपना नैवेद्य प्रस्तुत करनेके पहले, अर्थात् प्रार्थनाके पहले, उससे समझौता कर लेना चाहिये।

दूसरा नियम यह है (मैथ्यू ५–२७–३२) कि आदमीको व्यभि-

चार न करना चाहिये। स्त्रीके सौंदर्यके उपभोगकी भी इच्छा न करनी चाहिये और अगर वह किसी स्त्रीके संपर्कमें एक बार भी आ चुका है तो उसके साथ विश्वासघात न करना चाहिये।

तीसरा नियम यह है (मैथ्यू ५-३३-३७) कि मनुष्यको शपथके बंधनमें कभी न बँधना चाहिये।

चौथा नियम यह है (मैथ्यू ५-३८-४२) कि मनुष्यको ईंटका जवाब पत्थरसे न देना चाहिये बल्कि अगर उसके एक गालपर कोई थप्पड़ मार दे तो दूसरा गाल भी उसके आगे कर देना चाहिये। आघातको क्षमा करना चाहिये और उसको नम्रतासे सहना चाहिये। जो सेवा माँगी जाय उससे कभी इन्कार न करना चाहिये।

पाँचवाँ नियम यह है (मैथ्यू ५-४३-४८) कि मनुष्यको अपने शत्रुओंसे घृणा न करनी चाहिये। उनसे लड़ना न चाहिये, बल्कि उनसे प्रेम करना चाहिये, उनकी सहायता करनी चाहिये और उनकी सेवा करनी चाहिये।

नेख्लीडू लालटेनको एकटक देखता रहा। उसका हृदय स्तब्ध था। उसके सामने उस जीवनकी दारुण अव्यवस्था चित्रित हो गयी जो हम व्यतीत कर रहे हैं। उसने साफ साफ देख लिया कि अगर मनुष्योंको इन नियमोंके पालन करनेकी शिक्षा दी जाय तो जीवन क्यासे क्या हो सकता है। उसकी आत्मा ऐसे आनन्दसे प्रफुल्ल हो उठी जिसका अनुभव उसने इसके पहले कभी नहीं किया था। ऐसा जान पड़ता था कि बहुत दिनोंकी परेशानी और तकलीफके बाद उसे सुख और स्वतंत्रता मिल गयी है।

नेख्लीडू सारी रात नहीं सोया। शुभ समाचार पढ़नेवाले अनेक आदमियोंके साथ जैसा होता है, उसने अपने जीवनमें आज पहली बार उन शब्दोंके सम्पूर्ण अर्थको समझ पाया जिन्हें वह पहले नहीं समझ पाता था। इस आवश्यक, महत्त्वपूर्ण और आनन्दजनक नवीन ज्ञानको उसकी आत्माने इस प्रकार सीखना शुरू किया जैसे स्पंज पानी सोखता है। जो

कुछ वह पढ़ता था, उसे परिचित-सी बात मालूम होती थी और जिस बातको वह बहुत दिनोंसे जानता था लेकिन कभी भी अच्छी तरहसे नहीं समझा था और कभी उसपर उसे अच्छी तरह विश्वास नहीं आया था, उसीकी याद आने लगी और समर्थित होने लगी। अब उसने इन बातोंको समझना और इनपर विश्वास करना शुरू किया। उसकी धारणा और उसका विश्वास केवल इतना ही नहीं था कि अगर मनुष्य इन नियमोंको माने तो वे कल्याणकी पराकाष्ठातक पहुँचा सकते हैं बल्कि वह यह भी मानने और विश्वास करने लगा कि प्रत्येक मनुष्यका यह एकमात्र कर्तव्य है कि इन नियमोंका पालन करे। इसीमें जीवनका वास्तविक अर्थ है। इन नियमोंके हर एक उल्लंघनसे तुरन्त ही प्रतिक्रिया पैदा होती है। क्राइस्टकी सारी शिक्षासे यही बात निकलती है और अंगूरके बागवाले दृष्टान्तमें इस बातकी साफ-साफ और जोरोंके साथ व्याख्या की गयी है।

माली यह समझते थे कि जिस बागमें ये अपने स्वामीकी तरफसे काम करनेके लिए भेजे गये हैं वह उनका है, जो कुछ वहाँ है उनके लिए है। इनका काम सिर्फ यह है कि इस बागमें मजेसे रहें और अपने मालिकको भूल जायँ और जो कोई इन्हें उस मालिककी याद दिलावे उसे मार डालें।

"और क्या हम लोग भी वही नहीं कर रहे हैं," नेख्लीडूने अपने मनमें सोचा "जब हम यह समझते हैं कि हम अपने जीवनके मालिक हैं और यह जीवन उपभोगके लिए मिला है? परन्तु ऐसा समझना मूर्खता है। हम लोग यहाँ किसीकी मर्जीसे आये हैं और किसी प्रदेशसे आये हैं। और यहाँ आकर हमने यह निश्चय कर लिया कि हमारा जीवन आमोद-प्रमोदके लिए है। ऐसी हालतमें हम लोगोंका काम बिगड़ जाना जरूरी है, जैसा उन मजदूरोंका काम बिगड़ गया जिन्होंने अपने मालिककी आज्ञा नहीं मानी थी। मालिककी आज्ञा इन नियमोंमें प्रकट की गयी है। ज्यों ही मनुष्य इन नियमोंका पालन करने लगेंगे, इस

पृथ्वीपर स्वर्गीय राज्य स्थापित हो जायगा और मनुष्य कल्याणकी पराकाष्ठातक पहुँच सकेगा।

"पहले भगवान्‌के राज्यकी और उसके पुण्यमार्गकी खोज कर; फिर ये सारी चीजें तुझे अपने आप मिल जायेंगी।" लेकिन हम इन चीजोंकी तलाश करते हैं और इन्हें अभीतक नहीं पा सके।

"बस, यही मेरे जीवनका उद्देश्य है। मैंने एक काम मुश्किलसे खतम कर पाया है कि दूसरा शुरू हो गया।"

नेख्लीडूके लिए उस रात्रिको एक बिल्कुल नये जीवनका उदय हुआ। इसलिए नहीं कि वह जीवनकी किसी नयी परिस्थितिमें पहुँच गया था बल्कि उस रातके बाद उसे हर एक काममें एक नया और बिल्कुल भिन्न अर्थ दिखाई देता था।

समय ही बतायेगा कि नेख्लीडूके जीवनका यह नया युग किस प्रकार समाप्त होगा।